वे २२

It belongs to ...
B.A.D. Sewing Branch ... Salkia
Howrah

105
18
87

॥ श्रीः ॥



# ज्ञानवैराग्यप्रकाशक।

## भाषावेदान्त

जिसको

मुमुक्षुपुरुषोंके कल्याणार्थ काशीनिवासी स्वामि-
परमानंद परमहंसने निर्माण कियाहै. ( जि-
सके देखनेसे विषयी पुरुषोंकाभी चित्त
संसारसे उपरामको प्राप्त होजाताहै
तव वैराग्यवानोंकी कौन कथाहै ?)

और

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबइ

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्धकिया ।

संवत् १९६६, शके १८३१.

# भूमिका ।

यह वार्ता तो सर्व पुरुषोंके अनुभव करके सिद्धहै, जो यह संसार महान् दुःख रूपहै । और इसमें रहकरके बडे २ महान् पुरुषोंकोभी दुःखहुवाहै फिर इतर जीवोंकी कौनकथाहै ? जो कि, अवतार कहलायेहैं उनकोभी इसमें क्लेश हुवाहै और उन्होंनेभी इसको दुःखरूप करके कहाहै । तिसमेंभी जो कि, पुनः २ जन्महोना और मरणहोनाहै यह असह्य दुःखहै । फिर बाल्यावस्था युवाअवस्था और वृद्धावस्था अर्थात् तीनों अवस्थाएं दुःखरूपहैं । औरभी शारीरिक और मानसिक दुःख अनंतहैं अर्थात् दुःखोंकी खानहै या दुःखोंका एक महान् समुद्रहै । इससे तरनेके लिये एक आत्मज्ञानहीं साधनहै, वह आत्मज्ञान विना वैराग्यके किसीकोभी प्राप्त नहीं होताहै और विना वैराग्यके किसीकोभी सुख नहीं मिलताहै और न पूर्व हुवाहै और न आगे होगा । इसलिये वैराग्यका स्वरूप जानना और वैराग्यवानोंके इतिहासोंको जानने और सुनानेकी आवश्यकताहै । क्योंकि विना वैराग्यके चित्तकी स्थिरताभी नहीं होतीहै ॥ और वैराग्यके प्रभावसेही अनेक पुरुष आत्मज्ञानको प्राप्त हुयेहैं और वैराग्यही आत्मज्ञानके साधनोंमें प्रथम मुख्य साधनहै और संसारमें वैराग्यवान् यतिहो या गृहस्थहो किसी आश्रममें वा किसी वर्णमेंहो उसीकी प्रतिष्ठा और कीर्ति होतीहै, रागवान्की नहीं होतीहै । दत्तात्रेय, जडभरतादिक और भरथरी आदिक सब वैराग्यके प्रभावसेही पूज्य होगयेहैं और इदानीं कालमें भी वैराग्यवान्ही जहाँ तहाँ पूजा जाताहै । इसलिये जिज्ञासु पुरुषोंके अवलोकन करनेके लिये इस ग्रन्थकी रचना कीगईहै । अस्सी इतिहास वैराग्यवानोंके दृष्टांतके लिये इस ग्रन्थमें लिखे गयेहैं । और ९१ एकऊपर पचास इतिहास ज्ञानवानोंके दृष्टांतके लिये इस ग्रन्थमें लिखे गयेहैं और जीव ईश्वरके निर्णयमें बहुतसे मत दिखायेहैं और अज्ञानका स्वरूपभी भलीभाँतिसे दिखाया गयाहै मुमुक्षुओंको उचितहै कि, इस ग्रन्थको अवश्य देखें । यह ग्रन्थ मुमुक्षुओंके लाभार्थ मैंने बडे परिश्रमसे निर्माणकर मुंबईस्थ परममाननीय ग्रंथोद्धारक सेठ **खेमराज श्रीकृष्णदास,** अध्यक्ष **"श्रीवेंकटेश्वर"** स्टीम्-मुद्रणालयको पुनर्मुद्रणादि सर्व **हक** समेत **अर्पण** कियाहै । ॐ शान्तिः॥

**द० स्वामी परमानन्दजी.**

# ज्ञानवैराग्यप्रकाशक भाषा।

## प्रथम किरण.

### मंगलाचरण।

दोहा--नमो नमो तेहि रूपको, आदि अंत जेहि नाहिं ॥
सो साक्षी मम रूपहै, घाट बाढ कहुँ नाहिं ॥ १ ॥
अविगत अविनाशी अचल, व्याप रह्यो सब थाहिं।
जो जानै अस रूपको, मिटै जगत भ्रम ताहि॥२॥
हंसहास गुरुको प्रथम, प्रणवौं बारंबार।
नाम लेत जेहि तम मिटै, अघ होवत सब छार ॥३॥

### चौपाई।

परमानँद मम नाम पछानो। उदासीन मम पथको जानो।
राम दास मम गुरुको गुरुहैं। आतमवित जो मुनिवर मुनिहैं॥४॥

### दोहा।

परसराम मम नगरहै, सिंधु नदी उसपार।
भारत मंडलके विषे, जानै सब संसार ॥ ५ ॥
ज्ञानवैराग्यप्रकाशक, ग्रन्थ नाम अस जान।
जे अवलोकन येहि करै, सोई चतुर सुजान ॥ ६ ॥
जन्म मरण दुख नाश हित, जानेही बुधिमान।
जो धारण अस को करै, पावै पद निर्वाण ॥७॥

# ग्रन्थारम्भ।

बडा महात्मा और विरक्त विवेकाश्रम नामवाला एक संन्यासी बहुत कालसे अपने निवासके योग्य मठकी तलाश करता था, तलाश करते २ उसने इस संसारमें एक कम चौरासीलाख मठोंको देखा, उनमेंसे किसी मठकोभी उसने अपने निवासके योग्य न देखा। तब वह बडी चिंता करके आतुर हुवा और एक देशमें बैठकर विचार करने लगा बिना एकांतमें निवास करनेसे परमार्थका चिंतन होना कठिनहै और ऐसा कोई निर्दोष रमणीक स्थानभी नहीं मिलताहै जिसमें बैठकर आत्माका विचार किया जाय और ध्यान धारणादिक सब किये जाँय। इसी सोचमें वह पडा था कि, इतनेमें एक बडा सुंदर मठ उनको दिखाई पडा, कैसा वह मठहै दोहै नीचे खंभे जिसके, और नव हैं द्वार जिसमें और स्वेच्छाचारीभीहै और अनेक प्रकारकी दिव्य रचना करके जो विभूषितहै देखनेमें भी जो कि बडा सुंदरहै, तिस मठको देखकरके विवेकाश्रमका मन अति प्रसन्न हुवा और अपने निवासके योग्य जानकर तिसमें विवेकाश्रमने अपना आसन लगादिया। आसन लगानेके पश्चात् विवेकाश्रम क्या देखतेहैं कि, नवीन अवस्थावाली बडी सुंदर रूपवाली एक स्त्री हाथमें कमलका फूल लिये हुये वहांपर आकरके खडी होगई और नेत्रोंके कटाक्षसे वह विवेकाश्रमकी तरफ देखने लगी। तिस स्त्रीको देखकर विवेकाश्रम बडे दुःखी होकर कहने लगे, हमने मठकी खोजमें महान् कष्टोंको उठायाहै और बडाभारी परिश्रम कियाहै तब हमको निवासके योग्य यह मठ मिलाहै, तिसमें यह महान् विघ्नरूप संपूर्ण अनर्थोंका कारण स्त्रीरूपी पिशाची कहींसे आकर हमारे सन्मुख खडी होगई है। मोक्षमार्गकी तो यह शत्रुरूपहीहै, इसी वास्ते यतीको स्त्रीके दर्शनकाभी निषेध कियाहै॥अद्वैतामृतवर्षिणी—

**जिताहारोऽथवा वृद्धो विरक्तो व्याधितोपि वा।**
**यतिर्न गच्छेत्तं देशं यत्र स्यात्प्रतिमा स्त्रियः॥ १॥**

यति जिताहारहो, अथवा वृद्धहो, या विरक्तहो, वा रोगकरके पीडितहो, तबभी उस देशमें न जाय जहाँ पर स्त्रीकी मूर्त्तिभी लिखी हुई हो॥ १॥

धर्मशास्त्रम्।

**न वै संभाषयेत्स्त्रियं पूर्वदृष्टां च न स्मरेत्।**
**कथां च वर्जयेत्तासां न पश्येल्लिखितामपि॥ २॥**

यति स्त्रीके साथ संभाषण न करे और पहलेकी देखी हुई का मनमें स्मरणभी न करे और स्त्रियोंकी कथाओंकोभी न करे और लिखी हुई स्त्रीकी मूर्ति-कोभी न देखे ॥ २ ॥

**यस्तु प्रव्रजितो भूत्वा पुनः सेवेत्तुमैथुनम् ।**
**षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ३ ॥**

जो संन्यासी होकर फिर स्त्रीके साथ मैथुनको करताहै वह साठ हजार वर्ष विष्टामें कृमिकी योनिको प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥

**विषयासक्तचित्तो हि यतिर्मोक्षं न विन्दति ।**
**यत्नेन विषयासक्तिं तस्माद्योगी विवर्जयेत् ॥ ४ ॥**

जिस यतिका चित्त विषयोंमें आसक्त रहताहै वह यति मोक्षको कदापि नहीं प्राप्त होता है इसलिये यति यत्न करके विषयाशक्तिसे चित्तको हटावे ॥ ४ ॥

ऐसे२ धर्मशास्त्रके वाक्योंका विचार करके फिर विवेकाश्रम अपने मनमें कहतेहैं। यदि यह सुंदरी इस जगहमें रहजायगी तब हमारा छोटा भाई जो वैराग्यआश्रमहै, वह कैसे यहांपर रहेगा ? वह तो बडा भीरुहै, स्त्रीकी परछांई से भाग जाताहै । और जो कि शमदमादिक संन्यासीहैं वह कैसे इसके साथ सहवास करेंगे ? किंतु कदापि नहीं करेंगे। और फिर मुमुक्षाभी यहांपर नहीं आवेगी। इन सबके न आनेसे संसारमें मुक्तिकी रेखाभी उच्छिन्न होजायगी । इसलिये इसको यहांसे निकालनेका कोई उपाय करना चाहिये। ऐसा विचारकरके फिर विवेकाश्रम यह विचार करतेहैं प्रथम इससे पूँछना चाहिये तू कौन है और क्यों यहांपर आई है ? सो दूसरा आदमी तो इदानींकालमें इस स्थानमें है नहीं जो कि इससे बात चीत करे इसलिये हमहीं इससे पूछतेहैं । विवेकाश्रम कहतेहैं–हे ललने ! तू कौनहै और किसकीहै,और कहांसे तू आई हैं, क्या तुम्हारा प्रयोजन है, यहांपर तू अब रहेगी या चली जायेगी ? विवेकाश्रमके ऐसे मधुर वचनोंको सुनकर वह ललना हँसकरके बोली । हे विवे-काश्रम ! तू मेरेको नहीं जानता है, मैं तेरी बडी भगिनी हूं, चित्तवृत्ति मेरा नाम है, मेरेको तू इसवास्ते नहीं जानता है जो तू मेरेसे पीछे पैदा हुवा है और संसार-मण्डलमें भ्रमण करके जिन २ मठोंको तूने त्यागदिया है अपने निवासके योग्य नहीं जाना है, उन सब मठोंमें निवास करके मैंने उनको सुशोभित किया है और

यह जो तूने पूँछा है तुम्हारा क्या प्रयोजन है ? इसके उत्तरको सुनो-सुन्द भोगोंका भोगना. सुंदर गीतोंको श्रवण करना, सुंदर स्त्रियोंके साथ क्रीडा करना सुंदर सुगंधियोंको लगाना, सुंदर वस्त्रोंको पहरना, सुंदर भोजनोंके रसोंक आस्वादन करना, सदैवकाल प्रसन्नमन रहना और जहाँतक बनसके विषया नंदको लेना । संसारमें इतर पुरुषोंकोभी विषयानन्द लेनेका उपदेश करना यह मेरा मुख्य प्रयोजन है और यह जो रमणीक मठ है जिसमें कि तुम इदानींकाल विराजमान हो इसी मठमें मेराभी रहनेका संकल्प है, क्योंकि यह भोगके योग्य अतीव अच्छा मठ है, इसीमें निवास करके मैं अब पूर्ण रीतिसे भोगोंको भोगूंगी। चित्तवृत्तिके विचारको सुनकर विवेकाश्रम बोले हे चित्तवृते ! यह मठ मिथ्य भोगोंके भोगनेके लिये नहीं है, क्योंकि स्त्री पुत्रादिरूप भोगतो इतर मठोंमें जो कि मैंने त्याग दिये हैं उनमेंही होसक्ते हैं, यह मठ तो केवल आत्मानंदकी प्राप्तिके लिये है । यदि तेरेको भोगोंकी इच्छा है तब तो इस मठसे अतिरिक्त जो मठ हैं, जिनको कि मैंने त्याग दिये हैं, उनमें जाकर तू भोगोंको भोग । इस मठका त्याग करदे, क्योंकि यह मठ विरक्त मुमुक्षु संन्यासियोंके योग्य है, या हम सरीखे ज्ञानवान् आत्मानंदके आस्वादन करनेवालोंके लिये है । यदि तुम्हारेको भी आत्मानंदके लेनेकी इच्छा हो तब इन सुंदर वस्त्र और आभूषणोंका त्याग करके मुंडित होकर हमारे साथ निवास करो । चित्तवृत्ति कहती है हे भ्राता ! तुम्हारी तरह बुद्धिहीन मूर्ख मैं नहीं हूं जो मुंडित होकर भस्म लगाकर शून्य मंदिरोंमें और श्मशानोंमें भ्रमकर स्वादहीन और कल्पित आत्माकी प्राप्तिके लिये दुःखको उठाऊँ प्रत्यक्ष आत्माका त्याग करके अप्रत्यक्षके पीछे राखको छानती फिरूं । मैं तो सुंदर भोगोंको भोगतीहूं, सुंदर वस्त्रोंको पहरतीहूं, सुगन्धीवाले द्रव्योंको लगातीहूं, अनेक प्रकारके रसोंवाले भोजनोंको खातीहूं, अनेक प्रकारके वीणा आदिक बाजोंके शब्दोंको श्रवण करतीहूं, कोमल २ शय्यापर शयन करतीहूं, सदैवकाल विषयानंदको अनुभव करती हूं । यह तो आत्मानंद है और इसीका नाम स्वर्गसुख है । जो लोक इस लोकमें सुंदर स्त्री आदिक भोगोंको भोगते हैं, वेही मानो स्वर्गवासी कहेजाते हैं । जिनको यह भोग प्राप्त नहीं है या जो इनका त्याग करके तुम्हारी तरह मुंडित होकर बनोंमें और श्मशानोंमें भ्रमण करते हैं वही मानो नरकवासी कहेजाते हैं । हे मूढ ! यह संन्यास तो विधाताने लूले लंगडोंके

लिये बनाया है तुम्हारे जैसे सर्वांगसंपन्न पुरुषोंके लिये संन्यास विधान नहीं बनायाहै सो ऐसाही लिखा है—

**अग्निहोत्रं त्रयो वेदा स्त्रिदण्डंभस्मगुंठनम्।**
**बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका धातृनिर्मिता ॥ १ ॥**

अग्निहोत्र करना, तीनों वेदोंका पाठ करना, तीन दंडोंको धारण करना, भस्मका लगाना, ये सब बातें उनके लिये ब्रह्माने बनाई हैं जो कि बुद्धि और पुरुषार्थसे हीन पुरुष हैं हे विवेकाश्रम! तुम्हारे जैसे बुद्धिमान् और पुरुषार्थियोंके वास्ते नहीं बनाई हैं ॥ १ ॥

**त्रयो वेदस्य कर्तारो मुनिभंडनिशाचराः ॥ १ ॥**

मुनि और भांड तथा निशाचर इन तीनोंका बनाया हुवा वेद है आंख मूंदकर बैठजाना ये मुनियोंका कर्म है सो वेदमें आंख मूंदकर बैठना लिखा है और नाक पकडना ताली बजाना ये भांडोंका काम है सो वेदमें नाक पकडकर ताली बजानाभी लिखा है और पशुओंको मारकर खाजाना ये पिशाचोंका कर्म है सो वेदमें यज्ञोंमें पशुवोंको मारकर खाना भी लिखा है और पंडितोंने निरर्थक शब्द भी जरफरी आदिक और—स्वाहाकार और स्वधाकार बहुतसे बनाकर वेदोंमें भर दिये हैं। हे विवेकाश्रम! और बहुत कष्टदायक कर्म कल्पित स्वर्गकी प्राप्तिके लिये भी लिख दियेहैं। यदि यज्ञमें पशु मारनेसे स्वर्ग होताहै तब यजमान अपने पिताको क्यों नहीं यज्ञमें होमकरता? तिसकोभी तो स्वर्गकी कामना बनीहै। फिर जितने यज्ञादिक कर्मोंके करनेवाले मरेहैं, किसीने भी आजतक आकरके नहीं कहा जो हमारेको स्वर्ग हुवाहै या नहीं हुवाहै। इस लिये सब अपने खानेके और द्रव्यके वंचन करनेवालोंने बना दियेहैं और जो कि मरोंके पीछे पिंड और अन्नको देतेहैं यदि उनको मिलताहै, तब जो पुरुष विदेशमें जाताहै, घरमें भी तिसके पीछे देनेसे उसको मिलना चाहिये, ऐसा तो नहीं देखतेहैं। इस वास्ते येभी सब जीविकाके लियेही बनाया गयाहै, वास्तवमें मरेको कुछभी नहीं मिलताहै ॥

**न स्वर्गो वाऽपवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः।**
**नैव वर्णाश्रमादीनां क्रिया च फलदायिका ॥ १ ॥**

वास्तवमें न स्वर्गहै और न कोई मोक्षहै और न कोई परलोकमें गमन करनेवाला आत्माहीहै और वर्णाश्रमोंकी कोई क्रिया भी पारलौकिक फलको देनेवाली नहींहै ॥ १ ॥

**यावज्जीवेत्सुखं जीवेद्दणं कृत्वा घृतं पिबेत॥**
**भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥**

यावत्पर्यंत पुरुष संसारमें जीतारहे सुखपूर्वकही जीवनको व्यतीत करे, यदि कहो घृतादिकोंके पान करनेसे बिना कैसे सुखपूर्वक जीवन होसक्ताहै। तब हम कहतेहैं ऋणको लेकर घृतको पान करे यदि कहो ऋण फिर कहांसे दिया जायगा तब कहतेहैं ऋणदेना किसकोहै देहके भस्मीभूत होनेपर फिरतो कोई देनेवाला रहेगा नहीं इस लिये देनेकाभी भय नहीं है॥ २॥ चित्तवृत्ति कहतीहै हे विवेकाश्रम! इस कुरूपताका त्याग करके तुम सुरूपताको धारण करके संसारके भोगोंको भोगो व्यर्थ अपनी आयुको खराब मत करो। विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते ! ऐसा मत भाषणकर विधाताने त्रिदण्ड और संन्यासको आत्मज्ञानकी प्राप्तिका साधन बनायाहै तुमने उलटा समझ लियाहै इसलिये इस विपरीत बुद्धिको तूं त्याग करके आत्मविषयिणी बुद्धिको आश्रयणकर। चित्तवृत्ति कहतीहै हे विवेकाश्रम ! जो वस्तु पहले प्राप्त नहो और यत्न करनेके पश्चात् प्राप्तहो उसकी प्राप्तिके लिये कोई साधन बनसक्ताहै और जो वस्तु कि प्रत्यक्ष नेत्रोंसे दिखातीहै और अपनेको प्राप्तभीहै तिसकी प्राप्तिके लिये कोईभी साधन नहीं बन सक्ताहै। हे मूढ ! यह जो स्थूल शरीरहै, दो हाथ, दो पाँव, दो कान, दो आँखवाला येही तो आत्माहै। इससे भिन्न और कौन आत्माहै। और इस शरीरसे जो कि, भोग भोगजातेहै उनसे जो आनंद प्राप्त होताहै येही तो आत्मानंदहै, इससे भिन्न दूसरा और कौनसा आत्मानंदहै। संसारमें सबलोग तो शरीरकोही आत्मा मानतेहैं और इन्द्रिय विषयके सम्बन्धसे जो सुख होताहै उसीको आत्मानंद मानतेहैं। तुम्हारीतरह लोग मूर्ख नहींहैं, जो प्रत्यक्ष आत्माको छोडकर अप्रत्यक्षके पीछे खराब होते फिरें। हे विवेकाश्रम ! अब भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगडाहै, इस बनावटी वेषका त्याग करके अपने असली वेषको धारण करके तुम भोगोंको भोगो मूर्ख मत बनो। इस मूर्खतासे तुमको सुख कदापि नहीं होगा। विवेकाश्रम अपने मनमें कहतेहैं यह पंड तो अपनेको बडी पंडिता मानकर बोलरहीहै इस मूर्खाको

यदि हम सूक्ष्म विचारसे समझावेंगे तब तो यह नहीं समझेगी क्योंकि एकतो स्त्री, दूसरे बडी चपल, तीसरे विषयोंके सन्मुख यह दौडनेवाली है। इसलिये इसको स्थूल दृष्टांतों करके समझाना चाहिये। क्योंकि जैसा बुद्धिवाला पुरुषहो उसको उसी रीतिसे समझाना ठीकहै। फिर महात्माका उपकारी स्वभावभी होताहै और परोपकारके लिये महात्माओंका शरीर उत्पन्न होताहै और मूर्खोंको सच्चे रस्तेपर लगानाही भारी उपकारहै। इस लिये इस मूर्खाको अब हम स्थूल दृष्टांतोंको देकर समझातेहैं। विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! जैसे विष्ठाका कृमि मिश्रीके स्वादको नहीं जानताहै, नींमका कीट ऊखके स्वादको नहीं जानताहै, मद्यपान करनेवाला अमृतके स्वादको नहीं जानताहै, असत्यवादी सत्य भाषणके फलको नहीं जानताहै, व्यभिचारिणी स्त्री पतिव्रताके प्रभावको नहीं जानतीहै तैसे तूंभी हे चित्तवृत्ते! आत्मानंदके स्वादको नहीं जानतीहै, जबतक तूं विषयानंदकी तरफ दौडतीहै तबतक तेरेको आत्मानन्दका कणमात्रभी नहीं मिला है, जिस कालमें एक लवमात्रभी तिसका तुझको प्राप्त होजावेगा फिर कभीभी तू विषयानन्दकी इच्छाको नहीं करेगी। हे चित्तवृत्ते! इसीमें तुमको हम एक दृष्टांतको सुनाते हैं।

एक चींटी निमकके पर्वतपर रहती थी, दूसरी एक चींटी मिश्रीके पर्वतपर रहती थी, एक दिन वह निमकके पर्वतवाली चींटी मिश्रीके पर्वतवाली चींटीके पास गई और तिसको हृष्ट पुष्ट प्रसन्नमुख देखकर पूँछने लगी, बहिन तुम्हारा मुख बडा प्रसन्न दिखाताहै और तुम्हारा शरीरभी बडा हृष्ट पुष्ट तैयार है, तुमको ऐसा कौनसा पदार्थ खानेको मिलताहै जिसके सेवन करनेसे तुम सदैवकाल आनंदित रहती हो। उसने कहा मैं मिश्रीके पर्वतपर रहती हूं मनमानी मिश्रीको खाती हूं, तिसीके खानेसे मेरा मुख प्रसन्न रहता है और शरीरभी मेरा रोगसे रहित तैयार रहता है। तब तिस नमकके पर्वतवाली चींटीने तिससे कहा हमको भी तूं मिश्रीके पर्वतको बतादे जो मैंभी तिसको खाकर तुम्हारी तरह होजाऊं। मैंने तो कभीभी मिश्रीको नहीं खाया है और न कभी मैंने तिसका नामही सुना है आज तुम्हारे मुखसे मिश्रीके महत्वको श्रवण करके हमाराभी मन तिसके खानेके लिये चलागया है, इसवास्ते अब तू जल्दी हमको मिश्रीके पर्वतको बतादे। तिस चींटीने उसकोभी मिश्रीके पर्वतको बतादिया वह तिस पर्वतपर घूमकर आकरके तिस चींटीसे कहनेलगी बहन यह निमकका पर्वत है इसमें मिश्रीका तो कहीं नाम निशानभी नहीं है। तब

तिस मिश्रीके पर्वतवाली चींटीने अपने मनमें विचार किया क्याकारण है जो कि मिश्रीके पर्वतपर घूमनेसेभी इसको मिश्री नहीं मिली । फिर जब कि तिसके मुखकी तरफ तिस चींटीने देखा तब तिसके मुखमें एक नमककी डली छोटीसी पडी थी तिसको देखकर उसने जानलिया यही मिश्रीके न मिलनेका कारण है उस चींटीने निमककी डलीवाली चींटीसे कहा बहन तेरे मुखमें तो निमककी डली पडी है जबतक तू इस डलीका त्याग नहीं करेगी तबतक तेरेको मिश्री नहीं मिलेगी । उसने तुरन्तही निमककी डलीको फेंक दिया और फिर तिस मिश्रीके पर्वतपर गई तब फिर मिश्रीके मिलनेमें कौन देरी थी जातेही तिसको मिश्री मिल गई" ॥ हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांतहै। अब दृष्टांत इसको सुनो अंतःकरणरूपी मिश्रीका पर्वतहै, क्योंकि तिसके भीतर आत्मारूपी मिश्री भरीहै । विषयानंदरूपी नमककी डलीको तू मुखमें पकडकर तिस मिश्रीके पर्वतपर रात्रिदिन फिरती रहतीहै । इसीसे तेरेको वह आत्मानंदरूपी मिश्री नहीं मिलतीहै जब तूभी तिस नमकवाली चींटीकी तरह अपने मुखसे तिस विषयानंदरूपी डलीको फेंककर मिश्रीके पर्वतपर मिश्रीकी तलाशमें फिरेगी तब तेरेकोभी तुरंत आत्मानंदरूपी मिश्री मिल जावेगी । हे चित्तवृत्ते ! जितने कि संसारमें स्त्री, पुत्र धनादिक विषयहैं, ये सब देखने मात्र करके सुंदर प्रतीत होतेहैं। वास्तवसे यह सब सुंदर नहींहैं क्योंकि जिनको प्राप्तहैं वहभी सब दुःखीहैं और जिनको नहीं प्राप्तहैं, वहभी सब दुःखीहैं विचार करनेसे तो इनमें सुखका लेशमात्रभी नहींहै । यदि इनमें सुखहोता तब विवेकी पुरुष इनका त्याग कभी भी न करते और बहुतसे राजा महाराजोंनेभी इनका त्याग कियाहै, इसीसे जाना जाताहै, स्त्री, आदिक सब विषय दुःखरूपहैं इसी वार्त्ताको हे चित्तवृत्ते! हम तुमको अनेक दृष्टांतों करके दिखाते हैं ॥ १ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक नगरमें एक बनियां बडा गरीब रहता था एक तिसकी स्त्री थी और एकही तिसका लडका था जब कि वह लडका पाँच बरसका हुआ तब बनियां और तिसकी स्त्री दोनों मरगये तब वह लडका अनाथ होगया कोईभी तिसकी सहायता करनेवाला जब न रहा तब एक महात्मा दया करके तिस लडकको लेगये और अपना चेला बनाकर तिसकी पालना करने लगे और तिसको विद्यादि गुणों करके सुशिक्षित करने लगे । जब कि, लडका पढ लिखकर

सुशिक्षित होगया और बीस बरसकी तिसकी आयुभी होगई तब एकदिन लडके ने अपने गुरूसे कहा महाराज मेरेको तीर्थयात्रा करनेके लिये आज्ञा दीजिये। गुरुने प्रसन्न होकर कहा जाओ, तुम तीर्थ करआवो। जब कि, वह तीर्थयात्राको चला तब एक दिन रास्तामें वह जाता था कि, एक बरात तिसको मिली उसको देखकर तिस लडकेने पूंछा यह क्या है ? क्योंकि उसको बरात और विवाहके संस्कार नहीं थे, लोकोंने कहा यह बरात है उसने कहा बरात क्या होती है और ये पालकीमें बैठा हुवा सुंदर वस्त्रोंको पहरे हुये कौन है ? लोकोंने कहा यह दूलह है इसकी शादी एक लड़कीके साथ कीजावेगी। इस दुलहाको लेकर ये सब लोग लडकीवालेके घरमें जाँयगे वहाँपर गाना बजाना नाच रंग होगा फिर दूलहका तिस लडकीके साथ पाणिग्रहण होगा। फिर लडकीको लेकर अपने घरमें आकर दूलह और दुलहन दोनों रात्रिमें एक पलंगपर शयन करेंगे और विषयानंदको भोगेंगे। उन लोकोंसे सुनकर उस साधुके अंतःकरणमें भी सब संस्कार विवाह करनेके और स्त्रीके साथ सोनेके बैठ गये, जब कि एक ग्रामके समीप पहुँचा तब वहाँपर एक बडा सुंदर पक्का कूप था उस कूपपर उसने आसन लगादिया जब रात्री पडी तब कूपके किनारे पर वह सोगया नींदमें उसको विवाहके संस्कार सब उद्भूत होगये तब उसने स्वप्नमें देखा कि, मेरा विवाह हुवा है और स्त्री घरमें आई है उसके साथ एक पलंगपर सोये हैं, जब कि सोये हुवे थोडीसी देर बीती तब स्त्रीने कहा थोडासा पीछे हटो ज्योंही वह पीछेको हटा त्योंही तडाकसे कूवेमें गिरपडा तिसके गिरनेकी आवाजको सुनकर इधर उधरसे लोगोंने जमा होकर तिसको कूवेमेंसे निकाला और तिससे पूँछा तुमको किसने कूवेमें गिरायाहै उसने कहा हमको स्वप्नकी स्त्रीने कूवेमें गिरा दियाहै। बडे आश्चर्य्यकी वार्त्ताहै जो कि स्वप्नकी मिथ्या स्त्रीके साथ सोया वहतो कूवेमें गिरा जोकि जाग्रत्‌की स्त्रीके साथ सोतेहैं वहतो अवश्यही महान नरकरूपी कूवेमें गिरते होंगे इसमें संदेह नहींहै। हे चित्तवृत्ते ! स्त्रीके सम्बन्धसे बडे २ देवतोंकीभी फजीती हुई है। इस लिये स्त्रीही संसाररूपी बंधनका कारणहै, चित्तवृत्ति कहतीहै हे भ्राता ! स्त्रीके संगसे जिस २ देवता और ऋषि तथा मनुष्यकी फजीती हुईहै तिस २ देवता और ऋषि तथा मनुष्योंकी कथाओंकाभी संक्षेपसे मेरे प्रति कहो ॥ २ ॥

विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! एक समयमें ब्रह्माजीने अपने अंगोंसे अहि[ल्या] नामवाली कन्याको उत्पन्न किया और सब देवता तथा ऋषियोंके सन्मुख गौत[म] जीके साथ तिसका विवाह करदिया । तिस सुंदररूपरूपवाली और श्रेष्ठ अं[ग] वाली अहिल्याको देखकर इन्द्र मोहित होगया उसी कालसे इन्द्रके मनमें [य]ह संकल्प हुवा जो किसी प्रकारसे इसके साथ भोग करना चाहिये । इन्द्र इ[सी] फिकरमें रहने लगा जब कि इन्द्रको अहिल्यापर घात लगाये कुछ काल बी[त] गया तब एक दिन गौतमजी पुष्कर तीर्थमें स्नान करनेको गये पीछेसे अहि[ल्या] उनके पूजाके बर्त्तनोंको साफ करने लगी इतनेमें गौतमका रूप धारण कर[के] इन्द्र गौतमके गृहमें घुसा अहिल्या उसको पति जानकर खडी होगई तब इन्[द्रने] कहा हे प्रिये! आज मैं बडा कामातुर हुवाहूं तुम जल्दी मेरेपास आवो । अहिल्या[ने] कहा हे स्वामिन्! यह तो आपकी पूजाका समयहै भोगका समय नहींहै आप पू[जा] करिये मैंने पूजाकी सब सामग्री तैयार करदीहै इन्द्रने कहा हे प्रिये! आज मैं[ने] मानसी पूजा करलीहै तुम जल्दीसे हमारे पास आवो हमको काम जलाये देता[है] इतना कहकर इन्द्रने अहिल्याको पकडकर अपनी मनमानी प्रसन्नता कर[ी] जब कि इन्द्र अहिल्यासे भोग करचुका इतनेमें गौतमजी आगये तब इ[न्द्र] बिलारका रूप धारण करके भागने लगा गौतमजीने कहा तू कौनहै जो बिला[] रके रूपको धारण करके भागा जाताहै गौतमजीके क्रोधसे इन्द्रको इतना भय हु[वा] जो तुरंतही बिलारके रूपको त्याग करके अपने इन्द्ररूपसे काँपताहुवा हाथ जोड[कर] तिसके सम्मुख खडा होगया। इन्द्रको देखतेही गौतमने शाप दिया हे दुष्ट! [जि]स एक भगके लिये यहांपर पाप कर्म करनेके लिये आयाथा तेरे शरीरमें एक ह[जार] भग होजाँयगी और अहिल्याकोभी शाप दिया मांससे रहित पाषाणवत् ते[रा] शरीर होजायेगा । हे चित्तवृत्ते ! स्त्रीके संगसे ऐसी इन्द्रकी फजीती हुई ॥

अब ब्रह्माकी फजीतीको तुम्हारे प्रति सुनातेहैं पद्मपुराण स्वर्गखण्ड अ० [] यह कथा है हे चित्तवृत्ते ! शांतनु नाम करके एक ऋषी था, तिसकी स्त्री का ना[म] अमोघ था, एक दिन ब्रह्माजी किसीकार्यके लिये तिस ऋषीके घरमें गये [] वह ऋषी घरमें न था तिसकी स्त्री घरमें थी, उसने ब्रह्माजीका बडा सत्कार कि[या] पाद्य अर्घादिकों करके और एक आसन उनके बैठनेको दिया जब कि ब्रह्मा[जी] आसनपर बैठे तब तिस पतिव्रताने ब्रह्माजीसे कहा भगवन् आपका आना कि[स]

निमित्तको लेकरके हुवाहै ब्रह्माजीने कहा ऋषीको मिलनेके लिये आयेथे उसने कहा ऋषी तो किसी कार्य्यके लिये कहीं गये हैं ब्रह्माजी तिसके सुंदर रूपको देखकर मोहित होगये। कामदेवने ब्रह्माजीको ऐसा व्याकुल किया जो ब्रह्माजी-का वीर्य उसी आसनपर निकल गया तब ब्रह्माजी लज्जित होकर अपने स्थानको चले आये उधरसे जब ऋषी घरमें आये तब तिस वीर्यको देखकर स्त्रीसे पूँछा यह क्याहै ? स्त्रीने सब हाल ब्रह्माजीका कह सुनाया ऋषीने कहा यह कामका महत्त्वहै जिसने ब्रह्माकोभी मोहित कर लियाहै हे चित्तवृत्ते ! स्त्रीका संग ऐसाही बुराहै जिसके दर्शनसे देवताभी धीर्यको नहीं धर सक्तेहैं। तब इतर जीवोंकी क्या कथाहै ? इसी वास्ते विवेकी पुरुष इसके समीपभी स्थित नहीं होतेहैं ॥ ४ ॥

हे चित्तवृत्ते ! पद्मपुराणके स्वर्गखण्डमें महादेव और विष्णुकी कथाभी लिखीहै उन कथाओंकोभी तुम सुनो ॥ ५ ॥

एक कालमें महादेवजी अपने स्थानमें समाधीमें स्थित थे और मर्त्यलोकमें मनुष्योंकी बहुतसी स्त्रियें सुंदररूप और युवावस्थावाली वनमें क्रीडा कर रहीं थीं, उनके रूप और यौवनोंको देखकर महादेवजी काम करके बडे व्याकुल होगये और महादेवजीका मन उनके साथ भोग विलास करनेको तैयार होगया तब महादेवजीने अपने मंत्रके बलसे उन सब स्त्रियोंको. आकाशमें खैंच लिया और आपभी आकाशमें स्थित होकर उनके साथ भोग विलास करने लगे और बहुत कालतक उनको आलिंगन करते रहे और विषयानंदमें मग्न होगये इधर पार्वतीकी जो समाधि खुली तब तिनने देखा कि महादेवजी अपने आसनपर स्थित नहीं हैं और आकाशमें मनुष्योंकी स्त्रियोंके साथ भोग विलास कर रहे हैं तब पार्वतीको बडा क्रोध हुवा और आकाशमें जाकर तिसने उन सब स्त्रियोंको भूमिपर गिरा दिया और महादेवजीको लाकर समाधीमें फिर स्थिर किया। हे चित्तवृत्ते ! सुंदर स्त्रियोंको देख कर महादेवजीभी भूलगये और उनकी समाधिमें भी विघ्न हुवा तब इतर तुच्छ बुद्धिवाले जीवोंकी कौन कथा है ॥ ६ ॥

एक कालमें देवता और दैत्योंका युद्ध होने लगा, दैत्योंका राजा जालंधर था, तिसकी स्त्रीका नाम वृंदा था वह बडी पतिव्रता थी, तिसके पातिव्रतके प्रभावसे वह जालंधर दैत्य देवतोंसे जीता नहीं जाता था, तब देवतोंने विष्णुसे

जालंधरके जीतनेके लिये कई उपाय किये । विष्णु जालंधरका रूप धारण करके तिसकी स्त्रीके पास गये और उससे भोग किया जब कि, भोग करके पातिव्रतधर्म नष्ट करचुके तब वृन्दाको मालूम होगया कि यह विष्णु हैं, हमारे पति नहीं हैं, तब तिसने विष्णुको शाप देदिया, जावो तुम पाषाण होजावो। तिसके शापसे विष्णुको पाषाण होना पडा । हे चित्तवृत्ते ! यह स्त्रीरूपी विष मुक्तिमार्गका विरोधी है इसीलिये विवेकी पुरुष इससे दूर भागते हैं ॥ ७ ॥

हे चित्तवृत्ते ! पद्मपुराणके स्वर्गखण्डमें एक वृद्ध ब्राह्मणकी कथा लिखी है जिसका स्त्रीके दर्शनसे मृत्युही होगया था तिसकी कथाको भी तुम सुनो।

गंगाजीके किनारेपर एक बडा तपस्वी वृद्ध ब्राह्मण रहता था और लोकोंको सदैवकाल धर्मकाही उपदेश करता था और विप्रोंमें बडा उत्तम अपने नित्य नैमित्तक कर्ममेंभी बडा तत्पर था और अकेलाही एक मंदिरमें रहता था। एक दिन वह अपने मंदिरके द्वारपर बैठा हुवा था कि इतनेमें एक स्त्री बडी रूपवती युवावस्थावाली अपने पतिके गृहको जातीहुई तिस मंदिरके आगेसे निकली। तिस स्त्रीके रूपको देखकर वह ब्राह्मण मोहित होगया और काम करके बडा पीडित हुवा । वह स्त्री अपने गृहके भीतर चली गई तब यह देखता उसके द्वारकी तरफ देखता रहा जो फिर भीतरसे बाहरको निकले तब मैं उससे कुछ बातचीत करूं जब कि वह फिर बाहरको न निकली तब ब्राह्मण देखकर तिसके द्वारपर जाकर पुकारने लगे हे प्रिये ! जल्दी किवाडको खोलो मैं तुम्हारा पतिहूं, तिसके शब्दको सुनकर तिस स्त्रीने किवाडको खोल दिया और देखा तो एक वृद्ध ब्राह्मण खडेहैं । स्त्रीने कहा तुम कौनहो ? और क्यों हमारे द्वारपर आयेहो ? उस ब्राह्मणने कहा मैं ब्राह्मणहूं, तुम्हारे सुदर रूपको देखकर हमारा मन काम करके व्याकुल होगयाहै हम भोग करनेकी इच्छा करके तुम्हारे द्वारपर आयेहैं तुम हमसे भोग करो । तिस स्त्रीने कहा मैं पतिव्रताहूं, फिर हमसे ऐसा शब्द मत कहना । ब्राह्मणने कहा मेरे पास बहुतसा द्रव्यहै वह सब द्रव्य हम तुमको देदेवेंगे, तुम हमसे सम्बन्ध करो हम काम करके बडे पीडित होरहेहैं, तुम्हारे आगे हाथ जोडतेहैं, तुम्हारे पाँवभी पडतेहैं, स्त्रीने कहा तुम हमारे धर्मके सम्बन्धसे पिता लगतेहो, हमारे साथ भोग करनेका संकल्प मतकरो । जब कि किसी रीतिसे भी स्त्रीने तिस ब्राह्मणका कहा नहीं माना तब वह जबरदस्ती

भीतर जानेके लिये तैयार हुवा और प्रथम उसने अपना शिर भीतर द्वारके जब किया तब स्त्रीने जोरसे दोनों किंवाडोंको बंद करदिया। उन दोनों किंवाडोंके लगनेसे तिसका शिर कटगया और वह मरगया। लोगोंने तिस स्त्रीसे तिस ब्राह्मणके मरनेका समाचार पूँछा तब तिस स्त्रीने सब कथा कह सुनाई—लोगोंने कहा यह कामदेवका महत्त्वहै। तिसके मुरदेको लेजाकर लोगोंने फूंक दिया। हे चित्तवृत्ते! यह स्त्रीरूपी विषय बडा बलीहै तुरंत पुरुषोंके चित्तको व्याकुल करदेताहै, जब कि वृद्धावस्थावाले विचारशील षट्कर्मियोंकी इसके संगसे ऐसी बुरी दशा होतीहै, तब युवावस्थावालेंकी कौन गिनतीहै॥ ७॥

हे चित्तवृत्ते! सुंदर रूपवती अप्सराको देखकर विश्वामित्र तप करना भूल गये थे और उसीके साथ भोग विलासमें मग्न होगये थे। पराशरजी मल्लाहकी कन्याके रूपको देखकर मोहित होगयेथे, नदीका रेता और दिनकी रात्रि येतो सब उन्होंने करदियाथा परन्तु कामको नहीं रोक सकेथे। इसीपर कहाभीहै—

**विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना-**
**स्तेऽपि स्त्रीमुखपंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः॥**
**शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं ये भुंजते मानवा-**
**स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विंध्यस्तरेत्सागरम्॥ १॥**

विश्वामित्र और पराशरसे लेकर जो कि मुनि पत्तोंको भक्षण करते थे वहभी सुंदर कमलके तुल्य स्त्रीके मुखको देखकर शीघ्रही मोहको प्राप्त होगये। शालि, दधि, घृत करके संयुक्त भोजनको जो पुरुष खाते हैं उनके इंद्रिय यदि अपने वशीभूत होजाँय तब तो विन्ध्याचल पर्वतभी समुद्रमें तरने लग जायगा॥ १॥

तात्पर्य यह है, जैसे विन्ध्याचल पर्वतका तैरना असंभव है, तैसे इंद्रियोंका रोकनाभी असंभव है। उसीके इन्द्रिय रुके रहते हैं जो कि स्त्रीका संसर्ग नहीं करता है, संसर्गके होनेपर रुकना कठिन है। आत्मपुराणमें कामकी प्रबलता दिखाई है:—

**कामक्रोधौ महाशत्रूदेहिनां सहजावुभौ।**
**तौ विहाय परं शत्रुं योजयेत्स तु मंदधीः॥ १॥**

जीवोंके काम और क्रोध स्वाभाविकही बडेभारी शत्रु हैं, तिनको छोडकर जो दूसरे शत्रुओंको जीतता है वह मंदबुद्धि है॥ १॥

**पितापुत्रौ महावीर्यौ कामक्रोधौ दुरासदौ ॥**
**विजित्य सकलं विश्वं वर्त्तेते जयकाशिनौ ॥ २ ॥**

पिता और पुत्र ये काम और क्रोध हैं और बडे बली हैं, सारे विश्वको जी करके जयशाली होकर संसारमें दोनों विराजमान हैं ॥ २ ॥

**कामेन विजितो ब्रह्मा कामेन विजितो हरिः ॥**
**कामेन विजितो विष्णुः शक्रः कामेन निर्जितः ॥ ३ ॥**

ब्रह्माको कामने जय करलिया, विष्णुको कामने जय करलिया, महादेवको कामने जय करलिया, इन्द्रको कामने जय करलिया ॥ ३ ॥

संसारमें कामने विना विवेकी पुरुषोंको सबको जीत लिया है। हे चित्तवृत्ते! वही पुरुष संसारमें आत्मानन्दको प्राप्त होता है जो कि कामको अपने वशीभू करलेता है। हे चित्तवृते! स्त्रीके संसर्गसे जिन पुरुषोंकी दुर्गति हुई है उनके और दो एक दृष्टांत तुमको सुनाते हैं॥

एक राजाने किसी विलायतपर चढाई की, तिस विलायतको जीतकर राजा तिसी देशमें कुछ कालतक रहगये, पीछे राजाकी रानी राजाके विना वडी काम करके व्याकुल होगई, तब वह अपने मंदिरकी खिडकीमेंसे इधर उधर देखने लगी, एक साहूकारका लडका वडा सुंदर अपने मकानपर खडा था, उसको देखकर रानीका मन मोहित होगया क्योंकि, एक तो वह युवा अवस्थावाला था, दूसरे उसका रूप भी अतिसुन्दर था, रानीने अपनी लौंडीको उसको बुलानेके लिये भेजा, लौंडीने उससे जाकर कहा-रानीसाहिबा आपको बुलाती हैं, रानीको कुछ जवाहिरात खरीदनी हैं, यह लडका सुंदर वस्त्र और भूषणोंको पहनकर रानीके पास गया और रानी तिससे बातचीत प्रेमसे करने लगी इतनेमें लौंडीने आकर रानीसे कहा राजा साहिब बाहर आगये हैं अभी थोडी देरमें भीतर आवेंगे, रानीसे तिस लडकेने कहा हमको जल्दी छिपाओ, नहीं तो हम मारे जायँगे। रानीने तिसको पाखानेके नीचेके नलमें अन्धेरेमें खडा करादिया, थोडी देरमें राजा भीतर आगये और रानीसे उन्होंने कहा हमारे पेटमें कुछ कसर होगई है हम पाखाने जायँगे, लौंडी पानी लेआई राजा साहिब पाखाने गये, राजाने जब पाखाना फिरा तब वह सब मल तिस लडकेके शिरपर और कपडोंपर गिरा तब

कपडे तिसके मैलेसे भर गये, जब राजा पाखाना होकर चले गये तब रानीनेभी तिसको निकाल दिया उस लडकेको बडी घृणा हुई और नगरके वाहर नदीपर जाके सब कपडोंको धोकर साफ करके घरमें जाकर दूसरे कपडे बदलकर वंह अपने काममें लगा । दूसरे दिन फिर रानीने लौंडीको तिसके बुलानेके लिये भेजा और लौंडीने जाकर तिससे कहा रानी साहिबा आपको बुलाती हैं, तिस लडकेने कहा एक दिन मैं रानीके पास गया और उससे केवल बात चीतही की थी तिसका फल यह हुवा जो दो घंटा मेरेको पाखानेकी मोरीमें खडा होना पडा और अपने शिरपर दूसरेको हगाना पडा, जो लोग परस्त्रीके साथ भोग विलास करतेहैं नमाल्म उनको कितने कालतक विष्ठाके नलमें खडा होना पडता होगा और कितने लोकोंको शिरपर हगाना पडता होगा, मेरेको तो वह दो घटों-का नरक भोग नहीं भूलताहै,इसलिये मैं तो फिर कभीभी रानीके पास नहीं जाऊं-गा, ऐसा जवाब लेकर वह लौंडी लौटगई । हे चित्तवृत्ते ! परस्त्रीके संगसे तो और अधिक क्लेश लोकोंको भोगने पडतेहैं । हे चित्तवृत्ते !पराई स्त्री तो क्लेशोंका हेतुहै । इसमें संदेह नहींहै परन्तु अपनी स्त्रीभी अपनेही सुखके लिये भतारसे प्रेम कर-तीहै, भतारके सुखके लिये वह प्रेम नहीं करतीहैं, यदि भतारके सुखके लिये स्त्री प्रेम करतीहै तब रोगी ऋणी नपुंसक निर्धन भतारसे भी प्रेमकरै ऐसातो संसारमें कहींभी नहीं देखतेहैं और आत्मपुराणमें ऐसा लिखाभीहै—

**दरिद्रं पुरुषं दृष्ट्वा नार्यः कामातुरा अपि ॥**
**स्प्रष्टुं नेच्छन्ति कुणपं यद्वच्च कृमिदूषितम् ॥ १ ॥**

यदि स्त्री काम करके आतुरभीहो तबभी अपने दरिद्री भर्ताको स्पर्श करनेकी इच्छाको नहीं करतीहै जैसे कृमियों करके दूषित मुरदेको कोई स्पर्शकी इच्छा नहीं कर्त्तीहै ॥ १ ॥

**ब्राह्मादिभ्यो विवाहेभ्यः प्राप्ता नारी पतिव्रता ॥**
**भर्तुर्दरिद्रस्य मृतिं वांच्छति क्षुधयार्दिता ॥ २ ॥**

ब्राह्मादि जो धर्मशास्त्रमें विवाह लिखेहैं उन विवाहों करके यदि पतिव्रता स्त्री भी किसीको प्राप्त हुईहो वह क्षुधा करके पीडित हुई दरिद्री भर्त्ताके मरनेकीही इच्छा करतीहै ॥ २ ॥ संसारमें स्त्री आदिक सब अपनेही सुखके लिये एक दूसरेसे प्रीतिको करतेहैं इसीमें तुमको हम एक और दृष्टांतको सुनातेहैं ॥ ९ ॥

एक शाहूकारका लडका नित्यही सत्संगके लिये एक महात्माके पास जा था, तिसके माता पिताको यह शोच हुआ कि,हमारा लडका वैराग्यकी बातें सुनकर कहीं भागही न जाय इस लिये जल्दी इसकी शादी कर देनी चाहि ऐसा विचार करके उन्होंने एक सुंदर रूपवती कन्याके साथ तिस्का विवाह क दिया । तवभी लडका नित्यही सत्संगके लिये उन महात्माके पास अपने वक्त वरावरही जायाकरे । विवाह होजाने परभी वह नहीं हटा, तव तिसके माता पि तिसकी स्त्रीसे कहा तूं ऐसी इसकी सेवाकर जो लडका हमारा महात्माके प जानेसे हट जाय । वह सेवा करने लगी और लडकेको तिसने अपने वशीभूत लिया तव लडका धीरे २ जानेसे हटने लगा । पहले तो नित्य जाताथा फि दूसरे तीसरे दिन जाने लगा । एक दिन स्त्रीने कहा तुम जव कि, रात्रिको चले जातेहो, तव मैं अकेली रह जाती हूं और स्त्रीका अकेला रहना अच्छा नहींहै और मेरेको अकेले रहते डरभी लगतीहै, स्त्रीकी वार्ताको सुनकर लडके बिलकुल वहांपर जाना छोड दिया। जव कि, वहुत दिन वीत गये तव एक दि महात्मा कहीं जाते थे लडका उनको रास्तामें मिलगया उन्होंने लडकेसे न आने सवव पूछा तव लडकेने कहा महाराज स्त्रीने सेवा करके मेरेको अपने वश करलियाहै, वह मेरेको वडा सुख देतीहै और मेरे विना रात्रिको दोघंटा तक भी अकेली नहीं रहसक्ती है । वह कहतीहै मैं तुम्हारे वियोगको एक क्षणमात्रभी न सह सक्तीहूं और मैं भी जानगयाहूं जो यह हमारे सुखके लिये सव वातें करतीहै इसलिये मेरा अव आना छूट गयाहै । महात्माने कहा वह अपने सुखकेलिये तुमसे प्रीति करतीहै तुम्हारे सुखकेलिये वह प्रीतिको नहीं करतीहै, यदि तुमको हमारी वातपर विश्वास न हो तव तुम एकदिन उसकी परीक्षा करो । महात्माने श्वासोंके रोकनेकी एक युक्ति तिस लडकेको वताकर कहा एकदिन तुम स्त्रीसे कहना आज हम तस्मै और चूरी दोनों खायँगे जव कि, भोजन तैयार होजाय तव तुम हमारी वताई हुई युक्तिसे श्वासोंको रोक करके लंबे पडजाना वह जानेगी यह तो मरगयाहै तव तुमको पूरी २ परीक्षा तिसके प्रेमकी होजा यगी । लडकेने घरमें आकर स्त्रीसे कहा कल हम तस्मै खायँगे तस्मै वनाना और थोडीसी चूरीभी वनाना, स्त्रीने कहा वहुत अच्छा । दूसरे दिन सवेरे उठ कर स्त्रीने तस्मै वनाई और चूरीभी वनाई जव रसोई तैयार होगई तव लडका प

जहांपर वैठाथा वहांपर दो थंभ आपसमें सटेहुए छतके नीचे लगेथे लडकेने उन दोनों थभोंके वीचमें पांवको फँसाकर स्त्रीसे कहने लगा हमारे पेटमें कुछ दर्दहै, ऐसा कहकर उसने श्वासोंको रोक लिया और लंबा पड गया। स्त्रीने जब कि, चौकासें उठ करके तिसको देखा तब तिसके श्वांस बंद थे स्त्रीने जाना यह तो मर गयाहै यदि मैं अभीसे रोना पीटना शुरू करतीहूं तवतो मैं दिन रात भूखी मरूंगी और तस्मैभी खराव होजायगी इसवास्ते तस्मैको खा लेऊं और चूरीको ऊपर छीकेके रख छोड़ूं ऐसा विचार करके स्त्रीने तस्मैको खा लिया और चूरीको धरकर रोना पीटना शुरू किया। इतनेमें अडोस पडोसके लोक सब आगये और उन्होंनें पूँछा कैसे मर गया? तब स्त्रीने कहा इसके पेटमें दर्द पडीथी उसीसे मर गयाहै। लोकोंने कहा अब देर मत करो जल्दी इसको श्मशानमें लेचलो जब कि, तिसको उठानें लगे तब तिसका एक पांव दोनों थंभोंके वीचमें फँसा हुवा न निकला तव लोकोंने कहा एक थंभको काटकर पाँवको निकाल लीजिये स्त्रीने कहा ऐसा मतकरो थंभ कटजायगा तव कौन फिर मेरेको वनवादेगा इसलिये थंभको मत काटिये पाँवकोही काट दीजिये क्योंकि, पाँवको तो जलानाहीहै। जब कि,पाँवको काटने लगे तुरंत वह उठकर वैठगया और कहने लगा हमारे पेटका दर्द अब जातारहा लोक सब अपने २ घरोंको चले गये लडकेने सब हाल आकर महात्माको सुनाया महात्माने कहा हम जो कहतेथे वही सत्य हुवा अब तो तेरेको इस विषयमें कुछ संदेह नहीं, लड़केने कहा महाराज अब तो मेरेको कुछभी संदेह नहींहै। आपका कहना ठीकहै। अपनेहीं सुखके लिये स्त्री पतिसे प्रेम करतीहै पतिके सुखके लिये स्त्री पतिसे प्रेमको नहीं करती है। हेचित्तवृत्ते! उसीदिनसे उस लडकेनें स्त्रीका त्यागकरदिया और परम वैराग्यको प्राप्त होकर महात्माके पासही रहने लग गया॥ ९॥

इसी वार्त्ताको याज्ञवल्क्यजीनेभी मैत्रेयके प्रति बृहदारण्यक उपनिषद्में कहाहै। जिसकालमें जीवन्मुक्तिके सुखके लिये याज्ञवल्क्यजी गृहस्थाश्रमको छोडकर संन्यासाश्रमको जाने लगे तव तिस कालमें उन्होंने अपनी दोनों भार्या-ओंसे कहा कि, हम अब इस आश्रमको छोडना चाहतेहैं, जितना कि, हमारे पास द्रव्यहै उसको तुम दोनों आपसमें आधा २ बांट लेवो,उन दोनों भार्याओंमेंसे

एकका नाम कात्यायनी था, दूसरीका नाम मैत्रेयी था । कात्यायिनीने तो आ हिस्सा धनका लेलिया, मैत्रेयीने कहा भगवन् ! इस धनको लेकर मैं संसारसे मु होजाऊंगी ? याज्ञवल्क्यने कहा जैसे और धनवान्, जीवनको व्यतीत करतेहैं तूभी जीवनको व्यतीत करेगी । धन करके तो मोक्षकी संभावनामात्रभी न होती है तब मैत्रेयीने कहा जिस वस्तुके पानेसे मैं मुक्त होजाऊं उसको मेरे दीजिये मैं धनकी इच्छा नहीं करतीहूं। याज्ञवल्क्यजी मैत्रेयीके प्रति उप करते हैं ॥

**न वारे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति ।**
**आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति ॥ १ ॥**

अरे मैत्रेयि ! पतिकी कामना करके पति स्त्रीको प्यारा नहीं होताहै कि अपनी कामनाके लिये पति स्त्रीको प्यारा होताहै ॥ १ ॥ यदि पतिकी काम करके स्त्रीको पति प्यारा हो तब नपुंसक रोगी निर्धन होनेसेभी पति स्त्री प्यारा होना चाहिये, ऐसा तो नहीं देखतेहैं इसलिये पतिकी कामनाके लि पति प्यारा नहीं होताहै ॥ १ ॥

**न वारे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति।**
**आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति ॥ २ ॥**

अरे मैत्रेयि! जायाकी कामनाके लिये पतिको जाया प्यारी नहीं होतीहै कि अपनी कामनाके लिये जाया पतिको प्यारी होतीहै । यदि जायाकी कामनाके लि पतिका जायामें प्रेम हो तब लडाकी कुपित व्यभिचारिणी रोगीमेंभी प्रेम हो ऐ तो नहीं है इसीसे सिद्ध होताहै अपने सुखके लिये पतिका जायामें प्रेम हो है ॥ २ ॥

**न वारे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवंत्या-**
**त्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवंति ॥ ३ ॥**

अरे मैत्रेयि! पुत्रोंकी कामनाके लिये माता पिताका पुत्रोंमें प्रेम नहीं होत किंतु अपने सुखके लिये पुत्रोंमें प्रेम होताहै, यदि पुत्रकी कामनाके लिये प्रेम तब कुपात्र पुत्रमेंभी प्रेम होना चाहिये ऐसा तो नहीं देखतेहैं,इसलिये पुत्रकी का नाके लिये माता पिताका पुत्रमें प्रेम नहीं होता ॥ ३ ॥ हे मैत्रेयि! संसारके जित पदार्थमें पुरुषोंका प्रेम होताहै अपने आत्माके सुखके लिये होताहै, इसीसे लि

होताहै सबसे अतिप्रिय अपना आत्माहींहै और सुखरूपभी आत्माहींहै, आत्मके सुखके लिये पुरुष स्त्री पुत्रादिक विषयोंमें प्रेम करताहै, वास्तवसे उनमें सुख नहीं है, यह दुःखरूपहैं, सुखरूप आत्माहींहै, इसप्रकार याज्ञवल्क्यने मैत्रेयीको उपदेश करके तिसकोभी जीवन्मुक्त करदिया ॥ १० ॥

११ हे चित्तवृत्ते! शुकदेवजीनेभी स्त्रीरूपी विषयकी निंदा कीहै, यह कथा देवीभागवतमें आतीहै। जिस कालमें व्यासभगवानने शुकदेवजीको विवाह करनेके लिये कहाहै उसकालमें शुकदेवजीने स्त्रीके संगसे जो दोष होतेहैं उनको दिखाया है। उनकोभी सुनो—

**कदाचिदपि मुच्येत लोहकाष्ठादियंत्रितः ॥**
**पुत्रदारैर्निबद्धस्तु न विमुच्येत कर्हिचित् ॥ १ ॥**

लोह काष्ठादिकी बेडी जिसके पाँवमें पडजातीहै उससे कदाचित् यह पुरुष किसी कालमें छूटभी सक्ताहै, परंतु स्त्री—पुत्रादिकोंके मोहरूपी बेडीसे पुरुष कभीभी छूट नहीं सक्ताहै ॥ १ ॥

**अधीत्य वेदशास्त्राणि संसारे रागिणश्च ये ॥** अश्व = घोडा।
**तेभ्यः परो न मूर्खोऽस्ति सधर्माः श्वाश्वसूकरैः ॥ २ ॥**

जो पुरुष वेद और शास्त्रोंका अध्ययन करके फिरभी स्त्रीपुत्रादिरूप संसारमें रागवान्हैं। उनसे बढकर और कोईभी मूर्ख नहींहै क्योंकि स्त्रीपुत्रादिरूप संसारमें रागवान् तो कूकर सूकर आदिकभी हैं, तिसको वेद शास्त्रका क्या फल हुवा किंतु कुछभी नहीं ॥ २ ॥

**गृह्णाति पुरुषं यस्माद्गृहं तेन प्रकीर्तितम् ॥**
**क्व सुखं बंधनागारे तेन भीतोस्म्यहं पितः ॥ ३ ॥**

शुकदेवजी कहतेहैं। हे पिता! जिस हेतुसे गृहस्थाश्रम पुरुषको ग्रहण करलेताहै इसी हेतुसे इसका नाम गृह रक्खा है इस गृहस्थाश्रमरूपी कैदखानेमें सुख कहाँहै? जिस हेतुसे इसमें सुख नहींहै इसीसे मैं भयभीत हुवा हूं ॥ ३ ॥

**मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य वेदशास्त्राण्यधीत्य च ॥**
**बध्यते यदि संसारे को विमुच्येत मानवः ॥ ४ ॥**

दुर्लभ मनुष्यशरीरको प्राप्तहोकर और वेदशास्त्रका अध्ययन करके फिरभी यदि संसारमें बंधायमान होजाय तब फिर संसार बंधनसे छूटेगा कौन? ॥ ४ ॥

इन्द्रोपि न सुखी तादृग्यादृग्भिक्षुस्तु निःस्पृहः ॥
कोऽन्यः स्यादिह संसारे त्रिलोकीविभवे सति ॥ ९ ॥

शुकदेवजी कहतेहैं कि, जैसा निःस्पृह भिक्षु सुखी है वैसा इन्द्रभी सुखी नहीं है, त्रैलोकीके विभव होने पर जब इन्द्रभी निःस्पृह भिक्षुके तुल्य सुखी नहीं है तब दूसरा कौन सुखी होसक्ताहै ? किंतु कोईभी नहीं होसक्ताहै ॥ ९ ॥ ऐसे वाक्योंको कहकरके शुकदेवजी वनको चले गये । विवेकाश्रम कहतेहैं—हे चित्तवृत्ते! यदि स्त्री भोगमें सुख होता तब शुकदेवजी तिसका त्याग क्यों करते, जिस हेतुसे शुकदेवजीने विवाहही नहीं किया था इसीसे सिद्ध होताहै कि, स्त्रीके साथ भोगमें सुख नहींहै ॥ ११ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयमें एक और लौकिक दृष्टांत तुमको हम सुनातेहैं- एक ग्रामके बाहर एक महात्मा रहतेथे वहांपर उनके पास बहुतसे लोक सत्संग करनेके लिये जातेथे, एक महाजनका लडकाभी उनके पास नित्यही जाताथा, एक दिन लडका कुछ देरमें महात्माके पास गया तब महात्माने कहा आज तुम देर करके कैसे आयेहो ? लडकेने कहा आज हमारी सगाई हुईहै, सुसरालसे तिलक चढनेको आयाथा इसालिये देर होगई है, महात्माने कहा आजसे तुम हमारे कामसे गये, फिर कुछ कालके पीछे लडका चार पांच दिन नागा करके महात्माके पास गया तब उन्होंने पूछा चार पांच दिन क्यों नहीं आया? तब लडकेने कहा हमारी शादी हुईहै उसीकाममें हम बँधेरहे और इसीसे मेरा आना नहीं हुवाहै । महात्माने कहा आजसे तू माता पिताके कामसे भी गया, फिर एक दिन लडका कुछ देर करके उनके पास गया, फिर उन्होंने देर करके आनेका कारण पूँछा तब लडकेने कहा आज हमारे घरमें लडका उत्पन्न हुवाहै इसीसे आनेमें देर होगईहै, तब महात्माने कहा आजसे तुम अपने कामसे भी गये । लडकेने कहा महाराज ! पहले जब कि, आपने मेरी सगाई होनेका हाल सुनाथा तब आपने कहा था तुम आजसे हमारे कामसे गये, फिर विवाहका सुनकर कहाथा माता पिताके कामसे गये, आज लडकेकी उत्पत्तिको सुनकर आपने कहा अब तुम अपने कामसेभी गये इसका मतलब मैंने कुछ नहीं समझा इसका मतलब मेरेको समझा दीजिये । महात्माने कहा जबतक तुम्हारी सगाई नहीं हुईथी तबतक तुमको कोई

चिंता न थी क्योंकि, तुम तिस कालमें गृहस्थी नहीं कहलातेथे और जो कुछ तुम कमातेथे उसमें कुछ हमारी सेवाभी करतेथे, कुछ माता पिताकी सेवाभी करतेथे । सगाईके होनेपर विवाहकी चिंता पडी, तब तुम जो कुछ कमाते सो विवाहके लिये जमा करते, कुछ माता पिताकी भी कभी २ सेवा करदेतें थे, जब कि विवाह होगया तब फिर जो तुम कमाते सो स्त्रीके अर्पण करते; तब माता पिताके कामसे गये, जबतक लडका नहीं हुवाथा तब तक जो तुम कमातेथे उसको स्त्रीके साथ मिलकर आप भोगतेथे, अब जो तुम कमावोगे सो सब लडकेके लालन पालनमें खर्च होगा इसलिये अब तुम अपने कामसेभी गये और पूरे गृहस्थ होगये याने ग्रसे गये और कैदमें पडगये ॥ १२ ॥

हे चित्तवृत्ते ! स्त्री बंधनका हेतुहै, इसी स्त्रीके पीछे सुन्द और उपसुन्द दोनों परस्पर लडकर मर गये । नहुष राजाको स्त्रीभोगके पीछे स्वर्गसे गिरना पडा । एक स्त्रीके पीछे बाली मारा गया और रावणकाभी सारा घर स्त्रीके पीछेही चौपट होगया । शिशुपालका वधभी स्त्रीके पीछे हुवा और स्त्रीके पीछे महाभारत हुवा, जिसमें कि बडे २ शूर वीर भीष्म और कर्णादिक सब स्वाहा होगये और हजारों राजा स्वयंवरोंमें परस्पर कटकर मर गये हैं अर्थात् महान अनर्थों का कारण स्त्री है । साँप जब काटताहै तब पुरुष मरताहै, परन्तु स्त्रीके रूपका चिन्तन करनेसेही पुरुष मर जाताहै, विष खानेसे एक ही जन्ममें पुरुष मरताहै स्त्रीरूपी विषके सम्बन्धसे अनेक जन्मोंमें जन्मता मरताही रहताहै, इसलिये स्त्रीही बंधनका हेतुहै । जिस पुरुषने इसका त्याग करदियाहै व स्वप्नमेंभी जो इसका स्मरण नहीं करताहै, उसने मानो संसारकाही त्याग करदियाहै, वही आत्मानंदको प्राप्त होताहै । हे चित्तवृत्ते ! जैसे स्त्री दुःखका कारणहै, तैसे पुत्रभी दुःखका कारणहै, अब दूसरी विषयमें तुमको एक दृष्टांत सुनातेहैं ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक बनियां बडा धनी था परंतु तिसके घरमें पुत्र नहींथा, पुत्रकी उत्पत्तिके लिये तिसने बहुतसे यत्न किये तबभी तिसके घरमें पुत्र उत्पन्न नहीं हुवा । एक दिन रात्रिके समय यह स्त्रीके साथ पलंगपर सोयाथा इतनेमें तिस की स्त्रीने कहा यदि परमेश्वर हमको एक लडका देदें तब तिसको हम कहांपर सुला-वेगी बनियांने कहा तिसको हम बीचमें सुलावेंगे, ऐसा कहकर थोडासा पीछे हटा, फिर स्त्रीने कहा यदि परमेश्वर एक और लडका देदें तब तिस्को कहां सुलावेंगे

वनियां थोडासा पीछे हटकर वोला तिसकोभी वीचमेंही सुलावेंगे, फिर स्त्रीने कह यदि परमेश्वर एक और लडका देदें तव तिसको कहां सुलावेंगे ज्योंहीं वनियां पीछेको हटने लगा त्योंही तडाकसे नीचेको गिरा और तिसकी टँगडी टूटगई तवतो वनियां रोने लगा और इधर उधरसे लोकभी पहुँच गये। लोकोंने वनियांसे पूँछा किसने तुम्हारी टंगडी तोडदी, वनियांने कहा विना हुए लडकेने हमारी टंगडी तोडदी, यदि सच्चा उत्पन्न होता तव न माल्रूम क्या उपद्रव कर्त्ता, हे चित्तवृत्ते! पुत्रभी दोनों प्रकारसे दुःखकाही कारणहै। जिन्के पुत्र नहींहै, वह तो पुत्रवालोंको देख करके इसीमें दुःखी रहते हैं, जो हमारा द्रव्य क्याजाने कौन लेगा, हम वडे अभागेहैं, जो हमारे पुत्र नहींहै और ये वडे भाग्यशालीहैं, क्योंकि इनके पुत्रहैं। गरीवोंसे धनवानोंको पुत्रके न होनेका वडाभारी संताप होताहै और वह उसी संतापमें रात्रि दिन जलते रहतेहैं और जो कदाचित् उनके पुत्र होकर मरजाताहै तव साथही उसके उनकाभी मरणही होजाताहै और जिनके पुत्र तो है परंतु कुपात्रहै उनको और न होनेवालोंसेभी अधिक संताप होताहै, जिसके सुपात्र पुत्रहै उसको तिसके न जीनेकीही चिंता रात्रि दिन लगी रहितीहै, फिर तिसके विवाहकी चिंता रहती है तिसकी संतानकी चिंता रहती है और हजारों चिंता पुत्र वालोंकोभी वनी रहतीहैं, फिर जिनके पुत्र होहो करके मृत्यु होजातेहैं उनको वडी चिंता रहतीहै। जिनके विवाहे हुवे पुत्र मरजातेहैं उनको तो जन्मभर पुत्रके शोकमें रोनाही पडताहै। हे चित्तवृत्ते! इसीलिये पुत्रभी महान् दुःखोंकी खान है ॥ १३ ॥

हे चित्तवृत्ते! इस लोकमेंही पुत्र दुःखसे नहीं छुडा सक्तेहैं तव मरे पीछे क्या छुडावेंगे, केवल धनके लेनेके वास्तेही उत्पन्न होतेहैं, इसीमें तुमको एक और दृष्टांत सुनातेहैं:—

एक नगरमें एक वडा भारी कोई साहूकार रहताथा तिसके पाँच पुत्र थे, जव कि, वह साहूकार बूढा होगया तव तिसके सव द्रव्यको पुत्रोंने अपने कब्जेमें करलिया और पितासे कहदिया आप डेवढीमें वैठे रहा करिये और भोजन: चौकेमें :जाकर कर आया करिये और किसी कामसे सरोकार न रखिये और किसी गैर आदमीको मकानके भीतर न आने दीजीये इतनाही काम आपके जिम्मे रहेगा। पिताने लडकोंकी वातको मानलिया कुछ दिन अब बीते तव तिसके पुत्रोंकी स्त्रियोंने अपने पतियोंसे कहा तुम्हारे पिताके डेव-

डीमें बैठे रहनेसे हमको भीतर बाहर जानेसे बडी दिक्कत होतीहै और रास्ताभी सब थूक करके बिगाडे देतेहैं और जब कि, चौकामें रोटी खानेको आतेहैं तब थूक २ के चौकेकोही भ्रष्ट करदेतेहैं और अभी इसके मरनेकाभी कुछ ठिकाना नहीं लगताहै, क्या जाने यह कब मरेगा ? हमको तो इसने बडा तंग कियाहै अब आप ऐसा करिये अपने पिताको कोठेके ऊपरवाला जो कमराहै उसमें रखिये वहांपर पाखाना और पेशाबकी जगहभी पासहै और थूकनेकाभी आराम होगा, जहां चाहे वहाँ थूका करै और एक घंटी इनके पास धर दीजिये जब कि इसको भूँख प्यास लगे तब उस घंटीको यह हिला दिया करै उसी जगहमें हम अन्न पानी इसको पहुँचा देंगी। लडकोंने विचारा यह तो अच्छी सलाह है इसमें पिता-जीको बडा आराम रहेगा और घरके लोकोंकोभी आराम रहेगा। लडकोंने बापको समझा बुझाकर सबसे ऊपरके कमरेमें उनका डेरा लगा दिया, अब वह बूढे उसी जगहमें रहने लगे। जब कि भूँख लगती या प्यास लगती तब घंटीको हिला देते अन्न और जल उनको उसी जगहमें पहुंच जाता, जब कि उनको ऊपर रहते कुछ दिन बीते, तब एक दिन उनका छोटासा पोता ऊपर उनके पास चला गया और उस घंटीसे वह खेलने लगा वहभी तिससे लाड प्यार करनेलगे। थोडी देरके बाद वह लडका घंटीको लिये हुवे नीचे उतर आया पीछे जब उनको भूँख प्यास लगी तब देखें तो घंटी नदारदहै आवाज निकलता नहीं नीचे उतरनेकी शरीरमें ताकत नहीं। अब वह क्याकरें अब सिवाय शोकके और क्या होसक्ता है ? तब अपने मनमें बार२ कहतेहैं हमने व्यर्थ आयु खो दी, जिन पुत्रोंको बडे कष्टसे पाला, वह तो सब धनको लेकर अलग होगयेहैं अब कोई जलभी नहीं देताहै अब कोई उपायभी नहीं बनता, बस ऐसा सोच करते २ थोडी देरमें वह यमपुरमें पहुँच गये। रात्रिको जब लडके घरमें आये तब उन्होंने स्त्रियोंसे पूंछा लालाको खाना दाना ऊपर पहुंच गयाहै ? उन्होंने कहा आज तो घंटीकी आवाज सुनाई नहीं पडी मालूम होताहै उनको आज भूँख प्यास नहीं लगीहै। लडकोंने जब ऊपर जाकर देखा तो काम तमामथा, फिर लाला२ करके रोने लगे और तुरंत श्मशानमें लेजाकर फूंकफांक दिया. हेचित्त-वृत्ते ! जो पिता अनेक कष्टोंको उठाकर पुत्रकी पालना करताहै वही वृद्धाव-स्थामें पुत्रोंको ग्रहरूप करके प्रतीत होने लगताहै और पुत्र पौत्र सब तिसके

मरणकाही चिंतन करतेहैं, न तो कोई प्रीतिसे सेवा करताहै और न कोई कष्टमें सहायक होताहै, केवल द्रव्यको लेनाही जानतेहैं, तबभी मूर्ख लोक पुत्रोंमें मोहका त्याग नहीं करतेहैं ॥ १४ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांतको सुनो—एक बूढेको तिसके पोतेनें किसी वार्त्ता पर दो तीन लात मारे और घरसे बाहर करदिया, तब वह बूढा अपने द्वारपर बैठ कर रोताभी जाय और पोतेको गालीभी देता जाय इतनेमें एक महात्मा उस रास्तेसे आनिकले, उन्होंनें बूढेसे पूँछा बाबा क्यों रोतेहो क्या कोई तुमको दुःखहै ? बूढेने कहा हमारे पुत्र पौत्र सब बडे नालायक हैं, हमारे सब धनको अपने काबूमें करके अब हमको अच्छा खानेकोभी नहीं देतेहैं, मैं बोलताहूं तब दौडकर मारने लगते हैं, आज हमको पोतेने लातोंसे माराहै, इसीवास्ते मैं अब दुःखी होकर रोताहूं और गाली भी देताहूं सिवाय इसके और मेरेसे कुछ बन नहीं पडताहै । महात्माने कहा बाबा ये पुत्र पौत्र तो सब अपने २ सुखके यार हैं, जबतक तूं इनको सुख देता रहा तब तक ये सब तेरी खातिर करते रहे, अब तुम इनको सुख देने लायक नहीं रहे, अब ये सब तुम्हारा निरादर करतेहैं, संसारमें सब कोई अपने सुखके लिये एक दूसरेसे प्रीति करतेहैं, जिस कालमें जिसको जिससे सुख नहीं मिलता उस कालमें तिसका वह त्याग कर देताहै या तिस्का तिरस्कार कर देताहै बाबा इन सबका त्याग करके अब तुम हमारे साथ चलो और बाकी आयुको परमेश्वरके भजनमें व्यतीत करो, जो तुम्हारा परलोकभी बनजाय, इस मोह मायाका त्याग करके जल्दी उठो, अब देर करनेका समय नहींहै । बूढेने कहा आपको किसने चौधरी बनाया है, जो हमसे घरको और सम्बन्धियोंके छोडनेका उपदेश करने लगेहैं, वह हमारा पोता हम उसके दादे, तुम कौन हो जो उपदेश करनेको खडे होगयेहो, पोता हमारा जीता रहे हमको पडा मारे, बालक मारतेभीहैं, तब क्या कोई उनके मारनेके पीछे अपना घर छोड देताहै, जो आप हमको घर छोडनेका उपदेश करतेहैं । महात्मा कहने लगे देखो मोहकी महिमा ऐसी दुर्दशा होने परभी मूर्खोंको सम्बन्धियोंसे और गृहसे वैराग्य नहीं होता है, महात्मा ऐसे कहकर चले गये ॥ १९ ॥

हे चित्तवृत्ते! पुत्रकेही विषयमें एक और दृष्टांत तुमको सुनातेहैं—

एक नगरमें एक साहूकार बडा धनी था, तिसके चार लडकेथे जब कि, वह चारें लडके दूकानका काम सँभालने लायक होगये तब साहूकारने थोडा २ धन उनको देकर अलग दुकानें करादीं और बाकी धनको जिस कमरेमें वह रहताथा उस की दीवारोंके भीतर धरकर ऊपरसे चुनवा कर गच करवा दिया, दैवगतिसे थोडे दिनके पीछे वह बीमार होगया और एकदमसे तिसकी जबान बंद होगई तब बिरादरीके लोक और यार मित्र तिस्को देखने आये और तिसकी बुरी हालतको देखकर लोकोंने तिससे कहा अब अंतका समय है कुछ दान पुण्य करिये, तब बनियेंने कमरेकी दीवारोंकी तरफ हाथ किया उसका मतलब यह था जो इनमें धन गड़ाहै निकालकर दान पुण्य करावो, लडके तिसके तात्पर्यको समझ गये जो इसने हमसे छिपाकर इन दीवारोंमें धनको गाडाहै, तब लडके कहने लगे लाला कहताहै जो कुछ कि मेरे पास था वह सब तो मैंने दीवारों पर लगा दिया अब दान कहाँसे करूं। लोकोंने कहा ठीक कहताहै तब बनिया माथेपर हाथ धरकर रोनेलगा, लडकोंने कहा लाला रोओ मत, हम तुम्हारे पीछे सब काम अच्छी तरहसे चलावेंगे। इतनेमें बनियांके प्राण परलोकमें पहुँच गये। उठा कर लडकोंने फूकफाँक दिया, मनकी मनमेंही रहगई। हे चित्तवृत्ते! जिन पुत्रोंके लिये सैकडों अनर्थोंको करके धनको कमातेहैं और लाखों रुपइयोंका धन उनको देजातेहैं उन पुत्रोंका यह हालहै फिरभी मूर्ख लोक पुत्रोंमें मोहको नहीं त्यागतेहैं इसीसे बार २ जन्मते मरतेहैं॥ १९॥

हे चित्तवृत्ते! एक और दृष्टांतकोभी सुनो—एक कालमें नारदजी अपने शिष्य तुम्बुरुको साथ लेकर पृथ्वीपर पर्यटन करने लगे। एक नगरमें जाकर नारदजी बाजारमें एक पीपलका वृक्षथा तिसके थडेपर बैठ गये, साथ उनका शिष्य तुंबुरुभी बैठगया। जहांपर नारदजी बैठेथे, इनके सामनेही एक बनियांकी दूकान थी, उस दूकानके आगेसे एक कसाई बहुतसे बकरोंको लेकर अपने रास्तोंसे चला जाताथा उन बकरोंमेंसे एक बकरा कूदकर बनियांकी दूकानके भीतर चला गया और अनाजके ढेरमेंसे उसने एक मुँह मारा, बनीयांने उस बकरेके मुखसे दाने निकास लिये और तिसको गर्दनसे पकडकर कसाईके हवाले किया और कसाईसे कहा जब कि इसको हलाल करोगे तब इसकी गर्दनका मांस मेरेको देना

कसाई बकरेको लेकरके जब चला तब नारदजी इस वृत्तांतको देखकर हँसे तब तुंबुरुने नारदजीसे पूँछा महाराज हँसनेका कारण क्याहै ? नारदजीने कहा जिस बकरेने इस बनियांकी दूकानमें घुसकर अनाजसे मुख भराथा वह बकरा पूर्वजन्म में इस बनियेंका पिता था इस दूकानमें जाने आनेका तिसका अभ्यास पडाथा इसी से वह कूदकर इसी दुकानमें गया और एक मुट्टी अनाजकी उसने अपने मुखमें ली उसको भी तिसके बेटेने खाने न दिया, किंतु तिसके मुखसे निकास लिया और यह भी कसाईसे कह दिया जब इसको मारोगे तब इसकी गर्दनका मांस मेरेको खानेके लिये देना । जिस बनियेंने बडी २ देवतोंके आगे मानतें मानकर पुत्रको पायाथा, उस पुत्रने एक मुट्टी अन्नकीभी तिसको खाने न दी इसी वार्त्ताको देखकर हम हँसेथे. नारदजी कहतेहैं—जिन पुत्रोंसे किसीको सुखका लेश मात्रभी प्राप्त नहीं होताहै मूर्खलोक उन्हींकी उपासना करतेहैं अपने कल्याणके लिये एक छणभरभी निष्काम होकर ईश्वरका आराधन नहीं करतेहैं यदि कोई घडी दो ईश्वरका स्मरण करताभीहै तबभी वह पुत्रोंके सुखके लियेही करताहै जो मेरे पुत्रादिक सब बने रहें अपने कल्याणके लिये नहीं करताहै इससे बढकर और क्या अज्ञान होगा ? ॥ १७ ॥

हे चित्तवृत्ते ! जिन धनियोंके पुत्र नहीं होतेहैं वह किसी दूसरेके पुत्रको गोदमें लेकर सब धन उसको दे देतेहैं, अपनें उद्धारके लिये कुछभी नहीं खर्च करतेहैं या जन्मभर इसी दुःखमें संतप्त रहतेहैं । एक महात्मा अपने शिष्योंको साथ लेकर भिक्षाके लिये एक सेठकी दूकानपर गये और तिस सेठसे भिक्षा करनेको कहा और वह सेठ बडे भारी गदले पर बैठाथा सोने चांदी और हीरे पन्नोंका ढेर तिसके आगे लगाथा सेठने नौकरसे कहा इनको भीतर लेजाकर भिक्षा करादेवो । यह महात्मा भीतर जाकर जब भिक्षा करनें लगे तब एक शिष्यने गुरूसे कहा महाराज ! आप कहते हैं कि, संसारमें सुखी कोई नहींहै, देखो यह सेठ कैसा सुखी है,लक्ष्मी इसको नृत्तकारी कर रहींहै । गुरूनें कहा चलती दफा इससे सुखकी वार्त्ता पूँछकर तुमको बतावेंगे । जब भोजन करके महात्मा बाहरको आये तब सेठसे पूंछा तुम तो बडे सुखी प्रतीत होतेहो सेठ रोकर कहने लगा मेरे बराबर संसारमें कोईभी दुःखी नहीं है, परमेश्वरने मेरेको बहुतसा धन दियाहै परंतु पुत्रके बिना सब धन व्यर्थहै, मेरेको यही बडा भारी दाह होरहाहै, जो मेरे पीछे

इस धनको कौन खायगा। गुरूने चेलेसे कहा तुम कहतेथे यह बडा सुखीहै यह तो सबसे दुःखी निकला। अब चलो यहांसे, ऐसे कहकर महात्मा चलेगये। हे चित्तवृत्ते! पुत्र न हुवा हुवा भी तो दुःखकोही देताहै॥ १८॥

हे चित्तवृत्ते! पुत्र सम्बन्धी वासनाभी परम दुःखकाही कारणहै इसलिये विवेकी पुरुषको उचितहै जो इन मलिन वासनाकाभी त्यागही करदेवे। हे चित्तवृत्ते! यह जो परिवारका मोहहै, यह बडा दुःखदाई है, विवेकी पुरुष मोहके हटानेके लिये स्त्री पुत्रादि परिवारका त्याग करदेतेहैं, अब इसी विषयमें तुमको एक दृष्टांत सुनातेहैं—

एक नगरमें एक बनियां बडा धनिक रहताथा तिसकी स्त्री नवयौवना बडी रूपवती थी, दैवयोगसे तिसकी स्त्री किसी रोगसे बहुत बीमार होगई अर्थात् उसके बचनेकी कुछ भी उम्मेद न रही, तब वह बनियां स्त्रीके समीप बैठकर बडा रोदन करने लगा। स्त्रीने कहा तुम क्यों रोदन करते हो मेरे मरनेके पीछे तुम तो अपना और दूसरा विवाह भी करलेयोगे, दुःख तो मेरेकोहै जैसे मैं बिनाहीं सांसारिक सुखके देखे मरजाऊंगी। बनियांने कहा मैं दूसरा विवाह नहीं करूंगा, स्त्रीने कहा इस बातको मैं नहीं मान सक्ती, जो धनी होकर फिरभी दूसरा विवाह न करै। बनियांने मोहके वशमें होकर अपनी इन्द्री को काट डाला और कहा अब तो तू मानैगी स्त्री चुप हो गई। दैवयोगसे वह धीरे २ अच्छी होगई बनियांको फिर बडा भारी दुःख हुवा, क्योंकि स्त्री पुरुषकी इच्छा करै और बनियांके पास अब वह बात न रही जिससे कि तिसको प्रसन्न करै, तब तिसकी स्त्री परपुरुषोंके साथ खराब होनेलगी, बनियां रात्रि दिन ईर्षा संतापसे जलता रहे, एक दिन दैवयोगसे गुरू नानकजी और भाई मरदाना तिस नगरमें आ निकले, तिस सेठकी विभूतिको देखकर भाई मरदानाने कहा गुरूजी यह सेठ तो बडा सुखी दीखता है। गुरूजीने कहा ऊपरसे सुखी दीखताहै परंतु भीतर कुछ न कुछ इसकोभी जरूर दुःख होगा, देखो तुम्हारे सामने हम इससे पूँछतेहैं, गुरूजीने जब उस सेठसे सुख पूँछा तब उसने अपने दुःखका सब हाल कह सुनाया। गुरूजीने भाई मरदानासे कहा इस गृहस्थाश्रममें रहकर कोईभी सुखी नहींहै अज्ञानी पुरुषोंको तो विषय अप्राप्ति कालमेंभी दुःखदाई होतेहैं, और विवेकी पुरुषोंको प्राप्तिकालमेंभी दुःख दाईही दिखाई पडतेहैं, यह मोहही पुरुषोंको दुःख देताहै इसका त्यागही सुखका हेतुहै॥ १९॥

हे चित्तवृत्ते ! यह द्रव्यभी अनर्थोंकाही कारणहै और अनर्थों करकेही सं[illegible] भी होताहै और संग्रह हुआ २ भी दुःखकोही देताहै क्योंकि एक तो इसकी [illegible] करनेमें बडा कष्ट होताहै, फिर धनके लोभसे चोर मारभी डालतेहैं, यदि चोरों[illegible] धनको लेकर जीताभी छोड दिया तब तिस धनके चले जानेके रंजसे आपही [illegible] जाताहै, फिर धनी लोकोंका परस्पर विरोधभी अधिक रहताहै, विवेकी पुरु[illegible] इसको दुःखका कारण जानकर इससे अलगही रहतेहैं । हे चित्तवृत्ते! चार पुरुष रास्तामें चले जातेथे आगे रास्तामें एक अशरफियोंकी थै[illegible] पडीथी चारोंने मिलकर उठाली एक वगीचामें जाकर उन्होंने आपसमें बांट[illegible] की सलाहकी तब एकने कहा भूख लगीहै दो आदमी ग्राममें जाकर दो रुपइयाक[illegible] मिठाई लेआवो उस मिठाईको खाकर बाँटेंगे और सगुनभी होजावेगा । दो आदमी मिठाई लेनेको जब गये तब उन्होंने आपसमें सलाह की कि, मिठाईमें विपको डालकर लेचलो जिससे कि वह खातेही मरजाँय और सब धनको हमहीं दोनोंजने आधा १ बांट लेवें । इधर तो यह विप डालकर मिठाई लेचले और उधर उन्होंने यह सलाह की कि, जब वह मिठाई लेकर आवें दूरसे आते हुवोंको गोलियोंसे मारकर सब धन हमहीं दोनों आपसमें बाँट लेवेंगे, ज्योंहीं वह दोनों मिठाई लिये हुवे आते उनको दिखाई पडे त्योंही उन्होंने गोलियोंको दागा, वह दोनो मरगये तब उन्होंने कहा मिठाईको खाकर बाँटेंगे । ज्योंहीं उन दोनोंने मिठाईको खाया त्योंही वह दोनोंभी मरगये और वह मोहरोंकी थैली उसी जगहमें पडी रही । हे चित्तवृत्ते! हजारों लाखों इस धनके ऊपर मरगये धन किसीकाभी न हुवा ॥ २० ॥

हे चित्तवृत्ते! यह राज्यभी महान् अनर्थोंका कारणहै, और दुःखका हेतुहै । प्रथम तो राजाको नित्यही शत्रुओंसे भय बना रहताहै दूसरा चोरोंसे भय रहताहै, तीसरा सम्बन्धियोंसे भी भय बना रहताहै, जो राज्यके लोभसे कोई धोखा देकर मार न डाले, फिर अपने पुत्रोंसे और भाइयोंसेभी भय बना रहताहै, क्योंकि राज्य के लोभसे पुत्र और भाईभी राजाको विप देकर मार डालतेहैं । दुर्योधनने विप दियाथा औरभी बहुतोंने विप देकर राजाको मार डालाहै इन्हीं दुःखोंसे राजोंको रात्रिमें निद्राभी ठीक नहीं आतीहै और न वह रात्रिभर एकही पर्यंक पर सोतेहैं । केकयीने पुत्रके राज्यके लोभसे रामजीको वनवास करादियाथा, सुग्रीवने बालिको मरवा दियाथा, कंसने देवकीके पुत्रोंकी हत्या करडाली, दुर्योधनने राज्यके लोभसे

अपने वंशकाही उच्छेदन करदिया और राजमदभी सैकडों अनर्थोंको करताहै जिसका फल फिर अंतमें राजाको नरक भोगना पडताहै । इसीवास्ते शास्त्रोंमें राजाका अन्न खानाभी मना लिखाहै । मनुस्मृतिमें लिखाहै- दश कसाईके अन्न खानेमें जितना दोष होताहै उतनाही दोष एक कुँभारके अन्न खानेमें होताहै और दश कुँभारके अन्न खानेमें जितना दोष होताहै उतनाही दोष शराबको जो बेचताहै उसके अन्न खानेमें होताहै और कलवारोंके याने शराबके बेचनेवालोंके अन्न खानेमें जितना दोष होताहै उतनाही दोष एक वेश्याके अन्न खानेमें होताहै और दश वेश्याके अन्न खानेमें जितना दोष होताहै उतनाही दोष एक राजाके अन्न खानेमें होताहै क्योंकि राजाका द्रव्य अनेक प्रकारके अधर्मोंसे मिश्रित होताहै इसीसे राज्यभी अनेक अनर्थोंका कारणहै । यदि राज्य अनेक अनर्थोंका कारण न होता तो बडे २ राजा इसका त्याग क्यों करदेते और त्याग उन्होंने कियाहै इसीसे साबित होताहै जो राज्यभी अनेक अनर्थोंका हेतुहै। जिन्होंने इसको दुःखरूप जानकर स्वीकारही नहीं कियाहै और जिन्होंने स्वीकार करके फिर पश्चात् इसका त्याग करदियाहै उनकी भी दो चार कथाओंको तुम्हारे प्रति सुनातेहैं ॥

हे चित्तवृत्ते ! प्रथम तुम महात्मा प्रियव्रतकी कथाको सुनो । प्रियव्रत चक्रवर्ती राजा हुवाहै और बहुत कालतक इसने राज्य कियाहै । एक दिन राजाके चित्तमें विचार उपजा तब राजा कहने लगा अहो बडा कष्टहै, दुःखरूप जो राज्यहै इसमें सुख मान कर मैंने अपना जन्म व्यर्थही खो दिया और इन्द्रियोंके वशवर्ती होकर अविद्यारूपी कूपमें अपनेको गिरा दिया और कामके वशमें होकर मैं अपनी स्त्रीका दास बना रहा । जैसे बनका मृग बालकोंकी क्रीडाके लिये होताहै, तैसे मैंभी अपनी स्त्रीकी क्रीडाके लिये मृगबना। धिक्कारहै मेरेको जो मैंने राज्यके भोगोंमें अपनी आयुको व्यर्थ खो दिया, मेरे तुल्य संसारमें ऐसा कौन मूर्ख होगा जो ऐसे उत्तम शरीरको पाकर फिर मिथ्या भोगोंमें अपनी आयुको व्यतीत करेगा। अब मैं इस राज्यका त्याग करके आत्मसुखके लिये एकांत देशमें निवास करके आत्मविचार करूंगा । ऐसा विचार करके राजाने पृथिवीका विभाग करके अर्थात् एक२खंड एक२पुत्रको देदिया और बनमें जाकर एकांत देशमें बैठकर आत्मविचार करने लगा। हे चित्तवृत्ते! यदि राज्यमें अधिक सुख होता तब प्रियव्रत राजा चक्रवर्ती

राज्यका क्यों त्याग करदेता ? और त्याग तिसने कियाहै इसीसे जाना जा राज्यभी दुःखरूपहै ॥ २० ॥

हे चित्तवृत्ते ! कृतवीर्य नाम करके एक राजा बडा प्रतापी और धर्म हुवाहै, बहुत कालतक वह पृथिवीका राज्य करता रहाहै। जब कि तिसका दे हुआ तब मंत्रियोंने और पुरोहितोंने और प्रजाने मिलकर कृतवीर्यके पुत्र अर्जुन राजसिंहासनपर बैठनेके लिये कहा, तब अर्जुनने कहा हम राजसिंहास नहीं बैठेंगे, क्योंकि अन्तमें इसका फल नरक होताहै। राजाके लिये धर्म लिखेहैं उनका निर्वाह होना कठिनहै, राजाके लिये जो कर लेना प्र लिखा है उसी द्रव्यसे दीन प्रजाकी पालना करनी और चो तिसकी रक्षा करनी कहीहै अपने आरामके लिये प्रजासे द्रव्य लेना न लिखाहै और न अधिक लेना लिखाहै, तबभी कहीं २ अधिक लिया जा क्योंकि भृत्यलोग भी अपने लोभके लिये प्रजाको सतातेहैं, अकेला राजा कहां सब प्रजाको देख सक्ताहै और तिसका हाल जान सक्ताहै और जो प्रजा अ करतीहै तिसका पापभी राजाको लगताहै और राज्यके विघातक राग द्वेषा शत्रुभी राजाके सिरपर सदैवकाल गरजते रहतेहैं, महान् अनर्थोंका क राज्यहै इस लिये मैं राज्यका ग्रहण नहीं करूंगा ऐसा कहकर वह उप होगया। हे चित्तवृत्ते! यदि राज्यमें सुख होता तब कृतवीर्यका पुत्र अर्जुनना तिसका त्याग क्यों करता ? ॥ २१ ॥

वैराग्याश्रम कहतेहैं—हे चित्तवृत्ते ! इक्ष्वाकु वंशमें एक बृहद्रथ नाम क बडा प्रतापी राजा हुवाहै, जब कि राज्य सम्बधी भोगोंको भोगते २ तिस बहुतसा काल बीत गया तब तिसके मनमें एक दिन बडाभारी वैराग्य उ हुवा, जिस दिन तिसको वैराग्य हुवा उसी दिन उसने अपने पुत्रको राजसिं सन देदिया और आप वनमें जाकर तप करने लगा। जब कि राजाको करते २ बहुतसा काल व्यतीत होगया तब एक दिन शाकायनमुनि तिसके स आकर कहने लगे हे वत्स! हम तुम्हारे पर बडे प्रसन्न हुए हैं, आप अब मनोवांछित वरको मांगो। राजा मुनिको दण्डवत प्रणाम करके कहने लगा आप मेरे पर प्रसन्न हुएहैं, तब आप मेरेको आत्मज्ञानका उपदेश करें, यही मैं आपसे चाहता हूं। मुनिने कहा हे राजन्! यह वर बडा दुष्प्राप्यहै और कि

वर को मांगो जो पदार्थ कि आपको न प्राप्तहो उसको मांगो "। राजाने कहा भगवन् ! संसारके किसी पदार्थकोभी मैं स्थिर नहीं देखताहूं क्योंकि सब पदार्थ नश्वरहैं, काल पाकर प्रलयकी अग्निसे समुद्रभी सब सूख जातेहैं और पर्वतभी सब प्रलयकालकी अग्निसे भस्म होजातेहैं और जितने कि ध्रुवसे आदि लेकर तारा गणहैं येभी सब टूट जातेहैं अर्थात् नष्ट भ्रष्ट होजातेहैं । इसीतरह वृक्षादिकभी सब काल पाकर नष्ट होजातेहैं। और पृथिवी आदिक पांच भूतभी सब नाशको प्राप्त होजातेहैं । कारणका नाश होनेसे कार्य्यका नाश स्वयंही होजाताहै और जितने कि इन्द्रादिक देवताहैं, येभी सब अपने २ पदसे प्रच्युत होजातेहैं। हे मुने ! संसारमें कोई भी पदार्थ मेरेको स्थिर नहीं दीखताहै तब मैं किस पदार्थको आपसे मांगू? हे मुने! जैसे अंध मेडक ताल-में निराश्रय होकर दुःखको प्राप्त होताहै, तैसे मैंभी निराश्रय होकर इस संसार-रूपी तालमें दुःखको प्राप्तहो रहाहूं। हे मुने! मेरेको इस महान् दुःखसे छुडानेके लिये आपही समर्थहैं मैं आपकी शरणको प्राप्त हुवाहूं, आप मेरा उद्धार करिये। हे मुने ! यह जो स्थूल शरीरहै, सो स्त्री पुरुषके वीर्यसे उत्पन्न हुवाहै, इसी हेतुसे यह शरीर अति अपवित्रहै, जिसका कारणही अपवित्र होवे, तिसका कार्य कैसे पवित्र होसक्ताहै। फिर यह शरीर अस्थियोंका एक कोटहै और ऊपर इसके चर्म मढाहै, भीतर इसके मल मूत्र भराहै, ऐसे महान् अपवित्र शरीरमें बैठकर अज्ञानी मूर्ख इसका अभिमान करतेहैं, ज्ञानवान नहीं करतेहैं। हे मुने!यह शरीरही नरकहै,आपसे विना कौन मेरेको इस नरकसे छुडानेवाला है इस प्रकारके वैराग्य करके युक्त राजाके वचनोंको सुनकर ऋषि बोले—"हे राजन्! हम तुम्हारे पर बडे प्रसन्नहैं, क्योंकि तुम्हारेमें पूर्ण वैराग्यहै, इक्ष्वाकुवंशमें तुम पताकाहो, तुमने अपना जन्म सफल कर लियाहै, अब तुम भय मत करो, तुम कृत कृत्य हो "।

ऋषि कहतेहैं हे राजन् ! शब्द स्पर्शादिक जितनेक विषयहैं,यह सब अनर्थको-ही करनेवालेहैं, और नाशीहैं और मनसे लेकर जितनेक इन्द्रियहैं ,येभी सब अन-र्थकारीहैं, अर्थकारी नहींहैं क्योंकि सदैवकाल पुरुषको विषयोंकी तरफही ये सब लेजातेहैं और उत्पत्ति नाशवाले भी हैं और जो आत्माहै सो इन सबसे परेहै और सबका साक्षीहै, तिस आत्माकी प्राप्ति सत्यको आश्रय करनेसेही होतीहै।

क्योंकि ऐसा नियमहै जिसने सत्यको आश्रय करलियाहै, उसने आत्माकोही आ करलियाहै, और सत्यको आश्रय करनेसेही मनका निरोधभी होताहै, मनके नि होनेके अनन्तर हृदयमें आत्माका प्रकाशभी स्पष्ट प्रतीत होताहै, शुद्ध मन आत्माका प्रकाश होताहै, अशुद्ध मनमें नहीं होताहै, अशुद्ध मन बंधनका हे शुद्ध मन मुक्तिका हेतुहै, मनके शुद्ध होजानेसे शुभ अशुभ कर्मोंका भी नाश हो ताहै, कर्मोंके नाश होजानेसेही पुरुष जीवन्मुक्तिको प्राप्त होताहै ।

हे राजन् ! जैसे लकडियोंसे रहित अग्नि अपने कारणमें लय होजातीहै, वृत्तियोंसे रहित हुवा मनभी अपने कारणमें लय होजाताहै और तिसक आत्माकाभी साक्षात्कार होजाताहै । सोकहाभी है:-

**समासक्तं यथा चित्तं जन्तोर्विषयगोचरे ॥**
**यद्येवं ब्रह्मणि स्याद्वै को न मुच्येत बंधनात ॥ १ ॥**

हे राजन् ! जैसे जीवोंका चित्त विषयोंमें आसक्त होरहाहै तैसेही यदि ब्र आसक्त होजावै तब कौन पुरुष है जो संसाररूपी बंधनसे न छूटे ॥ १ ॥

**वर्णाश्रमाचारयुता विमूढाः कर्मानुसारेण फलं लभन्ते ॥**
**वर्णादिधर्मं हि परित्यजन्तः स्वानन्दतृप्ताः पुरुषा भवन्ति ॥**

हे राजन् ! जो पुरुष वर्णाश्रमके आचारमें अतिशय करके प्रीति रखतेहैं, आ विचारमें प्रीतिको नहीं रखतेहैं, वह मूढ कर्मोंके अनुसार फलको प्राप्त होतेहैं जो पुरुष वर्णाश्रमोंके अभिमानसे रहित होकर आत्मविचारमें प्रीतिवालेहैं, पुरुष आत्मानंद करके तृप्त होतेहैं ॥ २ ॥

**हृत्पुण्डरीकमध्ये तु भावयेत्परमेश्वरम् ॥**
**साक्षिणं बुद्धिनृत्यस्य परमप्रेमगोचरम् ॥ ३ ॥**

हे राजन् ! अपने हृदयरूपी कमलमें परमेश्वरका ध्यान करै, जो बुद्धि नृत्यकारीकाभी साक्षी है और जो परम प्रेमका विषयहै ॥ ३ ॥

हे राजन् ! एक कालमें मैत्रेय ऋषिने कैलास पर्वतपर जाकर महादेवजी कहा हमको आत्मतत्त्वका उपदेश कीजिये । महादेवजीने जो तिसको उपदे कियाहै, उसकोभी तुम सुनो-

**देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः ॥**
**त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥ ३ ॥**

यह जो देहहै यही देवमंदिरहै, जो कि इस देहमें चेतन जीव है वही केवल शिवहै, अज्ञानरूपी शिवनिर्माल्यका त्याग करके 'सोहंभाव' करके तिसका पूजन करो ॥ ३ ॥

**अभेददर्शनं ज्ञानं ध्यानं निर्विषयं मनः ॥**
**स्नानं मनोमलत्यागः शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ ४ ॥**

आत्माको सबमें एकरूप करके जो देखनाहै इसीका नाम ज्ञानहै और मनका विषयोंसे रहित होजानाही ध्यानहै, मनके मलके त्याग करनेकाही नाम स्नानहै, इन्द्रियोंके निग्रह करनेकाही नाम शौच है ॥ ४ ॥

हे चित्तवृत्ते! ऋषिने राजाको इसप्रकार उपदेश करके कृतार्थ कर दिया। हे चित्तवृत्ते! यदि राज्यमें सुख होता तब बृहद्रथ राजा राज्यको त्याग करके वनको क्यों जाते? इसीसे सिद्ध होताहै कि राज्यमें सुख किंचित्भी नहीं है॥२२॥

हे चित्तवृत्ते! सत्ययुगमें ऋभु मुनिका पुत्र निदाघ नाम करके मुनियोंमें उत्तम बड़ा वैराग्यवान् एक मुनि हुवाहै, तिस मुनिने बाल्यावस्थामेंही संपूर्ण विद्याओंका अध्ययन करके अपने पितासे तीर्थयात्रा करनेकेलिये कहा, पिताने तिसको तीर्थयात्रा करनेकी आज्ञा देदिया, तब वह तीर्थोंमें जाकर बहुत कालपर्यंत भ्रमण करतारहा और साढेतीन करोड तीर्थोंमें तिसने स्नान आदिक कर्मोंकोभी किया और अनेक प्रकारके जप दानादिकोंकोभी तीर्थोंमें किया। इतना बड़ा परिश्रम करने परभी तिसका मन शान्तिको प्राप्त न हुवा। फिर वह अपने गृहमें लौट आया और अपने पितासे सब तीर्थयात्राका वृत्तांत कहा और फिर पितासे कहा इतने तीर्थोंमें स्नान करनेसेभी मेरा चित्त शान्तिको नहीं प्राप्त हुवाहै और विना चित्तकी शान्तिके पुरुषको सुख नहीं होताहै और पुरुषजन्म मरणरूपी संसारसेभी नहीं छूटताहै। जो जन्मताहै वह अवश्यही मरताहै, जो मरताहै वह फिर अवश्यही जन्मताहै, घटीयंत्रकी तरह यह चक्र अनादि कालका चलाही जाताहै। हे पिता! इस जन्म मरणरूपी चक्रसे छूटनेका कोई उपाय कहिये? और जितने कि व्रतादिक और जपादिक विधान कियेहैं उन

सबको तो मैं कर चुकाहूं, ये सबतो भ्रमजालमें डालनेवालेहैं, छुडानेवाले नहीं। हे पिता ! संसारमें वही पुरुष जीताहै जिसका मन विषयोंकी तरफ नहीं जाता जिसका मन विषयोंकी तरफ जाताहै वह पुरुष जीता नहीं है किंतु मराही है हे पिता ! जैसे विषयोंमें रागी पुरुषोंको आत्मज्ञान एक भार जान पडताहै तैसे विवेकी पुरुषोंको शास्त्रका अध्ययन और पठन पाठनभी एक भारही जान पड़ताहै और जिन पुरुषोंका मन तृष्णा करके व्याकुल हो रहाहै वह पुरुष सदैव इतस्ततः भ्रमतेही रहतेहैं । हे पिता! जितने कि, संसारिक दुःखहैं उन सबका मूल कारण एक तृष्णाहीहै, यह तृष्णा कैसीहै ? कभी तो स्वल्प पदार्थको पाकर अलं होजातीहै और कभी इन्द्रादिकोंके भोगको प्राप्त होकरकेभी अलं नहीं होतीहै । हे पिता! यह जो स्थूल शरीरहै सो मल-मूत्रका एक भाजनहै, इसीसे अत्यन्तही अपवित्रहै और कृतघ्नभीहै, नित्यही क्षीणभी होता रहताहै, इस शरीररूपी भाजनमें स्थित जो कामदेवरूपी पिशाचहै, वह पुरुषका नित्यही तिरस्कार करता रहताहै, तिस कामदेवरूपी पिशाचके वशीभूत होकर यह जीव युवा अवस्थामें उन्मत होकर स्त्रियोंके पीछे दौडताहै फिर जब वृद्धावस्थाको प्राप्त होताहै तब स्त्री पुत्रादिक और दासी दासभी इसका तिरस्कार करते हैं और हँसी करते हैं । हे पिता ! संसारके जितने पदार्थहैं सब नाशी हैं कोईभी स्थिर नहीं है और जो कि ब्रह्मा विष्णु महादेव आदि देवताहैं, येभी सब कालके वशको प्राप्त होकर नाशको प्राप्त होजाते हैं, एक क्षणमें जीवका जन्म होताहै फिर किसी दूसरे क्षणमें इसका नाश होजाता है यानी मरण होताहै । हे पिता ! सांसारिक जितने पदार्थ हैं, वह सब अनित्यहैं । जो कि नाशसे रहित पदार्थहै उसीका मेरेको उपदेश करिये । ऋभु मुनि, पुत्रके वैराग्यको श्रवण करके अब आत्मतत्त्वका तिसको उपदेश करतेहैं । हे निदाघ ! जैसे इच्छासे रहित स्थित रत्नोंकी विलक्षण शक्तिसे लोक चेष्टा करने लगतेहैं और जैसे सुंदर रूपकी विलक्षण शक्तिसे लोक मोहको प्राप्त होजातेहैं और जैसे चुम्बक पत्थरकी विलक्षण शक्तिसे लोहा चेष्टा करने लगताहै, तैसे ब्रह्मचेतनकी विलक्षण शक्तिसे यह जगत्भी चेष्टा करताहै । यह जगत् सब जडहै, नाशी है और दुःखरूपहै, वह ब्रह्म चेतन है, नित्यहै, सुखरूपहै, और वास्तविक इच्छासे रहित होनेसे वह अकर्ताहै, और व्यापक होनेसे सबकेसाथ सन्निधि मात्र होनेसे वह

कर्त्ताहै और एकही चेतन उपाधियोंके भेदसे नानारूप हो रहाहै और फिर एकका एकहीहै, जैसे एकही आकाश घट मठादि उपाधियों करके घटाकाश मठाकाश कहा जाताहै और उपाधियोंसे रहित महाकाश कहा जाताहै, तैसेही जीव ईश्वरकाभी भेद जान लेना। अंतःकरणरूपी उपाधियोंके अन्तर्गत चेतन जीव कहा जाताहै, अंतःकरणरूपी उपाधियोंसे रहित ईश्वर कहा जाताहै, वास्तवमें जीव ईश्वरका भेद नहींहै क्योंकि चेतन निरवयव निराकारहै, निरवयवका भेद विना उपाधिके कदापि नहीं होसक्ताहै इसमें कोईभी दृष्टांत नहीं मिलताहै अतएव जीवही ब्रह्मरूपहै, जैसे ब्रह्म चेतन अकर्त्ता अभोक्ताहै,तैसे जीव चेतनभी अकर्त्ता अभोक्ताहै।जैसे ब्रह्म नित्य शुद्ध बुद्धहै, तैसे जीवभी नित्यहीं शुद्ध बुद्धहै। हे निदाघ! ऐसा निश्चय करनेसे पुरुष मुक्त होजाताहै सो तुमभी ऐसा निश्चय करो, इसी निश्चयका नामहीं आत्मज्ञानहै और ऐसेही निश्चयवालेका नाम आत्मज्ञानीहै, जो ऐसे निश्चयसे रहितहै वही अज्ञानीहै।हे चित्तवृत्ते! पिताके उपदेशसे निदाघको अपने स्वरूपका बोध हुवा। हे चित्तवृत्ते! आत्मज्ञानकी प्राप्तिका मुख्य साधन वैराग्य है सो तुमभी प्रथम वैराग्यका आश्रयण करो॥ २२॥

चित्तवृत्ति विवेकाश्रमसे कहतीहै हे भ्राता! मेरेको अब आप कुछ औरभी वैराग्यवानोंकी कथाओंको सुनाओ जिनकी कथाओंको सुन कर मेराभी चित्त वैराग्यवाला होजावे॥

विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! किसी नगरमें एक राजाने नवीन चालका एक बडाभारी मकान बनवाया जब कि, वह मकान बन कर तैयार होगया, तब राजाने तिस मकानमें एक दिन सभा की और सब नगरनिवासियोंको निमंत्रण दिया, सब लोक जिस कालमें तिस मकानके अंदर आने लगे तिसी कालमें एक विरक्त महात्माभी किसी रास्तासे पर्यटन करते हुए आ निकले और लोकोंको मकानके अंदर आते देखकर वहभी लोकोंके साथ तिसी मकानमें चले आये, जब कि सब लोक आकर बैठगये तब राजाने कहा "मैंने यह मकान नया बनवायाहै और आप लोकोंको इस वास्ते बुलाया है जो आप लोक इस मकानके गुण दोषोंको देखकर हमको बतावें। यदि किसी तरहकी इस मकानमें कसर रहगई हो तब आप उसको मेरेको बता दीजिये तिस कसरको मैं हटा देऊंगा"। राजाकी वार्त्ताको सुनकर सब लोकोंने

कहा यह मकान बहुतही उत्तम बनाहै किसी प्रकारकीभी कसर बाकी नहीं राजाकी और लोकोंकी वार्त्ताको सुनकर वह महात्मा रोने लगे । राजाने उन से पूँछा आप रुदन क्यों करतेहैं ? महात्माने कहा इस मकानमें दो कसरें बड़ीं रहगई हैं और वह किसी प्रकारसेभी हट नहीं सक्तीहैं, इसवास्ते रुदन करताहूं राजाने कहा आप बता दीजिये उन कसरोंको जहांतक बनेगा हम उन हटानेकी कोशिश करेंगे । महात्माने कहा एक कसर तो यह है कि जो एक दिन आवेगा जिस दिन यह मकान सब नष्ट भ्रष्ट होजावेगा, दूसरी कसर यहहै एक दिन वह होगा जिस दिन मकानका बनानेवालाभी नहीं रहेगा, ये दो कसरें हटनी मुश्किलहैं, इसीवास्ते हम रुदन करतेहैं, जो आप वृथा मकानका अहंकार कर रहेहैं । महात्माकी वार्ताको सुनकर राजाके मनमें वैराग्य उत्पन्न हुवा और तिसी दिनसे राजा वैराग्यवान् महात्माओंकी संगत करने लगगया ॥ २४ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी प्रकारका एक औरभी दृष्टांत तुमको हम सुनातेहैं हे चित्तवृत्ते ! एक महात्मा रास्तामें चले जातेथे, चलते २ जब थक गये, तब उन्होंने दो घडी विश्राम करनेकेलिये स्थानको इधर उधर देखा तब सड़कके किनारेपर एक अति रमणीय मंदिर उनको दिखाई पडा, महात्मा तिसके भीतर चले गये, वहाँपर पलंगके ऊपर राजा बैठेथे और सिपाही लोग आगे तिनके हाथ बांधकर खडेथे, महात्माभी जाकर वहांपर राजाके सामने खडे होगये, तब एक सिपाहीने महात्माको डाट करके कहा तुम यहांपर क्यों आये हो? महात्माने कहा हम इस मकानको धर्मशाला जानकर दो घडी आराम करनेके लिये यहां पर आयेहैं, सिपाहीने फिर डाटकर कहा अरे साधु ! तू कैसा बोलताहै महाराजके मकानको धर्मशाला बनाताहै ? महात्माने कहा इस वर्तमान महाराजसे पहले इस मकानमें कौन रहताथा ? राजाके सिपाहीने कहा इस महाराजसे पहले इस मकानमें महाराजके पिता रहतेथे । फिर कहा उनसे पहले कौन रहतेथे ? सिपाहीने कहा उनके पिता रहतेथे फिर कहा उनसे पहले कौन रहतेथे ? सिपाहीने कहा उनके पिता रहतेथे महात्माने कहा जिस मकानमें मुसाफर हमेशांही आते जाते रहे वह धर्मशाला नहीं तो क्याहै ? इस राजाके पूर्वज कितनेही इस मकानमें रह गयेहैं

आगेभी कितनेही रहेंगे फिर यह मकानभी धर्मशाला नहीं तो क्या है ? हमने इसमें क्या बेजा कहाहै जो तुम हमपर नाराज हुएहो? महात्माकी वार्ताको सुनकर राजाको बडा वैराग्य हुआ और राजाने अपनी भूलको महात्मासे बखशाया। हे चित्तवृत्ते ! जितनेक संसारमें लोकोंके गृह हैं, ये सब धर्मशालाहीहैं, जीवरूपी पथिक तिसमें निवास करके चले जाते हैं, अज्ञानी उनमें ममताको करतेहैं, ज्ञानी ममतासे रहित होकर निवासको करतेहैं ॥ २९ ॥

विवेकाश्रम कहतेहैं--हे चित्तवृत्ते! एक और दृष्टांत तुमको सुनातेहैं ॥

पांचाल देशके किसी नगरके एक मंदिरमें एक महात्मा रहतेथे, वह महात्मा बड़े अभ्यासी थे, अभ्यास करते २ उनकी अवस्था चढगईथी, योगवासिष्ठमें जो जीवन्मुक्त ज्ञानीकी पाँचवीं भूमिका लिखीहै, वह तिस पाँचवीं भूमिकामें प्राप्त होगयेथे, सदैवकाल हसते रहतेथे, किसीसेभी न बोलतेथे न चालतेथे। एक-दिन दोपहरके वक्त तिस मंदिरमें खेलनेके लिये चार पांच लडके छोटे २ जा निकले । एक लडकेने दूसरे लडकेसे कहा महात्माकी जाँघें बडी मोटी २ हैं, इनकी एक जांघपर चौपड़ बनाकर खेलो । लडके तो मूर्ख होतेही हैं, तुरंत दूसरा लडका अपने घरसे चक्कूको लेआया और चक्कूसे उनकी जांघके ऊपर लकीरें खैंच कर चौंपड़ बनाने लगा । महात्मा न तो बोलतेथे और न अपनेआप कोई चेष्टाही करतेथे महात्मा उनको मना कैसे करें, उनके आगे जांघको धरदिया, जब कि लडकोंने दो चार चक्कू जांघ पर चलाये तब रुधिरकी धारें बहने लगी लडके तो सब रुधिरको देखकर भाग गये । अब रुधिर बह रहाहै और महात्मा हँस रहेहैं । इतनेमें कोई सयाना आदमी मंदिरमें आ निकला, तिसने देखा तो महात्माकी जांघसे रुधिर बह रहाहै, महात्मा हँस रहेहैं, तिसने जाकर औरोंको खबर की और भी दश बीश आदमी इकट्ठे होगये, उन्होंने इधर उधरसे दर्याफ्त किया तब मालूम हुआ जो यहांपर लडके खेलतेथे, एक लडकेसे पूँछा तब तिसने सब हाल कह सुनाया । फिर लोकोंने सलाह की कि, किसी जर्राहको बुलाकर जखम सिलाकर मल्हम पट्टी करनी चाहिये । एक आदमी उनमेंसे जाकर एक जर्राहको बुला लाया । जब कि, जर्राह टांगको पकडकर सीने लगा तब महात्माने उसके हाथको हटा दिया, कितनाही लोकोंने टांगके जखमको सीनेके लिये यत्न किया परंतु महात्माने जखमको सीने न दिया, उसी तरह तीन चार दिन

रुधिर वहता रहा । वहांपर किसी और मंदिरमें एक महात्मा र तेथे उनको जब कि यह हाल मिली तब उन्होंने एक आदमी कहला भेजा कि जिस मकानमें पुरुष रहै मुनासिबहै तिस मकानकी सफा रखनी । आप इस शरीररूपी मकानमें रहतेहैं, आपको उचितहै कि, इसकी दवाई करनी । तब वह महात्मा उस संदेसा लानेवालेसे उन्होंने कहा महात्मासे कह देना तुम जब कि तीर्थोंमें गयेथे तो रास्तामें वीसों धर्मशालामें एक रात्रि रहेथे अब वह धर्मशालायें सब गिरती जातीहैं, उनकी मरम्मत आप जाकर क्यों नहीं करतेहैं ? जिसतरह आप रात्रिभर रहनेकेवास्ते उनकी सफाई और मरम्मतको नहीं करतेहैं, इसीतरह हमेंभी इस शरीररूपी धर्मशालामें आयुरूपी रात्रिभर रहना है, यह रात्रिभी व्यतीत होचलीहै हम अब इसकी सफाई क्या करें ? इतनाहीं बोलकर फिर चुप होगये । पांच सात दिनेके व्यतीत होनेपर उन्होंने शरीरका त्याग कर दिया । हे चित्तवृत्ते ! जो कि पूर्ण वैराग्यवान् पुरुष हैं वह इस शरीरको धर्मशाला जानकर इसमें ममताको नहीं करतेहैं ॥ २६ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और तुमको लौकिक दृष्टांत सुनाते हैं ।

एक नगरके बाहर नदीके किनारेपर एक वैराग्यवान् महात्मा कुटी बनाकर रहतेथे और निष्काम होनेसे किसी राजा बाबूके पास नहीं जातेथे किन्तु हमेशा आत्मविचारमेंहीं रहतेथे । उनके त्याग और वैराग्यकी नगरमें बड़ी चरचा फैलीथी । एक दिन राजाके दरबारमेंभी किसी वार्तापर एक आदमी उनकी स्तुति करने लगा, तब राजाकोभी उनके दर्शनकी लालसा हुई । राजाने अपने वजीरको उनके बुलानेके लिये भेजा, वजीरने जाकर नम्रतापूर्वक कहा राजाको आपके दर्शनकी लालसा हुई है और कृपाकरके मेरे साथ चलकर राजाको दर्शन दीजिये । महात्माने विचार किया यदि हम अब वजीरके साथ राजाके पास नहीं जातेहैं तब राजा अपना निरादर समझकर हमसे कोई बुराई करेगा क्योंकि एक तो राजमद करके राजा लोग प्रमादी होतेहैं दूसरा हम उसके राज्यमें रहतेहैं और यदि हम जाते हैं तब महात्माओंकी सभामें और परमेश्वरके समीप हमारा मुँह काला होगा क्योंकि महात्मा वैराग्यवान् कहेंगे देखो निष्काम होकर फिर राजाके द्वारपर गये और परमेश्वर कहेगा हमारेपर भरोसा न रख कर राजाके द्वारपर गये, वह पीछे हमारा मुँह काला करेंगे । इस लिये

प्रथमसेही अपना मुँह काला करके राजाके पास चलना चाहिये ऐसा विचार करके महात्माने स्याहीसे अपना मुँह काला कर मंत्रीके साथ राजाके पास चल-दिया। जब राजाके दर्बारमें गये तब राजाने इनका बडा सत्कार किया और अपने सिंहासन पर बैठाकर मुँह काला करनेका वृत्तांत पूँछा, तब महात्माने अपना सब विचार कह दिया। राजाने कहा सब सत्यहै थोडीदेर बैठकर महात्मा अपने आसनपर चले आये। तात्पर्य यह है जो कि पूर्ण वैराग्यवान् निष्काम महात्माहैं वह किसीभी राजा और धनीके द्वारपर अपने शरीरके निर्वाहके लिये नहीं जातेहैं जो सकामीहैं वैराग्यसे शून्यहैं, वही राजा बाबुओंके द्वारोंपर मारे २ घूमतेहैं॥२७॥

हे चित्तवृत्ते! एक राजाने संपूर्ण पृथिवीको जय करके अपना नाम सर्वजीत रखाया तब सब लोग तिसको सर्वजीत करके पुकारने लगे। जब घरमें जाता तब राजाकी जो माताथी वह तिसको सर्वजीत नाम करके न पुकारती किंतु पूर्व-वाले नामसेही पुकारतीथी। एक दिन राजाने अपनी मातासे कहा माताजी! सब लोक तो मेरेको सर्वजीत नाम करकेही पुकारतेहैं परन्तु आप तिस नामसे नहीं पुकारतीहैं इसमें क्या कारणहै? माता राजाकी बडी विचारशीलाथी माताने कहा बाहरकी विलायतोंके जीतनेसे पुरुष सर्वजीत नहीं होसक्ताहै किंतु अंदरकी विलायतके जीतनेसे और शरीररूपी विलायतके जीतनेसे पुरुष सर्वजीत होसक्ताहै, बाहरके शत्रुओंके जीतनेसे पुरुष शत्रुजित नहीं होसक्ताहै किंतु मन और इन्द्रियरूपी शत्रुओंके जीतनेसेही पुरुष शत्रुजित होसक्ता है। तुम कहतेहो सारी पृथिवी मेरी आज्ञामें है प्रथमतो तुम्हारा शरीरही तुम्हारी आज्ञामें नहीं है, प्रतिदिन यह क्षीण होता जाताहै, एक दिन ऐसा होगा जो यह शरीर नाशको प्राप्त होजावेगा, इन्द्रिय और मन तुम्हाराभी तुम्हारे वशमें नहीं है, नित्यही यह तुमको विषयोंकी तरफ और कुकर्मोंकी तरफ भटकातेहैं। पहले तुम शरीर मन इन्द्रियोंको जय करो। जब कि तुम इन सबको जय करलेवोगे तब मैंभी तुमको सर्वजीत नाम करके पुकारा करूंगी। हे राजन्! व्याससमृतिमेंभी ऐसाही लिखाहै—

न रणे विजयाच्छूरोऽध्ययनान्न च पंडितः।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन न दाता चार्थदानतः॥ १॥
इन्द्रियाणां जये शूरो धर्मं चरति पंडितः।
हितप्रायोक्तिभिर्वक्ता दाता सन्मानदानतः॥ २॥

रणमें जय करनेसे शूर नहीं कहा जाताहै और शास्त्र पढनेसे पं नहीं होसक्ताहै, वाणीकी चातुर्य्यतासे वक्ता नहीं होसक्ताहै, धनके दान कर दाता नहीं होजाताहै ॥ १॥किंतु इन्द्रियोंके जय करनेसे शूर वीर कहा जा और धर्मका आचरण करनेवाला पंडित कहा जाताहै, जो दूसरेके हि कहे वही वक्ताहै, जो दूसरोंका सन्मान करै वही दाताहै ॥ २० ॥

और नीतिमेंभी कहाहैः—

**यौवनं जीवितं चित्तं छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।**
**चञ्चलानि षडैतानि ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत् ॥ ३ ॥**

यौवन १, जीना २, मन ३, शरीरकी छाया ४, धन ५, स्वामिता ६ छैही वडे चंचलहैं अर्थात् स्थिर होकर नहीं रहते हैं एसा जान पुरुष धर्ममें रतहो

भर्तृहरिनेभी कहाहैः—

**यौवनं जरया ग्रस्तमारोग्यं व्याधिभिर्हतम्।**
**जीवितं मृत्युरभ्येति तृष्णैका निरुपद्रवा॥ १॥**

यौवन जरा अवस्था करके ग्रसाहै, आरोग्यता व्याधियों करके हत होरहा जीवित मृत्यु करके ग्रसीहै, एक तृष्णाही उपद्रवसे रहित है ॥ १ ॥ हेराज काम और क्रोध ये दोई जीवोंके महान् शत्रुहैं। दुर्वासा ऋषि ज्ञानीभीथे त क्रोधके वशमें होकर नानाप्रकारकी विपदा उनकोभी भोगनी पडीं और काम वशमें होकर इन्द्रादिक देवतोंकोभी महान् कष्ट हुवा इस लिये तुम पहले काम क्रोधरूपी शत्रुवोंको जय करो तब मैं आपको सर्वजीत कहा करूंगी। माता वचनोंको सुनकर राजाकोभी वडा वैराग्य हुवा और कामादिकोंके जयकरनेमें करने लगा ॥ २८ ॥

वैराग्याश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! एक महात्माकी वार्त्ताको सुनोः—

एक नगरके बाहर एक ठाकुरजीका मंदिर था जिस मंदिरमें एक वैराग्यवान् मह त्मा रहतेथे और रात्रिभर खडे होकर भजन करतेथे। एक आदमीने उन कहा महाराज! इस मंदिरमें किसी चोरचकारका डर नहींहै, फिर आ रात्रिभर किसके डरसे खडे होकर जागते रहतेहैं? महात्माने कहा बाहर

चोरोंका भयतो हमको किंचित्भी नहींहै परंतु अन्तरके चोर जो काम क्रोधादिकहैं उनका भय हमको सदैवकाल बना रहताहै, न जाने किस समय वह आकर हमको दबालें, क्योंकि उनके आनेका कोई समय नियत नहींहै, उनसे बचनेकेलिये हम रात्रिभर खडे रहतेहैं ॥ २९ ॥

एक महात्मा जंगलमें रहतेथे और रात्रि दिन भजन करतेथे । एक पुरुषने उनसे कहा महाराज! आप भजन करनेमें वडा भारी परिश्रम करतेहैं, क्या जाने परमेश्वर तुम्हारे इस परिश्रमको मंजूर करे या न करे । महात्माने कहा हम अपना फरज़ अदा करतेहैं, आगे परमेश्वरकी मरजी । वह अपना फरज़ अदा करे या ना करे, क्योंकि जैसे राजाका हुक्म अपने भृत्यपर होताहै, भृत्यका हुक्म राजापर नहीं होताहै, वैसे परमेश्वरका हुक्म हमपरहै, हमारा हुक्म तिसपर नहीं है, जब कि हम अपना फरज अदा करदेवेंगे, तब वह यह नहीं कहसकेगा जो तुमने फरज क्यों नहीं अदा किया इस लिये हम बहुत परिश्रम करतेहैं । हे चित्तवृत्ते ! इस कथाका यह तात्पर्यहै कि मनुष्यशरीरको धारण करके जो पुरुष अपने फरज़को अदा नहीं करताहै, वह कदापि उत्तम गतिको नहीं प्राप्त होताहै ॥ ३० ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक लौकिक दृष्टांतको तुम सुनो जिसका तात्पर्यभी अलौकिकहै:—

एक नगरके राजाने बहुतसा धन इकट्ठा किया क्योंकि वह अति कृपण था । वह राजा धनका संग्रह करनाही जानताथा, धनके सुखको वह नहीं जानताथा । जिस हेतुसे वह वडा कदर्यथा, इसीहेतुसे वह अपने पुत्रकोभी धनका सुख नहीं लेने देताथा और खरचेसे डरता हुआ अपनी युवाअवस्था कन्याकी शादीकोभी नहीं करताथा । एक दिन एक नटनी नाटक दिखानेकेलिये तिस राजाकी सभामें कहींसे आकर विराजमान होगई और अपने नाटक दिखानेकेलिये राजासे तिसने प्रार्थना की, राजाने कहा किसी दिन तुम्हारा तमाशा कराया जावेगा, नटनी तिसके नगरमें रहने लगी । जब कि कुछ दिन बीते तब नटनीने फिर एक दिन तमाशा करनेके लिये राजासे प्रार्थना की राजाने कहा अभी ठहरो फिरहोगा, इसी तरह जब २ वह कहे तब २ राजा टालाटूली करदे । जब कि तिस नटनीको वहांपर रहते बहुत काल बीतगया तब तिसने तंग

होकर वजीरसे कहा यातो राजा साहिब हमारा तमाशा देखें, नहीं तो ह
साफ जवाब देवैं, जो हम अन्यत्र कहीं जाकर अपनी जीविकाको खो
वजीरने मिलकर राजासे कहा आज रात्रिको इस नटनीका तमाशा आप दे
आपको कुछ देना नहीं पडेगा, हम लोक आपसमें मिलकर इसको कुछ
देदेवेंगे, अगर यह नटनी यहांसे खाली चली गई तब आपकी बडी बद
होगी । राजाने कहा अच्छा आज रात्रिको इसका तमाशा हो, सभाकी तै
हुई, रात्रिके समय जब कि सब सभासद आकरके बैठे, तब नटनीने तमाशे
प्रारंभ किया । बहुत तरहके नटनीने राजाको तमाशे दिखलाये और तमा
करते २ जब कि दोघडी रात्रि बाकी रहगई और राजाने तिसको कुछभी इ
न दिया तब नटनीने एक दोहेमें नटको समझाया ॥

## दोहा ।

**रात गई घडी भर रही, थाके पिंजर आय ॥**
**कह नटनी सुन मालदेव, मधुरा ताल बजाय ॥ १॥**

आगेके एक दोहेमें नट नटीके प्रति कहताहै ।

## दोहा ।

**बहुत गई थोडी रही, थोडीभी अब जाय ॥**
**कहे नाट सुन नायका, तालमें भंग न पाय ॥ २॥**

नटके इस दोहेको सुनकर तिसी समयमें एक तपस्वी जो कि तमाशा देखने
को आयाथा उसने अपना कंबल ओढनेका तिस नटको देदिया और राजाके लड़के
ने जड़ाऊ कड़ोंकी जोडी अपनी तिसको देदी और राजाकी कन्याने हीरोंका हार
गलेसे उतारकर तिस नटको देदिया । राजा देखकर बडा चकित हुवा । प्रथम
राजाने तपस्वी से कहा तुम्हारे पास एकही कंबल था और कोई वस्त्रभी नहीं है
तिस कंबलको जो तुमने इसके प्रति देदियाहै सो क्या समझकर दियाहै ? तपस्वीने
कहा आपके ऐश्वर्यको देखकर मेरे मनमेंभी भोगोंकी वासना उठीथी, जब कि
मैंने इस नटके दोहेको सुना तब मैंने विचार किया जो बहुतसी आयु तो तपस्यामें
व्यतीत होगईहै, बाकी थोडीसी रह गईहै, अब इसको भोगोंकी वासनामें खराब

मत करो, ऐसा मेरेको इसके दोहे से उपदेश हुवाहै, इस लिये मैंने अपना कंवल इसको दियाहै, क्योंकि यही मेरे पास था और तो कुछ था नहीं। फिर राजाने अपने लडकेसे पूंछा तुमने क्या समझकर इतनी बेशकीमती कडोंकी जोडी नटको देदीं ? लडकेने कहा मैं बहुत दुःखी रहताहूं क्योंकि आप मेरेको किंचित्भी द्रव्य खर्चनेकेलिये नहीं देतेहैं, दुःखी होकर मैंने यह सलाह की थी कि राजाको विष दिलवा कर मारडालें, इस नटके दोहेको सुनकर मेरेको यह उपदेश हुवाहै, बहुत आयु तो राजाकी व्यतीत होगईहै, अब वृद्ध होगयाहै दो चार बरस अब बाकी रह गई है सो यहभी जानेवाली है पितृहत्याको मत लेवो, ऐसा विचार होनेसे मैंने कडोंकी जोडी इस नटको इनाम देदीहै। फिर राजाने अपनी कन्यासे पूँछा तुमने क्या समझकर हीरोंका हार नटनीको देदिया ? कन्याने कहा मैं चिरकालसे युवा-अवस्थाको प्राप्त होचुकीहूं और आप खरचेके डरसे मेरा विवाह नहीं करतेहैं, कामदेव बडा बलीहै, कामकी प्रबलतासे मेरा विचार अब वजीरके लडकेके साथ निकलजानेका हुवाथा इस नटके दोहेको सुनकर मैंनेभी विचार किया कि बहुतसी आयु तो राजाकी गुज़र चुकीहै अब थोडीसी बाकीहै, वहभी गुजरने वालीहै, अब थोडे दिनोंके लिये पिताको कलंक लगाना मुनासिब नहींहै, ऐसा उपदेश नटके दोहेसे मेरेको हुवाहै इसलिये मैंने नटीको हार दियाहै, इस नटके दोहेने राजन् आपकी जान और इज्जत बचाईहै इसलिये आपकोभी इस नटीके प्रति इनाम देना मुनासिबहै। राजानेभी जानलिया बात तो ठीकहै। राजानेभी बहुतसा द्रव्य तिस नटीको देकर विदा करदिया। तत्पश्चात् राजाने वजीरके लडकेके साथ कन्याकी शादी करदी फिर राजगद्दी पुत्रको देकर राजा वैराग्यवान् होकर आत्मविचारमें लगगया। हेचित्तवृत्ते! इसदृष्टान्तका यह तात्पर्य्यहै जो कि पिछली आयु व्यतीत होगई है वह तो अब किसी प्रकारसेभी लौटकर वापस नहीं आस-कतीहै परंतु जो बाकी बचीहै इसीको सार्थक करो क्योंकि यदि बाकीभी व्यर्थ जायगी तब पछतानाही होगा। इसीपर एक कविनेभी कहा है—

## सवैया।

पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र धरा धन धाम है बंधन जीको।
बारहिं बार विषय फलखात अघात न जात सुधारस फीको॥

**आन औसान तजो अभिमान कही सुनकान भजो सियपीवे**
**पाय परमपद हाथ सो जात गई सो गई अब राख रही को**

हेचित्तवृत्ते ! इसीविषयका एक और दृष्टांत तुम सुनोः—

किसी नदीके किनारेपर एक किसानका खेत था, जब कि तिस्के खेतके प
नेके दिन आये तब वह खेतमें मंचानको बांधकर खेतकी रक्षा करने लगा। ए
दिन वह नदीके किनारेपर दिशा फिरनेको जब गया तब वहांपर रात्रिको नदी
अरार जो गिरा तिसमें एक लालोंकी भरीहुई हंडियां भी निकलकर किनारे प
गिरपडीथी ये भी उसी जगहमें तिस हंडियाके समीप बैठकर झाडे फिरने लगा
इतनेमें किसानकी नजर उन लालों पर जापडी । किसानने उनको पत्थर जानक
कपडेमें बांधकर लाकर अपने मंचान पर धर दिया और उन लालोंसे पक्षि
योंको उडाने लगा, जब २ पक्षी तिसके खेतको खानेके लिये आकर बैठें तब
वह एक २ लालको उठाकर उनको मारे, उससे पक्षी तो उड जाँय और लाल नदी
जा गिरे, इसीतरह एक २ करके सब लाल तिसने नदीमें फेंक दिये । एक ला
जिससे कि तिसका लडका खेलताथा, वह लडकेके पास रह गया । जब दि
थोडासा दिन बाकी रहा तब तिसकी स्त्री अपने लडकेको और तिस लालक
लेकर घरमें चली गई । जब कि वह रसोई बनाने लगी तब उसने देखा जो नमक
घरमें नहीं है और न कोई पास पैसाहै तब वह उसी लालको लेकर बाजारमें गई
और एक बनियांसे तिसने कहा इस पत्थरपर हमको नमक बदल कर देदे । वहां
पर एक जवाहिरी खडाथा उसने लालको लेलिया और बनियांसे एक पैसेका नमक
तिसको दिलवा दिया और तिसके मकानका पता पूँछकर कहा इस
पत्थरका जो दाम लगेगा सो तुम्हारे घरमें भेज दिया जावैगा । दूसरे दिन तिस
जौंहरीने तिस हीरेका दाम लगाकर एक लाख रुपैया तिसके घरमें भेजदिया ।
किसानकी स्त्रीने लेकर कुछ रुपयोंका तो एक बडा भारी आलीशान मकान बन-
वाया और सब चीजें आरामकी तिसमें जमा की और बाकीका रुपैया कहीं ब्याज-
पर किसी महाजनके पास जमा करदिया । और खेतमें जाकर अपने पतिसे कहा
बहुत दिन बीत गयेहैं, तुम अपने घरमें नहीं गये हो आज घरपर चलकर
भोजन करो । घरकी रचनाको देखो, किसान तिसके साथ जब घरके द्वारपर

पहुँचा तब घरको तरफ देखकर पीछेको हटा और कहने लगा यह घर तो किसी महाजनकाहै इसमें मेरेको तूं क्यों लेजातीहै ? स्त्रीने कहा महाजनका नहीं है यह घर तुम्हाराहीहै । उसने कहा हमारा तो एक छप्परका था, हमारा यह कैसेहै ? स्त्रीने कहा वह जो एक पत्थर लाल रंगका नदीमें फेकनेसे बचगया था जिससे कि लडका खेलताथा तिसके दामसे यह बनाहै । इतना सुनतेही वह बेहोश होकर गिर पडा । तिसको यह रंज हुवा जो इतनी वडी कीमत-वाले पत्थर हमने मुफ्तमें अपनी मूर्खतासे नदीमें फेंकदिये । तब तिसकी स्त्रीने तिसपर जल छीटकर पतिको चेतन करके कहने लगी जो फेंकदिये सो तो अब लौट कर नहीं आतेहैं, जो कि एक बच गयाहै इसीके आनंदको भोगो इस-कोभी अब अफसोस करके मत खोवो स्त्रीकी वार्ताको सुनकर वह उठकर बैठ गया और अपने घरमें जाकर भोगोंको भोगने लगा। वैराग्याश्रम कहतेहैं हे चित्त-वृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै इसको तुम दार्ष्टांतमें घटावो इस शरीररूपी हांडीमें श्वासरूपी लाल भरेहैं उनको तुमने पत्थर जानकर विषयरूपी पक्षियोंके उडानेमें अर्थात् विषय भोगोंमें जो फेंक दियेहैं, वह तो अब फिर लौट कर नहीं आसक्तेहैं । हां जो कि बाकी बचेहैं इनको अब मत व्यर्थ विषयोंमें फेंको, किंतु आत्मवि-चारमें इनको खरच करके इन्हींका आनंद लूटो । यही वार्त्ता "गुरुकौमुदी" में भी कहीहै:—

**अरे भज हरेर्नाम क्षेमधाम क्षणे क्षणे ।**
**बहिस्सरति निःश्वासे विश्वासः कः प्रवर्त्तते ॥ १ ॥**

अरे जीव ! हरिके नामको क्षण २ में तूं भज, कैसा वह नामहै, कल्याणका एक मंदिरहै, जब कि, बाहरको श्वास निकलता है तब तिसके भीतर आनेका कौन विश्वासहै आवे या न आवे ( १ ) ॥ ३१ ॥

हे चित्तवृत्ते ! महाभारतमें एक छोटासा इतिहास कहाहै उसकोभी तुम सुनो:—

एक द्विज कहीं विदेशको जाताथा, रास्ता भूलकर वह एक सघन वनमें जा निकला । वह सघन वन बडा भयानक अर्थात् डरावने वाला था । क्योंकि तिस वनमें चारों तरफसे बडे भयानक शब्द होतेथे और मांसाहारी सिंहादिक जीव तिसमें घूमरहेथे और बडे भारी २ हाथियोंके झुडोंके झुंड जिस बनमें घूम रहेथे और चारों तरफ बडे भयानक रूपवाले सर्पभी जिस वनमें घूम रहेथे उन भयानक

जीवोंको देखकर वह द्विज भयभीत होकर इधर उधर दौडने लगा अर्थात् अपनी रक्षाके लिये स्थानको खोजने लगा। तब उसको सामनेसे आतीहुई एक पिशाचिनी देख पडी, जिसने बडी २ पांशोंको अपने हाथमें लिये हैं।

फिर वह द्विज क्या देखताहै; पर्वतोंके समान पाँच शिरोंवाले सर्पभी तिस सघन वनमें घूमरहेहैं उन सर्पोंसे भयभीत होकर वह द्विज जब कि एक तरफको चला, तब तिसने एक कुआँ देखा जिसके भीतर अंधकार भराहै और ऊपरसे तृण करके आच्छादितहै और तिसके भीतर अनेकप्रकारकी वेलें लटक रही हैं द्विजने विचारा इस कुवेंके अतिरिक्त और कोईभी स्थान इस वनमें नहींहै जहां पर कि, मैं छिपकर अपनेको इन भयानक जीवोंसे बचाऊं। तब वह द्विज कुवेंके ऊपर जो वेल थी तिसको पकडकर नीचेकी तरफ अपना शिर करके तिस कुवेंमें लटक रहा। थोडी देरके पीछे जब कि, नीचेकी तरफ तिसने देखा तब एक बडा भारी सर्प कुवेंमें बैठा हुवा तिसको दिखाई पडा। ऊपरको जब देखा तब एक हाथी बडा बली खडा हुवा तिसको दिखाई पडा। कैसा वह हाथीहै छः मुख जिसके, श्वेत और श्याम है वर्ण जिसका अर्थात् आधा शरीर तिसका श्वेतहै और आधा शरीर तिसका श्याम है और जिस वेलिको तिस द्विजने पकडा हुवाहै तिसको वह हाथी खा रहाहै, फिर वह द्विज क्या देखताहै दो बडे भारी मूसे तिस वेलिकी जडको काट रहेहैं। हे चित्तवृत्ते! यहतो दृष्टांतहै अब इसको दार्ष्टांतमें घटातेहैं। हे चित्तवृत्ते! यह जीवरूपी तो द्विजहै और संसाररूपी सघन वनहै, अपने स्वरूपसे भूलकर तिस वनमें यह घूम रहाहै और काम क्रोधादिरूप भयानक जीव तिस वनमें घूम रहेहैं और स्त्रीरूपी पिशाचिनी भोगरूपी पाशको लेकर इसको फँसानेकेलिये सम्मुख चली आतीहै, तिस संसाररूपी वनमें गृहस्थाश्रमरूपी कूपहै, आयुरूपी वल्लीको पकडकर यह जीव तिसमें लटकरहाहै, कालरूपी सर्प तिस कुएँमें बैठा हुवा इसकी तरफ देख रहा है और दिन रात्रिरूपी दो मूसे इसकी आयुरूपी वल्लीको काट रहेहैं और वर्षरूपी हाथी इसकी आयुरूपी वल्लीको खारहाहै। षट् ऋतु तिस वर्षरूपी हस्तीके छः मुखहैं और शुक्ल कृष्ण दो पक्ष तिसके दो वर्णहैं ऐसे कष्टमें प्राप्त हुवाभी यह जीव वैराग्यको प्राप्त नहीं होताहै, विना वैराग्यके और किसी प्रकारसेभी इसका छुटकारा नहींहै॥ ३२॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयका एक और दृष्टांत तुमको सुनातेहैं:—

एक नदीमें एक सर्प और एक मेडक दोनों बहे जातेथे सर्पने मेडकको अपने मुखमें पकडलिया और तिसको खानेके लिये किनारेकी तर्फ लेचला और मेडक तिस सर्पके मुखमें पकडा हुवाभी मुखको फाडकर मच्छरोंके खानेकी इच्छा करताहै।मूर्ख यह नहीं जानता कि, मैं तो आपही दूसरेका आहार हो रहाहूं, न मालूम घडी पलमें खायाजाऊंगा । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै अब दार्ष्टांतको सुनो—यह जीवरूपी तो मेडकहै और कालरूपी सर्पके मुखमें पकडाहुवाहै। यह मालूम नहींहै कि,काल इसको किस घडी पलमें खा डालताहै, तब भी यह मूर्ख विषयरूपी मच्छरोंके खानेकी इच्छा करता है अपनी तर्फ नहीं देखताहै, जो कि, मैं आपही दूसरेका खाद्य होरहाहूं, किञ्चित् मात्रभी वैराग्यको यह नहीं प्राप्त होताहै । इससे बढकर और क्या अज्ञान होगा ॥ ३२ ॥

वैराग्य आश्रम कहतेहैं॥ हे चित्तवृत्ते! एकऔर वैराग्यवान्के दृष्टांतको सुनोः—

एक राजाने दूसरी विलायतके राजापर चढाईकी दोनों राजोंका परस्पर घोर युद्ध होने लगा, जिस राजापर चढाई की गई थी वह राजा तिसी घोर युद्धमें मारा गया । और उसके देशको दूसरे राजाने अपने कब्जेमें कर लिया । जब कि, कुछ दिन तिस राजाको वहांपर रहते बीते, तब तिसका अपने देशको जानेका विचार हुवा । राजाने लोकोंसे पूँछा इस राजाके कुलमें कोई है ? लोकोंने कहा इस राजाके वंशमें तो कोईभी नहींहै परन्तु इसका गोतिया एक मनुष्यहै। राजाने पूँछा वह कहाँ पर रहताहै ? लोकोंने कहा वह संसारको त्याग करके स्मशानोंमें रहताहै । राजाने तिसको बुला भेजा, वह नहीं आया जब कि, दो चार दफा बुलाने परभी वह नहीं आया तब राजा पालकीमें सवार होकर आपही तिसके पास गये और उससे भेंट करके कहा हमसे कुछ माँगो जिस वस्तुकी तुमको इच्छाहो वही माँगो यदि राज्यकी इच्छा हो तो राज्यको माँगो, हम तुमको देवेंगे । उसने कहा हमको किसी वस्तुकी इच्छा नहीं है, जब कि, राजाने बहुतसा आग्रह किया कुछ माँगो २ तब तिसने राजासे कहा इतनी वस्तु हमको चाहियें यदि आपके हों तो हमको दीजिये । एक तो वह जीना जिसके साथ मरना न हो, दूसरी वह खुशी जिसके साथ रंज न हो, तीसरी वह जवानी जिसके साथ बुढापा न हो,

चौथा वह सुख जिसके साथ दुःख न हो । ये चार वस्तु हमको चाहिये । राज
कहा इन चारोंमेंसे एकके देनेकीभी मेरी सामर्थ्य नहीं है । ये सब तो मनु
मात्रके पास नहीं हैं, किन्तु यह सब ईश्वरकेही पासहै, वही देसक्ताहै, दू
कोईभी दे नहीं सक्ताहै । तब तिसने कहा मैंने भी परमेश्वरकाही आश्रयण कि
है, अनित्य पदार्थोंको मैं नहीं चाहताहूं राजा लौट कर चले आये । हे चित्त
यह वैराग्यका फलहै जो राज्य मिलै और तिसको ग्रहण न करै । ऐसे जो है
वैराग्यवान् महात्माहैं वही संसारमें जीवन्मुक्त सुखीहैं ॥ ३९ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और महात्माके वैराग्यका हाल सुनो—एक महा
देशाटन करते फिरतेथे, एक दिन वह कुछ रात्रिके बीत जानेपर एक नगर
द्वारपर पहुँचे । आगे नगरका फाटक बंद होगयाथा महात्मा वह
फाटकके पडे रहे । उस नगरका राजा मरगया था और राजाके संतति
नहीं थी और न कोई तिसके कुलमेंही था । मंत्रियोंने आपसमें यह सला
करीथी कि, जो पुरुष प्रातःकालमें आकर नगरके फाटकको हिलावे उसीको राज
गद्दीपर बिठा देना चाहिये । इधर तो मंत्री लोक रात्रिको तिस फाटकके भी
मिलकर सब पडे रहे और उधर फाटकके बाहर महात्मा आकर पडे रहे । ज
प्रातःकाल हुवा तब महात्मा फाटकके द्वारको हिलाने लगे क्योंकि वह पां
दिनके भूखेथे उनको भूखने सतायाथा मंत्रियोंने तुरंत फाटकको खोलदिया औ
उनको भीतर लेकर स्नानकराय सुंदर वस्त्र पहराकर राजसिंहासनपर बैठायदि
और कहा आप हमारे अब राजा होगयेहैं, हुक्म करिये । महात्माने कहा हमा
जो दो लँगोटी हैं उनको धोकर सुखाकर एक संदूकमें धरकर तिसको ताला लग
दीजिये और जितना कि, राजकाजहै उसको आप अपनी बुद्धिमानीसे की
हमसे कुछ भी न पूँछिये घाटे बाढ़ेके मालिक तुमको ही होना पडेगा । हम
दो रोटी खा लेवेंगे और कुछ काम नहीं करेंगे । मंत्रीलोक सब राजका
करने लगे । महात्मा राज सिंहासनपर बैठे भजन करतेरहे । इसीतरह जब कु
काल व्यतीत होगया तब एक और राजाने तिस राज्यपर चढ़ाई की, मंत्रियों
महात्मासे कहा एक शत्रुने राज्यपर आक्रमण कियाहै महात्माने कहा उस संदूक
खोलो जिसमें हमारी लँगोटियें रक्खीहैं, वजीरोंने खोल दिया महात्माने अपनी लँगोटि
बांधली और कहा हमने चार दिन इस गद्दीपर बैठकर हलवा पूरी खा लीहै औ

चार दिन दूसरा राजा खा लेवै, हमतो जातेहैं, घाटा बाढा तुम्हारा रहा । ऐसा कहकर महात्माने चल दिया। हे चित्तवृत्ते ! वैराग्यवान् महात्मा किसी पदार्थमेंभी आसक्त नहीं होते हैं। राजसिंहासन और भिक्षाटन दोनों उनकी दृष्टिमें बराबर हैं॥ ३६॥

हे चित्तवृत्ते ! संसारमें तीन तरहके पुरुषहैं, उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ । उत्तम पुरुषोंके लिये तो शास्त्रका एक वाक्यही सुनना बहुतहै, और मध्यम पुरुषोंके लिये सब शास्त्रहै और कनिष्ठोंके लिये सब निष्फलहै । सो प्रथम हम तुमको उत्तम अधिकारीके दृष्टांतोंको सुनातेहैं:—

हे चित्तवृत्ते ! एक घोडेका सवार कहींको जाता था चलते२ जब कि, वह थक गया, तब एक ग्रामके बाहर एक मंदिरके समीप वह घोडे परसे उतरकर एक वृक्ष के नीचे बैठकर सुस्ताने लगा और घोडेको तिसने वृक्षके साथ बांध दिया और इधर उधर देखने लगा। इतनेमें मंदिरकी तरफ जब कि, तिसकी दृष्टि पडी तब बहुतसे आदमी तिसको मंदिरमें बैठे हुये दिखाई पडे। एकसे तिसने पूँछा मंदिरमें इतने आदमी क्यों जमा हुएहैं ? तिसने कहा मंदिरमें वेदांतकी कथा होतीहै, तिस कथाको सुननेके लिये ये सब जमा हुएहैं। वह सवारभी भीतर कथा सुननेके लिये उन आदमियोंमें जाकर बैठ गया और कथाको सुनने लगा उस दिन दैवयोगसे वैराग्यका प्रकरण चला हुआथा और वक्ताजी संसारको दुःखरूपता करके श्रोतोंके प्रति दिखला रहेथे। तिस कथाको सुनकर तिस सवारको बडा वैराग्य हुआ जब कथा समाप्त हुई तब उस सवारने बाहर आतेही घोडा एक आदमीको देदिया और बाकीकाभी सब असबाब उसने उसी जगह लोकोंको बाँट करके विरक्त होकर चल दिया। बारह बरस तक वह विरक्त होकर देशांतरमें रमण करता रहा और बारह बरसके पीछे दैवयोगसे फिर वह उसी रास्तासे आनिकला और उसी वृक्षके नीचे बैठकर सुस्ताने लगा। और मंदिरमें लोकोंकी भीडभाडको देखकर एक आदमीसे पूँछा इस मंदिरमें पुरुषोंकी भीडभाड क्यों होरही है ? तिसने कहा कथा होती है कथाके श्रोता लोकोंकी भीडभाड होरही है। सवार विरक्तने पूँछा ये श्रोतालोक कबसे कथाको सुनतेहैं और यह वक्ता कबसे कथाको सुनाताहै ? उसने कहा वक्ता तो वीस बरससे इस मंदिरमें कथा कहताहै और श्रोतालोकोंका कुछ ठीक नहीं है कोई दश बरसका कोई वीस बरसका कोई पांच सात बरसका

हींहै । विरक्तने कहा हमने तो एकही दिन इसकी कथाको सुना था, हमारे मुंह शास्त्रका एकही चपेट लगा जिसके लगनेसे आजतक हमारा होश विगडाहै,धन्य चिरकालके श्रोतालोकहैं जो नित्यही शास्त्रकी चपेटोंको अपने मुखपर सराहतेहैं लज्जित नहीं होतेहैं । ऐसे कहकर वह चल दिया । हे चित्तवृत्ते ! वह उत्तम अधिकारी था, जिसको एक दिनकी कथा श्रवण करनेसे वैराग्य उत्पन्न होगया ॥३

हे चित्तवृत्ते ! एक और उत्तम अधिकारीकी कथाको मैं तुम्हारे प्रति सुनाता हूं तू सावधान होकर सुन:—

एक नगरमें किसी मंदिरमें नित्यही कथा होतींथी और बहुतसे श्रोतालोक वहाँपर कथाके समय पर जमा होते थे, एक बनियाँभी नित्यही कथा सुननेको तिस मंदिरमें जाताथा । एकदिन इधरतो बनियां कथा सुननेकेलिये मंदिर गया और उधर तिसके पींछे तिसकी दूकान पर एक ग्राहक कुछ सौदा लेने पहुँचा उसने बनियांके लडकेसे पूँछा तुम्हारे पिता कहाँको गयेहैं ? उसने कहा कथा सुननेको गयेहैं । उस खरीदारने कहा हमको कुछ सौदा लेनाहै,तुम जल्दी जाकर अपने पिताको बुला लावो । लडकेने मंदिरमें जाकर अपने पिताके कानमें कहा एक आदमी दूकानपर सौदा लेनेके लिये आपको बुलाताहै पिताने कहा तुम जाकरके तिससे कह देवो अभी आते हैं । लडकेने जाकर कहदिया अभी आते हैं। जब कि, वह थोडी देरतक न आया तब तिस ग्राहकने लडकेसे कहा तुम जल्दी अपने पिताको बुला लावो नहीं तो हम दूसरी जगह सौदा खरीद लेवेंगे । फिर लडकेने जाकरके पिताके कानमें कहा लाला ! वह उकताया हुवाहै वह कहताहै जल्दी आकर हमको सौदा देवें,नहीं तो हम दूसरी जगह खरीदकर लेवेंगे । तिसके पिताने कहा रोज तो यह पंडित थोडीसी कथा कहता था मगर आज तो इस सालेने वडा रामघाणा छेडदियाहै, तुम चलो मैं आता हूं। लडकेने आकर ग्राहकसे कहा अभी आते हैं । फिर तिसने लडकेसे कहा तुम अबकी बार जाकर उसको कहदो यदि नहीं आना हो तो हमको जवाब दे हम और जगहसे खरीद करलेवें लडकेने फिर जाकर बापके कानमें कहा लाला जल्दी चलो नहीं तो वह जाताहै । तिसके बापने और दो चार गाली पंडितको देकर कहा तुम चलो मैं अभी आताहूं । लडका दो तीन मिनट वहांपर खडा होगया उस समय ऐसी कथा होती थी कि, भगवान

उद्धवसे कह रहेथे हे उद्धव! सब प्राणियोंमें एकही आत्माको तुम जानो सो आत्मा मैंहीं हूं मेरेसे भिन्न कोई भी जीव नहींहै, इसलिये किसी प्राणीमात्रसे भी विरोध मत करो। इतनी कथा सुनकर लडका जब दूकानमें आकर बैठा तब एक गैया आकर उसके अनाजके दौरेमेंसे अन्नको खाने लगी, लडका मनमें विचार करताहै जब कि इसका और हमारा आत्मा एकहींहै तब हम किसको हटावें। इतनेमें तिसका बाप भी कथासे उठकर दूकानकी तरफ चला। दूरसे तिसने देखा गैया तो अनाज खारहीहै और लडका देख रहाहै गैयाको हटाता नहीं है। तब वह दूरसेहीं गाली देने लगा, समीप आकर तिसने एक लाठी गैयाकी पीठ पर जोरसे मारी गैया तो भाग गई, परन्तु लडका चिल्लाकरके रोने लगा। बापने कहा मैंने तो गैयाको लाठी मारीहै, तुम क्यों चिल्लाकर रो उठे हो? लडकेने कहा आज जो कथामें निकलाथा कि, सब प्राणियोंमें एकही आत्माहै। मैं उसका विचार कर रहा था और मेरे आत्माका गैयाके आत्माके साथ अभेद हो रहाथा इस लिये वह लाठी हमको लगी है। इतना कहकर लडकेने जब कुडता उतारकर अपनी कमर बापको दिखलाई तब उसकी कमर पर लाठी लगनेका निशान पडगया था, बापने गुस्सेमें आकर कहा अरे मूर्ख! वहांकी कथा वहां परही छोडी जातीहै। क्या कोई तुम्हारी तरह साथ बाँध लाताहै। लडकेने कहा जो हुवा सो हुवा अब हमारा रास्ता दूसराहै, तुम्हारा रास्ता दूसराहै। इतना कहकर लडका वहांसे चलदिया। हे चित्तवृत्ते! वह लडका उत्तम अधिकारीथा इसीवास्ते उसको एकही वाक्य श्रवण करनेसे पूरा बोध हो गया था। और तिस कथाके सुननेवाले मध्यम अधिकारी थे क्योंकि यत्किञ्चित् धारण करतेथे और लडकेका बाप कनिष्ठ अधिकारीथा जो कि, एक कानसे सुनताथा दूसरेसे निकाल देताथा संसारमें प्रायः करके तो कनिष्ठ अधिकारीही बहुतहैं, मध्यम तो कोई एकहै, उत्तम तो करोडोंमेंभी मिलना दुर्लभहै, बिना उत्तम अधिकारीके दूसरेका मोक्ष नहीं होताहै ॥ ३७ ॥

एक राजाने किसी वार्तासे प्रसन्न होकर अपने मंत्रीको एक दुशाला इनाम दिया, मंत्री दुशालेको लेकर जब कि, दर्बारसे बाहर निकला तब तिसका नाक बहने लगा उस कालमें वजीरके पास कोई रूमाल नहींथा इस लिये वजीरने दुशालासेही नाकको पोंछ दिया। उस जगहपर एक मंत्रीका द्रोही खडा देखताथा

उसने राजासे जाकर कहा आपने जो वजीरको इनाममें दुशाला दियाहै कि दुशालेको तुच्छ समझ कर वजीरने तिससे नाक पोंछ दियाहै । राजाने वजीरको बुलाकर डाटा और नोकरीसे निकाल दिया । अर्थात् वजीरीसे उतार दिया । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै । दार्ष्टांतमें परमेश्वरने जो जीवको मनुष्य शरीररूपी दुशाला दियाहै तिसके साथ जो विषयभोगरूपी नाकको पोंछताहै तिसका आदर नहीं करताहै जो यह शरीररूपी दुशाला मोक्षकी प्राप्तिका साधनहै उसको परमेश्वर मनुष्यपदसे उतारकर पशुआदिक योनियोंमें वार वार फेंकताहै क्योंकि यह शरीर वैराग्यकी प्राप्तिका साधनहै भोगोंमें राग करनेका साधन नहींहै ॥ ३८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांतको तुम सुनो यह दृष्टांतभी वैराग्यका उत्पादकहै-

एक राजाके कोईभी पुत्र नहींथा, और अनेक प्रकारके यत्नोंके करनेसेभी तिसके पुत्र जब कि, उत्पन्न न हुआ तब राजाने मनमें विचारा कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे राज्यभी मेरे पीछे बना रहे और कोई एक पुरुष इसका मालिकभी न होने पावे राजाने एसा प्रबंध करदिया कि पांच मंत्री मिलकर राज्यका प्रबंध हमेशां किया करें । उनमें एक मंत्री प्रधान बनाया जावे, वह सबेरे सांझ नगरमें घूमकर प्रजाके हालको देखा करे और छैः महीनोंके पीछे वह मंत्री नदी पार कर दिया जाय और एक नया बनाया जावे । फिर दूसरेको पांचोंमें प्रधान बनाया जावे । अब येही प्रबंध राजाने जारी करदिया जो प्रधान बनाया जावे वह छैः महीनाके पीछे नदीपार किया जावे । जब कि, वह नदी पार जंगलमें जाय वहांपर बिना खानेसे दुःख पाकर मर जाय इसीतरह बहुतसे मंत्री जब नदी पार किये गये, तब एक मंत्री जो प्रधान बना वह बड़ा चतुरथा और जो प्रधान बनताथा उसको सब तरहके अख्त्यारात मिल जातेथे । उस मंत्रीने नदीपार बहुतसे मकान और बगीचे तथा कुएं वगैरह बनवा दिये और आरामदारीके लिये सब प्रकारके सामान वहाँपर जमा करादिये । जब कि, छैः महीने पूरे हुए तब वह वजीर नदीके पार जाकर जैसे कि, इसपार आनंद करताथा वैसेही उसपारभी आनंद करने लगा । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै अब दार्ष्टांतमें इसको घटाइये । यह मनुष्य जन्म छैः महीनेकी वजीरीहै जो कि, मूर्ख हैं, वह इसको विषयभोगोंमें लगाकर छैः महीनेरूपी अपने पदको

व्यतीत करदेतेहैं। जो कि, विचारवान्‌हैं, वह परलोककी सामग्रीकोभी साथ २ जमा करते रहतेहैं। नदीपार कौनहै लोकांतरमें जन्मांतरका होना, लोकांतरमें जन्मांतरमें जाकर फिर वहां परभी आनंदकोही प्राप्त होतेहैं। सो विना वैराग्यके लोकांतरके साधन जमा नहीं होसक्तेहैं, इसलिये वैराग्यको आश्रयण करनाही मनुष्य जन्मका मुख्य प्रयोजनहै॥ ३९॥

हे चित्तवृत्ते! वैराग्यवान् दो और महात्मोंके दृष्टांतको तुम सुनोः—
एक नगरके वाहर नदीके किनारेपर एक कुटी बनाकर दो महात्मा बडे वैराग्यवान् रहतेथे और किसीभी राजा बाबूके द्वारपर नहीं जातेथे। अपनी भिक्षा माँगकर निर्वाह करतेथे। प्राणधारणके अतिरिक्त जिनका और कोईभी व्यवहार नहींथा। लोकोंमें उनके गुणोंकी बडी चर्चा फैली, क्योंकि, वह बडे भारी त्यागीथे। राजाके दरवारमेंभी उनके त्यागकी चर्चा फैली। तव राजाके मनमेंभी उनके दर्शन करनेकी इच्छा हुई। एक दिन राजाभी पालकी पर सवार होकर उनके पास गये आगे उसीवक्त वह महात्मा भिक्षा माँगकर लायेथे और हाथ पाँव धोकर खानेको बैठेथे। राजाको आतेहुए दूरसे जब उन्होंने देखा तव आपसमें विचार किया इस राजाकी श्रद्धाको हटाना चाहिये नहीं तो राजाके संगसे वैराग्य ढीला हो जायगा। ऐसा विचार करके जब कि, राजा समीप आगये तव वह दोनों आपसमें एक रोटीके टुकडेपर लडने लगे। एक तो कहे तुमने रोटी अधिक खाई है, दूसरा कहे तुमने अधिक खाई है। राजा उनकी लडाईको देखकर दूरसेही लौट गया। राजाने जान लिया यह दोनों कँगलेहैं, जो एक रोटीके टुकडेपर परस्पर लडतेहैं। हे चित्तवृत्ते! पूर्ण वैराग्यवान् राजोंसे भेट नहीं करतेहै। और न तिनका अन्नही खातेहैं, जो कि, दाम्भिकहैं, कामनासे भरेहैं, वह अनेक प्रकारका झूठा त्याग दिखलाकर राजा वावुओंको अपना सेवक बनातेहैं और बहुतसे ऐसे भीहैं। राजा वावुओंको फँसानेके लिये वीचमें दलालोंको डाल कर उनको अपना पशु बनालेतेहैं वही नरकगामी होते हैं॥ ४०॥

हे चित्तवृत्ते! राजोंकी संगति वैराग्यवान्‌के लिये बहुतही बुरी है। जिसको दृढ वैराग्यहै, वह राजोंसे दूर भागताहै। इसीमें तुमको दृष्टांत सुनातेहैं:—

एक महात्मा वैराग्यवान् एक नगरके वाहर वनमें रहतेथे। और उसी नगरके राजाके मंदिरोंमें राजाके पास एक और महात्मा रहतेथे। दैवयोगसे वह राजा

और तिसके पास रहनेवाले महात्मा दोनों मरगये कुछ दिन पीछे एक दिन
वनवासी महात्माके समीप गरीब सत्संगी दोचार बैठेथे। इतनेमें अकस्मात्ही
महात्मा हँसने लगे, तब उन सत्संगियोंने पूँछा महाराज विनाही प्रयोजनके
आज क्यों हँसेहैं महात्माने कहा विना प्रयोजनके हम नहीं हँसेहैं। एक प्रयोजन
लेकरके हम हँसेहैं। राजाके पास जो महात्मा रहतेथे वह और राजा दोनों मृत्युको प्र
होगयेहैं। राजा तो उत्तम गतिको गयाहै। क्योंकि, राजाका मन नित्यही महात्मा
में और उनके वाक्योंमें लगा रहताथा और वह महात्मा अधोगतिको गयेहैं। क्यों
राजाका अन्न खाकर उनका मन नित्यही राजामें और राजसम्बन्धी भोगोंमें रहता
हे चित्तवृत्ते! राजोंकी संगतिका ऐसा अनिष्ट फलहै इसीलिये वैराग्यवान् पुरु
लिये राजाका अन्न और राजाकी संगतिको करना मनाकियाहै॥ ४१॥

हे चित्तवृत्ते! एक और महात्माके दृष्टांतको सुनोः—

पूर्वकालमें एक विरक्त महात्मा एक लंगोटीको धारण करके कई बरस
गंगाके तीरपर विचरते रहे. तत्पश्चात् काशीमें आकर उन्होंने निवास किया
जब कि, उनको दश पाँच बरस काशीमें व्यतीत होगये तब लोक उनके
बहुतसे जानेलगे और हरएक आदमी उनको भोजनके लिये अपने घरमें लेजा
करें। तब उन्होंने देखा लोकोंके घरोंमें जानेसे तो बहुत विक्षेप होताहै
ऐसी युक्ति करें जो लोक हमको अपने घरोंमें न लेजाया करें। ऐसा विचा
करके उन्होंने लंगोटियोंकोभी फेंकदिया। लंगोटियोंके फेंकनेसे उनका
आगेसेभी सौगुणा अधिक बढगया। धीरे २ अब राजा बाबू उनके चेले
लगे। थोडेंही दिनोंमें हजारों चेले होगये और दिनरात चेलोंकी भीड
लगी। अब तो केवल नंगाही रहना रहगया बाकीके सब गुण जाते रहे
क्योंकि, रात दिन उनका मन राजोंकी बडाईमें और मुलाकातमें लगा रहे। ए
दिन एक महात्मा उनके पास ऐसे वक्तपर गये जिसवक्त वे अकेले पडे थे, महा
त्माने पूँछा क्या हालचालहै? उन्होंने कहा बवासीरकी बीमारीसे मरते
महात्माने कहा लोक तो आपको सिद्ध बतातेहैं, तब उन्होंने अपने चित्तका स
हाल कहा लोक मूर्ख है हमको तो सैकडों वासना भरी हैं, न मालूम हम कि
नीच योनिमें जन्मेंगे हमारा तो सब वैराग्य इन धनियोंकी संगतिमें नष्ट होगया
हे चित्तवृत्ते! निवृत्तिमार्गवालेको प्रवृत्ति मार्गवालेकी संगत खराब करदेती है॥४२

चित्तवृत्ति कहतीहै हे विवेकाश्रम! निवृत्तिवाला पुरुष यदि उपकार करनेके लिये धनी राजोंकी संगत करै तब तो तिसकी कुछ हानि नहींहै। विवेकाश्रम कहतेहैं तबभी तिसकी बडी हानीहै। इसीमें एक दृष्टांतको दिखातेहैं:—

हे चित्तवृत्ते! एक राजाके दर्वारमें एक भाँडने तमाशा किया और अनेक प्रकारके स्वांग राजाको दिखाये, राजाने भाँडसे कहा एक विरक्त अवधूत महात्माकाभी स्वांग हमको दिखावो। भाँडनें कहा फिर कभी हम आपको विरक्तका स्वांग दिखलावेंगे। जब छैः महीना व्यतीत होगया और राजा वह बात भूलगये तब तिस भाँडने एक दिन एक लंगोटी बाँधकर और बदनमें धूली लगाकर अतीव विरक्तकी सूरत बनकर नगरसे थोडी दूर नदीके किनारे जंगलमें आकर आँख मूंद कर बैठ गया। और जो कोई आवै उससे बातचीतभी न करै। कोई आदमी कुछ धरजाय, कोई उठालेजाय, किसीकी तरफभी न देखै। थोडेही दिनोंमें नगरमें तिसके महत्वकी बडी चर्चा उठी, अब तो हजारों आदमी तिसके दर्शनको आने लगे। राजातक उसके महत्वकी खबर पहुँची। राजाभी परिवारके सहित आये और आकर एक हजार अशरफीकी थैली तिसके आगे धरदी तिसने राजासे कहा राजन् इस उपाधिको उठा लीजिये,यह तो विरक्तके लिये विषके समानहै, विरक्तका धर्म नष्ट करनेवालीहै। राजाने कहा महाराज किसी शुभ काममें लगादीजिये विरक्तने कहा राजन्! आप क्यों नहीं शुभ काममें लगा देते? हम अपने एक हाथमें थुकाकर दूसरेके मुँहपर मलते फिरैं। लेना और दिलवाना ये तो दोनों बराबरहीहैं! जो विरक्त आप नहीं लेताहै दूसरेको दिलवा देताहै, वह विरक्त नहीं कहा जाताहै। क्योंकि, दूसरा जो देताहै वह तो उस विरक्तकोही देताहै तिस पर तिसकी श्रद्धाहै दूसरेपर तो तिसकी श्रद्धाहै नहीं, इसलिये प्रतिग्रहका लेनेवाला वह विरक्त हो जाताहै। जो एकसे लेकर दूसरेको दिलवाताहै वह विरक्त नहीं कहाजाताहै, वह दाम्भिक कहाजाताहै। विरक्त, वहीहै जो न आप द्रव्यको लेताहै और न दूसरेको दिलवाताहै। राजाने कहा सत्यहै, राजा अपनी अशरफियोंको लेकर चले आये। दूसरे दिन वह भाँडभी वहाँसे उठगया और अपने घरमें जाकर भांडोंवाली पगडी बांधकर और लंबा अँगरखा पहनकर राजाके दर्वारमें आकर कहने लगा महाराजकी जैजैकार हो इनाम मिलै। राजाने कहा कैसा इनाम! भाँडने कहा कल जो आपने विरक्तका स्वांग देखाहै।

और आप परिवारके सहित हमारे पास आयेथे और एक हजार अशरफीकी थै
आपने मेरे आगे धरदीथी मैंने तिसको नहीं लियाथा और आपको विरक्त
स्वरूप दिखलादियाथा । उसी स्वांगका मैं इनाम माँगताहूं । राजाने कहा
कि, हमने तुम्हारे आगे एक हजार अशरफी धर दी थी, तब आपने क्यों न ली
इतने भारी द्रव्यका त्याग करके अब थोडासा द्रव्य इनाम माँगनेको आयाहै,
कौन अकलकी बातहै । भाँडने कहा राजन् ! आप तो सत्य कहतेहैं, यदि
उस वक्त यह द्रव्य ले लेता तब फिर आपके पास इनाम माँगनेको न आता,
दो बात इसमें होजाती । एक तो दम्भ साबित होता दूसरा स्वांगको बट्टा
जाता । फिर वह विरक्तका स्वांग पूरा न उतरता, इन दो बातोंको हटाने
लिये हमने आपसे अशरफियोंकी थैलीको नहीं लियाथा । इसीवास्ते वह स्वां
निर्दोष पूरा उतर गया । राजा उसकी वार्ताको सुनकर बडे प्रसन्न हुए औ
तिसको बहुतसा इनाम दिया । हे चित्तवृत्ते ! स्वांगका धारण करना तो सहजहै पर
पूरा उतारना कठिनहै ॥ ४३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक नगरके समीप एक जंगलमें महात्मा रहतेथे, एक दिन रा
उनके पास गये और कुछ द्रव्यको राजाने उनके आगे धरकर कहा महाराज
कोई संसारसे छुडानेवाली वार्त्ताका मेरेको उपदेश करिये । महात्माने कहा रा
न् ! इस द्रव्यके तो हम अधिकारी नहीं हैं, इस द्रव्यको तो आप किसी अधिका
रीके प्रति दे दीजिये । क्योंकि, हम जंगलमें रहतेहैं इसके रखनेकी जगह हमा
पास नहीं है । फिर इस द्रव्यके पीछे कोई चोर हमारी जानकोही लेवैगा, ह
लोकोंके लिये यह अनर्थका हेतुहै।जब तुम इसको उठा लेवोगे तब हम तुमको उप
देश करेंगे । राजाने द्रव्यको जब उठा लिया तब महात्माने कहा राजन् ! भारी
उपदेश हमारा येही है जो हरवक्त मरनेको याद रखना । राजाने कहा मरनेको याद
रखनेसे क्या होगा ? महात्माने कहा पुरुषसे जितने पाप होतेहैं वह सब मरनेको
भुलानेसेही होते हैं जिनको हरवक्त मरना याद रहताहै उनसे कोई पाप नहीं होताहै।
वैराग्यका मूल कारण मरनेको याद रखनाहीं है राजाने कहा ठीकहै ॥ ४४ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांत तुमको सुनातेहैं:—
एक वैराग्यवान् महात्मा कहींको जातेथे, रास्तामें एक नदी आगई तिस नदीसे पार
होनेके लिये बहुतसे लोक नावमें बैठेथे, महात्माभी उनके साथ तिस नावमें

बैठ गये जब कि, नाव किनारेसे खुलकर नदीके बीचमें पारजानेके लिये चलने लगी तब तिस नावमें एक बद आदमी बैठाथा वह उस महात्माको हँसी दिल्लगी-से मारने लगा, इस कदर उसने महात्माको मारा जो उनके खून बहने लगा। इतनेमें आकाशवानीहुई। महात्मासे आकाशवानीने कहा यदि आपका हुक्महो तो इस नावको डुबो दिया जावे। महात्माने कहा हम ऐसे बुरे हैं जो हमारे सबबसे इतने आदमी नाहक डुबो दिये जाँय? फिर आकाशवाणीने कहा हुक्म हो तो इस बदमाशको डुबो दिया जाय महात्माने कहा मैं नहीं चाहताहूं जो कि, मेरे साथका डुबोया जाय। फिर आकाशवाणीने कहा कुछ न्याय तो होना चाहिये। महात्माने कहा इसकी बुद्धि धर्ममें होजावे यही न्यायहो तुरंत उसकीबुद्धि धर्ममें होगई, वह महात्मासे अपनी भूलको बख्शाने लगा। हे चित्तवृत्ते! जो वैराग्यवान् पुरुष है वह किसीकाभी बुरा नहीं चाहताहै ॥ ४९ ॥

हे चित्तवृत्ते! इसी विषयका औरभी दृष्टांत तुमको सुनाते हैं.

एक नदीमें एक नाव पारले किनारेको जातीथी, तिसमें बहुतसे आदमी बैठेथे एक महात्मा परमहंस मुंडित शिरभी तिसमें बैठेथे और उसी नावमें एक साहूकार और एक भाँडभी बैठाथा। जब कि, नाव चली, तब भाँड तमाशा करने लगा और लोकोंको हँसानेकेलिये महात्माके शिरपर अपने जूतेको फेरने लगा। बल्कि दो चार जूता तिसने उन महात्माके शिरपर लगाभी दिया महात्मा तबभी कुछ नहीं बोले। उस साहूकारने महात्माको पहचान करके तिस भाँडको डाँटा और महात्मासे कहा मैंने आपको पहचाना है आप फलाने राजाहैं राज्य छोडकर आपने फकीरी लई है, इस भाँडने जो कि, आपसे बुराई कीहै, उसको आप माफ करें। महात्माने कहा इस भाँडने कोईभी बुराई नहीं कीहै इसने हमारे शिरको दण्ड दियाहै, क्योंकि, यह पहले किसीकेभी आगे नहीं झुकताथा, यदि इससेभी अधिक इसको दण्ड मिलता तो अच्छा होता हे चित्तवृत्ते! इतनी बडी क्षमा होनी यह वैराग्यकाही फलहै ॥ ४६ ॥

हे चित्तवृत्ते! एक और वैराग्यवान्की कथाको सुनो—

एक नगरके समीप बनमें कुटी बनाकर एक महात्मा रहतेथे और किसी राजा बाबूसे मुलाकात नहीं करतेथे किंतु अपनी भिक्षा माँगकर क्षुधाकी निवृत्ति कर लेतेथे। राजाने जब लोकोंसे उनके त्यागको सुना तब राजाके भी मनमें उनके

दर्शनकी इच्छा हुई । तब राजाभी पालकी पर सवार होकर उनके दर्शनको गये जब कि, महात्माकी कुटीके समीप पहुँचे तब महात्माने अपनी कुटीका दर्वाजा वंद करलिया । राजाने जाकर कितनाहीं कुटीके किवाडेको हिलाया और खोलो करके पुकारा परंतु महात्माने किवाडा नहीं खोला । तब राजाने कहा आप धन्य हैं और आपका वैराग्यभी धन्य है क्योंकि आपने इस लोकको लात मारदीहै महात्माने कहा आपभी धन्य हैं और आपका राग भी धन्य है क्योंकि आपने परलोकको लातमारी है ॥ महात्माके उत्तरको सुनकर राजाकोभी वैराग्य हुवा तब महात्माने किवाँड खोल दिया और राजासे कहा राजन् ! संसारके भोगोंमें जो रागहै वही इस लोक परलोकमें दुःखका हेतु है इनसे जो वैराग्यहै वही दोनों लोकोंमें सुखका हेतुहै और रागही अज्ञानका चिह्न है, सो पंचदशी ग्रन्थमें कहा भी है:—

**रागो लिंगमबोधस्य चित्तव्यायामभूमिषु ।**
**कुतः शाद्वलता तस्य यस्याग्निः कोटरे तरोः ॥ १ ॥**

चित्तकी विस्तृत भूमियोंमें अज्ञानका चिह्न पदार्थोंमें रागही है । जिस वृक्षके कोटरमें आग लगी है तिस वृक्षको हरियालता कैसे होसक्तीहै ! किंतु कदापि नहीं

हे राजन् ! जिन पुरुषोंका स्त्री पुत्रादि भोगोंमें राग बनाहै, उनको कि सुखकी प्राप्ति कदापि नहीं होसक्तीहै । राजाने कहा महाराज ! गृहस्थाश्रममें रहकर स्त्री पुत्रादिकोंमें रागतो अवश्यही कुछ न कुछ बनाही रहेगा । रागका अभाव तो किसी कालमेंभी नहीं होगा । तब गृहस्थाश्रमीकी मोक्ष कदापि नहीं होनी चाहिये । महात्माने कहा ऐसा नियम नहीं है जो गृहस्थाश्रममें सदैवकाल स्त्री पुत्रादिकोंमें रागही बनारहे किसीकालमेंभी उनसे वैराग्य न हो । किंतु ऐसा नियम तो है कि, गृहस्ताश्रममें एक न एक दुःख अवश्य बना रहताहै. उस दुःखके बने रहनेसे कुछ न कुछ वैराग्य भी बना रहताहै । क्योंकि, विषयोंमें दुःख बुद्धि वैराग्यका हेतुहै और विषयोंमें सुख बुद्धि रागका हेतुहै । जो कि, अतीव मूढ पुरुषहैं उनकोभी यत्किञ्चित् वैराग्य बना रहताहै, परंतु वह मंद वैराग्य होताहै। जिस क्षणमें स्त्री पुत्रादिकोंमें कोई कष्ट आकर बना तिसी क्षणमें वह अपनेको और संसारको धिक्कार देने लगतेहैं, जब कि, वह कष्ट हट जाता है फिर उनका वैराग्य नहीं रहताहै, वैराग्यका कारण गृहस्थाश्रमही है । क्योंकि, जितने बडे २ महात्मा

हुए हैं जैसे रामचन्द्रजी वसिष्टजी आदिक सबको गृहस्थाश्रममेंही वैराग्य हुवाहै और जितनेक बडे २ संन्यासी हुएहैं उनकोभी प्रथम गृहस्थाश्रममेंहीं वैराग्य हुवाहै, तत्पश्चात् उन्होंने गृहस्थाश्रमका त्याग करदियाहै, विना गृहस्थाश्रमके तो किसीकी उत्पत्तिभी नहीं होतीहै। इसलिये गृहस्थाश्रमही सबका मूलकारण है। और ऐसाभी नियम नहींहै जो गृहस्थाश्रममें ज्ञान नहीं होताहै। क्योंकि, जनकादिक सब गृहस्थाश्रममेंही ज्ञानी हुएहैं। ज्ञानका कारण वैराग्य है, जिसको गृहस्थाश्रममेंभी सदैवकाल वैराग्य और विचार बना रहताहै, उसके ज्ञानी होनेमें कोईभी संदेह नहींहै और संन्यासाश्रममेंभी जिसका पदार्थोंमें राग बनाहै, उसके अज्ञानी होनेमेंभी कोई संदेह नहींहै। वैराग्यकोही आत्मज्ञानके प्रति साधनता कहीहै वह ब्रह्मचर्य्याश्रममें हो गृहस्थाश्रममेंहो वानप्रस्थाश्रममें हो, या संन्यासाश्रममेंहो, विना वैराग्यके ज्ञान नहीं होताहै और ज्ञानके विना मोक्ष नहीं होताहै, ऐसा वेदने नियम करादियाहै। हे राजन् जो पुरुष गृहस्थाश्रममेंही अनासक्त होकर जलमें कमलकी तरह रहताहै उसके मुक्तिमें कोईभी संदेह नहीं है। इसमें जनकजीके दृष्टांतको तुम्हारे प्रति सुनातेहैं:—

जिसकालमें व्यासजीने शुकदेवजीको राजा जनकजीके पास उपदेशलेनेको भेजाहै और शुकदेवजीने द्वारपर जाकर अपने आनेकी खबर जनकजीको भेजीहै, तब जनकजीने शुकदेवजीकी परीक्षाके लिये कहला भेजा अभी द्वारपरही ठहरो। जनकजीका यह तात्पर्यथा देखें इनको क्रोध होताहै या नहीं। तीन दिन शुकदेवजी द्वारपर खडेही रहे और उनको कुछभी क्रोध न आया। तब जनकजीने चौथे दिन शुकदेवजीको भीतर बुलाया। जब कि, शुकदेवजी भीतर गये, तब देखा कि, जनकजी स्वर्णके सिंहासनपर स्थितहैं और सुन्दर२ स्त्रियें चरण दबारहीहैं। और मधुर गीतोंको गायन कर रहीहैं और अनेक प्रकारके भोग खान पानादिक चारों तरफ धेरेहैं, बंदीगण स्तुति कर रहे हैं, जनकजीकी विभूतिको देखकर शुकदेवजीके मनमें घृणा उपजी। यह तो भोगोंमें अति आसक्त हैं, यह कैसे ज्ञानी होसक्ते हैं जो मेरेको पिताने उपदेश लेनेके लिये इनके पास भेजाहै। जनकजी शुकदेवजीके चित्तकी वार्ताको जान गये, तब जनकजीने एक ऐसी माया रची जो मिथिलापुरीको आग लग गई और बाहरसे दूत दौड आये और उन्होंने कहा महाराज

मिथिलाको आग लग गईहै और अब द्वारपरभी आगई है थोडी देरमें भी आनी चाहतीहै । तब शुकदेवजीके चित्तमें फुरा बाहर द्वारपर तो हमा दण्ड कमडलु पडाहै कहीं जलही न जाय ॥ जनकजी जानगये और कालमें जनकजीने इस आगेवाले श्लोकको पढा—

**अनंतवत्तु मे वित्तं यन्मे नास्ति हि किञ्चन ॥**
**मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति किञ्चन ॥ १ ॥**

जनकजी कहतेहैं मेरा जो आत्मरूपी वित्त धन है सो अनन्तहै अर्थात् ति अंत कदापि नहीं होसक्ताहै । इस मिथिलापुरीके दग्ध होनेसे मेरा तो किंचि दग्ध नहीं होताहै ॥ १ ॥

इस वाक्यसे जनकजीने पदार्थोंमें अपनी अनासक्ति दिखलाई । अ जनकजीने अपनी असंगताको दिखलाया । तब शुकदेवजीको पूर्ण नि होगया कि जनकभी ब्रह्मज्ञानीहैं फिर जनकजीने शुकदेवजीको उ किया महात्मा राजासे कहतेहैं यदि जनककी तरह तुमभी आसक्तिको त्याग क राज्य करोगे तो तुमभी मुक्त होजावोगे । हे चित्तवृत्ते ! राजाभी महात्माके उ शको ग्रहण करके ज्ञानवान् होगया ॥ ४७ ॥

हे चित्तवृत्ते! वैराग्यका जनक एक और दृष्टांत तुमको सुनातेहैं । नदीके कि पर एक विधवा स्त्रीका मकानथा और तिसके समीप राजाकाभी एक बागथा । दिन राजा जो अपने बागमें गये तब राजाके मनमें आया यदि इस विधवा मकान लेकर बागमें मिलाया जावै तो बाग बहुत बडा होजायगा । बडा हो नेसे सुंदर चौरसभी होजायगा । तब राजाने तिस स्त्रीसे कहा तुम अपना म हमको देदेवो स्त्रीने कहा मेरा पति है नहीं एक लडका और एक छोटीसी लडकीहै मैं इनको लेकर कहां जाऊँगी? मैं अपना मकान नहीं देऊंगी। तब रा अपने नौकरको हुकम दिया इस स्त्रीको; मकानसे निकालदो । नौकरने मार कर निकाल दिया स्त्रीके पास एक गधाथा उसने गधेपर लडका लडकीको च कर रुदन करती हुई वहांसे चलपडी । जब कि, वह रोती २ थोडी दूर गई वहांपर एक महात्मा खडेथे उन्होंने स्त्रीसे पूछा तूं क्यों रुदन करतीहै ? अपना सब हाल उन महात्मासे कहा । महात्माने कहा तू

साथ एक दफा राजाके पास चल हम एक युक्तिसे राजाको समझावेंगे। स्त्री उनके साथ चलपडी जब कि महात्मा राजाके समीप गये, तब राजासे कहा महाराज इस स्त्रीकी यह इच्छा है जो थोडीसी मट्टी मेरे मकानके जमीनकी मुझको मिलै जो मैं जहांपर जाकर मकान बनाऊंगी वहांपर इस मट्टीको गाडकर अपने बडोंकी एक समाधि यादगीरीके लिये बनाऊंगी, राजाने कहा खोद लेवे, महात्माने बहुतसी मट्टी खोदकर एक बोरामें भरकर राजासे कहा महाराज इस मट्टीके बोरेको जरा आप उठवाकर गधे पर लदवादीजिये, राजाने कहा क्या इतना भारी मट्टीका बोरा हमसे उठाया जाता है ? जो हम इसको गधेपर लदवादें महात्माने कहा जब कि यह मट्टीका बोरा आपसे नहीं उठाया जाताहै तब इतनी बडी जमीन और मकान आपसे कैसे उठाया जावैगा ? जो अपने इसका छीन लिया है फिर इसको किस तरहसे उठाकर आप मरती बार अपने साथ लेजावैंगे, महात्माकी वार्ताको सुनकर राजाको भी वैराग्य होगया और तिस स्त्रीके मकानको फेर दिया, बल्कि अपना भी बाग तिसीको देदिया, हेचित्तवृत्ते ! संसारमें जोकि मूर्ख अज्ञानी हैं, दूसरोंकी जमीन और धनको अधर्मसे दबालेते हैं. क्योंकि उनको इतना भी ज्ञान नहीं है जोकि यह शरीरभी तो साथ नहीं जायगा तब और पदार्थ कैसे जाँयगे यदि ऐसा विचार उनको हो तब क्यों दूसरोंकी जमीनको दबालेते ? वही लोक मरकर बार २ पशुयोनिमें जाते हैं और जोकि विचारशील वैराग्यवान् हैं वह ऐसा नहीं करते हैं क्योंकि वह जानते हैं धर्म अधर्मही पुरुषके साथ जातेहैं। और सब माल धन तो मरे पीछे दूसरे तिसके वारस लेलेतेहैं इसलिये वैराग्यकोही आश्रयण करना उत्तम है ॥ ४८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! संसारमें पुरुष कौनहै ? और स्त्री कौनहै ? इसपर एक दृष्टांत तुमको सुनातेहैं, एक राजाके घरमें संतति नहीं होतीथी बहुतसा यत्न करनेसे एक कन्या तिसके घर उत्पन्न हुई वह कन्या बाल्यावस्थासेही वस्त्रोंको नहीं पहनती थी जब कि वह बडी होगई तबभी उसकी वही आदत रही वस्त्रोंको न पहरना किंतु नंगाही रहना तिसको पसंदथा राजाने कोटिन यत्न किये तबभी तिसने वस्त्र न पहने जब कि जोरसे तिसको वस्त्र पहनाते तब तुरत फाडकर फेंकदेती एक-दिन दैवयोगसे वहांपर एक महात्मा साधु आगये उनको देखकर वह लडकी लज्जा-यमान होगई और तुरन्त उसने वस्त्रोंको पहर लिया तब राजाने प्रसन्नहोकर

अपनी लडकीसे पूँछा आज क्या उत्तम दिन है ? जो आपको सुमति आगई भला यह तो बताओ आगे वडे २ हमने यत्न किये तबभी तुमने वस्त्रोंको पहरा और आज एक साधुको देखकर आपसे आप तुमने वस्त्रोंको पहर लिये इसका कारण क्या है। उस कन्याने कहा राजन्! स्त्रीको मर्दसे शरम लज्जा होती है स्त्रीसे स्त्रीको लज्जा नहीं होती है, जबसे मैंने होश सँभाला है, तबसे तुम्हारे नगरमें कोईभी हमको पुरुष नहीं दिखाई पडा आज हमने एक पुरुषको देखा है उससे हमने लज्जाकी है, लज्जा होनेसे मैंने कपडोंकोभी पहन लिया है हे राजन् मर्द नाम उसका है जिसेन अपने शरीर और इन्द्रियोंको अपने काबूमें कर लिया है और जिसने अपने शरीर और इन्द्रियोंको अपने वशमें नहीं किया है वह मर्द नहीं है। सो वैराग्यवान्से विना दूसरा कोई भी अपने इन्द्रियोंको अपने वशमें नहीं कर सक्ता है इस लिये वैराग्यवान् पुरुषही मर्द है रागवान् स्त्री है आज एक वैराग्यवान्को देखा है इस लिये वस्त्रोंको भी मैंने पहर लिया है ॥

हे चित्तवृत्ते ! गार्गीने भी इसी वार्त्ताको याज्ञवल्क्यके प्रति कहा है ॥

## आत्मपुराण ।

**अहं पश्यामि विप्रेन्द्र जगदेतदपौरुषम् ।**
**नपुंसकमहं तद्वदहं स्त्री च पुमानहम् ॥ १ ॥**

गार्गी कहती है हे याज्ञवल्क्य! इस जगत्को मैं अपौरुष अर्थात् पुरुषसेहीन देखती हूं मैं ही नपुंसकहूं मैं ही पुरुषहूं मैं ही स्त्रीहूं ॥ १ ॥

**नपुंसकः पुमान् ज्ञेयो यो न वेत्ति हृदि स्थितम् ।**
**पुरुषं स्वप्रकाशं तमानंदात्मानमव्ययम् ॥ २ ॥**

जो पुरुष अपने हृदयमें स्थित आत्माको नहीं जानता है, कैसे आत्मा पुरुषरूप है और स्वप्रकाश आनन्दरूप अव्यय है ॥ २ ॥

**अयमेव पुमान् योषित्त्वाहं पीनपयोधरा ।**
**यतः स्वस्मात्परस्तस्य पतिरस्ति स्त्रियां यथा ॥ ३ ॥**

गार्गी कहती है जो पुरुष हृदयमें स्थित आत्माको नहीं जानता है वही मैं पीनपयोधर स्त्री नहींहूं क्योंकि जैसे स्त्रीका अपनेसे भिन्न पति होता है तैसे तिसने भी अपनेसे भिन्न पति मान रक्खा है ॥ ३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! जो पुरुष वैराग्यसे और आत्मविचारसे शून्य हैं। वह पुरुष नहीं हैं किन्तु शास्त्रदृष्टिसे वह स्त्री हैं॥ ४९॥

हे चित्तवृत्ते ! अब तेरेको एक प्रमादी धनीकी कथाको सुनाते हैं:—

दक्षिण देशके एक नगरमें धनमदांध एक बनियां रहता था, अपने तुल्य किसीकोभी वह बुद्धिमान् और धनी नहीं जानता था दिन रात्रि द्रव्यके ही कमानेके फिकरमें रहता था और कभीभी किसी साधु ब्राह्मणको भोजन नहीं कराता था दैवयोगसे एक दिन एक महात्मा उस रास्तासे आनिकले कि जहाँपर उसकी दुकानथी महात्मा उसकी दुकानके सामने जाकर खडे होगये और तिस बनियेंकी तरफ देखने लगे वह बनियां अपने धनके मद करके ऐसा उन्मत्तथा जो उसने आँखको उठाकर महात्माकी तरफ न देखा, क्योंकि धनमद वडा भारी होताहै आत्मपुराणमें कहा है:—

**समर्थः श्रीमदांधोयं राजानं देवतां गुरुम्।**
**अवजानाति सहसा स्वात्मनो वलमाश्रितः॥ १॥**

जो पुरुष समर्थ है और धनके मद करके अंधा होरहा है, वह अपने बलको आश्रयण करके राजाकी, देवताकी तथा गुरुकी भी अवज्ञा कर देता है॥ १॥

**समर्थो धनलोभेन परदारान् धनादिकम्।**
**हृत्वा चोपहसत्यन्यान्सर्वशोच्यो नराधमः॥ २॥**

जो समर्थ धनी है, वह धनके लोभ करके दूसरोंकी स्त्रियोंको और धनादिकोंकोभी जबरदस्ती छीन लेता है और हँसता है वही पुरुषोंमें अधम है॥ २॥

**मातरं पितरं पुत्रान् ब्राह्मणांश्च वहुश्रुतान्।**
**कर्मणा मनसा वाचा समर्थो हंति मोहितः॥ ३॥**

धनमदांध समर्थ जोहै सो माता, पिता, पुत्र और ब्राह्मण वेदपाठीको कर्म करके मन करके वाणी करके मारता है॥ ३॥

फिर महात्माको दया आई क्योंकि महात्माका दयालु स्वभाव होताही है महात्माने मनमें कहा इस फाँसेसे इसको निकालना चाहिये ऐसा विचार करके उस साहूकारसे कहा राम राम कहो, वह साहूकार बोलाही नहीं, जब कि दो तीन

वार कहनेसेभी वह नहीं बोला तब महात्माने सोचा यह भारी मूर्ख है इस हसें यह नहीं मानैगा, इसको दण्ड दिया जावैगा तब यह मानैगा ऐसा वि करके महात्मा नदीके तीरपर चलेगये सवेरे वह साहूकारभी नदीके त स्नात करनेको जाताथा दूसरे दिन सवेरे जब कि साहूकार नदीपर करनेको गया तब महात्माने अपने योगबलसे अपनी उस बनियांकी सूरत बनाली वह तो अभी स्नानही उधर करने लगा इधर महात्मा ति घरकी तरफ आये आगे लडकोंने देखा पिताजी आज जल्दी स्नान करके आये हैं उन्होंने पूँछा आज जल्दी आनेका क्या कारण है ? उन्होंने आज एक ठग हमारी सूरत बनाकर आवैगा हम देख आये हैं वह किनारे पर बैठा बनाता था तुम लोगोंने होश्यार रहना अभी थोडी वह आवैगा उसको धक्के देकर निकाल देना यदि कुछ बोले तब दो चार लगाना ऐसे कहकर लडकोंसे वहतो भीतर जाकर पलंगपर लेट रहे। उधर जी स्नान करके घरको चले जब कि समीप घरके पहुँचे तब लडकोंने डाटा तुम इधरको आते हो? सेठने कहा बेटा मैं अपने घरको आता हूं तुम हमारे ल हो मैं तुम्हारा बाप हूं आज क्या तुमको कोई पागलपना तो नहीं होगया तुम हमको ऐसा कठोर शब्द बोलते हो। लडकोंने कहा हम तुम्हारे लडके नहीं जिसके हम लडके हैं वह घरमें बैठे हैं तुमतो कोई बहुरूपियाहो । हमारे बा स्वांग बनाकर हम लोगोंको वंचन करनेके लिये आयेहो । सूधी तरहसे पी लौट जावो नहीं तो मार खाकर जावोगे ज्योंहीं सेठ आगेको बढा त्योंहीं दो धक्के लगा दिये तब सेठने गुस्सेमें आकर ज्योंही लडकोंको गाली दी त्योंही लडकेने दशपांच जूते सेठके सिर पै लगा दिये अब तो सेठजी भागे और राजाके पास सब अपना हाल कहा राजाने सेठके लडकोंको बुलाकर जब पूँछा उन्होंने कहा हमारा बापतो हमारे घरमें है यह तो कोई बहुरूपिया है रा दरबाले उनके बापको बुलाकर देखा तो दोनोंकी एकही तरह सूरत दिखाई किसी अंगमेंभी यत्किञ्चित् फरक नहीं था तब राजा बडे शोचमें पडे अब किस सच्चा कहा जावे और किसको झूठा कहाजावे महात्माने कहा राजन् ! यदि असली सेठहै तब यह इसवार्ताको बतावें बडे लडकेकी शादीमें कितना लगाथा जब कि मकान बना था तब मकान पर कितना रुपैया लगा था रा

सेठसे पूँछा सेठने कहा हमको याद नहीं है महात्माने योगबलसे सब जवानी बतला दिया जब कि वही खाता देखा गया तब वह ठीक निकला राजाने भी सेठको झूठा करके निकाल दिया अब तो सेठजीका सब धनका मद उतर गया और नदीके किनारे पर जाकर अपने भाग्यको धिक्कार देकर रोने लगे दूसरे दिन महात्मा सबेरे नदीपर स्नान करनेको जब गये तब देखा सेठजी रुदनकररहे हैं और बडे दुःखी होरहे हैं तब महात्माने अपना असली रूप बना लिया और सेठके पास जाकर ऐसा कहा राम राम कहो महात्माके वाक्यको सुनकर सेठ कांपने लगा और राम राम करके पुकारने लगा जब कि सेठ बार २ रामको प्रेमसे कहने लगा तब महात्माने सेठसे कहा अब तू धक्के और जूते खाकर राम राम करने लगाहै यदि पहलेसेही तू राम नामसे प्रेम रखता तब क्यों जूते खाकर घरसे निकाला जाता जिन लडकोंके सुखके लिये तुमने अनर्थोंसे धनको जमा किया था उन्हीं लडकोंने तेरेको जूते मारकर निकाल दिया है फिर जो उनसे तू राग करेगा तब आगेसे भी अधिक जूते खायगा अरे मूर्ख तूने अपना जन्म व्यर्थ खो दिया अब तो वैराग्यको प्राप्तहो महात्माके चरणोंपर सेठ गिरपडा तब महात्माने कहा जो तुम्हारे घरमें सेठ घुसे-थे तुमको दण्ड दिलानेके लिये सो हमहीं हैं अब तुम अपने घरमें जावो और आनन्दसे रहो परन्तु उन्माद मत करना धर्म करना सत्संग करना ऐसा उपदेश करके महात्मा तो चले गये और सेठ घरमें आकर उसी दिनसे वैराग्यपूर्वक धर्म करने लगा और महात्माओंकी सेवा करने लगा ॥ ९० ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और आलसी बनियेंकी कथा तुमको सुनाते हैं ॥

हे चित्तवृत्ते ! पूर्वदेशके एक नगरमें एक बनिया बडा धनी रहता था धनके कमा-नेमें और संग्रह करनेमें तो वह बडाही निपुण था, परंतु भजन स्मरणमें बडा आलसी था, किसी क्षणमें भी वह वैराग्यको प्राप्त न होता और न कभी मुखसे राम इस नामका उच्चारण करता था, परन्तु तिसकी स्त्री बडी विचारवान् थी, और भजन स्मरणमें तथा उदारतामें भी वह एकही थी, वह नित्यही पतिसे कहा-करे हे स्वामिन् ! यह मनुष्यशरीर विषयभोगोंके लिये नहीं है यह परमेश्वरकी भक्ति करनेके लिये है आपभी नित्य एक दोघडी भजन स्मरण किया करें क्योंकि बार २ यह शरीर मिलना कठिन है तब बनियांने कहा कोई जल्दी नहीं है

भजन स्मरणभी कर लेवेंगे इसी तरह कहते सुनते बहुत काल वीतगया एक दिन वनियां वीमारहोगया स्त्रीसे वनियांने कहा किसी वैद्यको बुलावो स्त्रीने एक वैद्य बुलाया वैद्यने आकर वनियांका हाथ देखकर दवाई लिखदी और तिसका अनुपानभी बता दिया स्त्रीने दवाईको मँगाकर ताखे पर धर दिया दिन बीत गया वनियांको दवाई तिसने न दी, तब संध्याके समय वनियेने स्त्रीसे कहा औषधिको आपने मँगयाहै वा नहीं स्त्रीने कहा औषधि मँगाकर मैंने रखाहै वनियाने कहा तिसको तू मेरे प्रति देती क्यों नहीं है स्त्रीने कहा कुछ जल्दी नहीं है आज न दी जायगी कल दी जायगी कल दी जायगी परसों दी जायगी । कभी तो दी जायगी । बनियांने कहा यदि मैं मर गया तब वह औषधि हमारा क्या काम देगी स्त्रीने कहा मरनेको तो आप मानते नहीं हैं यदि मानते होते तब मैं जब आपको भजन स्मरणके लिये कहती थी आप यही कहदेते थे कोई जल्दी नहीं है, फिर होजायगा । यदि आपको मरना यादहोता तब ऐसा न कहते क्योंकि क्या जाने फिर तबतक शरीर रहे या न रहे आज औषधिके लिये आप मरनेको भी याद करने लगे हैं । यदि इस जन्ममें न भी औषधि दी जायगी तब दूसरे जन्ममें दी जायगी यदि कहो औषधिकी हमको इसी जन्ममें जरूरत है, क्योंकि वर्तमान दुःख तिसके विना दूर नहीं होता है तब भजन स्मरण की भी तुमको इसी जन्ममें जरूरत है फिर क्या जाने कदाचित् पशु आदि योनि मिल जावेगी तब उस योनिमें तो होना कठिन है स्त्रीके उपदेशसे वनियांको भी वैराग्य हुवा और भजन स्मरण में लगा स्त्रीने औषधि पिलाई वह अच्छा भी होगया हे चित्तवृत्ते ! विना वैराग्यके पुरुषका मन भजन स्मरणमें भी नहीं लगता है इस लिये वैराग्यही कल्याणका कारण है ॥ ६१ ॥

हे चित्तवृत्ते ! विना वैराग्यके देहादिकोंमें जो अभिमान होरहाहै वह भी दूर नहीं होताहै । इसीपर तुमको एक महात्माके दृष्टांतको सुनाते हैं ।

एक महात्मा गुरु और एक उनके चेला दोनों देशाटन करते फिरते थे। एक दिन रास्तामें चलते २ चेलेने गुरुसे कहा महाराज कुछ उपदेश करिये गुरुने कहा बेटा कुछ बनाना नहीं जो पुरुष कुछ बनताहै वही मारा जाता है जो कुछ नहीं बनताहै उसको कालभी मार नहीं सक्ता है । चेलेने कहा सत्य वचन है आगे थोडी दूरपर सडकके किनारे एक राजाका वागथा उस वागमें एक

भारी कोठी बनी थी उसी बागमें गुरू चेला चलेगये और तिस कोठीमें जाकर एक कमरेके पलंगपर गुरू सो रहे । दूसरे कमरेके पलंगपर चेला सो रहा । जब कि तीसरा पहर हुवा तब राजा हवा खानेके लिये तिस बागमें आये प्रथम उस कमरेमें गये जिसमें चेला पलंगपर सोया था तिसको देखकर राजाके सिपाहीने कहा अरे तू कौन है ? जो महाराजके पलंगपर सो रहाहै । चेलेने कहा मैं साधु हूं: सिपाहीने कहा तू कैसा साधुहै, तूतो वडा मूर्ख है, जो महाराजके पलंगपर आकर सो रहा है दो चार थप्पड लगाकर तिसको बाहर निकाल दिया, फिर राजा घूमते फिरते उस कमरेमें जा निकले जिसमें गुरू पलंगपर सोयेथे सिपाहीने जाकर कितनाही पुकारा परंतु वह आगेसे बिलकुल न बोले । जब कि, सिपाहीने पकडकर हिलाया तब आँख मलते २ उठे परंतु मुखसे कुछ भी न बोले तब राजाने सिपाहीसे: कहा इनको कुछ मतकहो माळूम होताहै यह कोई महात्मा हैं । इनको बागसे बाहरकर देवो सिपाहीने उनका हाथ थामकर उनको बागसे बाहर कर दिया रास्तामें जाकर दोनों गुरू चेला फिर मिले तब चेलाने गुरूसे कहा महाराज! हमको तो बडी मार पडी है गुरूने कहा कुछ बना होगा चेलेने कहा मैं कुछ बना तो नहीं था कहा था मैं साधु हूं गुरूने कहा फिर साधु तो बना जो कुछ बनताहै वह माराजाता है । देखो हम कुछ भी नहीं बनेथे इसलिये हम मारे भी नहीं गये हैं । महात्मा वही है, जो कुछ भी नहीं बनता है' कि, जो मान और प्रतिष्ठाके लिये विरक्त और अवधूत बनते हैं वह भी मारे पीटे जाते हैं क्योंकि जो कुछ बनतेहैं और अपनेको मानी और प्रतिष्ठित मानते हैं, वेही मारे पीटे जातेहैं । क्योंकि उनमें अनेक प्रकारकी कामना भरी रहतीहैं । इसीसे वह आडंबर करके मानके लिये चेले चाटियोंको बढाते हैं । वह शास्त्र दृष्टिसे महात्मा नहीं कहे जातेहैं, शास्त्रदृष्टिसे वही महात्मा है जो निष्काम है ॥ ९२ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी अभिमानपर तेरेको एक और दृष्टांतको सुनातेहैं:—

पंजाबके मालवा देशके एक ग्रामसे हरद्वारके मेलेपर बहुतसे लोक जाने लगे । तब उस ग्रामके निवासी एक चमारने जिमींदारोंसे कहा मैं भी आपके साथ हरद्वारके मेलेपर जाउंगा जिमींदारोंने कहा तू भी चल वह चमारभी उनके साथ हरद्वारपर गया और सबके साथ तिसने भी गंगामें स्नान करके पंडोंको दान यथाशक्ति-

दिया। पंडे फिर सब यात्रियोंको अक्षयवटके नीचे लेगये और सबसे यह बा कही तुम सब कोई इस वटके नीचे एक २ फलको छोड देवो सबने एक फलको छोड दिया। फल छोडनेका यह तात्पर्य है जिस फलको लोक वहां छोड आते हैं अर्थात् जिस फलका त्याग कर देते हैं फिर उस फलको नहीं ख हैं। चमारसे फल छोडनेके लिये पंडेने कहा तब चमारने कहा मैं आजसे बो ढोना छोडदेताहूं। आजसे फिर कभी भी मैं बोझा नहीं ढोवोंगा चमारने जो पंडेने जाना बोझा ढोना भी कोई फल ही होगा। वहांसे फिर जब सब या अपने २ घरोंको आये तब चमारभी उनके साथ अपने घरको लौट आया और अपने घरमें आनंदसे रहने लगा। कुछ दिनके पीछे जब कि विगार पड़ी तब सिपाहियोंने आकर उसी चमारको विगारी पकडा चमारने उनसे कहा हरिद्वारपर अक्षयवटके नीचे बोझा ढोनेको छोड आयाहूं सिपाहियोंने उसकी बातको न समझा और तिसको पकड कर जबकि लेचले तब चमारने कहा तुम लंबरदारोंसे चलकर पूछ लेवो मैं हरद्वारपर बोझा ढोना छोड आयाहूं चमार सिपाहियोंको नंबरदारके पास लेगया और उनसे कहने लगा नं रदार साहिब मैं आपके सामने धर्मसे कहताहूं कि, हरिद्वारपर बोझा ढोना छोड आयाहूँ और यह सिपाही इस बातको नहीं मानते हैं आप इनको समझा दीजिये नंबरदारोंने कहा बोझा ढोनातो तुम छोड आयेहो, परंतु चमारपना तो तुमने नहीं छोडाहै जबतक तुम्हारेमें चमारपना रहेगा तबतक तुमको बोझा ढोना पडेहीगा। फिर सिपाही तिसको पकडकर लेगये हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांतहै दार्ष्टांतमें यह जो चरमकास्थूल शरीरहै, तिसके अभिमानीका नामहीं चमारहै, जाती आदिक जोकि शरीरके धर्म हैं उनको जो आत्माके धर्म मानताहै वही चमारहै। अभिमानसे जो रहितहै वही ज्ञानीहै॥ ९३॥

हे चित्तवृत्ते! विवेक वैराग्यके विना ज्ञानवान् भी शोभाको नहीं पाताहै इसपर एक दृष्टांत तुमको सुनातेहैं:—

उत्तरखंडमें एक धर्मात्मा राजा रात्रिके समयमें भेष बदलकर अपने नगरमें नित्यही घूमता था जिसको यह गरीब दुःखी जानलेता उसके दुःखको धन देकर दूर कर देता एक दिन रात्रिके समय एक अँधेरी गलीमें राजा जा निकला और अँधेरेमें खडा होकर एक गरीब घरवालोंकी बातोंको सुनने लगा।

वह घरवाले बडे गरीब थे नित्यकी मजदूरीसे अपना पेट भरते थे उस दिन उनको कहींसे मजदूरी नहीं मिली थी. वह परस्पर अपने दुःखकी बातोंको कह रहे थे । राजाने उनके भीतर जरासा ताक दिया उन्होंने जाना कोई बाहर चोर खडाहै, आकर उन्होंने राजाको पकड लिया और मारने लगे चोरका आवाज सुनकर इधर उधरसे दो चार आदमी बत्ती लेकर आये जब चांदनेमें उन्होंने देखा तब उनको मालूम हुआ कि, चोर नहीं है यह तो राजाहै तब अपनी भूलको बखशाने लगे राजा अपने घरमें चले गये हे चित्तवृत्ते! यद्यपि वह राजाही थे तथापि राज्यकी सामग्री जो कि, छत्र चामरादिकहैं उनके न होनेसे उन्होंने मार खाई क्योंकि छत्र चामरके विना वे राजा जान नहीं पडते थे वैसे ही ज्ञानवान्के चिह्न भी छत्र चामरादिक विवेक वैराग्य हैं इनके विना ज्ञानवान् भी शोभाको नहीं प्राप्त होता है और दुर्जनोंके कुवाक्यरूपी मारको खाते हैं इस लिये ज्ञानवान्को भी वैराग्य युक्त रहना चाहिये ॥ ९४ ॥

हे चित्तवृत्ते! एक और वैराग्यवान् राजाकी कथाको तुम सुनोः—

एक राजा बडा धर्मात्मा और सत्संगी था राज्य करते २ जब कि, उसको बहुत काल व्यतीत होगया तब एक दिन उसको राज्यसे बडी ग्लानि हुई क्योंकि, राज्यके प्रबंध करनेमें अनेक प्रकारके विक्षेप नित्यही बने रहते हैं । राजाको जब वैराग्य हुआ तब उसने अपने पुत्रको राज्य सिंहासन देदिया और आप बनमें जाकर तप करने लगा राजाने जब राज्यको त्याग दिया तब उसको त्यागकी बडी चरचा फैली उसकी राज्यके समीप एक दूसरे राजाका राज्य था तिस राजाको भी मालूम हुवा कि, अमुक राजाने राज्यको त्याग दिया है तब इस राजाको :तिसके मिलनेकी इच्छा हुई यह राजा बनमें शिकारके बहानेसे जाकर तिसकी खोज करने लगे खोजते २ एक बनमें एक वृक्षके नीचे बैठे उनको देखकर राजाने दण्डवत् प्रणाम किया और समीप बैठकर क्षेम कुशलको पूंछा तत्पश्चात् कुछ सत्संगकी बातें होनेलगीं जब कि, राजा आने लगे तब राजाने कहा भगवान् एक मेरी प्रार्थना है वह यह है जो आप कल सबेरे मेरे गृहमें चलकर भोजन करें इस मेरी इच्छाको आप पूर्णकर दीजिये उन्होंने कहा अच्छा कल हम आपके घर पर सबेरे आकर भोजन करेंगे । राजा अपने मकान पर चले आये दूसरे दिन सबेरे राजाने अपने भृत्योंको रास्तामें खडा करदिया और कहा

जिस कालमें वह महात्मा आवें तुरंत हमको खबर करनी जब कि, जंगलसे वस्ती की तरफको आये उनको दूरसेही आते देखकर राजाके भृत्योंने जाकर कहा महात्माजी चले आते हैं राजा उनकी पेशवाईको गये और उनको लाकर अपने सिंहासनपर बैठाया थोडी देरके पीछे राजाने अपने मंत्रीसे कहा महात्माको लेजाकर हमारी विभूति सब दिखला देवो मंत्रीने महात्माको लेजाकर जितने कि उत्तम २ राजाके घोडे हाथी और जवाहिरात वगैरह पदार्थ थे वे सब दिखला दिये राजाने वजीरसे पूँछा महात्मा सब पदार्थोंको देखकर कुछ बोले थे वजीरने कहा कुछ भी नहीं बोले थे इतनेमें राजाका भोजन तैयार होगया ॥

राजा महात्माको भीतर लेगये और एक आसनपर बिठाकर आप दूसरे आसनपर बैठे। रानीने दो थालोंमें भोजन परोस कर दोनोंके आगे धरदिया। एक थालमें चार २ बाजरेके पीसानकी रोटी और थोडा बथुवेका साग। महात्मा भोजनको देख करके हँसे तब राजाने कहा आप हमारे हाथी घोडे और खजाने वगैरहको देखकर नहीं हँसे हैं अब इस भोजनको देखकर आप क्यों हँसतेहैं कुछ कृपणताके सबबसे ? मैं ऐसा मोटा खाना नहीं खाताहूं इस मोटे खानेका सबब यहहै मैं राज्यसम्बन्धी खजानेसे एक पैसाभी नहीं लेताहूं क्योंकि राज्यकी आमदनी में अच्छा नहीं समझताहूं ये जो हमारे घरके पीछे पाँच दस बीघा जमीनहै इसमें मैं और रानी दोनों मिलकर खेती करतेहैं उसमें जो कुछ उपजताहै उसीको हम खाते हैं। इसीसे हमारा खाना मोटाहै। महात्माने कहा तुम धन्यहो और तुम्हारा वैराग्यभी धन्यहै। एक तो वह लोकहैं हम सरीखे जिन्होंने राज्यको त्याग करके फकीरी ली है। तबभी उनको फकीरीकी लज्जत नहीं मिलीहै। एक आप सरीखे हैं जो कि अमीरीमें फकीरी कर रहेहैं। अमीरीमें फकीरी करनी बडे शूरवेंका काम है इसी वार्तापर हम हँसेहैं। हे चित्तवृत्ते ! वैराग्यवान् घरमेंभी रहकर शोभाको पाताहै। रागवान् वनमें रह करके भी शोभाको नहीं पाताहै॥ ६९॥

हे चित्तवृत्ते ! अप्राप्त पदार्थके त्याग करनेवाले पुरुष तो संसारमें बहुतहीं हैं और वे त्यागी भी नहीं कहे जातेहैं। त्यागी वही कहा जाताहै जिसको पदार्थ मिले और तिसको त्याग देवे वही त्यागीहै। सो ऐसे सच्चे त्यागी संसारमें कमहैं क्योंकि बिना तीव्र वैराग्यके सच्चा त्याग नहीं होसक्ताहै। अब हम तुमको सच्चे त्यागीके इतिहासको सुनातेहैं:—

एक राजा सालके साल जन्माष्टमीपर एक हजार ब्राह्मणोंको भोजन कराता था एक समय राजाने जन्माष्टमीका उत्साह किया और ब्राह्मणोंको नेवता भेज दिया जन्माष्टमीके व्रतके दूसरे दिन जब कि, भोजनका समय हुवा, तब दूर २के ब्राह्मण भोजनके लिये आने लगे। दैवयोगसे एक तपस्वी ब्राह्मणभी कहींसे आ निकले। राजा जब सब ब्राह्मणोंके चरण धोता २ उनके पास गया और उनके चरणोंको धोने लगा तब उनके चरणोंको मट्टीमें लिपटेहुए देखकर और नीचेसे फटे हुए देखकर राजाने कहा महाराज आपके चरण तो बडे खोरेहैं वह तपस्वी ब्राह्मण बोले राजन्! तुमने कभी ब्राह्मणोंके चरण नहीं धोये हैं।

तुम पतुरियोंके चरण धोते रहे हो, इसलिये तुमको ब्राह्मणोंके चरणोंकी परीक्षा नहीं है ब्राह्मणके इसी तरहके वचनको सुनकर राजा चुप होगये जब कि, राजा सबके चरण धोचुके तब पत्तल सबके आगे बिछाई गई सब भोजन, करने लगे प्रथम यह चालथी कि, जब कि ब्राह्मण भोजन करलेते तब भोजन वाला कहता एक २ लडुवा और लीजिये चार आना एक लडुवाकी दक्षिणा मिलेगी जब कि, एक २ सब खालेते तब आठ आना करदेते, फिर बारह आना फिर एक रुपया तक एक लडुआके खानेका और दक्षिणा देतेथे राजाने भी ऐसेही किया और ब्राह्मणभी तृप्तिका भोजन नहीं करतेथे क्योंकि, दक्षिणाके लोभसे और खानेकी जगा पेटमें रख लेते थे इस तपस्वी ब्राह्मणने एक ही बार अपना तृप्तिका भोजन करलिया और आचमन करके बैठरहे इतनेमें राजाने कहा एक लडुवाको चार आना मिलैगा अर्थात् जो एक लडुवा और खायगा उसको चार आना दक्षिणा और बेशी मिलैगी सब ब्राह्मण खाने लगे जब कि, एक २ खाचुके, तब राजा आठ आना बोले फिर बारा आना बोले, फिर एक रुपैया बोले सब ब्राह्मण खाते ही रहे जब कि, राजाने इस तपस्वी ब्राह्मणकी तरफ देखा तो यह चुपचापसे बैठेथे। राजाने इनसे कहा महाराज सब ब्राह्मण तो भोजन करते हैं, आप क्यों नहीं करते हैं ब्राह्मणने कहा राजन् हम तो एक बार ही भोजन करते हैं सो हमने भोजन करके आचमन कर लिया है! अब बार २ हम भोजन नहीं करतेहैं। राजाने कहा यदि आप एक लडुवा और भोजन करें तब आपको मैं पांच रुपैया दक्षिणा देऊंगा। ब्राह्मणने नहीं माना तब राजाने दश रुपैया बोला तब भी तिसने नहीं माना, राजा बढने लगे बढते २ एक हजार

रुपैया एक लड्डुवा खानेके बदलेमें राजाने कहा । तब ब्राह्मणने कहा यदि ल
रुपैयाको भी आप देवेंगे तब भी मैं अपना धर्म नहीं छोड़ूँगा अर्थात् आचमन कि
पीछे और लड्डू दूसरी बार नहीं खाऊंगा । तब राजाने कहा देखो ऐसा दाता क
मिलैगा, जो एक लड्डूके बदले एक हजार रुपैया देताहै । ब्राह्मणने हँसकर क
हमको तो आप सरीखे दाता बहुतसे मिलेहैं और मिलेंगे परंतु आपको भी ऐ
त्यागी ब्राह्मण नहीं मिलैगा राजा चुप होगये । ब्राह्मण हाथ धोकर चल दिय
कितनाही राजाने उनके रखनेके लिये जोर लगाया परंतु वह नहीं र
हे चित्तवृत्ते ! पूर्वकालमें ऐसे २ वैराग्यवान् त्यागी ब्राह्मण होतेथे उन्हींमें ब्रह्म
चमकता था, उन्हींका वर शाप लगता था, वही ज्ञानी कहे जाते थे
जबसे ब्राह्मणोंमें त्याग और वैराग्य जाता रहा तबसे ब्रह्मतेजभी नष्ट होगया औ
वर शापका भी लगना दूर होगया । हे चित्तवृत्ते ! पूर्ण वैराग्यवान्मेंही इतना ब
त्याग रहसक्ताहै, यह वैराग्यकाही फलहै ॥ ९६ ॥

हे चित्तवृत्ते ! सच्चे त्यागीकी कथाको तुमको सुना दियाहै, अब झूठे त्यागीकी
कथाकोभी तुम सुनो:—

एक नगरके बाहर एक बाबाजी कुटी बनाकर रहने लगे और दो तीन उनके
साथ चेलेथे । वहभी उनकी सेवाके लिये उनके पास रहतेथे । चेलोंने बाबा
जीको सिद्ध और त्यागी लोकोंमें प्रसिद्ध करदिया और लोकोंमें उनकी झूठी
सिद्धियोंको मशहूर करके लोकोंको फसाने लगे । जो कोई पुरुष बाबाजी
आगे द्रव्य लाकर रक्खे चेले तिसको कहें इसको मतरक्खो बाबाजी त्यागी
द्रव्यको न लेतेहैं न छूतेहैं । अब बाबाजीके त्यागकी चरचा नगरमें फैली
क्योंकि पीरोंको मुरीद लोकही उडातेहैं और बिना दलालोंके दुकान चलती
नहीं है । तिस नगरमें एक बनियां बडा धनिक रहता था, परंतु कृपण भी
अव्वलदरजेका था, कभीभी किसी गरीबको तिसने एक टका नहीं दिया था
उस बनियाने जबकि, बाबाजीके त्यागका महत्त्व सुना तब तिसके मनमें आ
हमभी चलकर बाबाजीके आगे एक हजार रुपैयाकी थैली धरदें बाबाजी तो
लेवेंगे नहीं, परंतु उदारतामें हमाराभी नाम हो जावैगा । बनियांभी एक हजार
रुपैयोंकी थैली लेकर बाबाजीके पास गया और दण्डवत् प्रणाम करके थैली
बाबाजीके आगे धरदिया । बाबाजीने कुटीमें तिस थैलीके रखनेका इशारा किया

चेलेने थैलीको उठाकर भीतर कुटीके धर दिया । अब बनियांके होश बिगडे मनमें कहताहै यह तो द्रव्यको लेते नहीं थे अब क्या हुवा हमारा तो मतलब दूसराथा यहां तो औरका औरही होगया । फिर कहने लगा बावाजी हमसे हाँसी करते होंगे, शायत थोडी देरमें देदेवेंगे जब कि, दो चार घडी व्यतीत होगई और बाबाजीने रुपैयोंकी थैली तिसको वापस न दी तब बनियांसे रहा न गया बनियाँने कहा महाराज हमने तो सुनाथा आप द्रव्यका ग्रहण नहीं करतेहैं, वह तो बात झूठी निकली क्योंकि द्रव्यको आपने अब ले लियाहै, बाबाजीने कहा भाई एक या दो दश बीस रुपैयाको हम ग्रहण नहीं करते हैं आजतक किसीने भी हमारे आगे हजार रुपैयाकी थैली नहीं रक्खी थी, यदि कोई रखता और हम न लेते तब तो हम झूठे होते । आपने आज प्रेमपूर्वक हजार रूपैयाकी थैली भेंट की है, हमने भी तुम्हारा प्रेम रखनेके लिये उठा ली है ! किसी शुभकर्ममें इसको हमभी लगा देवेंगे, अब तुम पश्चात्ताप मत करो नहीं तो तुम्हारा पुण्य निष्फल होजायगा । बनिया माथा ठोंककर चलदिया । इधर बाबाजीका मतलब होगया, बाबाजी भी चल दिया । हे चित्तवृत्ते ! ऐसे २ पाखंडोंको करके जो लेनेवाले हैं वे झूठे त्यागी हैं, क्योंकि वे वैराग्यसे शून्यहैं ॥९७॥

हे चित्तवृत्ते ! अब हम तुमको वंध्यज्ञानियोंके इतिहासोंको प्रथम सुनातेहैं तत्पश्चात् सच्चेज्ञानियोंके इतिहासोंको सुनावेंगेः—

पंजाब देशके किसी ग्राममें एक निर्मले संत रहतेथे और सवेरे वह वेदांतकी कथा करतेथे । बहुत लोग उनकी कथा सुननेको आते थे, निर्मले संत भाईजी करके तिस देशमें बोले जाते हैं और उनके नामके आदिमें भाईजी शब्द जोडा जाता है । दोपहरके वक्त वह स्त्रियोंको पढाते थे । सब लोग उनको ज्ञानवान् जानतेथे । एक दिन दोपहरके वक्त वह एक युवतीको संथा दे रहेथे तिस युवतीके रूपको देखकर उनका मन चलायमान होगया, क्योंकि कामदेव बडा बलीहै तब वह धीरे २ तिसकी छातीपर हाथ फेरने लगे युवतीने पीछे हटकर कहा । हाय हाय यह क्या आप करने लगे हैं । अभी तो आपने हमको विचारसागरमें पढ़ाया है जो स्त्रीका स्पर्श करनेसे बडा भारी पाप होताहै और भाईजी इसी ग्रन्थमें कितनी बडी स्त्रीकी निंदा लिखी है और स्त्रीके संगसे अनेकप्रकारके दोष दिखाये हैं । क्या आपने उन सबको भुलाया है जब युवतीने ऐसे २ वाक्य कहे तब महात्मा

भाईजी कहने लगे हम तो तुम्हारी परीक्षा करतेथे जबतक देहमें अध्यास ब
रहता है तबतक पक्का ज्ञान नहीं होताहै हम इस वार्ताकी परीक्षा करतेथे । तुम्हारे दे
अध्यासहै वा नहीं सो आज हमको मालूम होगया तुम्हारे देहमें अध्यास बनाहै, तुम
अभी पक्का ज्ञान नहीं हुवा है । युवतीने कहा तुम्हारा तो अभी देहमें अध्यास छूट
नहीं है । यदि तुम्हारे देहमें अध्यास न होता तब तुम हमको हाथ भी न लग
कामातुर होकर तुमने हमको हाथ लगाया है अब बातें बनाते हो, तुम संत न
हो, कुसंतहो इस तरहके वाक्योंको कहकर वह युवती अपने घरमें चली गई औ
भाईजीने भी लज्जाके मारे तिस ग्रामको छोड दिया । हे चित्तवृत्ते ! ऐसे २ जे
पुरुष हैं वही वंध्यज्ञानी कहे जाते हैं । इसी वास्ते शास्त्रोंमें स्त्रीके संसर्ग
निषेध किया है ।

आत्मपुराणके सातवें अध्यायमें कहा है:—

**स्मरणाज्जायते कामो वधूनां धैर्यनाशनः ॥**
**दर्शनाद्वचनात्स्पर्शात्कस्मादेष न संभवेत् ॥ १ ॥**

स्त्रीका स्मरण करनेसेही धीरताके नाश करनेवाला कामदेव उत्पन्न हो
जाता है । फिर दर्शनसे, भाषणसे, स्पर्श करनेसे, क्यों नहीं उत्पन्न होगा कि
अवश्य होगा ॥ १ ॥

**आत्मनः क्षेममन्विच्छंश्चतुर्थाश्रममागतः ॥**
**न कुर्याद्योषितां संगं मनसा वपुषेन्द्रियैः ॥ २ ॥**

जो संन्यासाश्रमको अपनी कल्याणके लिये प्राप्त हुवाहै, वह मन और शरी
तथा इन्द्रियों करके भी स्त्रीका संग न करै, क्योंकि तिस आश्रमसे स्त्रीका सं
पतन करनेवालाहै ॥ २ ॥

**विलीयते घृतं यद्वदग्नेः संसर्गतस्तथा ॥**
**नारीसंसर्गतः पुंसो धैर्यं नश्यति सर्वथा ॥ ३ ॥**

जैसे अग्नि सम्बन्धसे घृत पिघल जाताहै, तैसे स्त्रीके संसर्गसे पुरुषकी धीरत
भी नष्ट होजाती है ॥ ३ ॥

**एक एव प्रतीकारो नारीसर्पविषे भुवि ॥**
**आसाश्च स्मरणं तद्वद्दर्शनादेश्च वर्जनम् ॥ ४ ॥**

पृथिवी तलमें स्त्रीरूपी सर्पके विषके हटानेका एकही उपायहै स्त्रीयोंके रूपका स्मरण नकरना और इनके दर्शन आदिकोंका न करना ॥ ४ ॥

**वासना यत्र यस्य स्यात्स तं स्वप्नेषु पश्यति ॥**
**स्वप्नवन्मरणे ज्ञेयं वासनातो वपुर्नृणाम् ॥ ५ ॥**

जिसमें जिसकी वासना रहती है सो तिसीको स्वप्नमें देखताहै, स्वप्नकी तरह मरणमें भी जान लेना। मरण कालमें जिसकी वासना जिसमें रहती है, उसीको या उसी रूपको वह प्राप्त होता है, क्योंकि वासनामयही इसका वपु है ॥ ५ ॥

**कामिनां कामिनीनां च संगात्कामी भवेत्पुमान् ॥**
**देहांतरे ततः क्रोधी लोभी मोही च जायते ॥ ६ ॥**

कामी पुरुषोंके और स्त्रियोंके संगसे पुरुषभी कामी होजाताहै और जन्मान्तरमें देहान्तरमें भी क्रोधी लोभी मोही होताहै ॥ ६ ॥

**कामक्रोधादिसंसर्गादशुद्धं जायते मनः ॥**
**अशुद्धे मनसि ब्रह्मज्ञानं तच्च विनश्यति ॥ ७ ॥**

काम क्रोधादिकोंके सम्बन्धसे मनभी अशुद्ध होजाताहै, अशुद्ध मनमें उपदेश किया हुआ ब्रह्मज्ञानभी नष्ट होजाताहै ॥ ७ ॥

**कामक्रोधादिसंसक्तो ब्रह्मज्ञानविवर्जितः ॥**
**मार्गद्वयपरिभ्रष्टस्तृतीयं मार्गमाव्रजेत् ॥ ८ ॥**

जो पुरुष काम क्रोधादिकोंमें आसक्तहै और ब्रह्मज्ञानसे हीनहै, वह दोनों मार्गोंसे अर्थात् ज्ञान और उपासनासे भ्रष्ट हुवा २ तीसरे मार्गको याने कृमि कीटादि योनियोंको प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥

**तृतीयेऽध्वनि संप्राप्तः पुण्यविद्याविवर्जितः ॥**
**कीटादिदेहभाजीसन्नरकाच्च न निःसरेत ॥ ९ ॥**

तीसरे मार्गमें प्राप्त होकर फिर वह पुण्यविद्यासे रहित होजाताहै। फिर कीटादि शरीरको भजनेवाला होकर नरकसे कदापि नहीं निकल सकताहै ॥ ९ ॥

**श्रेयस्कामस्ततो नित्यं चतुर्थाश्रममागतः ॥**
**कामिनां कामिनीनां च संगं सर्वात्मना त्यजेत ॥१०॥**

कल्याणका अर्थी जो चतुर्थाश्रमको प्राप्त हुवा है वह कामी पुरुषोंकी औ स्त्रियोंकी संगतिका सर्व प्रकार करके त्याग कर देवे ॥ १० ॥

पंचदशीमेंभी कहाहैः–

**बुद्धाऽद्वैतस्य तत्त्वस्य यथेष्टाचरणं यदि ॥**
**शुनां तत्त्वदृशां चैव को भेदोऽशुचिभक्षणे ॥ १ ॥**

जिसने अद्वैत तत्त्वको जान लियाहै और फिर वह यदि यथेष्टाचरणं करताहै अर्थात् संन्यासको धारण कर अद्वैतको जानकरके भी यदि वह मां मदिरा परस्त्रियोंका संग करताहै तब कूकरमें और तिसमें क्या फरकहै अर्थात् कुछभी फरक नहीं है क्योंकि कूकरभी वमन करके फिर तिसको भक्षण करताहै और तिस पुरुषनेभी वमन करे हुए विषयोंको फिर ग्रहण करलिया वहभी कूकरही है । हे चित्तवृत्ते ! वंध्यज्ञानियोंका यथेष्टाचरण होताहै सर्व ज्ञानियोंका नहीं होताहै ॥ ९८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक बनावटी अवधूतकी कथाको सुनोः–

एक ग्रामके समीप जंगलमें एकः अवधूत महात्मा रहते थे लंगोटीतक भी नहीं रखतेथे और अपने हाथसे भोजनभी नहीं करतेथे यदि कोई दूसरे उनके मुखमें डालता तब खातेथे और जहां तहां झाडा पेशावकोभी फिर देतेथे, उनको लोक विदेही मानतेथे । एक दिन राजाकी रानी उनके दर्शनको गई और एक थालमें लड्डू पेडोंको भरकर लेगई, जाकर उनके समीप बैठ गई थोडी देरके पीछे वह अवधूत तिस रानीकी गोदमें आकर बैठ गये रानी अपने हाथसे उनके मुखमें पेडाको देने लगी और वह खाने लगे अभी दो तीनही ग्रास रानीने उनके मुखमें दियेथे कि, इतनेमें उस अवधूतने रानीकी गोदमें दिशा करादिया रानीने एक पेडाके साथ तिस मैलेको लगाकर तिसके मुखमें जब देने लगी तब तिस अवधूतने मुखको फेर लिया रानीने अवधूतको गोदसे पटक दिया और ऊपरसे दो तीन लात तिसको मारी और कहने लगी इतनी तो तुमको होश नहीं जो यह रानीकी गोदहै या पाखानाकी जगह है और इतनी तेरेको होशहै जो मलको पेडेके साथ लगाकर यह हमको खिलातीहै इसलिये तुमने अपने मुखको फेर लिया रानीने नौकरोंको हुक्म दिया इस पाखंडीको हमारे देशसे बाहर कर देवो । रानी

सुशीला स्नान करके घरको चली आई। हे चित्तवृत्ते! ऐसे २ पाखंडोंको करनेवाले वंध्यज्ञानी कहे जातेहैं ॥ ५९ ॥

हे चित्तवृत्ते! एक और वंध्य ज्ञानीके दृष्टांतको तुम सुनोः—

लैली मजनू नाम करके दो आशक माशूक हुवेहैं लैली तो बादशाहकी लडकीथी और मजनू एक तसवीर खेंचनेवाले कारीगरका लडकाथा। मजनूका बाप बादशाहके महलोंमें काम करनेको जाताथा मजनूभी छोटीसी उमरमें बापके साथ बादशाहके महलोंमें जाने लगा। एक दिन लैलीको मजनूने देखा लैलीकीभी उमर तब छोटीसीथी मजनूका मन लैलीमें लग गया फिर लैलीके बापने लैलीको मदरसामें पढनेके लिये बिठला दिया और मजनूभी पढनेके बहानेसे तिसी मदरसामें जा बैठा। वहां पर मजनू और लैलीकी परस्पर नित्य बात चीत होनेसे प्रीति बढने लगी। दोनोंका आपसमें इतना प्रेम बढगया कि, बिना देखे एक दूसरेको चैन न पडे। थोडे दिनोंके पीछे उनके प्रेमकी वार्ता सब नगरमें फैल गई बादशाहकोभी मालूम होगई तब बादशाहने लैलीका जाना मदरसेमें बंद करदिया और लैली अपने घरसे बाहर आने न पावे अब मजनूको लैलीका देखनाभी बंद होगया. तब मजनू फकीर बनके जंगलमें जाकर रहने लगा कुछ दिनके पीछे बादशाहके दिलमें आया मजनू खाने पीनेके बिना तंग होता होगा उसके लिये खाने पीनेका कोई प्रबंध कर देना चाहिये। बादशाहने वजीरसे कहा नगरमें नोटिस देदो कि, मजनू जिसकी दूकानसे जो वस्तु उठा ले उसका हाथ कोईभी न रोके तिसका दाम बादशाहके खजानेसे मिलेगा वजीरने नोटिस जारी करादिया। इस वार्त्ताको सुनकर दश बीस साधुओंने कपडोंको उतार दिया और मजनू बनकर लोकोंकी दूकानोंसे खाने पीनेकी चीजोंको उठाने लगे जब कोई उनसे पूँछे तुम कौनहो तब वह कहदें हम मजनूहैं वह मजनूका नाम सुनकर चुप रह जातेथे अब धीरे २ मजनू बढने लगे चार पांच सौ मजनू बन गये और सैकडों रुपैया नित्य खजानेसे दूकानदारोंको वजीरको देना पडे। तब वजीरने बादशाहसे कहा मजनू तो बहुतसे जमा होगये हैं। इनके खर्चके मारे खजाना खाली हुवा जाता है, कोई उपाय करना चाहिये। तब बादशाहने लैलीसे पूँछा यह जो तुम्हारा प्रेमी मजनू है वह बहुतसे हैं या कोई एक है लैलीने कहा बापु वह एकही है बहुत नहीं हैं। बादशाहने कहा उसकी पहचान कैसे होगी लैलीने कहा अपने गृहके अंगनमें एक लोहेका

खंभा गाडिये और तिसपर एक चौकीको बांध दीजिये ऊपर उस चौकी मेरेको बिठला दीजिये, नीचे गिरदे तिस खंभेके चारोंतरफ अग्निके अंगारे बिछा दीजिये और नगरमें हुक्म देदीजिये सब मजनू आवे । लैलीने मजनुवों याद किया है जो मजनू आकर उस आगको देखकर भागे तिसको कैद डालो जो सच्चा मजनू आवेगा वह नहीं भागेगा । बादशाहने इसी तरहसे किया अब जो मजनू भीतर अंगनके आवे वह पूछे लैली कहाँ है ? जब तिसको लै ऊपर बैठी बताई जावे तब वह पीछेको भागे पकड करके कैद किया जाय इ तरह सब बनावटीके मजनू कैद किये गये तब किसीने जाकर जंगलमें सच्चे मजनूसे कहा लैली तुमको याद करतीहै । वह भी चले जब कि, वह भीतर अंगनमें पहुँचे तब मजनूने पूँछा लैली कहांहै ? लोकोंने ऊंचे खंभेपर हुईको बतादिया जब मजनूने ऊपर खंभेकी चौकीपर बैठी हुई लैलीको आँखोंसे देख लिया तबसे फिर मजनूकी निगाह नीचे आगपर न पडी ऊपरको देखते हुवे और लैली २ करते हुवे मजनू आगेको बढे और अंगारोंपर दौडते चले गये परंतु उनके पांव न जले, क्योंकि, उनका मन शरीरमें नथा वह लैलीके पास चला गया था आगका ज्ञान कैसे होता । इस उनको आगका ज्ञान भी न हुवा । जब चौकीके नीचे मजनू पहुंचे और मज नूने दोनों हाथ ऊपरको उठाये ऊपरसे लैलीने तिसके हाथोंको पकडकर पास खैंचकर चौकीपर बिठालिया और बापसे कहा येही वह सच्चा हमारा मजनूहै । बादशाहने तिसी मजनूके प्रति अपनी प्यारी बेटी लैलीको देदि और बनावटीके सब मजनुवोंको कैद करलिया । यह दृष्टांत है दार्ष्टांतमें जो सच्चा ज्ञानी है वह तो हजारों लाखों में कोई एक ही है और जो बनावटीके हैं ज्ञानी बनकर मजनुवोंकी तरह लूट मार करके खा रहेहैं वह सब बंध्य ज्ञानी जाते हैं क्योंकि वह वैराग्यादिक साधनोंसे शून्य हैं ॥ ६० ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और बंध्यज्ञानियोंके दृष्टांतको सुनः—

एक ग्राममें जुलाहे बहुतसे रहतेथे, उनसे थोडी दूर पर एक क्षत्रियों ग्रामथा । एक दिन जुलाहोंने आपसमें सलाह की चलो क्षत्रियोंको चलकर लायें रात्रिके समय वह जुलाहे सब मिलकर क्षत्रियोंके ग्रामको लूटने लगे क्षत्री बडे शूरवीरथे वह शस्त्र अस्त्रोंको लेकर जुलाहोंके मारनेके लिये दौडे जु

भागे जब कि, भागते २ कुछ दूर निकल गये तब एक जुलाहेने कहा भागे तो जातेहो मारो मारो तो करते चलो तब सब जुलाहे भागते भी जाँय और मारो मारोभी करते जाँय यह तो दृष्टांत है। दार्ष्टांतमें जो कि, वंध्यज्ञानी हैं वह विवेक वैराग्यादिक साधनोंसे भागे तो जाते हैं क्योंकि, साधन उनसे हो नहीं सक्तेहैं तबभी वह मुखसे मारो २ भेदवादियोंको करते ही जाते हैं ॥ ६१ ॥

हे चित्तवृत्ते! इसी विषय पर एक और दृष्टांत तुमको सुनाते हैं:—

एक नगरमें एक बनियां बडा धनिक रहताथा उसकी भैंसे और गैयाको चरवाहा नित्यही जंगलमें चरानेके लिये ले जाताथा एक दिन वह चरवाहा जंगलमें भैसोंको पडा चराताथा कि, इतनेमें एक सिंह जंगलसे निकला और उन भैसोंमेंसे एक भैंसको उठाकर लेगया चरवाहेने आकर रात्रिमें बनियांसे कहा आज सिंह एक भैंसको उठाकर लेगया है। बनियांने मुनीमसे कहा वही खातेको देखो सिंहका कुछ हमारी तरफ निकलता तो नहीं है मुनीमने वहीको देखकर कहा सिंहका हमारी तरफ कुछभी नहीं निकलता है तब बनियांने कहा फिर सिंह हमारी भैंसको क्यों लेगया बनियांने चरवाहेसे कहा कलको हमभी तुम्हारे साथ जंगलमें चलेंगें और सिंहसे भैंस लेजानेका कारण पूछेंगे। दूसरे दिन बनियां चरवाहेके साथ जंगलमें जाकर एक वृक्षकी छायामें बैठ रहा जब कि, तीसरा पहर हुवा तब सिंह बनसे निकला और भैंसोंकी तरफ चला तब बनियांने सिंहसे कहा हमने अपना बही खाता सब देख लियाहै तुम्हारा हमारी तरफ कुछभी हिसाब नहीं निकलता है फिर तुम हमारी भैंसको क्यों उठाकर लेगये बनियेंकी वार्त्ताको सुनकर सिंह गरजा और गरज करके एक और भैंसको उठाकर ले भागा तब बनियांने कहा यदि हिसाब देखा जाय तब तो तुम्हारा कुछ भी हमारी तरफ नहीं निकलताहै और जो तुम केवल गरजना दिखलाकर हमारी भैंसोंको खाना चाहो तब तो हमारा तुम्हारे पर कुछ भी जोर नहीं चलता है। तुम बेशक खाजाओ! यह तो दृष्टान्तहै। दार्ष्टांतमें जितने कि, वन्ध्यज्ञानीहैं यदि ज्ञानकी धारणाका और ज्ञानके सुखका उनसे कुछ हिसाब पूंछा जाय तब तो उनके पास बाकी कुछ भी नहीं रहता है, केवल ज्ञानकी बातोंके गरजनेको दिखलाकर वह लोकोंको लूट कर चले जाते हैं। इसीसे वह वन्ध्यज्ञानी कहे जातेहैं। हे चित्तवृत्ते! हरएक वस्तुकी

सिद्धि किसी प्रमाणसे होती है, या किसी लक्षण करके होती है विना इन बातोंके नहीं होती है, सो ज्ञानीके जो लक्षण शास्त्रोंमें किये हैं, वह वंध्यज्ञानि योंमें नहीं घटतेहैं। प्रथम तो जिसका किसीभी पदार्थमें राग न हो बल्कि पुत्रादिकोंमें भी राग न हो और यदि संन्यासीहो तब मठों और चेलोंमें द्रव्यादिकोंमें जिसका राग न हो फिर सब जीवोंमें शत्रु मित्रादिकोंमें भी जिस सम बुद्धिहो और किसीकाभी जिसको भय न हो और किसीको भी जिससे नहो वही पूरा २ ज्ञानी है। यह बातें जिसमें नहीं घटती हैं, केवल ज्ञानकी हो करता, वैराग्यसे भी शून्य है वही वंध्यज्ञानी है ॥ ९२ ॥

हे चित्तवृत्ते ! अब तुमको सचे निष्काम ज्ञानीकी कथाको सुनातेहैं:—

सिंधु नदीके किनारेपर जहाँसे कि, नाव इसपार उसपार जाती आती वहांपर एक क्षत्रियजातिवाला पुरुष दूकान करता था, उसकी दूकानमें पां सातही रुपैयाका सौदा रहता था, जो कोई साधु नदीके पारको जाता था इस पारको आताथा उसकी दूकानके आगे एक पलंग बिछा रहताथा उ वृक्षकी छाया थी, उस पलंगपर वह महात्माको बिठाकर तीन मुट्ठी चने खिलाता और ठंढा पानी अपने हाथसे पिलाता पंखा करता कुछ देरतक प दबाताथा, ऐसा तिसका नियमथा, एक दिन एक रसायनी महात्मा साधु व आगये उसने उन महात्माकी सेवाभी उसी तरहसे की जैसी औरोंकी करताथ महात्माने उसकी दूकानकी तरफ जब देखा तब उनको माल्म हुवा यह तो ब ही गरीब है। क्योंकि, तिसकी दूकानमें उनको कुछ सामग्री दिखाई न प तब महात्माने कहा इसको कुछ देना चाहिये उन्होंने एक रसायनका बि निकालकर तिसको दिया और कहा इसको किसी ताके पर धर दीजिये तुम्ह काम आवेगा। उसने बिलको लेकर ऊपर ताकेके धरदिया महात्मा नावमें बैठ उस पारको गये। एक सालके पीछे वह फिर उसी रास्तासे आ निकले मनमें विचार किया अब तो यह बडा धनी होगया होगा क्योंकि हमने उस रसायनका बिल दियाथा। जब उसकी दूकानके सामने पलंगपर आकरके तब जैसी पहले उसकी दूकानको उन्होंने देखा था, वैसही फिर भी देखा तब उन्होंने मनमें सोचा हमने इसको बिल तो दियाथा परंतु सोना बनाने तजवीज इसको नहीं बताई थी। इसीसे यह गरीब रहगया है। महात्माने

बाबा पारसाल हम तुम्हारे यहां आयेथे आपने हमको पहचाना है या नहीं ? उसने कहा महाराज मैंने नहीं पहचानाहै । क्योंकि, हमारे यहां नित्यही दश पांच साधु आतेहैं यह पार जानेका रास्ता है इस लिये मैंने आपको नहीं पहचानाहै । महात्माने कहा हमने आपको एक बिल दिया था, और आपने उसको ऊपर ताकेके धर दिया था उसने देखा तो वह बिल उसी जगहमें धराथा, उठाकर महात्माके आगे तिस बिलको धर दिया । महात्माने कहा बाबा इससे सोना बनता है, हमने तुमको गरीब जानकर दिया था जो यह धनी होजावें । महात्माने कहा तुमको हमने सोना बनानेकी विधिको नहीं बताया था सो इसीसे तुमने सोना नहीं बनाया है । उसने कहा महाराज अब आप सोना बनानेकी विधिको बता दीजिये । महात्माने कहा तांबा लाकर एक मट्टीकी कुठाली बनाकर कोइलाको भग्राकर तिसमें कुठालीको धरकर नौशादर और सुहागाको तिसमें डालो, जब कि, तांबा गलजाय; तब इस बिलमेंसे एक रत्ती दवाईको तिसमें छोड दीजिये सोना बन जायगा । तब उसने कहा ताँबा लावें, कोइला लावें, गलावें, दवाईको तिसमें छोडें, इतना यत्न करें, तब सोना बनें उस क्षत्रियने महात्मासे कहा आपको सोने की जरूरत है महात्माने कहा हां तब क्षत्रियने अपनी लाठीको लेकर तालेके जो पत्थर पडेथे उनपर मारना शुरू किया, जिस पत्थरपर वह लाठीको मार कर कहें सोना हो जा वह तुरंत ही स्वर्ण होजाय इसी तरह सब पत्थर स्वर्णके होगये क्षत्रियने महात्मासे कहा बाबा यदि तुमने सोना बनानेके लिये ही मुंडको मुंडाया है तब जितना सोना तुमको चाहिये उतना उठाले यह भेष तुम्हारा सोना जमा करनेके लिये नहीं है किंतु सोनाके त्यागके लिये है और आत्मज्ञानकी प्राप्तिके लियेहै । तुम वैराग्यसे शून्य होकर अनात्म पदार्थमें सुख मान रहेहो । अभी तुम्हारी भोगोंमें वासना दूर नहीं हुई है । महात्माने तिसके चरणोंको पकड लिया और दोनों वहांसे चल दिये । हे चित्तवृत्ते ! सचे ज्ञानी ऐसे निष्काम होते हैं ॥ ९३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और ज्ञानवान्की कथाको तुम सुनो:-

काशीपुरीमें वरणाके संगमपर एक महात्मा विरक्त विद्वान् रहतेथे और धारणामें पूर्ण थे । वेदांत चिन्तनसे अतिरिक्त दूसरा चिंतन नहीं करतेथे । एक दिन वह सवेरे वरणाके किनारेपर दिशा फिरनेको जब गये तब वहां वर्षासे वरणा-

नदीका अरार गिराथा तिसमेंसे एक मोहरोंकी भरी हुई हंडी निकलकर ऊ पर्डी थी, तिसके समीप बैठकर महात्माने मलका त्याग किया उस हंडियाको उलटा हुवा देखा, परतु छूवा नहीं । स्नान करके आसन पर चले आये जब कि, कुछ थोडासा दिन निकल आया और उधरसे लोक आने जाने लगे, तब लोगोंने तिस हांडीको देखा इतनेमें बहु आदमी वहांपर जमा होगये और हाकिमको खबर मिली, वहभी वहां पर आ गया । हाकिमने उस सब धनको लेलिया और लोकोंसे पूछा यहां पर इ पास मैला किया हुवाहै । कौन ऐसा आदमी सबेरे यहांपर आयाहै जो इसके मैला करने बैठाहै और धनको जिसने नहीं उठायाहै । लोकोंने कहा पर एक महात्मा विरक्त रहतेहैं, वही सबेरे आतेहैं वही आये होंगे । हाकि उनके पास गया और उनसे पूँछा आप जब कि, वहांपर मैला करनेको बैठे थे आपने उस धनको देखाथा । उन्होंने कहा हां, हमने देखाथा । कहा आ क्यों न लिया उन्होंने कहा हमको तिसकी जरूरत नहींथी हमारे वो काम धन नहींथा । क्योंकि, हम तो तिसको उपाधी समझतेहैं, इसवास्ते हमने न लिया । हाकिमभी उनकी बातोंको सुनकर प्रसन्न हुवा । फिर एक दिन ए महाजनने आकर उनसे कहा महाराज! पंचक्रोशीको चलिये उन्होंने नहीं मान जब बहुत कहा तब कहने लगे एक २ छाता और एक २ जूता सब साधुओं वास्ते लाओ सब साधू जूता पहरकर और छाता लगाकर चलेंगे । महाजन कहा महाराज! पंचक्रोशीमें तो लोक जूता पहरकर छाता लगाकर नहीं जाते महात्माने कहा जोकि अज्ञानी मूर्ख करेंगे वह हम नहीं करेंगे क्योंकि हमको किसी फलकी कामना नहींहै, हम किसी देवता वा तीर्थसे अपने कल्याण नहीं चाहतेहैं, हम तो केवल आत्मज्ञानसेही मुक्तिको मानतेहैं । तुम जाव पंचक्रोशी नहीं जायँगे । वह महाजन चलागया । हे चित्तवृत्ते! जो सबे ज्ञान हैं वे ज्ञानसे बिना कर्मउपासनासे तथा देवतार्चन और तीर्थ आदिकोंसे अपन मुक्तिको नहीं चाहतेहैं उनका ऐसा कभी संकल्पभी नहीं फुरताहै जो हमा शरीर किसी तीर्थमेंही गिरे क्योंकि तीर्थरूप तो वह आपहीहै और न किसे शास्त्रमेंही ऐसा लिखाहै जो ज्ञानवान्‌को तीर्थपरही शरीरका त्याग करना चाहिये किंतु इसके विरुद्ध लिखाहै:—

**नीरोग उपविष्टो वा रुग्णो वा विलुठन् भुवि।**
**मूर्च्छितो वा त्यजत्येष प्राणान् भ्रांतिर्न सर्वथा ॥१॥**

ज्ञानवान् रोगरहितहो अथवा रोगवालाहो, बैठाहो वा पृथिवी पर लोटताहो, मूर्च्छितहो वा सचेतहो, प्राणोंके त्यागकालमें इसको भ्रान्ति किसी तरहसेभी नहीं होतीहै ॥ १ ॥

**तनुं त्यजति वा काश्यां श्वपचे च गृहे तथा।**
**ज्ञानसम्प्राप्तिसमये मुक्तोऽसौ विगताशयः ॥ २ ॥**

ज्ञानवान् काशीमें शरीरका त्याग करै, अथवा चांडालके घरमें त्यागकरै वह ज्ञान सम्प्राप्ति कालमें ही मुक्त होजाता है क्योंकि तिसकी वासनाएँ सब नष्ट होगई हैं तिसको काशी मगह बराबर है ॥ २ ॥

फिर दृढ बोधवाले ज्ञानीके लिये कर्मादिकोंका कर्त्तव्य भी नहीं कहाहै जितना कर्तव्य है सो सब अज्ञानीके लिये ही कहा है ॥

**ज्ञानामृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः ॥**
**नैवास्ति किञ्चित्कर्त्तव्यमस्तिचेन्न स तत्त्ववित् ॥ ३ ॥**

जो पुरुष ज्ञानरूपी अमृत करके तृप्त है और कृतकृत्य है, उसको किञ्चित्भी कर्तव्य नहीं है, यदि वह अपनेमें कर्त्तव्यको माने तब वह तत्त्ववित् नहीं है ॥ ३ ॥

गीतामेंभी कहाहैः—

**यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ॥**
**आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ ४ ॥**

जिस पुरुषकी आत्मामें ही प्रीति और अपने आत्मानंद करके ही जो तृप्तहै आत्मामें ही जो संतुष्ट है तिसको कुछभी कर्तव्य नहीं है ॥ ४ ॥

हे चित्तवृत्ते! जो सच्चे ज्ञानी हैं, वह तो निरिच्छ हैं, जो बनावटके ज्ञानी हैं, जिनका दृढ विश्वास नहीं है वही महात्मा तीर्थोंमें मुक्तिके लिये निवास करते हैं और मरणकालमें कहतेहैं कि, तीर्थोंमें हमको लेचलो वहांपर शरीरको त्यागेंगे जन्म भर तो लोगोंको वेदांत सुनाते हैं और ज्ञानी कहातेहैं मरण कालमें अज्ञानी बनजाते हैं क्योंकि, अज्ञानियोंकी तरह तीर्थोंसे मुक्तिकी इच्छा करने लगते हैं ॥

कपिल गीतामें कहा है:—

**इदं तीर्थमिदं तीर्थं भ्रमन्ति तामसा जनाः ॥**
**आत्मतीर्थं न जानन्ति कथं मोक्षः शृणु प्रिये ॥ १ ॥**

महादेवजी पार्वतीके प्रति कहतेहैं हे पार्वती! यह तीर्थ है वह तीर्थ ऐसे जानकर अज्ञानी जीव भ्रमते फिरतेहैं, क्योंकि, वह आत्मरूपी तीर्थको न जानते हैं ॥ १ ॥

देवीभागवतमेंभी कहा है—

**मनोवाक्कायशुद्धानां राजँस्तीर्थं पदे पदे ॥**
**तथा मलिनचित्तानां गंगापि कीकटाधिका ॥ २ ॥**

जिन पुरुषोंके मन और वाणी आदिक शुद्ध हैं हे राजन्! उनके पद २ में तीर्थ निवास करते हैं, जो मलिन चित्त हैं उनके लिये गंगाभी कीकट देशके समान हैं ॥ २ ॥

हे चित्तवृत्ते! जिन पुरुषोंको आत्मानंदकी प्राप्ति हुई है वह विषयानंदकी इच्छा नहीं करते हैं ॥ ६४ ॥

चित्तवृत्ति कहती है हे भ्राता! चित्तकी शुद्धिके साधनोंको कहो, क्योंकि, बिना चित्तकी शुद्धिके विवेक वैराग्यादिक भी नहीं होते हैं, तब आत्मज्ञानका होना तो अर्थसे ही नहीं होसक्ता इसलिये प्रथम मेरेको चित्तकी शुद्धिके साधनोंको तुम सुनाओ जिनके करनेसे मेरा चित्त शुद्ध होजाय। विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! अन्नकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि होती है, सो अन्नकी शुद्धि इस तरहसे होतीहै—सत्यधर्मकी कमाईसे जो द्रव्य कमाया जाताहै, वह शुद्धद्रव्य कहाताहै, तिस द्रव्यसे जो खाने पीनेके लिये अन्नादिक लिये जातेहैं वहभी शुद्ध कहे जातेहैं। क्योंकि, सत्य धर्मका असर द्रव्य द्वारा तिस अन्नमें आताहै, तिस अन्नके खानेसे चित्त शुद्ध होताहै। क्योंकि, अन्नद्वारा तिस सत्यधर्मका असर चित्तपर भी आताहै, तिस शुद्ध चित्तमेंही विवेक वैराग्यादिक उत्पन्न होतेहैं। इसीपर तुमको दृष्टांत सुनाते हैं:—

एक ब्राह्मण चित्त शुद्धिके लिये तीर्थोंपर भ्रमण करने लगा, कई बरसों तक वह तीर्थोंपर भ्रमण करता रहा तबभी तिसका चित्त शुद्ध न हुआ। क्योंकि,

तीर्थोंमें जाकर छत्रोंका और दान कुदानादिकोंका अन्न तिसको खानेके लिये मिले, उस अन्न खानेसे तिसका चित्त और मलीनताको प्राप्त होता चला जाय । जब कि, चित्त मलिन होताहै, तब विषय विकारोंकी ओरही जाताहै । ब्राह्मणने मनमें विचारा कि, क्या कारण है जो चित्त हमारा प्रतिदिन तीर्थ करनेसेभी मलिन होता जाताहै । परंतु तिसको चित्तकी अशुद्धिका कुछ कारण मालुम न हुवा । फिर वह अमरनाथ तीर्थसे जब लौट करके कश्मीर देशमें आया, तब एक दिन दोपहरके वक्त एक ग्राममें वह पहुँचा और वहांपर एक किसानके द्वारपर वह गया और उस किसानसे भोजनके लिये तिस ब्राह्मणने कहा । किसानने कहा हमारे पास शुद्ध अन्न नहींहै, क्योंकि, जब हमारा अन्न खेतमें था, तब एक दिन हमारे खेतको दूसरेकी पारीका जल दिया गया था, इसीसे वह अशुद्ध है । हमारे भाईका अन्न शुद्ध है, आप हमारे भाईके घरमें आज भोजन करें । तिसने अपने भाईसे कह दिया उसके भाईके घरमें जब ब्राह्मण भोजन करके वहांसे चला तिसकी वृत्ति सात्त्विकी होगई और तिसके हृदयमें एक विलक्षण प्रकाशसा होने लगा । और भूत भविष्यत्की बातोंकोभी वह जानने लगा । तब तिस ब्राह्मणने जाना ये सब शुद्ध अन्नका प्रतापहै । हे चित्तवृत्ते ! अन्नकी शुद्धिसे चित्तकी शुद्धि अवश्य होती है ॥ ६३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांतको तुम सुनो:—

एक पुरुष बडा सत्यवादी और धर्मात्मा था वह कुछ कपडा खरीदकर विदेशमें बेचनेके लिये लेगया । एक आडतीकी दुकान पर उसने जाकर कपडेके भारको उतार दिया जब बेचनेलगा तब तिसका दाम पूरा नहीं लगा उसने आडतीसे कहा इस कपडेके भारको आप मेरी अमानत जानकर रख छोडें, फिर मैं आकर बेचूंगा । आडतीने उसका कपडा रखलिया वह अपने घरको चला गया कुछदिन पीछे आडतीकी दूकानमें आग लग गई कुछ माल आडतीका जलगया तिसका कपडा दूसरे मकानमें पडाथा वह बच गया दोचार महीनोंके बाद वह आया और उसने आडतीसे कहा हमारा कपडा निकालो उसको अब हम बेचेंगे आडती बेधर्म होगया, उसने कहा हमारी दूकानमें आग लगीथी तिसमें तुम्हारा कपडाभी जल गयाहै । उसने कहा हमारा कपडा नहीं जलाहै, दोनों झगडते २ राजाके पास गये राजाने कहा इसकी दूकानमें आग तो लगीथी और मालभी

बहुतसा जलगयाथा उसने कहा इसका माल जला होगा । क्योंकि, बेईमानी करताहै हमारा माल नहीं जला होगा क्योंकि,हम बेईमानी नहीं कर राजाने कहा इसकी परीक्षा कैसेहो ? कपडेवालेने अपने ऊपरसे चद्दर कर धरदी राजासे कहा आप इसको आग लगाइये, यदि यह जल जा तब हम जानेंगे जो हमारा कपडा जल गयाहै । यदि यह नहीं जलेगा तब जान लेना जो हमारा कपडा नहीं जलाहै । राजाने आग मँगाई तिसकी चद्दर जलानेके लिये कितनाही यत्न किया परंतु तिसकी चद्दर नहीं जली । तब रा आडतीके मकानकी तलाशी की तिसके कपडेकी गठडी निकल आई । ति दिलवादी और आडतीको दण्ददिया। हे चित्तवृत्ते! सत्यधर्मकी कमाईको अ जला नहीं सक्ताहै और पानी तिसको बहा नहीं सक्ताहै ॥ ६६ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और हम तुमको इसी विषय पर कथाको सुनातेहैं:-

हे चित्तवृत्ते!एक राजा बडा धर्मात्माथा किसी जीवको कभीभी नहीं सता जितना कर प्रजासे लेताथा वह प्रजाकी पालनामेंही खर्च करदेताथा और बहु साधारण चालसे रहताथा।एक शत्रुने तिस राजापर चडाई की, तब राजाने विचार किया यह राज्य तो दुःखकी खानहै, क्योंकि, अनेकप्रकारकी चिंता बनी रहतीहैं, इस राज्यकी प्राप्तिके लिये जोकि वैराग्य और विचारसे शून्यहै यत्न करतेहैं । यदि हम शत्रुसे युद्ध करेंगे तब बहुतसे जीवोंकी हिंसा होगी यह भी तो निश्चय नहींहै कि, जय हो वा न हो । कल्याण तो इसके त्याग देनेमेंहीहै । ऐसा विचार करके रात्रिके समय अपनी रानीको साथ लेकर चल दिया । तिस कालमें और लोक तो सब सोये पडेथे परंतु एक नौकर जागताथा वहभी राजाके पीछे चल दिया राजाने तिस नौकरको कितनाही किया परंतु तिसने नहीं माना राजाके पीछे२ही चलपडा राजा अपने देशसे नि लकर दूसरे राजाके देशमें जबकि पहुँच गया तब राज्यसम्बन्धी सब वस्त्रोंको फेंक दिया गरीबोंके वस्त्र पहनकर एक टूटे फूटे मकानमें जारहा । वहांके राजाका एक मकान बनता था और बहुतसे मजदूर तिसमें नित्य मजदूरी करतेथे । राजा और रानी तथा नौकर ये तीनोंभी जाकर मजदूरोंमें नित्यही टोकरी ढोनेकी मजदूरी करने लगे । जो कुछ इनको

दूरीका मिलता उसीमें प्रसन्नतापूर्वक अपना निर्वाह करतेथे । जब कि, एक वरस इनको वहांपर रहते व्यतीत होगया, तब एक दिन राजाके नौकरको एक अपना स्वदेशी मिला उसने कहा हम अब अपने देशको जातेहैं । तुमभी अपने घरके लिये कोई वस्तु हमको खरीद करके लेदेवो । हम तुम्हारे घरमें लेजाकर देदेवैंगे । उस नौकरने राजासे कहा एक आदमी हमारे घरको जानेवालाहै वह कहताहै तुमभी अपने घरके लिये कुछ भेजो, हम लेते जायँगे । राजाके पास पांच पैसे खरचेमेंसे बचे हुवे थे, राजाने उसको वह देदिये और कहा इनका कोई फल लेकर तुम अपने घरको भेजदेवो । आगे उनके देशमें अनार नहीं होताथा तिसने पांच पैसेके पांच अनार खरीद कर अपने घरको भेज दिये जब कि, इसके घरमें अनार पहुँच गये उधर वहांका राजा उसी दिन बीमार होगया हकीमने राजासे कहा यदि अनारका फल मिलैगा, तब तुम अच्छे होगे वरन यह बीमारी जल्दी जानेकी नहीं है। राजाके हुक्मसे अनारकी तलाश होनेलगी। तब किसीने बताया फलानेके घरमें कल पांच अनार आयेहैं, राजाने मंत्रीको भेजा उन्होंने अनार देदिये हकीमने अनारका रस निकालकर दिया, राजा अच्छा होगया । राजाने एक लाख रुपैया उनके घरमें भेजदिया उनको जब इतना द्रव्य मिलगया तब उस अपने सम्बन्धीको सब हाल रुपैया मिलनेका लिख भेजा और यह भी लिख भेजा अब तुम नौकरी छोडकर अपने घरको चले आवो । जब उस नौकरको घरसे खत गया तब उसने सब हाल अपने राजासे कहा, राजाने कहा पांच अनारके बदले उसको. पांच लक्ष रुपैया देनाथा, उसने थोडा दियाहै वह पांच पैसे हमारी सत्यधर्मकी कमाईकेथे अच्छा अब तुम अपने घरको जावो, वह नौकर अपने घरको चला गया ये सब हाल उस राजाकोभी मिला जिसने तिस राजाका राज्य लेलियाथा उसने राजाको बडी खातिरदारीसे बुलाकर कहा आप अपना राज्य लीजिये और मेरे कसूरको माफ करिये । राजाका मन फिर राज्य लेनेमें नहींथा परन्तु उसकी प्रार्थनासे लेलिया और वह अपने राज्यपर चला गया । हे चित्तवृत्ते ! सत्यधर्मकी कमाईमें इतनी बडी शक्ति है जो कि, तुमको सुनाई है इसी हेतुसे सत्यधर्मकी कमाईका अन्न शुद्ध होताहै ॥ ६७ ॥

हे चित्तवृत्ते ! असत्यधर्मकी कमाईसे जो अन्न लिया जाता है वह अशु कहा जाता है क्योंकि अधर्मका असर तिस अन्नमेंभी आता है, इसीसे व चित्तकी अशुद्धिका हेतु होता है । अब अशुद्ध अन्नके फलको भी तुम सुनो

जिस कालमें भीष्मजी बाणोंकी शय्यापर शयन करके अनेक प्रकारके ध युधिष्ठिरके प्रति सुनाने लगे, तिसकालमें द्रौपदीने भीष्मजीसे कहा कि जिस समय दुःशासन मेरे केशोंको पकडकरके सभामें लाया था और दुः मेरेको नग्न करने लगाथा तिस समयमें आपभी तिसी सभामें बैठेथे आपने समयमें इस तरहके धर्मोंको सुनाकर दुर्योधनादिक पापियोंको क्यों न अधर्म नेसे हटाया तब भीष्मजीने कहा हे द्रौपदी ! तिस समयमें तिस पापी दुर्यो अन्नको हमने खाया था इसलिये उस समयमें हमको कोई भी धर्म नहीं ह क्योंकि पापीके अन्नको खाकर चित्त मलिन होजाता है और मलिन चि धर्मका स्फुरण नहीं होताहै हे चित्तवृत्ते ! अशुद्ध अन्नमें इतनी बडी श जिसने भीष्मजी धर्मात्माके चित्तकोभी मलिन कर दिया तब इतर पु कौन कथा है ॥ ६८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और विरक्तमहात्माका हाल सुनो:-

एक विरक्त महात्मा एक ग्रामके बाहर गुफा बनवाकर रहते थे, व लोकोंको पास नहीं आने देतेथे और स्त्रीका तो दर्शनभी नहीं करतेथे एक दोपहरके वक्त एक युवती उनके लिये भोजनको लेगई उन्होंने भोजनको ले और युवतीसे कहा तुम गुफाके बाहर बैठो । वह बाहर बैठी रही औ भीतर भोजन करने लगे भोजन करतेही उनका मन विकारी होगया त स्त्रीको भीतर बुलाया वह भीतर चलीगई उन्होंने स्त्रीके हाथको पकड कर हमसे सम्बन्ध कर स्त्रीने कहा यदि कोई पुरुष इस समय यहाँ पर आ तब हमारी और आपकी फजीहत होगी आपको ऐसा कर्म न करना चाहिये जबरदस्ती करनेलगे स्त्री चिल्ला उठी इतनेमें एक दो सत्संगी वहांपर पहुँच महात्मा बडे लज्जित हुवे उन्होंने कहा महाराज आपको तो कभी भी ऐसी नहीं फुरीथी आज ऐसे अधर्म करनेमें आपकी रुचि कैसे होगई ? मह कहनेलगे किसीने हमको दुष्ट अन्न खिलायाहै तिस अशुद्ध अन्नका फल है ॥ ६९ ॥

एक नगरमें एक पंडित बडा आचारवान् और विचारवान् रहता था, राजाके अन्नके और नीच जातिवालेके अन्नको वह कदापि नहीं खाताथा। एक दिन राजाकी रानीने उनको किसी कार्य्यके लिये बुलाया, पंडितजी गये। रानी आंगनमें आकर पंडितजीसे बातचीत करने लगी और उसी स्थानमें रानीने अपना मोतियोंका हार उतार कर धर दिया। रानी बातचीत करके गृहके भीतर चली गई। हार मोतियोंका रानीका उसी जगामें छूट गया। पंडितजी हारको उठाकर अपनी जेवमें डालकर घरको चले आये। घरमें आकर जब पंडितजीने अंगरखा उतारा, तब जेबसे हार गिरा। पंडितजी हारको देखकर शोच करने लगे, ऐसा अधर्म हमसे क्यों हुवा। स्त्रीसे पूँछा आज अन्न कहाँसे आयाथा स्त्रीने कहा एक सुनार दे गयाथा, सुनारको बुलाकर पूँछा उसने कहा हमने एकके जेवरमेंसे सोना थोडासा चुरायाथा उसको बेंचकर अन्न खरीदकर थोडासा आपके यहां भेजा था बाकीका अपने घरको भेजा था। पंडितने कहा उसी अन्नका यह फलहै जो हमने मोतियोंके हारकी चोरी करली है। हारको रानीके पास भेजदिया आपने उस दिन उपवासव्रत किया। हे चित्तवृत्ते! दुष्ट अन्न महात्मापुरुषोंके चित्तको भी विकारी कर देताहै तब इतरोंकी कौन कथाहै ॥ ७० ॥

हे चित्तवृत्ते! सत्यभाषणसेभी चित्तकी शुद्धि होतीहै, असत्यभाषणसे चित्तकी अशुद्धि होतीहै और अन्नकी शुद्धिकाभी मूलकारण सत्यभाषण ही है। सत्यभाषणके तुल्य संसारमें दूसरा न कोई धर्महै न भक्तिहै। सत्यभाषणवालेकी जगत्में प्रतिष्ठा होतीहै इसलिये सत्यवादियोंकेभी इतिहासोंको तुम सुनोः—

एक ब्राह्मणके दो पुत्रथे जब कि एक लडका तिसका बारह बरसका हुवा और दूसरा आठ बरसका हुवा, तब तिस ब्राह्मणका देहांत होगया। तिसके देहांत होनेके कुछ दिन पीछे बडे लडकेने अपनी मातासे कहा हम विदेशमें विद्याध्ययन करनेको जायँगे, आप हमको विदेश जानेके लिये आज्ञा दीजिये। प्रथमतो तिसको माताने हीलाहवाला किया जब कि लडकेने बहुतसी विनती की माताने जानेके लिये तिसको आज्ञा दे दी और तिसकी माताने कहा बेटा! पचास अशरफी मेरे पास हैं तिनमें पचीस तो तुम्हारे छोटे भाईका हिस्साहै तिसको तो मैं अपने पास रख छोडतीहूँ और पचीस अशरफी जो कि तुम्हारा

हिस्साहै उनको मैं आपकी गोदड़ीमें सी देताहूँ । जहाँ पर तुमको खरचका
लगे एक२ निकालकर अपना काम चला लेना जब कि लडका काफलेके साथ
विदेशमें जाने लगा तब माताने तिससे कहा बेटा ! एक वचन हमारा और
मानना। बेटेने कहा माता कहो तिसने कहा बेटा झूठ कभी भी नहीं बोलना
सर्वस्वभी नष्ट होजाय, तबभी झूठ नहीं बोलना । बेटेने कहा माता ऐसेही करूं
मातासे रुखसत होकर लडकेने काफलेके साथ चलदिया । एक दिन
काफला जाकर उतरा रात्रिके समय चोरोंकी एक धाड तिस काफलेपर आ
और सबको चोर लूटने लगे सबको लूटकर फिर तिस लडकेसे आकर
कहा लडके तुम्हारे पास क्या है ? लडकेने कहा हमारे पास पचीस अशर
चोरोंने कहा वह कहाँपरहैं, लडकेने कहा इस गोदडीमें सब सिई हुई हैं।
सरदारने गोदडीको जब खोल कर देखा तब तिसमें ठीक २ पचीस अशर
निकल आई चोरोंके सरदारने कहा लडके तुमने हमको अशरफी क्यों ब
हम तो चोरहै सबको लूटनेके लिये आयेहैं, सबको लूटाहै, यदि तुम न ब
तब तुमारी अशरफी बच जाती लडकेने कहा जब हम घरसे विदेशमें
लिये निकले थे तब हमारी माताने हमसे कहा था बेटा झूठ कभी भी
बोलना चाहे सर्वस्व चला जाय, हमने कहा ऐसेही करूंगा । अपनी माता
आज्ञाको हमने पालन कियाहै, इसवास्ते हमने आपको अपनी अशरफी ब
हैं । चोरोंके सरदारने कहा देखो बडे आश्चर्यकी वार्ताहै, यह छोटासा
होकर अपनी माताकी आज्ञाको नहीं फेरताहै किंतु इसने पूर्णरूपसे अ
माताकी आज्ञाका पालन कियाहै इसको हम धन्यवाद देतेहैं और हम लोक
धिक्कारहै जो अपने स्वामी ईश्वरकी आज्ञाको पालन नहीं करतेहैं, क्योंकि ई
कहाहै किसी जीवको भी मत सताओ और हम सताते हैं । ईश्वरकी आ
नहीं पालन करते हैं, आजसे पीछे हम भी इस निंदित कर्मको नहीं करेंगे
मजदूरी करके खायेंगे । चोरोंके सरदारने जितना माल उस काफलेका लू
सबको फेर दिया और लडकेकी गोदडीमें उन अशरफीयोंको सीकर तिस
केके हवाले करदिया और तिस लडकेको जहांपर जानाथा, वहांपर ति
पहुँचा भी दिया । हे चित्तवृत्ते ! एक लडकेके सत्यभाषणसे सब काफले
मालभी बचगया और वह चोरभी साधु बनगये ॥ ७१ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और सत्यवादीके इतिहासको तुम सुनोः—

हे चित्तवृत्ते ! एक समय चातुर्मासमें वर्षा न होनेके कारण बडा अकाल पडा अन्नके विना लोक बडे दु:खी हुए सब लोक मिलकर राजाके पास गये और राजासे प्रजाने कहा वर्षाके विना लोक मरे जाते हैं, कोई उपाय करना चाहिये। तब राजाने भी बहुत मंत्रोंके जप कराये और भी अनेक प्रकारके पाठ पूजा आदिक कराये, तब भी वर्षा न हुई। राजाने अपने मंत्रियोंसे कहा आप लोक अब कोई उपाय बतावें जिसके करनेसे वर्षाहो नहीं तो प्रजा सब नष्ट भ्रष्ट हो जायगी। मंत्रियोंने कहा महाराज ! इस नगरके फलाने दरवाजेके पास एक क्षत्रीकी दूकानहै वह बडा सत्यवादीहै यदि आप उससे कहैं और वह ईश्वरसे प्रार्थना करे तब अवश्यही वर्षा होगी। राजा सवेरे पालकीमें सवार होकर उसकी दूकान पर जाबैठे उसने कहा राजन् ! आपके आगमनका कारण क्या है ? राजाने कहा महाराज पानी नहीं बरसताहै पानी बरसानेके लिये आपके पास आयेहैं क्षत्रियने कहा राजन् किसी देवता वगैरहकी पूजा करावो राजाने कहा सब उपाय हम कर चुकेहैं, अब आपकी शरणको आये हैं जबतक आप वर्षाको नहीं करोगे तबतक हम भोजन नहीं करेंगे। उन्होंने राजाको बहुतसी बातें कहकर टाला परंतु राजाने एकभी न मानी। जब दोपहर होगई और राजा परभी धूप आगई तब तिसने समझलिया जो अब राजा किसी तरहसे भी नहीं जाता है तब उन्होंने अपने तराजूका पसंगा करके कहा हे तराजू ! यदि हमने हमेशा सचही बोला है और सच्चा सौदाही कियाहै तब तो वर्षा हो। यदि हमने झूठ बोला है और झूठाही सौदा कियाहै, तब तो वर्षा न हो। इतना कहतेही दो मिनिटके पीछे पूर्व दिशासे एक बादल उठा और देखते २ ही उसने आकाशको आच्छादन कर लिया और पानी बरसने लगा इतना जोरसे पानी बरसने लगा जो राजाको अपने घरतक पहुँचना मुश्किल होगया। उधर तो राजा पालकीपर सवार होकर अपने घरको गये और इधर इन्होंने दूकानको बंद करके कहींको चल दिया हे चित्तवृत्ते ! सत्यवादीकी वाणीमें सिद्धि रहती है तिसका कथन निष्फल नहीं जाता है ॥ ७२ ॥

हे चित्तवृत्ते ! सत्संगसे भी चित्तकी शुद्धि होतीहै और कुसंगसे चित्तकी अशुद्धि होती है। अब तुम सत्संगके माहात्म्यपर भी एक दो दृष्टांतोंको सुनो

एक राजाके नगरके बाहर दो महात्मा रहतेथे और राजा भी कभी २ पास जाया करतेथे । किसी राजाके नगरमें एक भारी चोर रहताथा, ब हीं चोरी करताथा परंतु कभी पकडा नहीं गयाथा । एक दिन उस चो भगवाँ वस्त्र करके साधुका भेष बनाकर उन दो महात्माके पास जा बैठा पहर राजा जब उन दो महात्माके दर्शनको गये तब राजाने देखा एक नये महात्मा भी वहांपर बैठे हैं । राजा उन दो महात्मोंके पास होकर फि दूसरे महात्माके पास जाकर बैठगये और कुछ द्रव्य भेंटके लिये राजाने आगे धर दिया था । तब चोरने राजासे कहा राजन्! मैं साधु नहीं हूं मैं नगरका चोरहूं । साधु जानकर मेरे आगे आप द्रव्यको क्यों रखतेहैं । कहा आप अपनेको छुपानेके लिये ऐसा कहतेहैं । आप महात्मा हैं । फिर कहा मैं सच्चा कहता हूं मैं साधु नहीं हूं थोडे द्रव्यके लिये मैं लोकोंको वाला हूं । राजाने कहा जब कि आप थोडे द्रव्यके लिये लोकोंको लूटते तब यह बहुतसा द्रव्य जो कि मैं आपको देताहूं इसको आप क्यों नहीं अं करतेहैं ! चोरने कहा मैंने चोरके भेषको त्यागकर अब साधुका भेष बना एक तो इस भेषको लज्जा लगजायगी, दूसरा दो घडीका महात्माका संग मेरी वह बुद्धि अब जाती रही है । जो कि, अधर्म करके लोकोंसे द्रव्यको मैं था उस वृत्तिको त्याग करके मैं अब निवृत्ति मार्गमें होगया हूं । हाथीको करके अब मैं गधेकी सवारी करनी नहीं चाहता हूं । राजा द्रव्यको लेकर वह चोरभी दो घडीके सत्संग करनेसे साधु बनगया ॥ ७३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक नगरके बाहर चोरोंके दो चार घर थे, एक चोरके लडके थे, वह नित्यही अपने लडकोंको उपदेश करता था, बेटा कभी मन्दिरमें न जाना और न कभी सत्संगमें और न कथावार्त्तामें जाना और किसी महात्माके पास जाना । इसीतरहके वह उपदेशोंको करता२ एक गया । उसके मरनेके थोडे दिन पीछे एक दिन तिसके बडे लडकेके मन आज रात्रिको राजाके घरमें चलकर चोरी करके कुछ मालटाललावें । समयमें वह जब अपने घरसे चला तब रास्तामें कथा होतीको देखकर विचार किया पिताका उपदेश है जहांपर कथा होती हो वहांपर नहीं जाना इस रास्तासे हम कैसे निकलें, या कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिस

हमारे कानमें कथाका शब्द न जाय । उसने दोनों कानोंमें थोडी २ रुई भरदी और कथाके बीचसे होकर चला जब कि, कथाके समीप पहुँचा तब तिसके एक कानसे रुई गिर गई उस वक्त ऐसी कथा हो रही थी देवताकी परछाईं नहीं होती है और देवताके भूमिपर पांव भी नहीं लगते हैं । इतनाही उसने सुना और राजाके घरमें सेंध लगाकर बहुतसा माल तिसने चुराया आर लेजाकर अपने घरमें तिसने गाड दिया था सबेरा जब हुआ तब राजाको मालूम हुवा जो रात्रिको चोरी होगई है राजाने चोरके पकडनेके लिये हुक्म दिया कई एक सिपाही चोरकी खोज करते रहे परंतु चोरका पता न लगासके तब राजाने वजीरसे कहा अब वजीर भेष बदल कर चोरका पता लगाने लगे वजीरने नगरके बाहर जोकि चोरोंके घरथे उनहीं घरोंमें चोरका अनुमान किया रात्रिके समय वजीर काली देवीका स्वांग बनकर अर्थात् बदनमें स्याई मलकर बालोंको खोलकर एक हाथमें खप्पर लेकर आधीरातके समय उनके द्वारपर जाकर कहने लगा, कालीमाईकी भेंटको आपलोक क्यों नहीं देतेहो रोज २ मन मानकर माल ले आते हो आज सब भेंट हमारी देवो नहीं तो नाश कर-देऊँगी डरके मारे सब भाई बाहर द्वारके निकल आये और हाथ जोडने लगे माता तुम्हारी भेंटको कल हम जरूर देवेंगे इतनेमें बडे बेटेको कथावाली वार्ता याद आगई उसने कहा चलकर दिया लेकर देखें तो जब तिसने दीयेसे देखा तो तिसकी परछाहीभी दिखाई पडी और पृथिवी पर पांवभी लगे हुवे देखे उसने जान लिया यह देवता नहीं है यह तो कोई ठग है लट्ठ लेकर कालीको मारने चला काली भाग गई तब तिसने विचार किया हमने दो बातें कथाकी सुनी हैं उन्हीं दो बातोंने हमारी जान बचाई और हमारा मालभी बचाया है यदि हमलोक हमेशा सत्संगमें जाया करेंगे और इस खोटे कर्मको छोड देवेंगे तब तो हमको महान् फल होगा ऐसा विचार करके चोरने उसी दिनसे चोरी करनी छोड दी और सत्संगमें सब जाने लगे वह सब चोर साधु बनगये । ऐसा सत्संगका माहात्म्यहै ॥ ७४ ॥

हे चित्तवृत्ते ! सत्संगका ऐसा माहात्म्य है जो चोरभी साधु बनजाते हैं:—

हे चित्तवृत्ते ! एक बगीचेमें एक गुलाबके पेडमें जंगली घासने जड पकडली और धीरे २ वह बढने लगी एक दिन बागवान्‌ने उसको फैलते देखकर काटना

चाहा तब उस वासने कहा हमको मत काटो, क्योंकि हमारेमें गुलावकी सु
आदिक गुण आगये हैं। गुलावकी संगतसे अब मैं गुलाव रूप होगयीहूं मैं
नहीं रहाहूं, यदि मेरेमें गुलाव वाले गुण न आते तव काटना मुनासिब था
वान्ने तिसको न काटा सत्संगका ऐसा फल है और कवियोंनेभी सत्संगके फ
दिखाया है ॥ ७९ ॥

**महानुभावसंसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः ॥**
**पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥ १ ॥**

महान् पुरुषोंका जो संग है, वह किसकी उन्नतिको नहीं करता है कम
पत्रपर स्थित जलकी बूँदभी मोतीकी शोभाको धारण करती है ॥ १ ॥

## दोहा।

जोहिं जैसी संगत करी, तैं तैसो फल लीन।
कदली सर्प भुजंगमुख, एक बूँद गुण तीन ॥ १ ॥
जल जिमि निर्मल मधुर मधु, करत ग्लानिको अंत।
पान किये देखे छुये, हरष देत किमि संत ॥ २ ॥

## सवैया।

ज्ञान बढे गुनवानकी संगत ध्यान बढे तपसी सँग कीने
मोह बढे परिवारकी संगत लोभ बढे धनमें चित दीने
क्रोध बढे नर मूढकी संगत काम बढे तियके संगकीने
बुद्धि विवेक विचार बढे कवि दीनसु सज्जन संगत कीने

## दोहा।

तुलसी लोहा काठ सँग, चलत फिरत जलमाहिं ॥
बडे न डूबन देतहैं, जाकी पकडे बाहिं ॥ १ ॥
नीचहु उत्तम संग मिल, उत्तमही है जाय ॥
गंग संग जल झीलहू, गंगोदकके भाय ॥ २ ॥
जाहि बडाई चाहिये, तजे न उत्तम साथ ॥
ज्यों पलाश संग पानके, पहुँचे राजा पास ॥ ३ ॥

**भले नरनके संगसे, नीच ऊँचपद पाय॥**
**जिमि पिपीलिका पुष्पसंग, ईश शीश चढ जाय॥ ४॥**

हे चित्तवृत्ते! एक दिन वडी वर्षा होतीथी और शरदीके दिन थे, एक नग्न साधू घूमतेहुये नगरमें एक मकानके छज्जेके नीचे द्वारपर खडे होगये, वह मकान राजाकी वेश्याका था। मकानके भीतरसे एक लौंडीने उन महात्माको देखकर जाकर अपनी वीवीसे कहा एक महात्मा नग्न कीचमें लिवडे हुए वाहर वर्षामें खडे काँप रहेहैं और वोलते चालतेभी नहीं हैं वेश्याने लौंडीसे कहा उनका हाथ पकड कर तूं उनको भीतर मकानके लेआ। लौंडी जाकर उनका हाथ पकड कर मकानके भीतर लेआई, वीवीने गर्म जलसे उनको स्नान कराकर वदन पोंछकर विछोनेपर लिटादिया और गर्म चाह पिलाई फिर सुंदर भोजन कराया पश्चात् आप भोजन करके उनके पाँव दावने लगी। तव महात्माने उस वेश्याकी तरफ एक निगाहसे देखा मानो उसके हृदयमें अमृतकी धारा वरसादी और सोगये वह वेश्या रात्रिभर उनके पाँवकोही दवाती रही सवेरे वह सोगई। महात्माकी जव नींद खुली उन्होंने भी रजाईको फेंककर चल दिया कुछेदरके पीछे वेश्याकी जव नींद खुली तव उसने लौंडीसे पूँछा महात्मा कहांको गये हैं। लौंडीने कहा वह जंगलको चले गये वह वेश्या भी नग्नहीं घरसे निकल कर नगरके वाहर एक वृक्षके नीचे जाकर नीचे सिर करके वैठरही राजाको खवर हुई राजा तिसके पास गये और उसको वुलाने लगे तव वेश्याने कहा अव मैं वह भंगन नहीं रही हूं, जो कि पहले तुम्हारे मैलेको उठातीथी अव तुम चले जावो राजाने नौकरोंको हुक्म किया कोई आदमी इसके पास आने न पावे। जहां जानेकी इसकी इच्छा हो वहाँपर यह चली जाय कोईभी इसको न रोकै। दूसरे दिन वह वेश्या वहांसे चली गई। हे चित्तवृत्ते! महात्माकी नजर जिसपर पडजाय वहभी कल्याणरूप होजाताहै। इसीपर गुरू नानकजीनेभी कहाहै। "नानक नदरी नदर निहाल" गुरु नानकजी कहते हैं महात्मा अपने दृष्टिकरके ही दूसरेको कृतार्थ कर देतेहैं॥ ७६॥

## छप्पय।

**लीयो नीम सत्संग भयो मलयागिर चंदन॥**
**लोहा पारस परस दरस दरसत है कुंदन॥**

मिलै सुरसरी नीर सीर निहचै सो गंगा ॥
मिश्री सो मिल वंशतुल्यो त्राहूके संगा ॥
लोह तऱ्यो नौका मिले साखी सकल सुन लीजि
साधु संगते साधु मिल रामनाम रस पीजिये ॥

हे चित्तवृत्ते ! उपकार करनेसेभी चित्तको शुद्धि होतीहै, दयाका उपकार है, जिसमें दया होगी वही उपकार करैगा । जिसमें दया न वह कभीभी उपकार नहीं करसक्ताहै । लोकमें भी दयालु पुरुषकी कीर्ति है और दयाहीनकी निंदा होतीहै । दयाविन सिद्ध कसाई ऐसा लोक कहते दया चित्तकी शुद्धिका मुख्य साधनहै । अव हम तुमको दयालु पुरुषोंके तोंको सुनातेहैं ॥

एक नगरके वाहर एक मंदिरमें एक महात्मा रहतेथे, वह नित्यहीं वेदूस कथाको करतेथे, उनकी कथामें एक क्षत्रियभी जाता रहा परन्तु गरीब सडकके किनारेपर खूमचा लगाकर बैठकर वेचता था । एक दिन उसने त्मासे कहा महाराज! हमने अन्वयव्यतिरेक करके देहादिकोंसे भिन्न आत्मे निश्चय कर लियाहै और महावाक्यों करके तथा अनुभव करकेभी जीव आत्मे अभेद निश्चय करलियाहै, फिरभी हमको उस आत्मसुखकी प्रतीति नहीं होत इसमें क्या कारणहै ? महात्माने कहा कोई पाप पूर्व जन्मका इसमें प्रतिबंध वह पाप जव कि दूर होजावैगा तव तुमको आपसे आप उस सुख उपलब्धि होजायगी । महात्माकी वार्ताको सुनकर वह चुप रहगया । दिन वह क्षत्रिय सडकके किनारेपर कूंवेके समीप छायामें खूमचा रखकर गरमीके दिनथे एक चमार वासका गद्दा उठाकर चला आताथा जब कूंवेके समीप पहुँचा तव गरमी खाकर गिर पडा और वेहोश होगया । वह क्षत्रिय उठा और तिस चमारको उठाकर तिसने छायामें करदिया और पानी निकाल शरवत वनाकर तिसके मुखमें थोडा २ डालना शुरू किया देरमें वह चमार होशमें आगया कुछ थोडासा तिसको दानाभी खिलाया चमार उठकर चला गया । उसी दिनसे उस क्षत्रियके हृदयमें आत्मसुख होने लगा । उसने जाकर महात्मासे कहा महात्माने कहा तुम्हारेमें जो पाप प्रतिबंधक था वह दया करनेसे जाता रहा । क्योंकि तुमने एक आर्त

प्राणदान दियेहैं। हे चित्तवृत्ते! दयाका वडा भारी फलहै, दयासे सर्व प्रकारके पाप दूर होजातेहैं और इस लोकमेंभी यश मिलताहै ॥ ७७ ॥

एक नगरमें एक वनियां वडा धनी था, वह नित्यही यज्ञोंमें अपने धनको खर्च करता था, जब कि सब धन वनियाका खर्च होगया, तब वनियाको खाने-पीनेसेभी तङ्गी होने लगी। तब तिसकी स्त्रीने कहा तुम किसी राजाके पास जावो और एक यज्ञके फलको बेंचकर कुछ द्रव्य लाकर अपना अच्छी तरहसे गुजर करो। जब कि वनियाने जानेकी तैयारी करी तब तिसकी स्त्रीने नौ रोटी मोटी २ रास्तामें खानेके लिये तिसके कपडेमें बांधदी वनिया तीसरे प्रहर जंगलमें एक कूंवेके किनारे पहुँचा और वहांपर बैठकर सुस्ताने लगा तब देखता क्याहै वृक्षकी कोटरमें एक कुत्तिया व्याई हुई पडी है नव तिसके बच्चेहैं तिसको चूस रहेहैं और तीन दिनकी वह भूखीहै, क्योंकि तीन दिनसे वर्षा बरावर हो रही थी कहींको वह जाने नहीं पाई अतिकृश और दुर्बल होगईथी अब इसमें कहीं जानेकी हिम्मतभी नहींथी। वनियाने एक २ रोटी करके सब रोटी तिसको खिलादी और आप भूखा रहगया। कुत्तिया जी गई, तिसके जीनेसे तिसके वच्चेभी सब जी गये। वनिया दूसरे दिन राजाके पास पहुँचा और एक यज्ञके फलके वेचनेको कहा। राजाने ज्योतिषीको बुलाकर पूँछा तुम प्रश्न देखो इसने कितने यज्ञ कियेहैं उन सबमें किस यज्ञका फल उत्तमहै उसीको हम खरीद करेंगे। ज्योतिषीने कहा जो कि, इसने रास्तामें कुत्तियाको रोटियें खिलाई हैं उससे नव जीवोंके प्राण बचे हैं वही इसको सब यज्ञोंमेंसे उत्तम यज्ञहै उसीके फलको यदि यह वेचें तब तुम खरीद करलेवो राजाने वनियांसे कहा वानियांने कहा तिस यज्ञके फलको मैं नहीं वेचूंगा और किसी यज्ञके फलको खरीदो तब वेचूंगा राजाने और यज्ञके फलको न खरीदा और वनियाको कुछ रुपैया देकर बिदा कर दिया हे चित्तवृत्ते! दयाका कितना वडाभारी फल है ॥ ७८ ॥

हे चित्तवृत्ते! मनुष्य तो दया करतेही हैं, परंतु इतर जीवभी दया करते हैं, अब मनुष्यसे इतर जीवोंका भी दयापर दृष्टांतको सुनो ॥

एक पंडित रास्तामें चले जातेथे उन्होंने जंगलमें देखा कि मूसोंकी वडी भारी कतार चलीआती है उनमें एक मूसा अंधाथा उसके मुखमें एक घासका

तिनका पकडाकर दूसरे मूसेने उसी तिनकेको अपने मुखमें पकडाथा पीछे २ वह अंधामूसा भी चला आताथा अब देखिये मूसा आदिक जं भी उपकार करनेकी बुद्धि रहती है, जो मनुष्य शरीरको धारण करके उ हीनहै वह पशुओंसेभी बुराहै, क्योंकि मनुष्य शरीर तो खासकर उपकार नेके लियेही उत्पन्न हुवाहै ॥ ७९ ॥

परोपकारः कर्त्तव्यः प्राणैरपि धनैरपि ।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात्क्रतुशतैरपि ॥ १ ॥

धनोंकरके और प्राणों करकेभी परोपकार करना चाहिये क्योंकि परोप बराबर सौ यज्ञकाभी पुण्य नहीं है ॥ १ ॥

परोपकारशून्यस्य धिङ् मनुष्यस्य जीवितम् ।
यावन्तः पशवस्तेषां चर्माप्युपकरिष्यति ॥ २ ॥

जो मनुष्य परोपकारसे शून्यहै तिसके जीनेकोभी धिक्कारहै, क्योंकि पशुहैं, उनके चर्मभी परोपकार करते हैं ॥ २ ॥

आत्मार्थं जीवलोकेस्मिन् को न जीवति मानवः ।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥ ३ ॥

अपने लिये इस लोकमें कौन मनुष्य नहीं जीताहै, परंतु जो परोपकारमें जीताहै वही जीताहै, दूसरा नहीं जीताहै ॥ ३ ॥

## दोहा ।

विरछा फलै न आपको, नदी न अचवै नीर ।
पर स्वारथके कारणे, संतन धरो शरीर ॥ ४ ॥

## दोहा ।

शेष शीश धारै धरा, कछु न आपनो काज ।
परहितपरस्वारथी, वाइक बने न लाज ॥ ५ ॥

हे चित्तवृत्ते ! अमेरिकामें एक सेनापति कुछ सेनाको लिये जाता था लमें रास्ताको वह भूल गया यद्यपि दो चार घंटेतक इधर उधर भ्रमण करता परंतु रास्ता तिसको न मिली और सेना सब भूँख प्याससेभी बहुत घबराई

जंगलमें एक घासका छप्पर तिस सेनापतिको दिखाई पडा तिस छप्परमें एक मनुष्य बैठाथा तिससे सेनापतिने कहा, हम लोकोंको भूँख और प्यास लगीहै उसने उनसे कहा हमारे साथ तुम चलो वह आगे २ चला पीछे तिसके वह सब सेना चली थोडी दूर जब गये तब अन्नका ढेर दिखाई पडा सेनापतिसे तिसने कहा यह दूसरेकाहै इसको मत छूना फिर आगे जब थोडी दूर गये तब एक अन्नका ढेर दिखाई पडा और पासही उसके पानीका तालाब था उसने कहा यह अन्न अपना है, जितना आपको चाहिये सो लेलीजिये और यह पानीका ताल भी मौजूद है सेनापतिको जितने अन्नजलकी जरूरीथी सो लेलिया, फिर उससे कहा हमको अब तुम रास्ता बतादे, उसने साथ जाकर रास्ता भी उनको बता दिया वह सब सेना आरामसे अपनी जगहपर पहुँच गई अपने प्रयोजनसे बिना दूसरेका भला करना इसका नाम उपकार है॥

हे चित्तवृत्ते ! चित्तकी शुद्धिके साधनोंको तुम्हारे प्रति हमने कह दिया अब तुम्हारी इच्छा क्या सुननेकी है सो कहो॥ ८०॥

इति श्रीस्वामि—हंसदासशिष्येण स्वामि—परमानंदसमाख्याधरेण विरचिते ज्ञानवैराग्यप्रकाशकनामकग्रन्थे वैराग्योपदेशवर्णनो नाम प्रथमः किरणः॥ १॥

---

# द्वितीयकिरण।

हे चित्तवृत्ते ! जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पतिके साथ मिलनेके लिये संपूर्ण विषय भोगोंका त्याग करके अपने मृतक पतिके साथ जलकर पतिके लोकको प्राप्त, होजाती है, तैसे तूभी विषय भोगोंका त्याग करके अपने मनरूपी पतिके साथ ज्ञानरूपी अग्निमें सती न होजावैगी तबतक तेरेको आत्मसुखका लाभ कदापि नहीं होगा॥ १॥

हे चित्तवृत्ते ! सर्पके पास एक मणि रहता है, तिस मणिमें दो गुण रहते हैं एक तो तिस मणिमें प्रकाश गुण रहता है, दूसरे आनंद गुण रहता है, सर्प तिस मणिके प्रकाश गुणको तो जानता है परंतु तिसके आनंदगुणको वह नहीं

जानता है जब कि तिस सर्पको भूँख लगती है तब वह पर्वतकी अंधेरी जाकर उसको अपने मुखसे निकालकर धर देताहै उस मणीके धरने कंदरामें प्रकाश होजाता है, तिस मणीके प्रकाशसे वह सर्प मार २ कर के खाता है, दूसरे आनंद गुणको वह जानता नहीं । लिये वह आनंदको प्राप्त नहीं हो सक्ता है और यदि तिस मणिके गुणको वह जानता तब मच्छरोंके खानेसे वह आनंदको न प्राप्त होता, तिसी मणिके आनंद करके वह आनंदको प्राप्त होता । इसी प्रकार हे चित्त तूभी तिस आत्माके प्रकाश गुणको जानतीहै इसीसे तू तिस प्रकाश करके रूपी मच्छरोंको मार २ कर खाती रहती है । यदि तू तिस आत्माके आनं गुणको जानती तब विषयोंके पीछे कदापि न दौडती ॥ २ ॥

चित्तवृत्ति कहतीहै हे विवेकाश्रम ! वह आत्मा कौनहै और कहां पर र और कैसे जाना जाता है और किस प्रकार तिसके ये दो गुण जाने जाते हैं प्रति विस्तार पूर्वक तिस आत्माका तू निरूपण कर ।

विवेकाश्रम कहतेहैं:—हे चित्तवृत्ते ! वह आत्मा सर्वत्र रहताहै, परंतु तिसकी ब्धिका स्थान यह शरीरही है जैसे सूर्यका प्रकाश सर्व जगहमें बराबर ही प परंतु तिसकी उपलब्धि विशेषरूप करके जलमें या दर्पणमें ही होती है । सामान्य रूप करके आत्मा भी सर्वत्र विद्यमान है तथापि विशेष रूप करके ही रहताहै और आत्माके प्रकाश करकेही शरीर भी प्रकाशमान होरहाहै । वृत्ति कहती है हे विवेकाश्रम ! इस तरहसे जो आप कथन करतेहैं, सो मेरी नहीं आताहै । क्योंकि मैं स्त्रीजाति स्थूल बुद्धीवाली हूं आप दृष्टांतद्वारा आत्माको मेरे प्रति बताइये ॥

विवेकाश्रम कहतेहैं:—हे चित्तवृत्ते ! तुम एक मट्टीका बनाहुवा मटका जिसका मुख चौडाहो और पाँच जिसमें ऊपरकी तरफ छिद्रहों और एक दिया लावो जिसमें तेल बत्ती धरीहो, और एक सुंदर रसवाला फल लावो एक कोई रूपवाली वस्तु लावो और एक बाजा लावो और एक सुगंधीवाल लावो और एक कोई कोमल स्पर्शवाली वस्तु लावो । चित्तवृत्ति सब वस्तु ले आई और कहने लगी हे भ्राता ! आपने जो वस्तुएँ बताई हैं उन सबको

लाई हूं । विवेकाश्रम कहते हैं । हे चित्तवृत्ते ! अँधेरी कोठडीमें इस दियेको जगाकर पृथिवीपर धर देवो और इस मटकेको ऊंधा करके तिस दियेके ऊपर धर दे और पांचों छिद्रोंके पास उन पांच वस्तुवोंको धरदेवो चित्तवृत्तिने दियेको जगाकर तिसके ऊपर मटकेको ऊंधा धरकर तिसके समीप पांचों वस्तुवोंको धर दिया । अब विवेकाश्रम चित्तवृत्तीसे पूँछते हैं ॥ हे चित्तवृत्ते ! ये जो पाँचों छिद्रोंके समीप पाँचों वस्तु रक्खी हैं, सो हरएक छिद्रके पास जो हरएक वस्तु धरी है, सो सब अपने प्रकाश करके तुमको दिखाई देतीहैं, या किसी दूसरे प्रकाश करके तुमको दिखाई देतीहैं ! चित्तवृत्ति कहतीहै, हे ज्ञाता ! ये जो बाजासे आदि लेकर पाँच वस्तुएं पांचों छिद्रोंके समीप रखी हैं, सो सब अपने आपसे नहीं दिखाती हैं किंतु दीयेके प्रकाश करके सब दिखाई पडती हैं और मटिका वगैराभी सब दीयेकेही प्रकाश करके प्रकाशमान हो रहेहैं, स्वतः इनमें प्रकाश नहीं है । क्योंकि मटकेके भीतर यदि दीयेका प्रकाश नहो, तब मटिका प्रभृति कोई भी प्रकाशमान नहो अर्थात् कोई भी दिखाई न पडे । विवेकाश्रम कहतेहैं, हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै, अब मैं तेरेको दार्ष्टांतमें इस दृष्टांतको घटाकर समझाताहूं । यह जो स्थूल शरीरहै, मटिका स्थानापन्नहै और जो इसमें मुख, नासिका, चक्षु करणादिक इन्द्रियोंके गोलकहै । ये सब छिद्र स्थानापन्नहैं । अंतःकरणरूपी दीपकहै, तिसकी वृत्तिरूपी वर्त्तीहै, वासना रूपी तिसमें तेल भरा है, और ज्योतिरूप आत्मा तिस वर्त्तीमें आरूढ होकर प्रकाश कररहाहै, तिस आत्माके प्रकाश करकेही देहादिक इन्द्रियें सब प्रकाशमान हो रहेहैं, स्वतः देहादिकोंमें प्रकाश नहीं है । क्योंकि चेतनस्वरूप आत्माही है, आत्मासे भिन्न सब जडहैं । इसी वास्ते आत्माके सम्बन्ध करके देहादिक सब चेतन प्रतीत होतेहैं, स्वतः इनमें चेतनता नहींहै । जब कि, आत्मा इस शरीरका त्याग करदेताहै, तब यह मृत्तिका कहां जातीहै । जबतक आत्मा इसमें विराजमानहै, तबतक यह सर्व व्यवहारोंको करताहै, आत्माके चले जानेसे कोई व्यवहारकोभी नहीं कर सक्ताहै और आत्मा देहादिकोंमें रह करके भी सबसे असंग होकरकेही रहता है और देहादिकोंका साक्षीभी है । हे चित्तवृत्ते ! जिस चेतना आत्माकी सत्ता करके देहादिक चेतनवत् प्रतीत होतेहैं, वही तेरा आत्मा है । चित्त

वृत्ति कहतीहै हे विवेकाश्रम ! आपने कहाहै आत्मा देहादिकोंके ... ताहै और फिर असंगभीहै यह वार्ता मेरी समझमें नहीं आतीहै, ... किसी दृष्टांतद्वारा मेरेको समझाइये ॥ ७३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! नृत्यशालामें जो दीपक जगाकर रात्रिके समयमें ... वह दीपक तिस समग्र सभाको प्रकाश करताहै और सभाके भीतर जो ... तिहै तिसकोभी प्रकाश करताहै और जो नृत्य करनेवाली वेश्या ... जितने कि सभासदहैं अर्थात् नृत्यकारीको देखने वालेहैं, उन सबकोभी प्रकाश करताहै और जितने कि वेश्याके साथ बाजोंको बजाने वाले हैं सबकोभी दीपकही प्रकाश करताहै, यह तो दृष्टांतहै । अब इसको ... घटातेहैं यह शरीररूपी तो एक सभाहै याने नृत्यशालाहै, तिसके भीतर ... रूपी दीया प्रकाशमान हो रहाहै, मनरूपी सभापतिहै, बुद्धिरूपी वेश्या ... कारी नृत्य कररही है इन्द्रियरूपी सब बाजोंके बजानेवालेहैं, विषयरूपी ... सब देखने वालेहैं । जैसे दीपक अपने स्थानमें स्थित होकर सभा और ... आदिकोंको प्रकाश करताहै और उनसे असंग होकर और उनका ... होकर शरीररूपी सभाको और मनरूपी सभापति आदिकोंको प्रकाशभी ... है और उनसे असंगभी रहताहै और मनादिकोंका साक्षीरूप करकेभी रहताहै, दीपककी तरह किसीके साथ संसर्गकोभी प्राप्त नहीं होताहै, ... रीतिसे आत्मा असंगहै ॥ ४ ॥

हे चित्तवृत्ते एक और दृष्टांतकोभी तूं श्रवणकर जितनी रचना तेरेको ... दिखाई पडतीहै, इतनीही रचना इस शरीरके भीतरहै बल्कि इससे अधिक ... कुछ रचना होती है । जैसे कि, बाहरके ब्रह्मांडकी रचना चेतन ... सत्ताकरके होतीहै, तैसे शरीररूपी ब्रह्मांडकी रचना जीवात्माकी सत्ता ... ही होतीहै सोभी तुमको दिखातेहैं । हे चित्तवृत्ते ! इस शरीरके भीतर नाभिसे ... एक नाडी निकलीहै, तिस एकसे फिर कएसौ नाडी निकली हैं, फिर उन ... नाडियोंमेंसे एक २ नाडीसे बहत्तर २ हजार नाडी निकली हैं, फिर एक २ में ... औरभी अनेक नाडियें निकली हैं, जो कि, बालोंके अग्रभागसेभी अति ... फिर इसी शरीरमें स्थूल नाडियेंभी बहुतसीहैं, जो कि, सारे शरीरमें फैली हुई ... आगे उन नाडियोंमेंभी तारतम्यताहै, परस्पर स्थूल सूक्ष्मताहै, जैसे ...

डसे एक मोटी डाल निकलती है उस एकसे आगे चार पांच उससे स्थूल पतलीडालें निकलतीहैं, फिर उन एक २ डालसे पतलीडालें निकलती हैं, फिर उनसे और बहुतसी पतली २ निकलतीहैं। ऐसेही इस शरीररूपी वृक्षकाभी हिसाबहै। फिर इसके भीतर और बडी भारी रचना होरहीहै। नाभीसे ऊपर षट्चक्रहैं, फिर इसके भीतर बहुतसी हड्डियोंके जोडहैं, उनमें स्थूल सूक्ष्मताहै, हजारों वैद्योंने इस शरीरके भीतरकी रचनाके जाननेके लिये बडे २ यत्नकिये तबभी उनको पूरा २ हाल इसकी रचनाका न मिला. क्योंकि जैसे बाहरका ब्रह्माण्ड अनंतहै, तैसे भीतरका ब्रह्मांडभी अनंतहै फिर शरीरमें अनेक स्थान बनेहैं। प्रथम जब पुरुष अन्नादिकोंको खाताहै, तब वह अन्न भीतर पेटमें जाताहै, जठराग्नि वहाँपर फिर तिसको पकातीहै, फिर तिसका एक सारभूत निकलकर जुदे स्थानमें जाताहै, मल नीचे गुदा स्थानमें जाताहै. जल मूत्रस्थानमें जाताहै वह जो सार रस पकाहुवाहै, वह फिर दूसरे स्थानमें जाकरके पकताहै। तिसका स्थूल भाग रुधिर होताहै, सूक्ष्म भाग वीर्यहो जाताहै, उन दोनोंको नाडियोंमें व्यानवायु हिसाबसे बाँटतीहै, सब नाडियें और हड्डियें अपने २ कामको करती रहतीहैं। उसी चेतन आत्माकी सत्ता करके शरीरमें सब नाडियें वगैरह अपने २ कामको करतीहैं, आत्मा नहीं करता। यदि आत्माको कर्त्ता मानोगे तब एकही आत्मा एक क्षणमें भीतरके हजारों कामोंको कैसे करसकैगा और अनेक आत्मा एक शरीरमें रहि नहीं सक्तेहैं जो अपना २ काम सब करैंगे। यदि कहो आत्माके हुक्मसे सब मन इन्द्रियादिक और नाडियें आदिक अपना २ काम सब करतेहैं सोभी नहीं बनताहै। क्योंकि मन, इन्द्रिय और नाडी आदिक सब जडहैं, जडपर एक हुक्म नहीं होसक्ताहै। दूसरा हुक्मकी तामील करनेका तिसको ज्ञान नहींहै। तीसरा राजा जैसे एक देशमें नौकरोंको काम करनेका हुक्म देकर आप दूसरे देशमें चलाजाताहै और तिसके वहाँपर न रहनेसेभी काम होता रहताहै तैसे आत्माकेभी शरीरसे चले जानेपर काम होना चाहिये सो तो नहीं होताहै इसलिये हुक्मसे कहना नहीं बनताहै, हुक्म चेतनपरही होसक्ताहै, जिसको तिसका ज्ञानहै जडपर हुक्म नहीं होसक्ताहै। इसलिये शरीरके भीतर आत्माके हुक्मसे काम होना बनताभी नहींहै फिर सब किसीको यह ज्ञानतो है जो मेरा आत्मा देहके भीतर विद्यमानहै. परंतु यह ज्ञान किसीकोभी नहींहै, जो मेरा आत्मा इदानींकालमें भीतर

इस कामको कर रहाहै या मनादिकोंको हुक्म दे रहाहै, या प्रेरणा करताहै जाना जाताहै, आत्मा अकर्ताहै, असंगहै, केवल साक्षीमात्रहै, जैसे बाहर अन्तर्वर्ति तारागण सब लोकहैं और जडहैं, परंतु व्यापक चेतन ईश्वर करके अपने कामको सब कर रहेहैं । ईश्वर न किसीको प्रेरणा करताहै किसीको कुछ कहता सुनताहै, केवल चेतन ईश्वरकी सत्ताकरके सूर्य आदिक सब तारागण अपने २ चक्रपर घूम रहेहैं औरभी जगत्के का होरहेहैं । तैसे देहके भीतरभी जो कि चेतन आत्मा है, तिसकी करके देहके भीतर सब काम होरहेहैं । जब आत्मा देहको देहांतरमें चला जाताहै, तब देह मुरदा होजाताहै, फिर गल सड जाताहै हीं युक्तियोंसे साबित होताहै आत्मा अकर्ताहै असंगहै । जिस वास्ते प्रकाश करकेही सब काम देहमें होतेहैं और बाहरका व्यवहारभी होताहै वास्ते आत्माके प्रकाश गुणकाही सबको ज्ञानहै तिसके आनन्दगुणका किसीको नहीं इसी हेतुसे जीव बाह्य विषयोंकी तरफही सब दौडतेहैं। आनन्दरूपी गुणकी प्राप्तिका मुख्य साधन प्रथम वैराग्यहै . फिर चित्तकी निरोधरूप योग दूसरा साधनहै अर्थात् तू बाह्यविषयोंकी तरफसे वृत्तिको ह अन्तर आत्माके सन्मुख करना ये दूसरा साधन आत्मानन्दकी प्राप्तिकाहै, दृष्टान्तको दिखातेहैं ॥ ९ ॥

एक राजाके कन्याकी मैत्री मंत्रीके लडकेके साथ होगई कुछ दिनोंतक वार्ता छिपी रही, फिर यह वार्ता धीरे २ प्रगट होने लगी । तब राजाने इसका हाल मालूम होगया । राजाने अपने मनमें यह विचार किया कोई उपाय करना चाहिये जिस उपायसे मंत्रीका लडकाभी मरजाय और बदनामी भी न हो । राजाने अपने वैद्यको बुलाकर कहा एक ऐसी दवाई कर डिबियामें बंद करके लावो जिसके पास वह डिबिया रात्रिको धरीजाय आदमी उसकी सुगंधिसे मर जाय । वैद्यने कहा कलको मैं ऐसीही दवाई करके लाऊंगा । दूसरे दिन वैद्य वैसी दवाईको बनाकर डिबियामें बंद रुमालमें बांधकर राजाके पास ले आया । राजाने रात्रिके समय उस डिबियाको एक लौंडीको दिया और कहा इसको वजीरके लडकेके पलंगपर शिरकी तरफ धर आना । वह लौंडी जाकर उसके पलंगपर तकियाके पास शिरकी तरफ

ई। आगे वह लडका अफीम खाताथा तिसने जाना नौकर अफीमकी डिबियाको र गयाहै उसने डिबियाको खोल्कर उसमेंसे बहुतसी दवाई जहरवाली खाली परन्तु मरा नहीं, किंतु जीताही रहा । तब राजाने इसका सबब वैद्यसे पूछा वैद्यने हा जिसकी गंधिसे आदमी मर जाताहै तिसके खानेसेभी जो नहीं मराहै इसका ब यहहै जो तिस आदमीका मन किसी दूसरेमें लगाहै उसको अपन शरीरकी कुछ खबर नहीं है । इसीसे वह नहीं मरा है ? उसके मरनेका सहजही क उपायहै वह यह है जिसके साथ तिसका अति प्रेमहै वह स्त्री सुंदर भूषण और वस्त्रोंको पहरकर तिसके सामने खडी होकर उसकी आँखसे आँख मिलाकर हे अब फिर कदापि नहीं आऊंगी ऐसा कहकर तिसके सामनेसे हट जाय र्थात् छिपजाय। तब वह तुरंतही मर जायगा। राजाने कन्यासे कहा कन्याने सी तरह शृंगार करके तिसके सन्मुख जाकर तिसकी आँखसे आँख मिलाकर हने लगी अब मैं फिर कभी भी नहीं आऊंगी। ऐसा कहकर जब वह हटी तुरंत वह भी मरगया। कन्याके कहनेसे उसको ऐसा भारी दुःख हुवा जिस दुःख को वह सम्हार नहीं सका, तुरंतही उसके प्राण निकल गये। यह तो दृष्टांतहै। अब दार्ष्टांतमें इसको घटातेहैं:—हे चित्तवृत्ते! बुद्धिरूपी राजकन्या है, मनरूपी लडकेके साथ इसका चिरकालका प्रेम होरहाहै, बुद्धिरूपी कन्या जब कि, ब्रह्म-विद्यारूपी शृंगारको करके मनके सन्मुख होकर मनकी तरफसे हटकर आत्माकी तरफ होजातीहै, तिसी कालमें मनभी विषयोंकी तरफसे मरजाताहै, मनके मरनेके समकालमेंही पुरुषको आत्मानंदकी प्राप्ति होजाती है और पुरुषका जन्म मरण रूपी संसार भी छूट जाताहै। क्योंकि यह संसार तो सब मनकाही बनाया हुवा है:—

ब्रह्मबिंदु उपनिषदमें कहाहै:—

**मनो हि द्विविधं प्रोक्तं शुद्धं चाशुद्धमेव च।**
**अशुद्धं कामसंकल्पं शुद्धं कामविवर्जितम् ॥ १ ॥**

मन दो प्रकारका होताहै एक तो शुद्ध मन होता है, दूसरा अशुद्धमन होताहै जो मन कि कामना करके युक्त है, वह अशुद्ध कहा जाताहै जो कि, कामनासे रहित है, वह शुद्ध कहाजाताहै ॥ १ ॥

**मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ।**
**बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम् ॥ २ ॥**

मनुष्योंका मनही बन्ध मोक्षका कारणहै, जब कि, मन विषयोंमें होजाताहै तब बन्धका कारण होजाता है, जब निर्विषय होजाताहै तब मु कारण होजाताहै ॥ २ ॥

**यतो निर्विषयस्यास्य मनसो मुक्तिरिष्यते ।**
**तस्मान्निर्विषयं नित्यं मनः कार्यं मुमुक्षुणा ॥ ३ ॥**

जिस हेतुसे मनके निर्विषय होजानेका नामही मुक्ति कथन किया तिसी हेतुसे मुमुक्षु पुरुषोंको उचित है जो मनको नित्यही निर्विषय करें ॥

**निरस्तविषयासङ्गं सन्निरुद्धं मनो हृदि ।**
**यदा यात्युन्मनीभावं तदा तत्परमं पदम् ॥ ४ ॥**

विषयोंके संगसे रहित होकर जब कि, मन हृदयमें जिस कालमें रुक जा तिसी कालमें मन परमपदको प्राप्त होजाताहै ॥ ४ ॥

**तावदेव निरोद्धव्यं यावद्धृदि गतं क्षयम् ॥**
**एतज्ज्ञानं च मोक्षश्च ह्यतोऽन्यो ग्रन्थविस्तरः ॥ ५ ॥**

तावत्पर्यन्त मनका निरोध करना चाहिये यावत्पर्यंत मन हृदयमें नाशको प्राप्त होजाताहै मनके नाश होजानेका नामही ज्ञान और मोक्षभी है और ता ग्रन्थोंका विस्तार मात्रही है ॥ ५ ॥

हे चित्तवृत्ते ! मनको प्रथम शुद्ध करना ही कर्तव्य है, मनकी शुद्धके पुरुषको नित्य सुखकी प्राप्ति नहीं होतीहै और मनकी शुद्धिसे रहित जो है, वही अज्ञानी कहा जाता है क्योंकि तिसको अपने स्वरूपका ज्ञान है और बिना अपने स्वरूपके ज्ञानसे ही यह जीव दुःखको प्राप्त होता है। तहां इसकी फजीहती होनी है, इसीमें तुम्हारेको एक दृष्टांत सुनातेहैं ॥

एक पुरुषका नाम बेवकूफ था और तिसकी स्त्रीका नाम फजीहती एक दिन तिसकी स्त्री तिसके साथ लडाई झगडा करके कहींको चली गई वह अपनी स्त्रीको जंगलमें खोजनेके लिये गया, एक आदमीने तिससे तुम जंगलमें किसको खोजतेहो ? उसने कहा मैं अपनी स्त्रीको खोजता हूं

छा तुम्हारी स्त्रीका नाम क्या है उसने कहा तिसका नाम फजीहती है फिर छा तुम्हारा नाम क्या है तिसने कहा हमारा नाम बेवकूफ है तब कहा फिर म स्त्रीको क्यों खोजते हो बेवकूफको फजीहतियोंकी कौन कमती है, जहांपर ावोगे उसी जगहपर तुम्हारी बहुतसी फजीहती होजायगी हे चित्तवृत्ते! यह ो दृष्टांत है, अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं अपने स्वरूपसे भूला हुवा जीव वकूफहो रहा है, इधर उधर जंगलों और पर्वतोंमें पडा आत्माको खोजता है सी वास्ते जहांपर जाता है, वहांपरही इसकी फजीहती होती है। क्योंकि शरी-की अंतर आनंदरूप आत्माका त्याग करके क्षण परिणामी विषयोंमें आनंद ो खोजताहै। जैसे कूकर सुखी हड्डीको चबाता है, तब तिसके मसूढोंसे धिर निकसता है, तिसी रुधिरका रस तिसको स्वादु लगता है और वह जान-ाहै इस हड्डीसे मेरेको स्वाद आरहा है सुखी हड्डीमें स्वाद कहां है स्वाद तो सके अपने रुधिरमें है तैसे विषयी पुरुषभी विषयमें स्वादको मानता है, विषयमें स्वाद नहीं है, क्योंकि विषय जडहै स्वाद तो अपने आत्मामेंही है दि स्त्री रूपी विषयमें आनंद होता तब भोगोत्तर कालमें भी होता सा तो नहीं है, किंतु वीर्यके स्खलन कालमें क्षणमात्र वृत्ति स्थिर हो ाती है, तिस वृत्तिमें चेतनका प्रतिबिंब पड़ताहै, तिसीसे इसको आनंदकी तीति होतीहै, वह आनंद आत्माकाहीहै। विषयका नहींहै। परंतु इतना सको ज्ञान नहींहै जो यह आनंद आत्माकाहै। यदि इतना इसको ज्ञान ोजाय तब विषयोंके पीछे यह टक्करें न मारे। जिस वास्ते अज्ञानी बनकर षयोंके पीछे यह जीव दुःख पाता है इसी वास्ते इसकी फजीहति होती है ॥६॥

हे चित्तवृत्ते! इसी विषयपर तुमको हम एक और दृष्टांत सुनाते हैं। क पुरुषके पुत्रका नाम रूपसेन था तिस रूपसेनके संपूर्ण वदनमें बाल बहु-तसे थे, जब कि, वह बाल बहुत दिन बढगये तब एक दिन तिसके पिताने मनमें विचार किया बालोंके बढजानेसे तो लडका हमारा बडा कुरूप जान पडताहै, बाल इसके मूंड दिये जाँय, तब यह सुंदर माल्लम होने लगेगा। उसने लडकेसे बालोंके मुँडवानेके लिये कहा परंतु लडकेने न माना क्योंकि वह उनके मुंडवानेके सुखको जानता नहीं था जब रात्रिके समय लडका सोगया तब तिसके पिताने तिसके सब बालोंको मूँड डाला सवेरे जब कि, लडका जागा तब तिसन

अपने वदनपर वालोंको न देखकर जाना मैं तो वह रूपसेन नहींहूं
रूपसेनके वदनपर तो बडे २ वालथे मेरे वदनमें तो वह नहीं है
रूपसेनको खोज लावें ऐसा विचार करके वह जंगलमें जाकर
नको खोजने लगा । जब कि, तिसने रूपसेनको कहीं भी न देखा
आकर अपने बापसे पूँछने लगा रूपसेन कहाँहै उसने कहा रूपसेन
पिताके कहनेसे तिसका भ्रम दूर हुवा और तिसने जानलिया जिसको मैं
ताथा वह तो मैंही हूं मैं भ्रम करके अपनेको बाहर जंगलोंमें खोजता
यह तो दृष्टांतहै । अब इसको दार्ष्टांतमें घटातेहैं । यह जो जीवात्मा
ईश्वररूप था, राग द्वेष रूपी वाल जो इसके अंत:करणरूपी वदनमें
उन्हीं करके यह कुरूप प्रतीत होताथा और अपने असली स्वरूपसे
अन्यरूपसे अपनेको इसने मान रखाथा अर्थात् राग द्वेष कर्तृत्व भो
कोंसे रहित होकर अपनेको कर्तृत्व भोक्तृत्वादिकोंवाला इसने मान
पितारूप गुरूने इसकी कुरूपताके हटानेके लिये राग द्वेषरूपी वाल
करदिये तबभी इसका भ्रम दूर न हुवा, फिरभी अपनेको खोजताही र
इसको विचार हुवा, तब इसने फिर गुरुरूप पितासे पूछा वह
आत्मा कहाँहै तिसने कहा वह तुमहीं हो, ऐसा जब कि, महावाक्य
तिसको बताया तब इस्का भ्रम दूर हुवा और इसने जानलियाकि
मैं अपनेसे भिन्न जान करके खोजताथा वह तो मैंही निकला फिर
सुखरूप आत्मा मानकर यह सुखी होगया ॥ ७ ॥

हे चित्तवृत्ते! इसीविषयपर एक और दृष्टांत तुमको हम सुनाते हैं-

किसी नगरमें एक वनियां बडा धनी और धर्मात्मा रहताथा,
एकही लडकाथा परंतु तिस लडकेका चालचलन अच्छा नहींथा बनियांने
सुमार्गमें प्रवृत्त होनेके लिये बहुतसा उपदेश किया तबभी लडके
माना तब वनियाने क्याकिया एक लकडीके खंभेमें बहुतसा द्रव्य
तिसको मकानके भीतर आंगनमें गडवा दिया और अपनी वहीमें लिख
जब कि, बेटा तुमको द्रव्यका काम पडै तब थंभ शाहस लेलेना । कुछ
के पीछे वह बनियां मरगया तब तिसके लडकेने वाकीका सब धन
कर दिया जब कि, तिसके पास खानेको भी न रहा, तब वह वहीं

खोलकर देखने लगा । कई एक पत्र उलटनेके बाद एक पत्रेपर लिखाहुवा मिला बेटा जब कि तुमको कुछ रुपैयाका काम पडे, तब थंभ शाहसे लेलेना वह लडका थंभ शाहकी तलाश करने लगा जबकि कहींभी तिसको थंभ शाहका पता न लगा, तब दुखी होकर घरमें एक टूटीसी खाटपर पडारहा एक महात्मा तिस बनियांके गुरू कहींसे आनिकले उन्होंने आकर बनियांको पूछा लोकोंने कहा वह तो मरगये हैं और उसका लडका घरमेंहै परंतु सब धनको तिसने उजाड दियाहै, अब वह खानेसेभी तंगहै । महात्मा बनियांके घरमें आये और जाकर देखा तो उसका लडका शोकयुक्त एक खाटपर पडाहै, महात्माने हालचाल पूंछा तो उसने सब हाल कह सुनाया । और यहभी कहा वही पत्रेपर लिखाहै जब कि, तुमको रुपैयाका काम पडे तब थंभ शाहसे लेलेना मैनें थंभशाहकी बहुतसी तलाशकीहै परंतु तिसका पता कहींभी नहीं लगताहै । महात्माने विचार किया थंभ नाम खंभेकाहै मालूम होताहै उस बनियाँने लडकेको मूर्ख जानकर अपना धन खंभेमें गाड दियाहै। महात्माने घरमें जाकरके देखा तो आंगनमें एक खंभा लगाहुवा उनको दिखाई पडा उन्होंने अपनी लाठीसे तिसको ठकोरा तब तिसमेंसे छन्नसी आवाज आई, महात्माने जान लिया इसी खंभेमें धन गडाहै तिस लडकेसे कहा यदि तूं आगे सुचालसे रहे तब हम तुमको खंभ शाहको बतातेहैं, लडकेने नेम कर दिया मैं कभीभी आजसे लेकर कुकर्म नहीं करूंगा । महात्माने कहा इसे खंभेको तुम खोदो इसीमें तुमको धन मिलैगा । इसीका नाम थंभशाह है । लडकेने तिसको खोदा तब उसमें बहुतसा धन तिसको मिला उसी दिनसे कुकर्मका तिसने त्याग करदिया और महात्माको गुरू करके मानने लगा । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांत अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं । इस शरीररूपी थँभमें पितारूपी परमेश्वरने आत्मारूपी धनको गाड दिया है, जीव विषय भोगरूपी कुकर्ममें लगाकर जब दुःखी हुवा तब सुखरूपी धनकी तलाश करने लगा, महात्मारूपी गुरुने कहा बाहर सुख नहीं है सुखरूप धनतो तुम्हारे शरीररूपी खंभेमें ही गडा है, महात्मा आत्मतत्त्ववित् गुरुकी कृपासे आत्मारूपी धनकी प्राप्ति होती है ॥ ८ ॥

चित्तवृत्ती कहती है हे विवेकाश्रम ! जीवात्माको रहनेका नियतस्थान शरीरको आपने बताया है और ईश्वरात्माको सारे ब्रह्मांड भरमें आपने बताया

८

है आपके कथनसे तो जीवात्माका और ईश्वरात्माका भेद सिद्ध ईश्वर दोनोंका अभेद तो सिद्ध न हुआ विवेकाश्रम कहते हैं हे चि ज्ञात निरावयव निराकारका उपाधिके विना भेद किसी प्रकारसेभी नहीं हो श्वर है। उपाधियों करकेही जीवात्मा ईश्वरात्माका भेद प्रतीत होता है, वास्त इन दोनोंका भेद नहीं है, किंतु अभेदही है । जैसे एकही आकाशके मठ उपाधियोंके भेदसे घटाकाश मठाकाश कहा जाता है, वास्तवसे तत्व इसमें भेद नहीं है। उपाधियोंके विद्यमानकालमेंभी आकाशका भेद नहीं है प्र उपाधियोंके नाश होजाने परभी आकाशका भेद नहीं है, क्योंकि निसे वस्तुका भेद किसी प्रकारसेभी नहीं होसक्ता केवल भेदका कथनमात्रही है निराकार निरावयव शुद्ध बुद्ध स्वरूप आत्माकाभी भेद विना उपाधिके गत प्रकारसेभी नहीं होसक्ता है उपाधियोंके विद्यमान कालमेंभी आत्माका अभेद नि और उपाधियोंके नाश होजानेपरभी आत्माका अभेदही है, व्यवहारमें उपाधि दि विद्यमान कालमें भेदका जो कथन है वह मिथ्या है, क्योंकि भेद केवल ती मात्रही है वास्तवसे नहीं है। वह एकही चेतन माया अविद्या इन दो उ म करके जीव ईश्वर नामसे कहा आता है। स्वरूपसे जीव ईश्वरका भेद न य एकही चेतन तीन प्रकारके भेदको प्राप्त होजाताहै, माया उपाधि करके य सर्वशक्तिमान् ईश्वर कहाजाता है और अविद्या उपाधि करके अल्पज्ञ हीं जीव नामसे कहा जाता है जो कि माया अविद्या दोनों उपाधियोंसे रहित समे शुद्ध ब्रह्म कहा जाताहै। चित्तवृत्ति कहती है एकही चेतन तीन प्रकारका द होगया? आपसेआप होगया या किसी दूसरेने कर दिया? आपसे आप न क हो सक्ता है, क्योंकि वह इच्छा आदिकोंसे रहित है, दूसरा कोई इसके और चेतन माना नहीं है, जिसने इसको तीन भेद कर दिये हों तब कैसे तीन प्र च चेतन बन गया? विवेकाश्रम कहते हैं, हे चित्तवृत्ते! एकही चेतन माया करके च प्रकारका बन गया है। जैसे चेतन अनादिहै तैसे मायाभी अनादिहै। का उसको कहते हैं जिसकी उत्पत्तिका कोईभी आदि काल न हो, जो उत्पत्ति भा स्वतः सिद्धहो वही अनादि कहा जाता है, जो उत्पत्तिवाला हो वह सा जाताहै और तिस मायामें दो अंशहैं एक शुद्ध, एक मलिन, शुद्ध उपाधि ईश्वर स मलिन जो अविद्याहै वह जीवकी उपाधि है, उपाधियोंके अनादि होने

ईश्वरभी दोनों अनादि कहे जाते हैं, इसीसे जीव ईश्वरका भेदभी अनादि कहा जाताहै और अविद्या चेतनका कल्पित सम्बन्धभी अनादिहै। तात्पर्य यहहै जीव १, ईश्वर २, शुद्धचेतन ३, जीव ईश्वर का भेद ४, अविद्या ५, अविद्या चेतनका सम्बन्ध६, यह षट् पदार्थ अनादिहैं, इन छहोंमेंसे एक शुद्धचेतन अनादि अनंतहै और बाकीके पांच अनादि सांतहैं अर्थात् जीवत्व ईश्वरत्व ये दो धर्मभी मिथ्याहैं, केवल चेतन भाग जो धर्मीहै सो सत्यहै, वही सद्रूप चेतन एकहै द्वैतसे रहितहै। द्वैत सब स्वप्नकी तरह कल्पितहै, जैसे स्वप्नका प्रपंच सब झूठाहै बिना हुवेही प्रतीत होताहै तैसे जाग्रत्का प्रपंचभी सब झूठाहै बिना हुवेही प्रतीत होताहै। संपूर्ण जगत् जब कि बिना हुवेकी तरह प्रतीत होताहै, तब तिसमें यह कहना नहीं बनताहै जो जगत्को किसने बना दिया है और कब बनाहै? मायाका स्वरूप अनिर्वचनीयहै, अनिर्वचनीय उसको कहतेहैं, जिसका कुछभी निर्वचन अर्थात् निर्णय न हो सके। यदि सत्य कहें तब तिसका नाश न हो, सो नाश होताहै। असत्यकहें तिसकी प्रतीति न हो प्रतीति भी तिसकी होती है। सत्य असत्यसे विलक्षणहो उसीका नाम मायाहै। बडे २ ऋषि मुनि इसका विचार करते २ हार गये किसीकोभी मायाके स्वरूपका पता नहीं लगा है। जो मायाके पीछे पडताहै उसीको माया काटकर खाजातीहै। इसलिये बुद्धिमान् इस मायाके स्वरूपका निर्णय नहीं करताहै किंतु जो इसके त्यागकी इच्छाको करताहै वही इससे बच जाताहै। इसमें एक दृष्टांत तुमको सुनाते हैं:—

एक पुरुष एक वृक्षके नीचे बैठाथा, ऊपरसे एक काले रंगका सर्प उसकी गोदमें आकरके गिरा, अब जो वह पुरुष यह विचार करे जो यह सर्प किसीने फेंकाहै या आपसे आप गिराहै, तबतक तो वह सर्प उसको काटही लेगा और वह विचार भी तिसका निष्फल होजायगा, इसलिये वह बिनाही विचारके तुरंतही तिस सर्पको फेंकदे, सर्पके फेंकने सेही वह सर्पके डसनेसे बच सक्ताहै विचार करनेसे वह नहीं बच सक्ताहै। इसी तरह मायाके स्वरूपकाभी विचारहै, मायाकोभी अनिर्वचनीय जानकर तुरंतही इसका त्याग करदेवे आत्माके विचारमें लगजावे तब शीघ्रही आत्मानंदको प्राप्त होजायगा॥ ९॥

हे चित्तवृत्ते! एक और दृष्टांतको सुनो—किसी पुरुषने एक महात्मासे पूँछा संसाररूपी वृक्षका बीज कौनहै? और इसकी शाखाएँ परशाखाएँ और फल

पत्र पुष्पादिक कौनहैं ? महात्माने कहा संसाररूपी वृक्षका बीज तो माया माया क्याहै सो स्त्री है येही संसाररूपी वृक्षका बीजहै और शब्द स्पर्श गंधादिक इसके पत्तेहैं। काम क्रोधादिक इसकी शाखाएँ परशाखाएँ कन्यादिक तिसके फलहैं। तृष्णारूपी जल करके यह बढताहै। जिस स्त्रीरूपी माया त्याग करदियाहै, उसने संसारका त्याग कर दियाहै! स्त्रीही बंधनका कारणहै, मोहके वशमें प्राप्त होकर पुरुष स्त्रीका संसर्ग क्षणमात्र सुखके लिये अनेक जन्मोंमें फिर कष्टको उठातेहैं और जो विषय भोगहैं उनकी प्राप्तिके लिये पुरुष बडे २ उपवासादिक करतेहैं वह सुखभी दुःखसे मिलाहुवाहै और विचारदृष्टिसे तो सब जितना कि, विषयजन्य सुखहै वह बराबरही है ॥

आत्मपुराणमें कहाहै:—

रेतसो निर्गमे यावत्सुखं तावद्धि विद्यते।
विण्मूत्रयोर्विसर्गेपि ततो वै नाधिकं सुखम् ॥ १॥

स्त्रीके साथ भोगकालमें वीर्यके त्यागकरनेमें जितना सुख होताहै सुख विष्टा और मूत्रके त्याग करनेमें भी होताहै, तिससे अधिक स्त्रीभोगका सुख नहीं है ॥ १ ॥

जायते म्रियते ब्रह्मा विट्क्रिमिश्च तथैव हि।
सुखदुःखकरं तद्वत्सदेहत्वं समं द्वयोः ॥ २ ॥

जैसे क्रिमि जन्मता मरताहै, तैसे ब्रह्माभी जन्मता मरताहै और सुख और सदेहत्वभी दोनोंको बराबरहीहै ॥ २ ॥

तिसी आत्मपुराणके चतुर्थ अध्यायमें दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिने प्रति कहाहै:—

निंदयामो वयं यद्वत्कष्टं जन्म शुनोऽधनाः।
अस्माकं च तथैवेते निंदन्ति ब्रह्मवादिनः ॥ १ ॥

ऋषि कहतेहैं हे इन्द्र ! जैसे हमलोक कूकरके जन्मकी निंदा करतेहैं ब्रह्मवादीलोक हमारे जन्मकी निंदा करते हैं ॥ १ ॥

उत्कृष्टता यथास्माकं स्वदेहे शक्र विद्यते।
शुनोपि च स्वदेहे सा तादृश्येवहि वर्तते ॥ २॥

हे इन्द्र ! जैसे हमलोकोंकी उत्कृष्टता अपने देहमें है, तैसे कूकरकी उत्कृष्टता अपने देहमेंहे ॥ २ ॥

**श्वविष्ठासदृशो देहः शक्र सर्वशरीरिणाम् ।**
**हेयंधिया परित्यक्ते तस्मिन्नात्मा प्रकाशते ॥ ३ ॥**

हे शक्र ! कूकरके विष्टाके तुल्य सब जीवोंके शरीरभी मल मूत्रवालेहैं । हेय बुद्धिका त्याग करके तिसमें आत्माही प्रकाशमानहै अर्थात् शरीरोंकी जैसे तुल्यताहै तैसे आत्माकीभीहे ॥ ३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! विचार दृष्टिसे तो कहींभी न्यूनाधिकता प्रतीत नहीं होतीहै केवल विचारकी न्यूनाधिकता प्रतीत होतीहै । विचारहीन दुःख पाताहै, विचारवान् सुखको प्राप्त होताहै ॥ १० ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक लडकेने मधु खानेके लिये मधुके छातामें हाथ डाला, ज्योंहीं तिसने मधुके लोभसे हाथ डाला त्योंहीं मधुमाखियोंने तिसको काटखाया, यह तो दृष्टांतहै। दार्ष्टांतमें जीवरूपी लडकेने विषय रूपी मधुके भोगनेके लिये हाथ डाला आगे रागद्वेष रूपी मक्खियोंने इसको काट खाया है: उनके काटनेसे यह दुःखी भी रहता है, तब भी उन विषयोंका यह त्याग नहीं करताहै ॥ ११ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांतको सुनोः—किसी ग्राममें एक कुतिया व्याई थी, उसने बहुतसे बच्चे दिये ग्रामके लडकोंने हरएकको अपना२ बनाकर तिसके गलेमें अपना २ पट्टा बाँध दिया । किसीने लाल, किसीने पीला, किसीने काला, जिसने जिस बच्चाके गलेमें अपना पट्टा बांधा, वह बच्चा उसीके पीछे दौडने लगा, यह तो दृष्टांत है । दार्ष्टांतमें अविद्यारूपी कुतिया व्याई है, तिसने जीवरूपी बच्चोंको कियाहै, आचार्यरूपी बालकोंने अपने २ कंठी और माला आदिक पट्टे अपने २ पिलोंके गलेमें बांध दिये हैं, इसी वास्ते वह अपने २ आचार्यके पीछे चलतेहैं, विचार नहीं करतेहैं इसी संसारचक्रमें सब जीव भ्रमते फिरतेहैं । हे चित्तवृत्ते ! वेदांतशास्त्रके विना जितने शास्त्र हैं ये सब जीवको फँसानेवालेहैं, छुडानेवाला कोई भी नहीं है । क्योंकि सब इसको पापी अधमही बनातेहैं, असंग आत्माको पापोंका संगी वेदसे विरुद्ध बतातेहैं । वेदांतशास्त्र इसको पापोंसे रहित शुद्ध बुद्ध प कहताहै, तुम वेदांतको धारण करो ॥ १२ ॥

हे चित्तवृत्ते ! किसी नगरमें एक साहूकार रहता था, तिसके तीन लडके तीनों लडके जब सयाने होगये तब एकदिन साहूकारने अपने तीनों लडकोंको बुलाकर कहा मेरे पास एक अलौकिक मणीहै, उस मणिमें अनेक गुण हैं और यह मणी इस डिबियामें रक्खी है, इस मणीको तुमलोक सँभाल करके रात्रिके समय अपनी२ पारी लगाकर अर्थात् रात्रिके तीन विभाग करके भागमें एक २ लडका इस मणिको लेकर एकांतमें बैठकर इस मणिमेंसे ग्रहण करे। लडकोंने मणिवाली डिबियाको लेकर हिफाजतसे धर दिई, कालके पीछे उनका पिता मरगया, तब लडकोंने एकदिन रात्रिके तीन करके अर्थात् सवा २ पहरकी एक २ की पारी लगादी। प्रथम एक लडके मणिको लेकर कोठेपर एकांत देशमें जाकर बैठा जब कि, तिसने मणि निकालकर अपने आगे रक्खा तब मणिके प्रकाशसे अँधेरा जातारहा, कुछ क्षण मणिको रखे हुवे व्यतीत हुआ तब तिसका मन खाली लगा तब उसने क्या किया थोडीसी राखको बटोरकर अपने पास रख जब कि थोडी देर वीते तब जरासी राखको मणीपर डाल देवै फिर अपने ऊपर डाल देवै, इसी तरह करते उसकी पारी गुजरगई। फिर पारी आई उसको भी सवा पहर विताना मुश्किल होगया। वह तिस प्रकाशमें शिकार करके खाने लगा। फिर जब तीसरेकी पारी आई और वह आगे रखकर बैठा इतनेमें चन्द्रमा उदय होआया। चन्द्रमाकी किरण जो पडी, तब मणिसे अमृत निकलने लगी, उस अमृतको वह पान करने लगा तिसको बडा आनंद प्राप्त हुवा।

हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै, अब इसको दार्ष्टांतमें घटाकर तुमको वेदांत शास्त्ररूपी एक मणिहै, उस मणिको तीन पुरुषोंने पाया है एक पुरुष हैं, जो कि, वेदांत रूपी शास्त्रको पढकर मद्यपान परस्त्री गमनादि करते हैं, वह तो राखको उडाकर अपने ऊपर और मणिके ऊपर डालते क्योंकि, ऐसी मणिको पाकरके फिर भी अपनी आयुको विषय में खोते हैं। दूसरे वह हैं जो कि, वेदांतरूपी मणिके प्रकाशसे शिकार करते उनका शिकार करना येहीहै। वेदांतकी वातोंको सुनाकर लोकोंसे वंचन करना। तीसरा वह है जो कि, वेदांत रूपी मणिको पाकर तिसके

द्वारासे सत्य असत्यका निर्णय करते हैं और मनको विषयोंकी तरफसे हटाकर आत्मामें लगाते हैं । वही तिस मणिके आनंदगुणको प्राप्त होतेहैं ॥ इसीपर कहाभी है:—

**पठिकाः पाठिकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिंतकाः ।**
**सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रियावान् स पंडितः ॥ १ ॥**

जितनेक शास्त्रको पढने और पढानेवालेहैं और जो केवल चिंतनही करनेवाले हैं, शास्त्रोक्त धारणासे शून्य हैं वह संपूर्ण व्यसनी और मूर्ख हैं । जो कि, शास्त्रको पढकर वैराग्यादि गुणोंको धारण करता है वही पंडितहै ॥ १ ॥ हे चित्तवृत्ते ! विना शास्त्रोक्त गुणोंके धारण करनेसे वह आत्मानंद कदापि नहीं मिलसक्ता है ॥ १३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! यह आत्मा असंगहै अकर्त्ता है, अभोक्ता है, देहादिकोंके साथ सम्बन्ध होनेसे इसने अपनेको कर्त्ता भोक्ता आदि गुणोंवाला मान रक्खा है, इसी पर तुमको एक और दृष्टांतको सुनातेहैं:—

किसी राजाके मंदिरमेंसे सोये हुवे राजाके बालकको रात्रिके समयमें एक भील उठाकर लेगया और वनमें लेजाकर अपने लडकोंके साथ तिसको भी पालने लगा जब कि वह लडका कुछ बडा हुवा तब वहभी भीलोंके कर्मोंको करने लगा अर्थात् घृणासे रहित होकर हिंसा प्रधान जितने कर्म हैं उन सबको वह करने लगा तिसी वनमें एक महात्मा जा निकले उन्होंने तिस लडकेको पहचान कर कहा तुम तो राजकुमारहो भील नहीं हो, भीलोंके साथ रहकरके तुमनेभी अपनेको भील मान रक्खा है और अयोग्य कर्मोंको तुम कर रहेहो, तुम अपनेको चीन्हो और अपने स्वरूपका स्मरणकरो । जब तुम अपनेको चीन्होगे तब तुम भीलपनेको त्यागकर अपने राजमंदिरमें जाकर आनंदसे रहोगे महात्माके वाक्यको सुनकर राजपुत्रकोभी सब अपना पिछला स्मरणहो आया और उसको विश्वास होगया जो मैं भील नहीं हूं किंतु राजपुत्रहूं वह तुरंतही भीलोंके वेषको त्यागकर अपने घर को चला आया, हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांत है। अब दार्ष्टांतको सुनो इस जीव रूपी राजकुमारने अज्ञानरूपी भीलकी संगती करके अपनेको भील मान रक्खाहै, वह भीलपना क्याहै कर्त्ता भोक्ता पुनि पापी बनना, अज्ञानी बनना, इसीसे यह जीव नानाप्रकारके फलोंके देनेवाले कर्मोंको कर्ता है और संसाररूपी वनमें

दुःखी होकर पडा भ्रमता है। पूर्व जन्मके किसी पुण्य कर्मके प्रभावसे जीवको जब कि आत्मवित् गुरुसे मिलाप होगया तब तिस महात्मा गुरुने उपदेश किया तू अज्ञानी नहीं है याने भील नहीं है न तू कर्ता है न भोक्ता और पुण्य पापके सम्बन्धवाला है किंतु तू सच्चिदानंद रूप है तूं अपने स्वरूपको भूला हुआ है, अपने स्वरूपका तुम स्मरणकरो और अपने आपको चीन्हो तब तुमको सुख होगा महात्माके उपदेशसे तिसको अपने स्वरूपका स्मरण होताहै, तब भीलपनेको त्यागकर सुखीहो जाता है ॥ १४ ॥

हे चित्तवृत्ते! यह भेदवादी पुरुषको दुःखी करताहै, इसी वास्ते भेदवादकी निंदा की है, अज्ञानी भेदवादियोंने ईश्वरमेंभी भेदको लगाकर भिन्न २ ईश्वर कल्पना करलिये हैं इसीमें तुमको एक दृष्टांत सुनाते हैं:-

एक वैष्णव साधु गणेशजीका भक्तथा, गणेशजीकी उपासनाको प्रेमसे करताथा, उसने पांच तोला सोनेकी एक गणेशजीकी मूर्ति बनवाई पांच तोला सोनेकी एक गणेशजीके वाहन मूसाकी मूर्ति बनवाई दोनोंको प्रेमसे वह पूजा करने लगा। पूजा करते २ जब कि, कुछ काल व्यतीत हुआ तब एक दिन तिसको कुछ द्रव्यका काम पडा तिसके पास उस कालमें टकाभी नहींथा, उसने विचार किया इन मूर्तियोंको बेंचकर अब काम चला लेना चाहिये फिर जब कुछ द्रव्य कहींसे मिलजायगा तब और मूर्तियां बनवा लेवेंगे वह दोनों मूर्तियोंको लेकर एक सुनारके पास वेचनेको लेगया सुनारने दोनोंको तोलकर दोनोंका बराबरही दाम लगा दिया तब वैरागीने उससे कहा अरे लंडी गणेशजीको मूसेके बराबर करदिया गणेशजी स्वामि हैं मूसा तो वाहन है, क्या कहीं स्वामी और वाहनभी बराबर होसक्ता है सुनारने कहा वैरागडे स्वामिपना और वाहनपना अर्थात् गणेशपना और मूसापना जो तुमने इन मूर्तियोंमें मान रखा है उसको तुम निकाल करके अपने पास रख लेव हम को तो सोनेका दाम देना है सोना तोलमें दोनोंका बराबर है अर्थात् दोनों मूर्तियोंमें पांच २ तोला सोना बराबरही है वैरागी सुनारकी वार्ताको सुनकर चुप होगया। हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांत है। अब दार्ष्टांतको सुनो शरीर पांचों भूतोंकाही कार्य्य हैं और सब शरीरोंमें अस्थी, मज्जा, चर्म, और मलमूत्रभी बराबरही हैं फिर सब शरीरोंकी उत्पत्तिभी वीर्यसे होती है

शरीर उत्पत्ति नाशवालेभी हैं और सब शरीरोंमें खान पानादिक व्यवहारभी बराबरही होता है। भेद तो शरीरोंमें किसी प्रकारसेभी साबित नहीं होता है और आत्माभी सब शरीरोंमें चेतनरूप करके बराबरही विद्यमान है और अभिमानभी सब शरीर धारियोंको बराबरही है कोईभी देहधारी अपनेको नीच और दूसरेको उत्तम नहीं समझता है, किंतु सब कोई अपनीही जातिको उत्तम मानतेहैं, किसी प्रकारसे भी भेद नहीं साबित होसक्ताहै। तब भी अज्ञानी लोक कल्पित धर्मोंको मानकर भेद बुद्धिको करके दुःखको पातेहैं। यदि उन कल्पित धर्मोंको निकाल दिया जाय तब बाकी आत्माही केवल शुद्ध सच्चिदानंद रूप सिद्ध होताहै। सो ज्ञानी लोकही सर्वत्र आत्मदृष्टिको करते हैं वही सुखी रहते अज्ञानी लोक आत्मदृष्टिको नहीं करते हैं। जैसे कल्पित गणेशपनेको और मूसापनेको छोड करके सोना दृष्टिको सुनार करताहै। तैसे ज्ञानवान् भी ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्वादि धर्मोंका त्याग करके सर्वत्र आत्म दृष्टिकोही करताहै। इसीसे वह सुखी रहताहै। चित्तवृत्ति कहती है हे भ्राता! जब कि ज्ञानवान्की दृष्टिमें आत्मा सब शरीरोंमें एक है, शुद्धहै, निर्दोषहै, तब फिर सबके साथ ज्ञानवान् खान पानादि व्यवहारको क्यों नहीं करताहै। विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! ज्ञानवान् दो प्रकारके होते हैं। एक तो जीवन्मुक्त कहे जातेहैं, जिनको अपने शरीरकी भी खबर नहीं है और दूसरे चतुर्थी भूमिकावाले आचार्य्य कहे जातेहैं, जो कि जीवन्मुक्तहैं वह तो अजगर वृत्तिवाले होतेहैं। किसीने उनके मुखमें अन्नको डाल दिया तब खाजाते हैं पानीको डाला तब पीजाते हैं धूपमें किसीने उठाकर धर दिया या छायामें या वर्षामें उसी जगह पड़े रहतेहैं उनको सब बराबरही होताहै। क्योंकि, वह आत्मानंदमें डूबे रहतेहैं जगत् उनको दिखाताही नहीं है आत्माहीं आत्मा उनको सर्वत्र दिखाताहै उनके मुखमें ब्राह्मणादि चारों वर्णोंमेंसे कोई अन्नको डालदे या भंगी चमार डालदे उनके अन्न खानेमें उनको कोई भी दोष नहीं होताहै। क्योंकि उनकी दृष्टिमें न कोई ब्राह्मणहै न कोई भंगी या चमार है। आत्माही आत्माहै वह किसीसे बात चीतभी नहीं करतेहैं उन जीवन्मुक्तोंका शरीरभी थोडही कालतक रहताहै, वह तो सर्व प्रकारसे निर्दोषहैं वेदादिक किसी शास्त्रकी आज्ञाभी उनपर नहींहै। क्योंकि वह ब्रह्मरूपहैं, महान् सुखमें वह निमग्न रहतेहैं।

दूसरे आचार्य्य कोटिमें जो हैं, वे सर्वत्र आत्मामें समदृष्टिहैं अर्थात् सर्वत्र एकही आत्माको देखतेहैं, इसीसे उनका किसीके साथ राग द्वेष नहीं परंतु वह समवर्ती नहीं होतेहैं क्योंकि समवर्ती होनेसे श्रेष्ठाचार जाता दूसरा यदि सब किसीका जूंठा खानेसे ज्ञानी होसक्ता हो तब जितने चमार वगैराहैं येभी सब ज्ञानी कहे जायंगे, इनको तो कोईभी ज्ञानी कह सक्ताहै । इसीसे समवर्तीका नाम ज्ञानी नहीं है । तीसरा जिसको व्यवहारक वर्णाश्रमका ज्ञानहै, वह यदि समवर्ती होकर सबका खावे तब लोकमें वह पतित कहावेगा । जब कि, और सब विधि निषेधका ज्ञानहै और उनको वह मानताहै तैसे अपनेसे नीच ऊँच जाति वाले निषेधकाभी तो तिसको ज्ञानहै । अगर पागलकी तरह उसको कोई नहो, तब तिसको झूंठे खानेकाभी दोष नहो । वह पागलोंमें तो गिना जाता । इसलिये तिसको समवर्ती होना मनाहै । चौथा ज्ञानका फल होना कहींभी नहीं लिखाहै । ज्ञानका फल राग द्वेषकी निवृत्ति परम प्राप्तिहै । सो जो राग द्वेषसे रहितहै, अपने आत्मानंदमें आनंदितहै वही जो राग द्वेष करके युक्त विषय भोगोंसे आनंद मानताहै, वही अज्ञानी ज्ञानी अज्ञानीका इतनाही फरक है ॥ १९ ॥

विवेकाश्रम कहतेहैं हेचित्तवृत्ते ! इसी विषयपर एक और दृष्टांत सुनाते हैं:—

एक पंडित किसी ग्रामको कथा बाँचनेकेलिये जातेथे, रास्तामें एक किनारेपर एक वटके पेडके नीचे बैठकर सुस्ताने लगे । उस खेतमें एक हल जोतताथा, उसके हलके आगे जो बैलथे वह दुर्वलथे शीघ्र चल सक्तेथे वार २ खडे होजातेथे जब २ तिसके बैल खडेहोजांय तब २ वह अपने बैलोंको बुरी २ गाली अर्थात् बैलोंके खसमकी जोरू और फलानकी गालियें देताथा पंडितने उससे पूछा यह बैल किसकेहैं उसने यह बैल हमारेहैं तब कहा इनका खसम कौन हुवा जाटने कहा इनके हमहीं हुवे तब पंडितने कहा तुम जो इन बैलोंको गालियाँ देतेहो वह गालियें किसको लगतीहैं जाटने कहा जो सारा गालियोंके अर्थोंको समझे ये सब गालियें उसी सारेको लगती हैं पंडित जाटकी बातको सुनकर

ख्वाब होगया । क्योंकि जाटका यह तात्पर्यथा मैं तो गालियोंके अर्थको समझता नहीं मेरेको क्यों लगेंगी ? तुम पंडितहो तुमको इनके अर्थका ज्ञान है यह गालियें तुमहीको लगेंगी । हे चित्तवृत्ते ! जिस पुरुषको गालियोंके अर्थका ज्ञान नहीं होता है, उसको गालियें नहीं लगती है। इसीसे वह बुराभी नहीं मानता है । जैसे बालकको गालियोंका अर्थका ज्ञान नहीं है इससे बालक गाली देनेपर बुरा नहीं मानता है, और बालककी गालीपर दूसराभी कोई बुरा नहीं मानता है । जैसे बालकको धर्म, अधर्म, पुण्य, पापका ज्ञान नहीं है, इसीसे उसको पुण्य पापभी नहीं लगता और शास्त्रकारोंने भी तिसको पुण्य पापका निषेध किया है । जैसे बालकको आचारका ज्ञान नहीं है ऊपर मुखसे तो रोटी खाता जाता है और नीचेसे मलमूत्रका त्यागभी करता जाता है किसीकोभी तिसकी क्रियापर ग्लानि नहीं फुरती है। वैसे जीवन्मुक्तकोभी कोई पुण्य पाप नहीं लगते हैं क्योंकि तिसको उनका ज्ञानही नहीं है और न कोई तिसकी क्रिया पर बुराही मानता है और जो कि आचार्य्य कोटिमें ज्ञानी हैं, वह यदि भ्रष्टाचारको करने लगे परस्त्रीगमन, मांस, मद्यका सेवन करें तब तिनको अवश्य पाप लगेगा । क्योंकि उसको तो सर्व प्रकारका ज्ञान है और लोक उससे घृणाभी करते हैं क्योंकि उसको अभी ज्ञानका कुछभी आनंद नहीं मिला है तब महान् आनंदका त्याग करके तुच्छ आनंदके साधनोंमें वह प्रवृत्त न होता । जिनको काकविष्टाके तुल्य जानकरके त्याग कर दियाथा उनके ग्रहण करनेमें फिर प्रवृत्त न होता वह ज्ञानी आचार्य्य नहीं है । ज्ञानवान् चतुर्थ भूमिकावाला आचार्य्य कोटिमें वह गिना जाता है जो निषिद्ध कर्मोंका त्याग करके विहित कर्मोंको निष्कामतासे श्रेष्ठाचारके लिये अनासक्त होकर करता है, अथवा निषिद्ध कर्मोंको और विहित कर्मोंको नहीं करता है. केवल आत्मचिंतनही करता है वही आचार्य्य कोटीमें है । और जो विहित कर्मोंका त्याग करके निषिद्ध कर्मोंको करता है और आत्मबोधसे शून्य होकर असंग बनता है, वही वन्ध्य ज्ञानी, मूर्ख, पाप पुण्यका भागी होता है । तिसका जन्म मरण रूपी संसार कदापि नहीं छूटता है ॥ १६ ॥

अष्टावक्र गीतामें कहा है:–

**यस्याभिमानो मोक्षेपि देहेपि ममता तथा॥**
**न वा योगी न वा ज्ञानी केवलं दुःखभागसौ॥**

जिस पुरुषका मोक्षमें अभिमान है और देहादिकोंमें ममता है वह न तो योगी है और न ज्ञानीहै केवल दुःखको ही वह भजनेवाला है॥ १॥

कपिल गीतामें ज्ञानीका लक्षणभी दिखाया है–

**न निंदति न च स्तौति न हृष्यति न कुप्यति।**
**न ददाति न गृह्णाति मुक्तः सर्वत्र नीरसः॥ १॥**

जो न किसीकी निंदा कर्ता है और न किसीकी स्तुति कर्ता है, न देता है न किसीसे लेता है, जो सर्वत्र रागसे रहित है वही मुक्त कहा जाता है॥ १॥

**सानुरागां स्त्रियं दृष्ट्वा मृत्युं वा समुपस्थितम्।**
**अविकलमनाः स्वस्थो मुक्त एव महाशयः॥ २॥**

जो सहित अनुरागके स्त्रीको देखकरके और मृत्युकोभी सन्मुख उपस्थित देखकर है, फिरभी जिसका मन व्याकुल नहीं होता है वह महाशय मुक्तरूप है॥

हे चित्तवृत्ते! जो सर्वत्र आत्माकोही देखता है किसीमें भी कमती बढ़ती नहीं देखता है वही आत्मदर्शी ज्ञानी कहा जाता है आत्माकी समतामें एक और दृष्टान्त तुमको सुनातेहैं:–

जो कि मैला उठाने वाले भंगी होतेहैं, वहभी अपनेसे ऊंचा किसी ब्राह्मणादि जातिवालेको नहीं मानते हैं, क्योंकि पंजावदेशमें जब कि भंगीका विवाह होता है और इनकी सब बिरादरी आकरके बैठती है और जिस कालमें कन्याका पाणिग्रहण होताहै तिसकालमें भंगनका बाप अपनी लडकीके हाथको दामादके हाथ पर धर करके कहता है इसको तुम भंगन मत जानना कोई ब्राह्मणी जानना या छत्रानी जानना वैश्यानी या शूद्रानी जानलेना या इनसे और छोटी जाती वाली मुगलानी या पठानी जान लेना भंगन मत जानना इनके उसका यह होताहै भंगी जाती सबसे बडी है अब देखिये जिनके छुजानेसे स्नान करना पडता है वहभी अपनेको छोटा नहीं मानतेहैं अब बताइये इनका

याहै? इसका कारण यही है कि, आत्मामें छोटापना किसीकेभी नहीं है केवल पाधियोंका भेद है इसीसे भंगीभी अपनेको छोटा नहीं मानते हैं। भंगियोंके गुरू ाल बेग हुवेहैं, एक दिन भंगियोंने अपने लालबेग गुरूसे कहा महाराज ! हम ोगोंका कल्याण होनेमें तो कोईभी संदेह नहीं है, क्योंकि आप सरीखे हमारे गुरू , परंतु इन क्षत्री ब्राह्मणोंका कल्याण कैसे होगा ? भंगियोंके गुरू लालबेगने हा उनका कल्याण तुम्हारे हाथ है, तुम लोक जो सवेरे गलियों और बाजा- में झाडूदेतेहो और वह लोक जो स्नान करके आते हैं तुम्हारे झाडूकी न जो उनपर पडती है उसीसे उनका भी कल्याण होजायगा । भंगी क भी अपनी जातिको इतना बडा मानतेहैं बस इसीसे जाना जाताहै। ात्मामें नीचता ऊंचता नहीं है, आत्मा सबका बराबरही है । क्योंकि सबको पनेही आत्माकी पवित्रताका अभिमानहै । इसी तरह और भी जितने कि, सलमान ईसाई बौद्ध जैनी वगैरह मतोंवाले हैं, सब कोई अपने २ आत्माको वित्र मानतेहैं। इससे भी जाना जाता है कि, आत्मामें अपवित्रता और नीचता हीं है। यदि होती तब सब ऐसा न मानते । हे चित्तवृत्ते ! आत्मा सबमें एकही है ैसे एकही आकाश मंदिरमें भी है, और पाखानामें और मसजिदमें गिरजेमें जैन ंदिरमें बौद्धमंदिरमें भी है, भंगी चमारोंके घरोंमें भी है, उत्तम २ मूर्तियोंमें भी मलमूत्रादिकोंके पात्रोंमें भी है, परंतु अति सूक्ष्म होनेसे उपाधियोंके साथ उसका कोईभी सम्बन्ध नहीं है और न उपाधियोंके गुण दोषों करके आकाश गुणदोषवाला होजाताहै। इसी प्रकार एक ही आत्मा ऊँच नीच सब शरीरोंमें विद्यमान है, शरीरोंके गुण दोषों करके वह गुणदोषवाला नहीं होता । क्योंकि, आकाशसे भी अतिसूक्ष्महै, इसीसे असंग और निर्लेप भी है ॥ १७ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयमें एक और दृष्टांतभी तुमको सुनातेहैं:—

किसी नगरके बाहर नदीके किनारेपर एक अद्वैतवादी महात्मा रहतेथे, एक दिन एक द्वैतवादी पंडित उनके साथ वादविवाद करनेको गये और जाकर पंडितने महात्मासे कहा मैं द्वैतको साबित करताहूं, आप मेरेसे वाद विवाद करिये । महात्माने कहा हमारे शिरके बाल बहुत बढगयेहैं, इनके बढनेसे हमारा शिर दुखताहै जबतक हम हजामत बनवा नहीं लेंगे तबतक वादको नहीं करेंगे सो प्रथम तुम जाकर किसी नाऊको बुलालावो पश्चात् हम तुमसे शास्त्रार्थ

करेंगे । पंडितजी जाकर नाऊको बुला लाये नाऊने आकर महात्माकी पिता
बनाई जब कि, नाऊ हजामत बना चुका तब महात्माने नाऊसे कहा है ।
परमेश्वरहो । नाऊने कहा अरे महाराज ! मैं तो महापापीहूं मैं कैसे प
सक्ताहूं महात्माने पंडितसे कहा देखो द्वैतको तो यह नाऊ भी
रहाहै बल्कि इस नाऊसे जो मूर्ख हैं महामूढ हैं वह भी द्वैतको
कररहेहैं जब कि तुम भी द्वैतकोही साबित करोगे तब फिर इस नाऊ
तुम्हारी कुछ अधिकता साबित नहीं होगी किंतु तुल्यताही होगी । अधिक
अद्वैत साबित करनेसेही होती है ॥ १८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! किसी नगरमें एक द्विज रहताथा तिसको तीन ल
एक सबसे बडा पंद्रह या सोलह बरसका था, दूसरा तिससे छोटा सात
सकाथा, तीसरा कुछ चार बरसका था । तिस नगरके बाहर एक दे
स्थानथा, वहांपर सालमें एक दिन मेला होता था, तिसमें वह द्विज
लडकोंको साथ लेकर चला । मेलामें भीड बहुत थी देवस्थानतक
कठिन था इसलिये छोटे लडकेको तिसने कांधेपर उठालिया मझोलेका
पकड लिया, बडा पीछे २ चलने लगा । जो कि; सबसे छोटाथा वह
पर बैठा हुवा आरामसे देवस्थानमें पहुँच गया । मझोला भी धक्के
पहुँचा । धक्के तो तिसने खाये परंतु बापका हाथ न छोडा । जो कि,
बडा था वह धक्के खाकर पीछेकोही रह गया । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांत
दार्ष्टांतमें सुनो । देवस्थान कौनहै? आत्मपद, पिता कौन है? परमेश्वर,
लडका वेदांतीहै, मझोला लडका भक्तहै. सबसे बडा कर्मी है । जब कि
श्वर अपने तीनों लडकोंको आत्मपदकी तरफ लेजाताहै तब सबसे बडा
जो कि भेदवादी कर्मी है, वह तो रागद्वेषरूपी धक्कोंको खाकर पीछेही
रह जाताहै जब कि शुभ कर्म करताहै तब स्वर्गको जाता है स्वर्ग
नीचेको आताहै । इसीतरह चक्रमें भ्रमताही रहताहै और जो दूसरा
वह धक्के तो खाताहै अर्थात् भेद भावना करके उपासना करनेसे जन्मां
परारूपी धक्कोंको तो खाताहै परंतु अपने पितारूपी परमेश्वरका हाथ
छोडताहै । इसलिये कर्मी न कर्मी अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा वहभी पहुँच
तीसरा जो ज्ञानी है वह विनाही धक्कोंके खानेसे पिताके कांधेपर सवार

पिताके साथ जो अभेद ज्ञान होनाहै, इसीसे वह आरामसे पहुँच जाता है । क्यों कि जो भेद मानताहै वही दूर रहजाताहै । अथवा वेदरूपी पिताके कांधेपर बैठकर पहुँच जाताहै । वेदकी आज्ञा तिसके ऊपर नहीं रहतीहै यही कांधेपर बैठनाहै और जो कि वेदमें ईश्वरमें प्रेम करना कहाहै तिसको जो भक्त नहीं छोडताहै यही हाथ पकडना और कर्मी अर्थवादरूपी फलोंके जो वेदने कहाहै उन्हींके पीछे दौडताहै इसलिये वह परमपदसे दूर रह जाताहै. क्योंकि दुःखका जनक भेदवादहै और सुखका जनक अभेद वाद है । विना अभेदज्ञानके इस जीवकी मुक्ति कदापि नहीं होती है ॥ १९ ॥

श्रुतिभी इसी अर्थको कहतीहैः—

**अन्योसावहमन्योस्मीत्युपासते योऽन्यदेवतम् ।**
**न स वेद नरो ब्रह्मन् स देवानां यथा पशुः ॥ १ ॥**

वह ब्रह्म मेरेसे अन्य याने भिन्नहै और मैं तिससे भिन्नहूं, इस प्रकार जान करके जो अन्यदेवताकी उपासना करताहै. हे ब्रह्मन् ! वह पुरुष ब्रह्मको नहीं जानताहै । जैसे मनुष्योंके लादनेके पशु होतेहैं, वैसेही वहभी देवतोंके लादनेका एक पशुही होताहै ॥ १ ॥

**भेदवादकथोन्मत्तः कार्य्याकार्य्यविवर्जितः ।**
**मद्यसंपर्कमात्रेण कथं वाच्यः स वै द्विज इति ॥ १ ॥**

जो द्विज भेदवादरूपी कथोंमें मत्त होरहाहै, कर्तव्य अकर्तव्यको नहीं जानताहै, जैसे मदिराकी एक बूंदके मिलनेसे गंगाजलका घट अपवित्र होजाताहै वैसे तिसकोभी जान लेना ॥ १ ॥

हे चित्तवृत्ते ! जैसे कोई पुरुष अंधकारसे अंधकारको दूर करना चाहे जैसे कोई मट्टीकी गैया बनाकर दूध पीना चाहे, जैसे कोई संकल्पकी मिठाईसे पेट भरना चाहे, तैसेही वहभी करताहै जो भेदवादको आश्रयण करके अपनी कल्याणकी इच्छा करताहै । हे चित्तवृत्ते! इसीपर एक और दृष्टांतकोभी सुनोः—

हे चित्तवृत्ते ! एक पुरुष गणेशजीकी उपासना करता था, एक दिन वह पूजा कररहा था कि इतनेमें एक मूसा जो बिलसे निकला उसने आतेही गणेशजीके उपर चढकर चावलोंको खाने लगा और भोगकी मिठाईको लेकर

भाग गया । तब तिस उपासकने विचार किया गणेशजीसे तो मूसाही निकला और पूजाभी बलीकी करना चाहिये । क्योंकि बलीसेही कुछ है । दुर्बलसे तो कुछ मिलता नहीं ऐसा विचार करके तिसने एक पकडकर तिसके पावमें तागा बांधकर पर्यंकमें तिसको बिठाकर तिसकी पूजा करने लगा । एक दिन बिलारने वहांपर आकर मूसेकी तरफ दौ मूसा तुरंतही भागकर बिलमें घुसगया । उपासकने देखा मूसासे तो बि बली निकली । उसी दिनसे उसने बिलारको बाँधकर चौकीपर बिठाकर ति पूजा करने लगा । एक दिन कूकर एक वहांपर आ निकला और ज्यों बिलारपर झपटा त्योंही बिलार भागी । बिलारको भागते देखकर उस उ जान लिया बिलारसे कूकर बली है। उसी दिनसे वह कूकरकी पूजा करने एक दिन वह कूकर उनके चौकामें चला गया तिसकी स्त्रीने एक लाठी उठाकर तिस कूकरको मारी वह भाग गया । तब तिसने जाना कूकरसे हमारी स्त्री बली है । उसी दिनसे अपनी स्त्रीकी वह पूजा करने लगा । एक दिन किसी वार्तासे तिसको अपनी स्त्रीपर क्रोध आगया लेकर लाठी मारनेको वह दौडा तब स्त्री भागी । उसने मनमें विचार किया सबसे तो मैंही निकला । उसी दिनसे वह अपनी पूजा करने लगा आत्माकी पूजा करते २ तिसके मनका निरोध हो गया उसीसे उसको परमानंदकी होगई । हे चित्तवृत्ते ! जैसे पक्षी दिनभर इधर उधर भ्रमता रहता है, नहीं प्राप्त होता है । जब अपने घोंसलेमें आता है तभी तिसको सुख मि है । तैसे यह जीवभी अपनेसे भिन्न देवतान्तरकी सुखकी प्राप्तिके लिये सना करता है, परंतु इसको सुख नहीं मिलता है । क्योंकि वासनोंको उपासना करता है । जब कि यह निर्वासना होकर अपने आत्माकी उपासनाको करता है, तबभी इसको नित्य सुखकी प्राप्ति होती है किसी प्रकारसेभी नित्यसुखकी प्राप्ति नहीं होती है ॥ २० ॥

हे चित्तवृत्ते! एक और दृष्टांतको सुनो:—

एक पुरुषके तीन लडकेथे तीनोंमेंसे एक तो लूला और लंगडा था । अंधा था तीसरा सर्वांगसंपन्न था । तीनोंमेंसे जो कि लूला और लंगडा वह तो मातापिताकी सेवा किसी प्रकारसेभी नहीं कर सकताथा । क्योंकि

हाथपाँवसे होती है सो हाथ पांव तो तिसके थे, नहीं दूसरा जो अंधा था उसको दिखाताही नहीं था इसलिये वह भी सेवालायक नहीं था। तीसरा जो कि, सर्वांग संपन्न था वही सेवालायक था और वही सेवा करताभी था क्योंकि तिसको सब कुछ दीखताभी था यह तो दृष्टांत है अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं। संसारमें तीन प्रकारके पुरुष हैं, एक तो कृपण और आलसी हैं। दूसरे विषयी हैं। तीसरे उद्यमी और उदार हैं। तीनोंमेंसे जो कि कृपण और आलसी हैं वही लूले और लंगडे हैं। वह तो परमेश्वरकी सेवा किसी प्रकारसेभी नहीं करसक्ते हैं क्योंकि हाथोंसे वह कुछ दानको नहीं करते हैं और पांवसे चलकर किसी सत्संगमें या किसी महात्माके पास वह नहीं जाते हैं। और जो विषयी हैं, वह अंधे है क्योंकि उनको तो परमार्थ दीखताही नहींहै और न उनको परमेश्वर भी दीखताहै। इस लिये वह भी परमेश्वरकी सेवा बंदगी नहीं करसक्ते हैं तीसरे जो उद्यमी और उदारहैं, वही उद्यम करके सत्संगमें जातेहैं, हाथोंसे दान करतेहैं, वही परमेश्वरकी सेवाको करते हैं। वही ज्ञानकेभी अधिकारी कहे जातेहैं, दूसरे नहीं वही अन्तःकरणकी शुद्धि द्वारा ज्ञानको प्राप्त होकर मोक्षकोभी प्राप्त होजातेहैं ॥ २१ ॥

हे चित्तवृत्ते! इसी विषयपर एक और दृष्टांतभी तुमको सुनातेहैं:—

हे चित्तवृत्ते! संसारमें तीन तरहके घोडे होतेहैं, तीनोंमेंसे एक लादवे टट्टू कहलाते हैं, जिनपर कि, हमेशा बोझाही लादा जाताहै। वह तो हमेशा लदतेही रहतेहैं। और इसीमें मर भी जातेहैं। दूसरे रिसालेके घोडे होतेहैं, जो कि, तुरमके आवाजको सुनकर हमेशा कवायद परेटही करते रहतेहैं। वह परेट कवायद करते २ ही मर जातेहैं तीसरे तोपखानेके घोडे होते हैं, वह हजारों तोपोंके गोलोंके चलने परभी अपने कानको नहीं उठाते हैं। क्योंकि उनको इतना विश्वास हो चुकाहै, जो यह तोपें नित्य ही चलती रहती हैं इनके चलनेसे हमारी कुछभी हानि नहींहै। हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांत है, अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं। संसारमें भी तीन प्रकारके पुरुष हैं, एक तो वे हैं जो कि, हमेशाही स्त्री पुत्रादिकोंकी सेवामें रहते हैं कभी भी कहीं सत्संगमें नहीं जाते हैं। वह तो लादवे टट्टू हैं। क्योंकि हमेशा स्त्री पुत्रादिक उनको लादतेही रहते हैं। और वह लदते २ उसीमें मर जाते हैं। दूसरे कर्मी हैं जो कि,

श्रुति स्मृति उक्त कर्मोंके करनेमें ही सदैवकाल लगे रहते हैं । रिसालेके
तरह हमेशा कर्मरूपी कवायदको ही करते रहते हैं । वह कवायद
खतम होजाते हैं । तीसरे ज्ञानी हैं, जो कि अर्थवादरूपी स्वर्गादि
दिखलानेवाले जो वेदादिक हैं उनके वाक्यरूपी गोलोंके चलने परभी
खानेके घोडोंकी तरह कानको नहीं उठाते हैं अर्थात् आत्मविचारको
अनात्मविचारमें नहीं लगते हैं, वही पुरुष परमानंदको प्राप्त होते हैं ॥

हे चित्तवृत्ते ! राजा अपनी सेनाको प्रथम युद्ध करनेकी रीतिको सिखाने
एक मैदानमें अपनी फौजको लेजाकर आधी फौजको पूर्वकी तरफ भेज दे
और आधी फौजको पश्चिमकी तरफ भेज देता है । दोनों फौजें खाली
दके गोलोंको चलाती हुई आपसमें झूठी लडाईको करती हैं । जो
वार्ताको जानते हैं जो यह बारूदके झूंठे गोले चलते हैं इनके चलनेसे
कुछभी हानि नहीं होती है । वह तो दोनों फौजोंके बीचमें घूम
दोनोंका तमाशा देखते हैं । न डरते हैं और न भागते हैं । और
उन गोलोंको सच्चा जानते हैं वे डरतेभी हैं और भागतेभी हैं यह तो
अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं । इस संसाररूपी मैदानमें आसुरी संपद्वाले
दैवी संपद्वाले दो प्रकारके पुरुष हैं । दोनों अपने २ संकल्प विकल्पके
भयानक अर्थवादरूपी झूंठे गोलोंको पडे चलाते हैं । जो कि अज्ञानी
वह तो उन गोलोंके आवाजको सुनकर डरते भी हैं और भागते भी हैं
जो कि ज्ञानवान् हैं, वह उन झूठे गोलोंके आवाजको सुनकर न डरते हैं न
हैं किंतु मैदानमेंही खडे रहते हैं और दोनोंके तमाशेको देखते हैं ॥ २१ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक आदमीको एक पुरुषका सौ रुपैया देनाथा,
माँगे तभी वह कहदे, मेरे पास इदानीं कालमें रुपैया नही है, जब
होगा तभी मैं देऊंगा । एक दिन उसके लेनदारने तिसको पकड
लिया, तब भी उसने तिसको रुपैया न दिया और कहा मेरे पास
और रुपैया उसके घरमें रखा था, परंतु देता नहीं था । तब तिस
कहा यदि तुम सौ गठा प्याजका खा जाओ तब हम तुमको रुपैया छोड
उसने सौ गठा खानेको मंजूर किया । जब खाने लगा तब तिससे नहीं
किंतु दस बीस खाकरकेही रह गया । तिससे और नहीं खाये

तव उसने कहा अच्छा तुम सौ लाल मिरचाको खालेवो तो हम तुमको रुपैया छोड देवेंगे। उसने मंजूर किया जव कि मिरचाको वह खाने लगा तब तिससे सौ मिरचा खाये न गए किंतु दस पांच ही खाकर रह गया फिर तिसने कहा तुम सौ जूताकी मार सह लेवो हम तुमको रुपैया छोड देवेंगे। उसने मंजूर किया जब कि दस पांचही जूता लगे तभी चिल्लाने लगा सौ जूता भी तिससे नहीं सहागया आखिर हारकर तिसको रुपया देनाही पडा। गठे, मिरचे, जूते तब तिसने मुफ्तमें खाये ॥

हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांत है अब इसको दार्ष्टांतमें वटातेहैं अज्ञानी मूर्ख संसारके दुःखों करके दुःखित होकरके जब कि आत्मवित् किसी महात्माके पास उपदेशके लिये जाताहै महात्मा यदि प्रथमहीं तिसको कह दे तूं ब्रह्महै तव वह किसी प्रकारसेभी नहीं मानता है, जव कि प्रथम तिससे अनेक देवतोंकी उपासना कराता है फिर अनेक प्रकारके व्रतोंको करवाता है, फिर अनेक तीर्थोंमें तिसको फिराताहै यही सब गठे स्थानापन्न तिसको खाने पडतेहैं जब कि सब कुछ करके हार जाता है तब अंतमें महात्माकी कही हुई वातको मानता है। तात्पर्य यह है प्रथम मूर्ख सच्चे उपदेशको नहीं मानता है जब कि इधर उधर भटककर हार जाता है, तब शास्त्रके जूतोंको खाकर इसको माननाही पडता है जो मैं ही ब्रह्महूं तब यह शान्तिको प्राप्त होताहै और इधर उधरकी भटकनासे छूटताहै ॥ २४ ॥

हे चित्तवृत्ते! एक और दृष्टांतको तुम सुनोः—

एक पुरुषका चित्त संसारसे जब बहुत उपराम हुवा तब तिसने अपनी स्त्रीसे कहा हमारा चित्त गृहस्थाश्रममें नहीं लगता है हम अब संन्यासाश्रमको अंगीकार करेंगे और गृहस्थाश्रमका त्याग करदेवेंगे स्त्रीने तिसको बहुतसा मनाकिया परंतु तिसने नहीं माना, जाकर एक महात्मासे कहा हमको उपदेश कीजिये, महात्माने उत्तम अधिकारी जानकर तिसको महावाक्यका उपदेश करके अपना चेला बना लिया तिसने मनमें विचार किया, महात्माने जो हमको उपदेश किया है इसमें तो कुछभी देर नहीं लगीहै- क्योंकि जरासी बात इन्होंने बता दी है न मालूम वेदोंमें क्या लिखाहै। चलकर किसी पंडितके पास थोडे कालतक पढना चाहिये मनमें ऐसा विचार करके वह एक पंडितके पास पढनेके लिये

गया और पंडितसे कहा हमको भी कुछ पढाया करिये पंडितने कहा हम
जितने कि विद्यार्थी पढतेहैं एक २ काम हमारा सब विद्यार्थी करतेहैं आपभी
एक काम किया करें और विद्या पढाकरें। तिसने भी मंजूर कर लिया और
कहा आप हमको जो काम बतादें हम उसको नित्य किया करेंगे। पंडितने
हमारी गैयाका कोई गोबर पाथने वाला नहीं है आप हमारी गैयाका गोबर
पाथ दिया कीजिये । उसने मंजूर करलिया । नित्यही पंडितजीकी गैयाका
वह पाथाकरे और विद्या पढा करे क्रमसे वह पढने लगा । प्रथम व्याकरण,
न्याय, फिर सांख्य, फिर योग, फिर मीमांसाको तिसने पढा इतनेमें बारहबरस
होगये जब वेदांतको उसने पढा तब सब वेदोंका सारभूत वही बात आई
कि, गुरूने प्रथमही तिसके प्रति बता दियाथा । तब तिसने कहा बारह
सारभूत निकली जिसको कि, गुरूने मेरेको पहले ही बता दियाथा
हमने बारहबरस मुफ्तमें पाथा । इसीपर एक महात्माने भी कहाहैः—

**श्लोकार्द्धे च प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।**
**ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव केवलम् ॥ १**

अर्द्ध श्लोकमें हम उस वार्ताको कहतेहैं जो वार्ता कि, करोडों ग्रन्थोंमें
ब्रह्म सत्यहै और जगत् मिथ्या है और जीव जो है सोई केवल ब्रह्मरूपहै।

हे चित्तवृत्ते ! उत्तम अधिकारीके लिये तो एक वाक्यही अलं है,
अधिकारीके वास्ते सब शास्त्र बनेहैं । कनिष्ठ अधिकारीके प्रति शास्त्रकी
नहीं चलतीहै ॥ २९ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांतको तुम सुनोः—

एक किसान अपने पकेहुए खेतको बहुतसे मजदूरोंसे कटवा रहाथा
कि, थोडासा दिन बाकी रहगया, तब किसानने मजदूरोंसे कहा जल्दी २
ऐसा नहो कि, संध्या होजाय । जितना डर हमको संध्याका है इतना
सिंहका भी नहीं है । एक अनाजके खेतमें सिंह बैठा हुवा किसानकी
सुन रहाथा सिंहने जाना संध्या कोई हमसे भी बली जानवर है जो
हमारा डर तो नही मानताहै और संध्याका डर मानताहै । इतनेमें दिन
होगया किसान और मजदूरे सब अपने २ घरोंके चले गये । उसी
धोबीका गधा उस दिन कही भाग गया था, अंधेरी रात्रिमें धोबी गधेको

हुआ जब कि, तिसखेतमें आया जहाँपर सिंह बैठाथा उसने जाना यह हमारा गधाहीं छिपकर खेतमें बैठा है दो लाठी धोबीने सिंहकी कमरमें दी और गळेमें रस्सी बांधकर आगे धर लिया सिंहने जाना यह वही संध्या आगई है, जिसका जिकर किसान दिनमें कररहाथा सिंह धोबीके साथ २ चल पडा सिंहने जाना यदि बोलूंगा तब दो लाठी और कमरमें लगावेगा धोबीने घरमें लेजाकर तिसको खूटेके साथ बांधदिया जब एक पहर रात्रि बाकी रही तब धोबीने सिंहपर दो चार लादीको लाददिया और नदीकी तरफ चलपडा आगे रास्तामें एक सिंह खडाथा उसने देखा यह सिंह होकर धोबीकी लादियोंको उठाये हुवे चला आता है, इसमें क्या कारण है ? भला सिंहसे पूंछे तो तुम इसके बोझा ढोने वाले क्यों बनेहो ? सिंहने उस लदेहुए सिंहसे पूंछा तुम धोबीके गधे क्यों बनेहो उसने कहा बोलो मत यह संध्या बडी बलवान् है हमको अपना गधा इसने बनालियाहै, यदि तुम बोलोगे तो संध्या पीछे २ चली आती है तुमकोभी पकडकर यह अपना गधा बनालेगी तुम जल्दी यहांसे भागजावो । तिस सिंहने कहा अरे तू बडा मूर्खहै संध्या कौन चीज है ? अंधेरेका नाम संध्या है संध्या कोई तुमसे बली जानवर नहीं है, तुम्हारे संकल्पका रचाहुवा वह जानवर है । तुम इस संकल्पको दूर करके अपने स्वरूपका स्मरण करो । तुम तो सिंहहो ये तो सब तुम्हारे खाद्य हैं, तुम्हारे आवाजको सुनकर ये सब भागजायँगे । सिंहको तिसके कहनेसे अपने स्वरूपका स्मरण हो आया ज्योंही लादीको फेंक कर वह गरजा त्योंहीं धोबी घरकी तरफ भागा और सिंह वनमें चला गया । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै अब दार्ष्टांतमें इसको घटातेहैं । यह जीव तो वास्तवमें सिंह था कर्मीरूपी किसानके भयानक वचनरूपी संध्याको सुनकर अज्ञानरूपी धोबीका यह गधा बनकर कर्मरूपी लादीको ढोने लगा जब कि सिंहरूपी आत्मवित् गुरूने इसको उपदेश किया तुम गधे नहींहो किंतु सिंहहो अर्थात् तुम पुण्य पापके कर्ता भोक्ता नहींहो, किंतु असंग, चैतन्यस्वरूपहो, तभी अपने स्वरूपका इसको स्फुरण होआताहै और बंधनसे रहित होजाता है ॥ २६ ॥

चित्तवृत्ति कहतीहै, हे भ्राता ! जीव ईश्वरकी उपाधियोंके त्यागमें कोई दृष्टांत तुमने नहीं कहा है, सो कहना चाहिये । विवेकाश्रम कहतेहैं । हे चित्तवृत्ते ! अब हम तुमको उपाधियोंके त्याग करनेमें दृष्टांतको सुनातेहैं:—

हे चित्तवृत्ते ! किसी ग्राममें दो भाई वनियां एक मकानमें रहते थे दोनों भाइयोंकी स्त्रियें वडी लडाकीं थीं, जिस कालमें वे दोनों भाई अपने आते थे उसी कालमें वह दोनों स्त्रियें परस्पर लडाईको शुरू कर देतीं दोनों भाईयोंकी आपसमें फूटकोही वनाये रखतीथीं, किसी प्रकारसेभी त परस्पर मिलने नहीं देतीथीं नित्यही कलह करतीं थीं। दोनों भाईयोंने ए विचार करके दोनों स्त्रियोंको घरसे निकाल दिया तब दोनों भाई परस्प होगये और नित्यकी कलह भी दूर होगई। यह तो दृष्टांतहै अब दार्ष्टांतमें ह सुनो। जीव ईश्वर दोनों सगे भाई हैं जीवकी स्त्री अविद्या है ईश्वरकी स्त्री है वह दोनों परस्पर नित्यही लडती रहतीहैं। इसीसे दोनोंका मेल परस्प होताहै जब कि, अविद्या मायारूपी स्त्रियोंका त्याग करदिया जाता है। दोनों परस्पर मिलजाते हैं अर्थात् दोनोंकी एकता होजातीहै ॥ २७ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयपर एक और दृष्टांत तुमको सुनातेहैं:—

प्रयागराज तीर्थमें बाप और बेटा दोनों स्नान करनेके लिये गये जब दोनों स्नान करचुके, तब बेटा वहां पर गंगाजीकी वालुकासे खेलनेलगा बेटेने गंगाजीकी वालुका एक किला बनाया बाप कितनाही बेटेसे घर लिये कहताथा, परंतु बेटाने बापकी वार्ताको ख्यालही न किया ऐसे खेलमें लगा जो बापकी तरफ देखे भी नहीं। तब बापभी लगे खेलने, याने बेटेसे भी अधिक एक वडे भारी रेतीका किला बनाया। बेटेने देखा बाप हमसे भी भारी किला बनाया है, तुरंतही बेटेने बापके किलेको गिरादिया बेटेके किलेको गिरा दिया दोनों परस्पर मिल करके अपने घरको चले यह तो दृष्टांतहै अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं। जीव बेटा है, ईश्वर, बा ईश्वर वेदवाक्यों करके जीवको अपने घरमें जानेके लिये बार २ उपदेश कर परंतु जीव अपने खेलमें ऐसा लगाहै, जो बापके उपदेशको नहीं सुनताहै, अपने संकल्पका एक किला बनाया है, वह किला इस तरहका है कि, मेरी स्त्री है, यह मेरे पुत्र हैं, यह मेरा धन है, यह मंदिर है, इस का आज मैंने करलियाहै, इसको कल करूंगा, ऐसे दृढ किलोंको बनाताही जाता है और ईश्वररूपी पिताकी वार्ताको नहीं सुनता है। जब ईश्वर पिताने देखा कि जीवरूपी पुत्र तो इसतरहसे मेरी वार्ताको नहीं मानता

तबतक हम भी इसीकी तरह एक संकल्पके किलेको बनावेंगे । तब ईश्वरने भी कर्म उपासनारूपी एक भारी किलेको बनाया । जीवने देखा बापने तो मेरे किलेसे भी अपना बडा किला बनाया है । तब जीवने ईश्वरके बनाये हुए किलेको तोड दिया याने मिथ्या करदिया तब ईश्वरने जीवके बनाये हुए किलेको भी श्रुतिवाक्यों करके मिथ्या कर दिया । तब दोनों जीव और ईश्वर अपने शुद्धस्वरूपरूपी घरमें स्थित होगये अर्थात् दोनों एकही होगये ॥ २८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयपर एक और भी लौकिक दृष्टांत तुमको सुनाते हैं:—

किसी नगरमें एक बनियाँ बडा गरीब रहताथा, उसके एक लडका पैदा हुवा । जब कि, वह लडका एक सालका हुवा तब वह बनियाँ गरीबीके दुःखके मारे विदेशमें कमानेके लिये चला गया । घूमता फिरता वह काशीजीमें जा निकला । वहांपर जातेही तिसका रोजगार जम गया और जब कि तिसको काशीजीमें रहते दश या बारह बरस बीतगये तब तिसके पास बहुतसा धन जमा होगया । एक दिन तिसके मनमें आया इस धनमेंसे कुछ धन शुभ मार्गमें लगाना चाहिये । उसने ऐसा विचार करके एक मंदिरका बनाना शुरू कर दिया और इधर पीछे तिसका लडका भी सयाना होगया । उसने अपनी मातासे पूँछा पिता हमारे कहाँपर गये हैं ? माताने तिसको सब हाल पूर्वकाला कह सुनाया लडकेने मातासे कहा चलो उनको खोजें । माताकी भी सलाह होगई, वह दोनों मां बेटा विदेशमें निकल पडे । खोजते २ वह काशीमें जा पहुँचे । एक मकानमें डेरा लगाकर लडकेने मातासे कहा हम मजदूरी करनेको जाते हैं, कुछ कमा लावेंगे तब रात्रिको भोजन बनेगा माताकी आज्ञाको लेकर लड़का मजदूरी करनेको निकला, जहांपर बनियाँका मंदिर बनताथा, वहां पर जाकर वह लडका भी मजदूरोंमें काम करने लगा । बनियाँ जब कि, मंदिर देखनेको आया तब उसने उस लडकेको नया जानकर पूँछा तुम्हारा मकान कहाँपर है ? और तुम कौन जातिहो ? और कैसे तुम यहाँपर काम करनेको आये हो ? लडकेने शुरूसे अखीरतक सब अपना हाल बनियाँको कह सुनाया, तब बनियाँने जानलिया यह तो मेराही लडकाहै, उसकी मांको बुलाकर घरके भीतर भेज दिया और लडकेको स्नान कराकर सुंदर वस्त्रोंको पहराकर अपनी गद्दीपर बैठाकर अपना सब धन तिसको सौंप दिया । बाप बेटा दोनों मिलक

बडे आनंदसे रहने लगे। हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांत है, अब तुम दार्ष्टांतमें सुनो। यह जीवरूपी पुत्र जब कि महान् प्रयत्नको करके पिताकी खोज करता है, तब अवश्यही अपने पितासे जा मिलता है पिता भी तब इसको अपना सब धन देदेता है। तात्पर्य यह है इस काशीपुरीके भीतर पितारूपी परमेश्वर रहता है, जबतक जीव बाहर खोजताहै, तबतक पितासे नहीं मिलता है जब इस कायारूपी पुरीके खोजता है, तब अपने पितासे जा मिलता है। और पिता भी अपना सब धनरूपी जो कि महान् सुख है अर्थात् मोक्षरूपी नित्य सु जीवके प्रति देदेता है ॥ २९ ॥

हे चित्तवृत्त ! इसी विषयमें एक और दृष्टांतको तुम सुनोः—

एक अंधा और दूसरा आँखवाला दोनों मिलकर रास्तामें चले जा दैव योगसे पूर्वकी तरफसे आँधी उठी और ऐसा गरदा उडने लगा जो पकी वस्तु भी नहीं दीखती थी उन दोनोंकी आँखमें मट्टी भरगई। देरमें जब कि, आँधी हटगई, तब दोनोंने आंखोंको झाड दिया अर्थात् मट्टीको निकाल दिया तब आँख वालेको तो दीखने लग गया; परंतु मट्टीके निकालने पर भी न दिखाई दिया। हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृ अब दार्ष्टांतमें इसको सुनो।

ज्ञानी तो आँखवाला है क्योंकि तिसको सर्वत्र एकही आत्मा दी है; और अज्ञानी अंधा है, क्योंकि तिसको सर्वत्र आत्मा नहीं दीखता है किंतु करके परिच्छिन्न आत्माको वह जानताहै. इसीसे वह अंधा है। जब कि क्रो आँधी आतीहै तब दोनोंकी आँखोंमें अविचाररूपी मट्टी तिस कालमें भ है क्रोधरूपी आँधीके हटजानेके पीछे ज्ञानी तो विचारके बलसे अविच मट्टीको तुरंतही निकाल देता है। उसको तो फिर उसी तरह सर्वत्र आत्मा दिखाई पडने लग जाता है। इसीसे तिसका रागद्वेष फिर किसी नहीं रहता है और अज्ञानीको क्रोधरूपी आँधीके हटजानेपर भी सर्वत्र नहीं दिखता है क्योंकि विचाररूपी तिसकी आँखे नहीं हैं, इस लिये आँखोंमें अविचाररूपी मट्टी कुछ न कुछ रहही जाती है, इतनाही ज्ञानी का फरक है। ज्ञानवानूको क्रोधादिक पानीपर लीक हैं, अज्ञानीके

ठीक हैं, इसीसे ज्ञानवान् सदैवकाल आनन्दमें रहता है । अज्ञानी दुःखमें रहता है ॥ ३० ॥

चित्तवृत्ति कहती है, हे विवेकाश्रम ! आपने पीछे कहा है कि, ज्ञानवान् अपनेको अकर्ता, अभोक्ता मानता है और ज्ञानहीन अपनेको कर्ता, भोक्ता मानता है, ऐसा तो संसारमें देखनेमें नहीं आता हैं । क्यों कि विनाकर्त्ता भोक्ता माननेसे व्यवहार चलही नहीं सक्ता है, तब फिर व्यवहारको करनेवाला ज्ञानी अकर्त्ता कैसे हो सक्ता है ?

विवेकाश्रम चित्तवृत्तिके प्रति कहते हैं, व्यवहारको कर्त्ता हुवा भी ज्ञानवान् अकर्ता ही होता है; क्योंकि वह अपनी खुशीसे नहीं करता है । इसमें एक दृष्टांतको कहते हैं:—

एक राजा अपने मंत्रीको साथ लेकर वनमें शिकारको गया, शिकार खेलते २ राजाको प्यास लगी तब राजाने मंत्रीसे कहा कहींसे पानीको मँगावो । मंत्रीने इधर उधर देखा तो ग्रामकी तरफसे एक आदमी चला आता था, उस आदमीसे मंत्रीने लोटा देकर कहा जल्दी पानी लेआवो वह लोटा लेकर ग्रामकी तरफ पानी लेनेको जब चला, वजीरको जंगलकी तरफ दो-पहरकी धूपसे रेता चमकता दीखता था, उसने जाना यह पानीकी नदी चल रही है, वजीरने उससे कहा वो सामने पानी दीखता है तुम दूसरी तरफ क्यों जाते हो? उसने कहा यह पानी नहीं है; पानीका कुवा ग्राममें है; हम ग्रामसे पानीको लाते हैं । वजीरने कहा तुम झूठँ बोलते हो हमको पानी दीखता है, तुम हमको धोखा देकर भागना चाहते हो । ऐसा कहकर वजीरने चार पांच कोडे तिसको लगा दिये तब वह उधरकोही चला; जिधरको मृगतृष्णाका जल तिसको दीखता था उसने विचार किया यदि नहीं जाऊंगा तो चार कोडे और लगावेगा । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहे । अब दार्ष्टांतमें इसको सुनिये । ज्ञानवान्ने संसारके भोगोंको मृगतृष्णाके तुल्य जानकर त्यागदिया है और उनकी तरफ नहीं भी जाता है, तबभी प्रारब्धरूपी कोडा तिसको उधर भोगोंकी तरफही भेजता है, न जाय तो और कोडे लगाते हैं । तात्पर्य यह है ज्ञानवान्को भोगोंकी इच्छा नहीं भी है, तब भी प्रारब्धरूपी कर्म जबरदस्ती इसको भोगोंको भुगाताहै और

प्रारब्धनेही इसके शरीरको बना रक्खाहे, वास्तवसे इसकी दृष्टिमें शरीरमें किंतु ज्ञानवान्के शरीरका योगक्षेमभी प्रारब्ध कर्महीं करता है॥ ३१॥

चित्तवृत्ति कहती है, हे विवेकाश्रम ! आपने कहा है जीवात्मा औ त्मामें भेद नहीं है, किंतु दोनों एकही हैं, तब फिर ईश्वरमें जो सर्व गुण हैं, वह जीवमें क्यों नहींहैं ? आत्मा तो दोनोंमें एकहीहै। वि कहतेहैं, हे चित्तवृते ! इसमेंभी हम तुमको एक दृष्टांत सुनाकर विरोधको दिखातेहैं:—

किसी नगरके बाहर एक महात्मा जंगलमें रहतेथे एक दिन एक जाकर उनसे यही सवाल किया कि आप लोक कहतेहैं, जीवात्मा और ईश्वरा भेद नहीं हैं, किंतु दोनोंमें एकही आत्मा है। तब फिर ईश्वरात्मामें जो कि तादिक गुण हैं वे जीवात्मामें क्यों नहीं हैं ? महात्माने कहा हमको प्यास है, और गंगाजलको ही हम पीते हैं और गंगाजी हमारी कुटीसे दूर दो कोसके फासले पर हैं। प्रथम तुम जाकर हमारी तूंबडीमें गंगाजलको गं भरलावो मगर गंगाजलकोही लाना कूपके जलको न लाना जब कि हम जलको पानकर लेवेंगे, तब फिर तुम्हारे प्रश्नका उत्तर देवेंगे वह म तूँबडी लेकर गंगाजीसे भरलाया और महात्माके आगे तिसने तूँबडीको ध और महात्मासे कहा लीजिये गंगाजलको मैं लाया हूं महात्मा तूँबडीके देखकर कहने लगे यह तो गंगाजल नहीं है, उसने कहा महाराज ! यह गं हीहै महात्माने कहा हम कैसे विश्वास करलें ? जो यह गंगा जलही है कसमें खाने लगा कि, यह गंगा जलहीहै। महात्माने कहा तुम तो सब हो परंतु गंगाजीमें तो पचासों नावें चलती हैं हजारों मछलियें लाखों मनुष्य तिसमें स्नान करते रहतेहैं, सैकडों पर्वत और वृ नगर और ग्राम तिसके किनारेपर रहते हैं, उनमेंसे तो इसमें ए नहीं दीखताहै, तब हम कैसे जानलें कि, यह गंगा जलहीहै। उस महाराज ! यह बडा भारी गंगाजीका प्रवाहहै, जिसके किनारेपर नगर और पर्वतादिकहैं, यह थोडासा उसी प्रवाहका हिस्सा है, इसमें वह स रहसक्तेहैं ? सारांश यह है कि, गंगा जल होनेमें तो कोई भी संदेह नहीं है। कि, जो माधुर्यता उसमें है, सोई इसमें भी है। महात्माने कहा इसी

जीवात्मा और ईश्वरात्मामें भी घटाले। जीवात्माकी उपाधि जो अंतःकरणहै. वह छोटीसी उपाधिहै, ईश्वरात्माकी उपाधि जो माया है वह सारे ब्रह्मांडमें फैली हुई है। इसी वास्ते ईश्वरात्मामें सर्वज्ञतादिक धर्म रहते हैं, जीवात्मामें नहीं रहते-हैं। परंतु सुखरूपता दोनोंमें बराबरही है और नित्यत्व चेतनत्वादिकभी धर्म दोनोंमें बराबरही हैं। इसीसे सिद्ध होताहै कि, जीवात्मा और ईश्वरात्माका बेलकुल भेद नहीं है॥ ३२॥

चित्तवृत्ति कहती है, ईश्वरात्मा और जीवात्मा यदि दोनों विद्यमानहैं, तब न नेत्रोंसे क्यों नहीं दीखते हैं, जो वस्तु नेत्रोंसे नहीं दीखतीहै, उसकी सत्यता में क्या प्रमाण है? विवेकाश्रम कहते हैं, हम एक दृष्टांतको देकर इस वार्ताके उत्तरको कहतेहैं:—

हे चित्तवृत्ते! किसी नगरके बाहर बनमें एक महात्मा रहतेथे उनके पास जाकर एक मूर्ख पुरुषने इसी प्रश्नको किया। तब महात्माने उसको शास्त्रके वाक्यों और युक्तियोंसे बहुत समझाया, तब भी वह मूर्ख न समझा और उसने हठ किया हमको इन नेत्रोंसे दोनोंको दिखला देवो। महात्माने एक मट्टीके ढेलेको उठाकर तिसके शिरमें मारा तिसका शिर फटगया और वह रोता रोता राजाके पास फिर-यादी गया और राजासे तिसने जाकर कहा मैंने फलाने महात्मासे ऐसा सवाल किया और उन्होंने जवाबके बदलेमें मेरा शिर फोड दिया, अब मेरेको ऐसा दर्द होताहै जो दर्दके मारे मेरे प्राण निकले जाते हैं। राजाने सिपाहीको भेजकर उन महात्माको बुलाया और कहा आपने इसका शिर क्यों फोड दिया है? महात्माने कहा हमने इसके सवालका जवाब दियाहै ये जो आपके पास फिरयादी आयाहै सो क्यों आया है? उसने कहा इसके शिरमें दर्द होता है तिसीसे यह फिरयादी आयाहै। महात्माने कहा जैसे दर्द होताहै और दिखाता नहीं है, तैसे जीवात्मा और ईश्वरात्मा विद्यमान हैं परंतु दिखते नहीं हैं। हमको यह अपने दर्दको नेत्रोंसे देखादे तब हमभी इसके प्रति आत्माको नेत्रोंसे दिखा देवेंगे। जैसे दर्द है भी और नेत्रों करके नहीं दीखता है तैसे आत्मा भी है और नेत्रों करके नहीं दीखता है। राजाने कहा ठीक है महात्मा अपने आसनपर चले आये, हे चित्तवृत्ते! यही तुम्हारे प्रश्नकाभी उत्तर है॥ ३३॥

चित्तवृत्ती कहती है । हे भ्राता ! जो लोक वैराग्यपूर्वक गृहस्थाश्रम करके संन्यासाश्रममें हो जाते हैं, वे पहले घरके प्रपंचको त्याग कर संन्यासाश्रममें जाकर उससे भी अधिक प्रपंचको क्यों फैलातेहैं ? इसका क्या है ? विवेकाश्रम कहतेहैं उनको पहले मंद वैराग्य हुवा था । मंद वैराग्य कालतक रहताहै फिर नष्ट होजाता है । जब कि, स्त्रीको लडका होने लगता है, तब उस कालमें उसको वडा क्लेश होताहै तिसकालमें वह कि, फिर पतिके पास नहीं जाऊँगी । जब कि, कुछ दिन बीत जाते हैं दुःख भूल जातीहै फिर वह पतिके पास जातीहै ।

इसीप्रकार जब किसी पुरुषको किसी तरहका घरकार्य्योंसे या धनादि नष्ट होजानेसे दुःख प्राप्त होताहै, तब वह गृहस्थाश्रमको किसी मंद वैराग्य देताहै । कुछ दिन बीते जब कि, दुःख भूल जाताहै और धनादिकोंकी प्राप्ति होने लगती है, तब वह संन्यासाश्रममें ही फिर मठादिकोंको बांधकर श्रम बना लेता है । क्योंकि, तिसका वह मंद वैराग्यभी जाता रहता वैष्णवको मांससे वडा तिरस्कार रहता है कभी स्वप्नमें भी तिसका मन तरफ नहीं जाताहै, ऐसा जब कि, स्त्री धनादिकोंसे जिसको वैराग्य हुवा वह फिर त्यागे हुए प्रपंचकी रचनाको नहीं करता है, इसीमें एक कहते हैं:—

हे चित्तवृत्ते ! ईरान देशमें किसान लोक घोडोंको पालतेहैं, यानें सौ पांच २ सौ घोडियोंके गोलोंको वह रखते हैं । जब कि, वह बच्चोंको उत्पन्न करतीहैं, तब वह किसान लोक जंगलमें एक किलेको गिरदे तिसके तीन खाइयोंको खोददेते हैं, उस किलेमें नये उत्पन्न घोडियोंके बच्चोंको रखकर भीतर जानेके रास्ताको भी बंद कर देते ऊपरके रास्तासे बच्चोंको मसाला वगैरह खिलाकर पालते हैं और उस तिस किलेके समीप किसी प्रकारके शब्दको भी वह नहीं होने देते हैं जब बच्चे एक सालके होजाते हैं; तब एक दिन वे किसान लोग एक ले जाकर तिस किलेके समीप चलाते हैं, तिस तोपके आवाजको कर वह घोडियोंके बच्चे कूदने लगते हैं, कोई तो तीनों खाइयोंको कर जंगलको दौड जाते है, कोई दो खाइयोंको फाँदकर तीसरी

जाते हैं, कोई एक खाईको कूदकर दूसरीमें फँस जाते हैं, कोई एकमें ही गिरकर फँस जाते हैं, कोई उसी जगहमें फड़ाफडाकर रहजाते हैं। हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांत है, इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं। गृहस्थाश्रमरूपी एक किला है तिसमें जीवरूपी घोडियोंके बचे सब फँसे हैं, जिसकालमें कोई विरक्त महात्मा आकर वैराग्यरूपी तोपको चलाता है, तिस कालमें जो कि, तीव्रतर वैराग्यवान् होते हैं, वे तीनों खाइयोंको कूदकर निकल जाते हैं। प्रथम खाई तो स्त्री पुत्रादिकोंका मोहरूपहै, दूसरी खाई वर्णाभिमान है, तीसरी खाई आश्रमाभिमान है। सो तीव्रतर वैराग्यवाले इन तीनों खाइयोंको कूद जाते-हैं अर्थात् स्त्रीपुत्रादिकोंमें मोहको त्यागकर फिर वर्णाश्रमके अभिमानको त्यागकर जीवन्मुक्त होकर विचरते हैं, वे फिर दूसरे प्रपंचकी रचना किसी प्रकारसे भी नहीं करते हैं और जिनको तीव्र वैराग्य होता है, वे प्रथमकी दो खाइयोंको कूदकर तीसरी आश्रम अभिमानरूपी खाईमें फँस जाते हैं। हम संन्यासी हैं, हम दण्डी हैं, सबसे उत्तम हैं, हमारे तुल्य दूसरा कौन है, वह मोक्षके अधिकारी नहीं होते हैं। क्योंकि, उनका मिथ्या आश्रममें अभिमान बना है और मंद वैराग्यवान् प्रथमवाली खाईको कूदकर अर्थात् स्त्री पुत्रादिकोंमें मोहको त्याग करके दूसरी वर्णाभिमानरूपी जो खाई है, चेले मठादिक तिनमें फँस जाते हैं वह भी मोक्षके और ज्ञानके अधिकारी नहीं होते हैं। क्योंकि एक गृहस्थाश्रमरूपी खाईसे निकल दूसरी खाईमें अर्थात् नये प्रपंचकी रचनाको करने लग जाते हैं और जो अतिमंद वैराग्यवान् हैं, वे घरको छोडकर ग्रामके बाहर रहकर संत नाम अपना धरकर सुपेद वस्त्रोंको और शिखा सूत्रको भी रखकर कथा वार्ता बाँचकर अपने घरकी और अपनी पालनाको करते हैं वह भी ज्ञानके अधिकारी नहीं हैं। क्योंकि उनका दाम्भिक व्यवहार है, इस प्रकारके मनुष्य पंचाल देशमें बहुत हैं और चौथे महामूढ पुरुष हैं, जो कि, वैराग्यकी बातोंको सुन घडी दो घडी वाहें वाहें हाय २ करके रहजाते हैं, उनसे तो वैराग्य दूर भाग जाता है॥ २४॥

चित्तवृत्ती कहती है, हे विवेकाश्रम! समुच्चयवादी कहता है कर्म और ज्ञान दोनोंको इकट्ठा करनेसे मुक्ति होती है और वेदांती कहता है केवल ज्ञानसे ही मुक्ति होती है सो दोनोंमेंसे किसका कथन ठीक है? विवेकाश्रम कहते हैं हे

चित्तवृत्ते ! कर्म और ज्ञानका समुच्चय नहीं होसक्ताहै । जिसको ऐसा
मान है, मैं इस कर्मका कर्ताहूं, मैं इस कर्मको करके इसके फलको
इसी पुरुषका कर्मोंमें अधिकार है और जिस पुरुषको ऐसा अभिमान
किंतु जिस पुरुषकी ऐसी बुद्धि है, न हम कर्मके कर्ता हैं न हम तिसके
भोक्ता हैं, किंतु हम असंग सच्चिदानंद स्वरूप हैं, उसी पुरुषका
मोक्षमें अधिकार है। दोनों विरोधी एक जगहमें नहीं रहसक्ते हैं । इसमें
दृष्टांत तुमको हम सुनाते हैं:–

एक जाटकी दो लडकी थीं, एक लडकीकी शादी किसानके साथ हुई
और दूसरी लडकीकी शादी कुम्हारके साथ हुई थी । जब कि, लडकि
शादीको हुए बहुत दिन गुजर गये, तब एक दिन जाटसे स्त्रीने कहा
दिन हुए लडकियोंका कोई खत पत्र नहीं आया तुम जाकर उनके
मंगलकी खबर लावो। जाट घरसे निकलकर उस ग्राममें गया, जहां
दोनों लडकियें विवाही गई थीं। पहले वह किसानके घरमें जाकर
मिला और हाल चाल पूँछा, लडकीने कहा बापू खेतमें बीज फेंका
बादल भी मिला है। यदि वर्षा न हुई तब तो हम उजड जायँगे ।
धानका बीज सब जलजायगा और जो वर्षा हो जायगी तब तो हम
जायेंगे। फिर दूसरी कुम्हारके घरवाली लडकीके पास गया और
पूँछा बची सुख सांदकी खबर कहो। उसने कहा बापू और तो सब
हमने बर्तनोंका आवाँ लगाया है और आजही तिसको आग दीहै,
हमने आवाँको आग दीहै, उधरसे बादल मिलकर आया है यदि
जायगी तब तो हम उजड जाँयगे क्योंकि कच्चे बर्तन सब गलजायँगे
वर्षा नहीं होगी तब तो हम बस जाँयगे, क्योंकि बर्तन हमारे सब पक
जाट दोनों लडकियोंके हालको पूँछकर जब अपने घरमें आया
स्त्रीने जाटसे पूँछा लडकियोंके हालको सुनाओ जाटने कहा
किसान उजडेगा या कुम्हार उजडेगा । दोनोंमेंसे एक तो
उजडेगा यही सब हाल कह सुनाया । हे चित्तवृत्ते ! यह तो
अब इसको दार्ष्टांतमें घटातेहैं, अंतःकरणरूपी जाट है, तिसकी जो
कर्तृत्व अकर्तृत्व वही तिसकी दो लडकियें हैं। यदि ब्रह्माकार वृत्ति उत्पन्न

यगी तब कर्तृत्व भोक्तृत्वरूप वृत्ति उजड जायगी और जो दूसरी अहमाकार कर्तृत्व भोक्तृत्वरूप वृत्ति उत्पन्न होजायगी तब तो ब्रह्माकार वाली नहीं होगी दोनों वृत्तियें परस्पर विरोधी हैं । इसलिये दोनोंमें एकही होगी. दूसरी नहीं होगी, तब समुच्चय कैसे होसक्ताहे ? किंतु कदापि नहीं होसक्ता है । हे चित्त-वृत्ति ! जैसे कोई अनजान बालक नशा खानेवालेकी संगतसे नशा खाने लगजाता है और जब पूरा नशावाज होजाता है, तब दुःखको उठाता है, फिर जब कि तिसको किसी अच्छेकी संगत होजातीहै, तब वह नशेको छोडकर अच्छा बनकर दुःखसे छूटजाता है तैसे. आत्माभी निर्धर्मिक है । जैसी संगत इस जीवको होजाती है वैसाही यह अपनेको मानने लगजाता है. भेदवादीकी संगत होनेसे भेदवादी अभेदवादीकी संगत होनेसे अभेदवादी होजाता है आत्मा असंगहै, सब धर्म आत्मामें कल्पितहैं आत्मा नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वरूप है ॥ ३९ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और लौकिक दृष्टांतको तुम सुनोः—

एक लडका सात आठ वरसका अपने महल्लामें खेलताथा अपने खेलमेंही वह लडका चिल्लाने लगा, उस महल्लामें मकान वहुत ऊंचे २ थे उसका आवाज टक्कर खाकर गूँज उठा तब आगेसेभी चिल्लानेका प्रतिध्वनि रूप शब्द हुवा लडकेने जाना कोई मेरी नकल करताहै लडकेने पूंछा तू कौनहै आगेसे भी शब्द हुवा तू कौनहै लडकेने कहा मैं तुमको मारूंगा उधरसेभी अवाज आई मैं तुमको मारूंगा लडकेने तिसको गाली दी, आगेसे भी गालीकी आवाज आई, तब लडकेने अपनी मातासे जाकर कहा कोई आदमी मेरेको चिढाता है, परंतु दिखाई नहीं देता है । माताने कहा वेटा दूसरे महल्लामें इसवक्त कोई भी तुमको चिढानेवाला नहीं है। जब कि, तुम आवाज करतेहो तब तुम्हाराही आवाज टक्कर खाकर गूँजता है । तुम जानतेहो कोई दूसरा हमको चिढाता है, यह तुमको भ्रम है, तुम्हारेसे विना दूसरा कोई भी तुमको चिढानेवाला नहीं है, तुम अपने इस भयको दूर करो । माताके उपदेशसे लडकेका डर जाता रहा है । हे चित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांत है, अब इसको दार्ष्टांतमें सुनो । इस जीवके विना दूसरा कोई भी इसको भय देनेवाला नहीं है, इस जीवका संकल्पही इसको भय देताहै, अपने संकल्पसे यह जीव नरक स्वर्गादिकोंकी कल्पना करताहै, फिर उनकी प्राप्तिके लिये कर्मोंकी कल्पना कर्ताहै । फिर फलोंकी कल्पना

कर्ताहै, आपही कर्ता भोक्ता वनकर कर्मोंके फलोंको भोगताहै । जैसे अपने मुखसे तार निकालकर आपही तिसके साथ क्रीडा करताहै वालक अपने परछाहींको देखकर आपही डरताहै, तैसे जीवभी अपने सं करके आपही उनसे भयको प्राप्त होताहै, अपने स्वरूपसे भूलकरही जी को पाताहै । इसीपर एककविनेभी कहाहै:—

कवित्त—रम्यो सब ब्रह्म नहीं कछु भ्रम तू जान नरम जो नाहिं एकोहि राम झूठी धूमधाम नहीं कोई काम तु काहि डरे हैं ॥ ब्रह्म से द्वैतको त्याग स्वरूपमें जाग वृथा क्यों जरेहै ॥ कहे रामदयाल नहीं तू आप सँभाली जो वेग तरेहैं ॥ १ ॥

हे चित्तवृत्ते ! अपने अज्ञान करकेही भयको प्राप्त होताहै, वास्तवसे इस किसीका नहींहै, जब कि मन दूसरेकी कल्पना कर्ताहै तभी भय होताहै ॥ देवीभागत:—

**न देहो न च जीवात्मा नेन्द्रियाणि परंतप ।**
**मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ॥ १ ॥**

हे परंतप ! बंध मोक्षमें देह और जीवात्मा तथा इन्द्रियें ये सबभी कार हैं, किंतु मनुष्योंका मनही कारणहै ॥ १ ॥

**शुद्धो मुक्तः सदैवात्मा नैव बध्यत कर्हिचित् ।**
**बंधमोक्षौ मनःसंस्थौ तस्मिच्छान्ते प्रशाम्यतः ॥**

आत्मा सदैवकाल शुद्धहै, मुक्तहै, किसी प्रकारसेभी वह बंधायमान होताहै, बंध और मोक्ष मनसेही स्थित रहते हैं अर्थात् मनका संकल्प है । मनके शांत होनेपर वहभी शान्त होजाते हैं ॥ २ ॥

**शत्रुर्मित्रमुदासीनो भेदाः सर्वे मनोगताः ।**
**एकात्मत्वे कथं भेदः संभवेद्वैतदर्शनात् ॥ ३ ॥**

शत्रु मित्र और उदासीनता ये सर्व भेद मनमेंही हैं एक आत्माके होनेसे फिर भेद कैसे होसक्ताहै, किंतु कदापि नहीं होसक्ता है भेद तो द्वै हीसे होताहै ॥ ३६ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और लौकिक दृष्टांत तुमको सुनातेहैं:—

किसी नगरमें एक बनियां बडा धनिक रहताथा, रात्रिके समय तिसकी स्त्री एक लोटा जलका भरकर तिसके सोनेके पलंगके नीचे धर देतीथी सवेरे बनियां जब झाडे जाता था तब तिस लोटेको शौचकरनेके लिये लेजाताथा। दीप-मालिका आनेका दिन जबकि नजदीक आगया तब तिस बनियांकी लडकीने लोटेमें गेरूको रगडकर पानी मिलाकर भर दिया और तिस लोटेको बापके पलंगके नीचे धर दिया सवेरे अंधेरमें वही गेरूवाला लोटा बनियांके हाथमें आगया बनियांने जंगल फिरकर तिस लोटेसे जब कि, शौच किया तब वह पृथिवी सब गेरूके रंगसे लाल होगई। बनियाने जाना यह सब खून पाखानेके रास्तासे हमारे भीतरसे गिराहै, बनियां घरमें आकर खाटपर गिरपडा और स्त्रीसे तिसने कहा आज मैं मरूंगा क्योंकि मेरे पेटसे पाखानेके रास्तासे वहुतसा खून गिराहै जल्दी कुछ तू मुझसे दान पुण्य करवो स्त्री रोने लगी बनियांने कहा अब रोनेका समय नहींहै जल्दी एक गौको मँगा-कर दान कराओ और कुछ अन्न वगैराभी मँगाकर दान कराओ स्त्री सब वस्तुओंके मँगानेके फिकरमें हुई और बनियांभी धीरे २ सुस्त होने लगे इतनेमें बनियांकी लडकीने पलंगके नीचे जब कि गेरूके लोटेको खोजा और लोटा तिसको नहीं मिला लोटाके न मिलनेसे वह लड़की रोने लगी बापने पूँछा तूं क्यों रोती है उसने कहा मैंने गेरू घोल्कर लोटेमें आपके पलंगके नीचे रखाथा न मालूम तिसको कौन उठा लेगया और यह दूसरा लोटा पानीका भरा हुआ इस जगहमें रखाहै। मेरा लोटा नहीं दीखाता है। लडकीकी वार्ताको सुनकर बनियां उठ बैठा और स्त्रीसे कहने लगा अब मैं अच्छा होगया दान पुण्य करानेकी कुछ जरूरत नहीं है। वह खून नहींथा किन्तु गेरूका रंगथा मेरेको भ्रम खूनका होगयाथा, अब वह भ्रम मेरा जाता रहाहै। हेचित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांतहै अब दार्ष्टांतमें इसको सुनो। अनादि अज्ञानके सम्बन्धसे इस जीवको अपने स्वरूपमें भ्रम होरहा है, तैसी भ्रम करके यह जीव अजर अमर आत्मामें जन्म मरणादिकोंको मान रहाहै जब आप्तवक्ताके उपदेश करके इसका भ्रम दूर होजाताहै तब यह अपनेको अजर अमर मानने लगजाताहै तब जन्म मरणसे रहित होजाता है॥ २७॥

हे चित्तवृत्ते! एक और लौकिक दृष्टांतको तुम सुनो॥

एक राजाने दो नोकरोंको विदेशमें किसी कामके लिये भेजा जब कि दिन बीतगये और उनको कोईभी खत पत्र न आया तब राजाने दोनों नौकरोंकी तरफ दो हुकमनामें लिखे और लिखा इनको पृथक्करके मानना वह दोनों परवाने दोनों नौकरोंके पास जब कि पहुँचें उन दोनोंमेंसे एकने तो जो परवानेमें काम लिखाथा तिस कामको करके परवानेको फेंक दिया, दूसरेने जो लिखाथा उसको तो न देखा किन्तु परवानेको चौकीपर धरकर तिसकी धूप दीपसे पूजा करने लगा। जिसने लिखे हुवे कामको करके परवानेको फेंकदिया था, उसपर तो बडे प्रसन्न हुए और तिसको राजाने भारी दरजाभी दिया और परवानेको चौकीपर धर कर केवल पूजाही करता रहाथा, तिसपर राजा नाराज हुए और तिसको निकाल भी दिया। हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांत है, अब दार्ष्टांत तुमें सुनो। वेद शास्त्ररूपी परवाने याने हकुमनामे ईश्वरके भेजे हुवेहैं, जो उनपर अमल करताहै अर्थात् जो कुछ उनमें लिखाहै उसको धारण करताहै उसपर तो ईश्वर प्रसन्न होताहै, और उसको मोक्ष देता है। जो कि उनके अर्थ को धारण नहीं करताहै, किन्तु चौकीपर धरकर धूप दीपादिकोंसे आरती करके उनके आगे घंटोंको हिलाताहै, उसपर ईश्वर नाराज होकर उसको जन्म मरण परंपराको देताहै। इसीपर पंचदशीकारने भी लिखाहै:—

**ग्रन्थमभ्यस्य मेधावी विचार्य्य च पुनः पुनः।**
**पलालमिव धान्यार्थी त्यजेत् ग्रन्थमशेषतः ॥ १ ॥**

बुद्धिमान् पुरुष प्रथम ग्रन्थोंका अभ्यास करे, फिर पुनः २ उनका विचार करके धाराण करें, फिर जैसे धान्यका अर्थी पुरुष धान्यको ग्रहण करके पराली का त्याग करदेताहै इसी प्रकार यहभी संपूर्ण ग्रन्थोंका फिर त्याग करदे।

हे चित्तवृत्ते! केवल ग्रन्थोंके वाचनेसे आत्मबोध नहीं होताहै, किन्तु धारण करनेसे होताहै ॥ ३८ ॥

हे चित्तवृत्ते! इसी विषयपर तुम्हारेको एक और दृष्टांत सुनाते हैं: एक पुरुष तीर्थ यात्रामें जाने लगा तब तिसने विचार किया यदि द्रव्यको साथ लेजाऊंगा तो रास्तामें चोरोंका भयहै, कहीं लूटेही जाँयगे। तब क्या करेंगे, हुंडी लिखवाकर लेजाँय तब अच्छा होगा, वहांपर जाकर शाहकी दूकानसे रुपैया लेलेंगे। उस आदमीने हुंडी लिखवा ली. एक दूसरा भी तिसके साथ तीर्थोंमें चला

हुंडी लिखवाली वहांपर जब जाकर दोनों पहुँचे तब एकने तो शाहकी दूकानपर जाकर तिस हुंडीको दिखाकर अपना रुपैया लेलिया । उसको तो रुपैया मिलगया और दूसरा अपने डेरेपर बैठके तिस हुंडीका पाठ करने लगा । कई एक दिन पाठ करता रहा तब भी तिसको हुंडीका रुपैया नहीं मिला । यह तो दृष्टांत है, दार्ष्टांतमें वेद शास्त्र रूपी सब हुंडियें हैं, इनके केवल पाठमात्र करनेसे आत्माका लाभ नहीं होता है, किंतु इनमें जो उपदेश लिखा है, तिसपर चलनेसे आत्माका लाभ होताहै ॥ ३९ ॥

दो प्रकारके राजा होते हैं एक न्यायकारी दूसरा अन्यायकारी जो कि, न्यायकारी होताहै, वह कामको देखता है, अपनी खाली तारीफको नहीं सुनता है। जो नौकर तिसका अच्छा काम करताहै, उसको भारी ओहदा देता है और जो नौकर कामको नहीं करता है केवल तिसकी तारीफकोही करता है, तिसको वह पसंद नहीं करता है और न तिसको कोई ओहदा देता है और जो अन्यायकारी है, वह कामको नहीं देखता है, किंतु केवल अपनी तारीफकोही सुनता है। अन्यायकारी राजाको दोषका भागी कहा है, निर्दोष और धर्मात्मा राजा न्यायकारी होता है, जो सबको सम देखता है । तैसे ईश्वर भी न्यायकारी है, वह कर्मकोही देखता है, जो पुरुष उत्तम कर्मको करताहै अर्थात् वेदोक्त मार्गपर चलता है, उसीको मोक्ष देताहै । जो वेदोक्त मार्गपर तो नहीं चलता है, केवल वेदोंको और शास्त्रोंको लोकदिखलावेके लिये पाठोंको करता है या झूठे पाखंडोंकोही करता है, उसको कदापि मोक्षको नहीं देता है ॥ ४० ॥

हे चित्तवृत्ते ! जबतक इस जीवको देहादिकोंमें अहंता और गेहादिकोंमें ममता बनी है, तबतक इस जीवको कदापि सुख नहीं होता है । अहंता ममताके त्याग करनेसेही इसको सुख होताहै सो अहंता ममताका त्याग करना बडाही कठिन है ॥ इसीमें एक दृष्टांतको सुनातेहैं:—

एक कालमें नारदजी पृथिवीपर पर्यटन करते हुए वैकुण्ठमें जा निकले वहांपर भगवान्को अकेले बैठे हुए देखकर नारदजीने भगवानसे कहा महाराज आपका वैकुण्ठ तो आजकल खाली पडाहै कोईभी पुरुष यहाँपर नहीं दिखाताहै, क्या वैकुण्ठमेंभी कोई आनेकी इच्छा नहीं करताहै । यहाँपर तो सब

प्रकारका सुखहै, किसी प्रकारकाभी यहांपर दुःख नहींहै फिर क्यों खालीहै? भगवानने कहा नारदजी यद्यपि यहाँपर सर्व प्रकारका सुखहै वैकुण्ठमें आनेकी इच्छा किसीकोभी नहीं होतीहै और हमाराभी मन नहीं लगताहै, दूसरा कोई हो तब दोघडी तिससे बात चीतही करैं, कोई करनेवालाभी नहींहै हम क्याकरैं ? मर्त्यलोक निवासी कोईभी वैकुण्ठ आनेकी इच्छा नहीं करताहै । नारदने कहा ये कैसी वार्ताहै? वैकुण्ठका नाम सुनकर सबलोक आपसेआप चले आवैंगे । भगवानने कहा अच्छा जाकर दो चार आदमियोंको लावो कुछ सेवाका तो काम चले, फिर देखाजाय नारदजी बडे उत्साहके साथ चले और आकर एक बूढेसे नारदने कहा वैकुण्ठको चलोगे ? नारदकी बातको सुनकर वह बूढा बडा बिगडा और दजीसे कहने लगा अभागे तूही वैकुण्ठमें जा जिसका न कोई आगेहै न मैं क्यों जाऊं, मेरे पुत्र और पोते और स्त्री धनादिक सब मौजूदहैं निपूताहो सो वैकुण्ठमें जाय । नारदजी चुपचाप होकर वहांसे चलपडे एक और युवाअवस्थावालेसे नारदजीने कहा वैकुण्ठको चलोगे ? उसने कहा बाबा वैकुण्ठ तो बूढोंके लिये बनाहै, जो कि, किसी कामलायक वह वैकुण्ठमें जाय, हमतो सब काम करसक्तेहैं, हम क्यों वैकुण्ठमें जायँ । थोडीदूर जाकर फिर एक पुरुषसे नारदने कहा वैकुण्ठको जावोगे उसने किसी लूले लंगडेको खोजो, यहांपर तुम्हारी दाल नहीं गलतीहै । बहुतसे मनुष्योंको वैकुण्ठ जानेके लिये कहा परंतु किसीनेभी कबूल न तब नारदजीने एक वृद्ध साहूकारको तिलक छापे लगायकर दूकानमें देखा नारदने अपने मनमें विचार किया यह भगवान्का भक्तदीखता अवश्यही वैकुण्ठको चलेगा और जो ये एकभी चलदे तब हमारीभी जाय, क्योंकि हम भगवान्से कह आयेहैं हम किसीको लावेंगे और भगवान्की भी सेवा करनेसे आराम मिलजाय । नारदजी तिस सेठके पास जाकर और सीताराम २ करके तिस सेठके कानमें नारदजीने कहा सेठजी संसारका तो आपने सब देखही लियाहै, अब चलकर कुछकाल वैकुंठके सुखको भोगो कहा । महाराज मेरी भी येही सलाहहै परंतु अभी लडका सयाना नहीं जरा सयाना होजाय और दूकानके कामकाजको सँभाल ले तब चलूंगा,

दिन पीछे फिर आना। नारदजी चले गये और कुछ दिन पीछे फिर उसके पास आये और उससे कहने लगे अब तो तुम्हारा लडका सयाना होगया है अब चलो उसने कहा अभी इसके संतती नहीं हुई है इसके पुत्र हो ले तब चलूंगा नारदजी चले आये। फिर कुछ कालके पीछे तिस सेठसे जाकर कहने लगे अब तो चलो, अब तो तुम्हारे पोताभी हो गयाहै। सेठने कहा महाराज अभी इसकी शादी नहीं हुई है इसके विवाहको देखकर चलूंगा। नारदजी फिर कुछ कालके पीछे आये और सेठको पूछा कहां है तिसके लडकेने कहा वे तो मरगये, नारदजीने ध्यान लगाकर देखा तो सर्प बनकर अपने द्रव्यपर बैठेथे। नारदने कहा अब तो चलो। उसने कहा मैं अपने द्रव्यकी रक्षा करताहूं अभी लडका द्रव्यकी रक्षालायक नहीं है जब ये रक्षालायक होजायगा तब चलूंगा। कुछ दिन पीछे फिर गये तब वह कुत्ता बनकर द्वारपर बैठाथा, नारदजीने कहा अब तो चलो, तब तिसने कहा महाराज पतोहैं अनजानहैं, मैं द्वारपर बैठकर चोर चकारकी रक्षा करताहूं, नहीं तो चोर घरमेंसे मालको निकालकर लेजायँ। तब नारदजीने तिस सेठकी स्त्रीसे कहा तुमही वैकुंठको चलो, तिसने कहा महाराज अभी दो चार काम घरके बाकी हैं, वह होजाय तब मैं चलूंगी। फिर थोडे दिनोंके पीछे नारदजी जब गये तब वह सेठानीभी मरकर कुतिया बनकर द्वारपर बैठी हुई और कुत्तोंसे खराब हो रहीथी नारदने कहा अब तो चलो उन्होंने कहा अभी तो हम इसी जन्ममें बडे सुखीहैं, फिर चलेंगे। नारदजी हारकर वैकुण्ठमें जाकर भगवान्से कहने लगे महाराज आपने सत्यकहाहै संसारी लोक ऐसी ममतामें फसेहैं जो कोई भी वैकुण्ठमें आनेकी इच्छाको नहीं करता है। हे चित्तवृत्ते! यह संसार असार रूप भीहै और अति मलिनभी है, तब भी संसारी लोक ऐसी मोह ममतामें फँसेहैं जो इसके त्यागकी इच्छाको नहीं करतेहैं ॥ ४१.॥

चित्तवृत्ती कहती है। हे विवेकाश्रम! जो वस्तु मलिन होती है उससे तो मनुष्यमात्रको घृणा होती है, फिर संसारी लोकोंको क्यों नहीं घृणा होतीहै? विवेकाश्रम कहतेहैं, हे चित्तवृत्ते! मोह ममतामें जो फँसेहैं उनको घृणा नहीं होती है। जैसे भंगीको मैलाके देखनेसे घृणा नहीं होती है तैसे महामलिन घृणाका पात्र जो गृहस्थाश्रमहै, जिसमें जो कि, नित्यही अपने बाल बच्चोंके गूमूत्रको उठाना और धोना पडताहै, घरमें किसी जगहमें मूता है, किसी जगहमें हगै

कहीं सींड पडाहै, कहीं थूक पडा है, कोई हाय २ करताहै, कोई बाहर ज
है, ऐसे मलिन व्यवहारसे संसारियोंको घृणा नहीं फुरतीहै । क्यों कि उन
स्वभावही वैसा होजाताहै । इसीपर एक दृष्टांत कहतेहैं:—

किसी नगरके बाहर एक महात्मा रहतेथे, एकदिन राजाने जाकर उन
प्रार्थनाकी महाराज ! हमारे घरमें चलकर चरण धरिये जो वह पवित्र होजाय
प्रथम तो महात्माने नहीं माना, जब कि, राजाने बहुतसी विनतीकी, तब रा
साथ चलपडे, जब राजाके घरमें जाकर बैठे, तब थोडी देरके पीछे महा
कहा राजन् ! हम चलेंगे तुम्हारे घरमें बडी दुर्गंधी आती है, राजाने क
महाराज ! यहांपर दुर्गंधीका कौन कामहै ? यहांपर तो बडी सफाई है। महा
कहा, राजन् ! तुमको वह मालूम नहीं देती है । क्योंकि तुम्हारा स्वभाव भूत
रहाहै, चलो हम तुनको दिखावेंगे । महात्मा राजाको साथ लेकर उस बाजा
गये जिस बाजारमें कचे चामके कूपे बनतेथे, वहांपर जाकर खडे होगये रा
कहा महाराज ! यहांपर तो सडेहुवे चर्मकी बडी दुर्गंधी आतीहै, महात्माने
चर्मकारसे पूंछा क्यों भाई यहांपर कुछ दुर्गंधी है ? उसने कहा यहां दुर्गंधी
नहीं है । महात्माने राजासे कहा देखो यहांके रहनेवाले कहतेहैं यहांपर दु
नहीं है फिर आपको कैसे आती है, राजाने कहा इनका दिमाग गंदा है
इसीलिये इनको नहीं आती है । महात्माने कहा इसी तरह आपके घ
दुर्गंधी जो है सो आपको भी नहीं आती है क्योंकि, वह आपके दि
घुसगई है जो वस्तु स्वभावभूत होजातीहै उससे घृणा नहीं होती है। सो गृह
श्रमकी दुर्गंधीभी आपका स्वभाव भूत होगई है, इस लिये आपको उससे
नहीं होती है । राजाने कहा ठीकहै । हे चित्तवृत्ते ! गृहस्थाश्रम घृणा क
स्थानहै, क्योंकि अनेक प्रकारके क्लेश इसमें रात्रादिन बनेही रहते हैं, परंतु
ममताके जालमें फँसे हुए जो पुरुष हैं, उनके अन्तःकरण अति मलीन होग
इस लिये उनको उससे घृणा नहीं होतीहै और जिनका अन्तःकरण अ
करके शुद्ध होगया है, उनको घृणा तो होतीहै वह बिगारी पकडेहुएकी
गृहस्थका काम करते हैं, खुशीसे नहीं करते हैं ॥ ४२ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयपर एक और दृष्टांत तुमको सुनाते हैं:—

किसी नगरके महल्लामें एक धनी पुरुष अपने द्वारपर खडाथा, इतनेमें एक भंगी मैलेकी दौरीको उठाये हुए उस रास्तासे निकला, तब धनिकने उस भंगीसे कहा अरे नीच इस मैलेको नंगा मत लेजायाकर, क्योंकि इसको देखकर लोकोंके जी मिचलाने लगतेहैं, किसी कपडासे इसको ढककर लेजायाकर। भंगीने कहा मैं कपडा कहासे पाऊं जो इसको ढकूं। धनिकने एक सुपेद रूमाल तिसको देदिया और कहा इससे इसको ढककर लेजा। भंगीने उस रूमालको उस मैलेकी दौरीपर डालदिया और चलपडा जब कि, वह कुछ दूर निकलगया, तब वहांपर तीन पुरुष खडेथे। उन्होंने जाना इस दौरीमें कोई अच्छी वस्तुको यह लिये जाता है। भंगीसे उन्होंने कहा इसमें क्या है हमको दिखलादे। भंगीने कहा आपके देखने लायक यह नहीं है, ऐसा कह करके भंगी चलपडा। तीनोंने भंगीका कहा न माना, तिसके पीछे २ चलपडे, आगे एक पुरुष खडा था, उसने उनसे कहा क्यों मैलेके पीछे चले जाते हो? इसमें मैला है, कोई उत्तम वस्तु नहीं है। एक तो तिसके कहनेपर पीछेको लौट गया, दो फिर भी न हटे किंतु भंगीके पीछे पीछेही चलने लगे, कुछ दूर जाकर फिर भंगीने उनसे कहा इसमें कोई अच्छी वस्तु नहीं हैं किंतु मैलाहै। तुम क्यों दिक्क होते हो। दूसरा भी पीछेको हटा। तीसरेने कहा हम विना देखे नहीं हटेंगे हमको तुम दिखला देवो। जब कि भंगी एक तंग गलीमें पहुँचा तब उससे कहा आवो देखो ज्योंहीं वह आगे देखनेको वढा और भंगीने मैलापरसे रूमालको उठाया और मैलेकी दुर्गंधी सब तिसकी नासिका और मुखमें गई और वह भागा त्योंही उस तंग गलीमें वह गिरा और कई एक जगह तिसको चोटभी लगी। हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांतहै, अब इसको दार्ष्टांतमें सुनो। संसारमें उत्तम मध्यम कनिष्ठ ये तीन प्रकारके पुरुष हैं और स्त्रीका शरीररूपी एक मैलेकी दौरी है, ऊपरसे सुपेद चर्मरूपी रूमालसे ढकी हुई है, विषयी पुरुषरूपी भंगी तिसको लिये जाता है, तीनों पुरुष तिसके पीछे चले तिसको अच्छी वस्तु जानकर। आगे कोई महात्मा खडेथे उन्होंने कहा इसके पीछे तुम मत खराबहो। यह तो एक मैलेकी दौरीहै, जोकि उत्तमथा वह तो उनके वाक्य पर विश्वास करके पीछेको लौट गया, जो मध्यम था वह कुछ दूर जाकर लौटा, जो कनिष्टथा वह भी लौटा तो सही, परंतु धक्के और चोटको खाकर

शिर फटाकर अनेक प्रकारके क्लेशोंको सह करके पश्चात् उसने भी लि
त्याग किया और जो अति मूर्ख हैं वे इसीमेंही जन्मभर दुःख पाते रहते
उनको कभी भी घृणा नहीं होतीहै ॥ ४३ ॥

हे चित्तवृत्ते ! संसारमें जीवोंको जो ममता होरहीहै, येही दुःखका हे
जिसको ममता नहीहै, वह घरमें रह करकेभी सुखीहै, जिसको ममता है
वह घरका त्याग करकेभी दुःखीहै । इसीमें एक दृष्टांतको सुनातेहैं:—

एक राजा बडा सत्संगीथा महात्माका संग सदैवकालही करताथा और उस
नगरके बाहर वनमें एक महात्मा रहतेथे, नित्यही उनके पास जाया करता
एकदिन राजाने महात्मासे कहा महाराज राजकाजमें बडा दुःखहोता है
दुःखकी निवृत्तिका कोई उपाय आप कहिये । महात्माने कहा राजन्!
अपने राजको हमारे प्रति दान करदेवो । राजाने तुरतही जल लेकर राज
महात्माके प्रति दान करदिया । महात्माने कहा राजन्! अब तुमारी इस रा
कुछ ममताहै या नही ? राजाने कहा हमारी अब इस राज्यमें कुछभी ममता न
है चाहे बने चाहे बिगडे । महात्माने कहा अब तुम हमारी तरफसे इसका इन्त
करो और जो कुछ तुम्हारा खर्चहो वह अपनी तनखा जानकर लिया करो
नौकर वही धर्मात्मा कहाजाताहै जो मालिकका काम अच्छा करताहै, रा
अपनेको नोकर जानकर राजकाजको करने लगे । फिर राजासे एक
महात्माने पूँछा राजन् ! राजकाजमें तुमको कुछ विक्षेप तो नही होताहै राजाने क
हमारी अब राज्यमें ममताही नहीं है विक्षेप हमको क्यों हो? महात्माने कहा
हे चित्तवृत्ते ! जो पुरुष गृहमें रह करकेभी ममतासे रहित होकर गृहके का
करताहै उसको विक्षेप नहीं होता है परंतु ऐसा होना अति कठिन है ॥ ४४ ॥

हे चित्तवृत्ते ! जबतक पुरुषका मन अंतर आत्माकी ओर नहीं लगताहै,
तक पुरुष विषयोंकी तरफ दौडताहै, मनको अंतर मुख करनेके लिये शास्त्र
रोंने योगाभ्यास आदिक अनेक साधन कहेहैं । प्रथम मनको स्थूल पदा
लगाना कहाहै, स्थूलमें जब कि लगने लगताहै तब धीरे २ सूक्ष्ममें जाकर
जाताहै, विना स्थूलमें लगानेसे सूक्ष्ममें नहीं लग सक्ताहै । योगसूत्रमें लि
जो वस्तु अपनेको अति प्यारीहो, उसीमें मनको लगाय किसी मनुष्यकी या दे
ताकी मूर्तिमें या सूर्य्य चन्द्रमा आदिक तारोंमें निरोध करे विना मनके लि

करनेसे महान् सुखका लाभ नहीं होताहै और केवल ज्ञानकी बातोंसेभी सुख नहीं होताहै। अभ्यास और वैराग्यकोही मनके निरोधका साधन लिखाहै। तात्पर्य यह है मनका निरोध किसतरहसे होसके उसी तरहसे सुखका हेतुहै। इसीमें एक दृष्टांत तुमको सुनातेहैं:—

हे चित्तवृत्ते! किसी नगरमें एक भंगी राजाके घरमें नित्यही पाखाना कमानेको जाता था दैवयोगसे एक दिन जब वह पाखाना कमानेको गया, तब रानीको उसने सिंहासनपर बैठीहुई देखलिया देखतेही उसका मन रानीमें चला गया और किसी तरहसे वह अपने घरतक पहुँचा आतेही वह गिर पडा और अपनी स्त्रीसे उसने कहा अब मैं दोचार घडीमें मरूंगा स्त्रीने हाल जब पूँछा तब उसने सब हाल बतादिया स्त्रीने कहा तुम धीरज धरो, मैं इसका कोई उपाय करूंगी स्त्रीने रानीसे जाकर कहा हमारा पति मरताहै उसका कोई इलाज तुम बतावो सब हाल पतीका रानीसे कह दिया आगे रानी बडी बुद्धिमान्थी उसने कहा तुम पतिसे जाकर कहो वह साधुका भेष बनाकर बाहर नदीके किनारेपर बैठकर रात्रिदिन हमारा ध्यान करे और किसीकी तरफ बिलकुल न देखे अंतर मनमें मेरेकोही देखे थोडे दिनके पीछे मैं उसी जगहमें उसके पास आऊंगी उसने जाकर पतिसे रानीके मिलनेका उपाय कह दिया। वह साधुका भेष बनाकर नदीके किनारेपर पद्मासन लगा :र रानीका ध्यान करने लगा। कोई पुरुष कुछ आगे धरजाय चाहे कोई उठा कर ले जाय वह किसीकी तरफभी न देखे। थोडेही दिनोंमें नगरमें बडी चरचा फैलगई एक महात्मा ऐसे योगिराज आयेहैं जो आठोंपहर अपनी समाधीमें ही स्थित रहतेहैं। अब बहुतसे लोक उनके पास जाने लगे। राजातक खबर पहुँची राजाभी एक दिन उनके दर्शनको गये, परंतु उसने राजाकी तरफ भी आँख खोलकर नहीं देखा है ऐसी उसकी वृत्ति रानीके ध्यानमें जमी जो बाहरके संसारकी उसको कुछ भी खबर न रही और वृत्तिके एकाकार होजानेसे वृत्तिमें चेतनका प्रतिबिंब भी स्थिर होगया. तिस प्रतिबिंबके स्थिर होजानेसे उसको अन्तर आत्मसुखका लाभ होगया तिस आत्म सुखके आगे विषय सुख सब अतिफीके और बेरस माॡम होतेहैं। रानीने राजासे कहा मेरेको हुकमहो तो मैं भी उन महात्माका दर्शन कर आऊं। राजाने कहा जाओ रानी वहाँपर गई कनात लगाई गई गिरदे पहरा खडा होगया। रानी

ने समीप जाकर उनसे कहा जरा आंखको खोलकर देखो मैं वही रानीहूं जिस मिलनेके लिये आपने इतना आडंबर कियाहै उसने कहा मेरेको अब वह रानी मिली है जिसके सामने तुम्हारे जैसी करोडों रानियें हाथ जोडकर खडीहैं, अब तू चलीजा मैं महान् रानीके साथ जाकर मिलगयाहूं । आंख खोल करके भी उस रानीकी तरफ न देखा रानी अपने घरको लौटकर चली आई । हे चित्तवृत्ते जितना भारी सुख है सो मनके निरोधमें ही है और जितना भारी दुःख है मनके इतस्ततः स्वतंत्र होकर भ्रमण करनेमेंही है ॥ ४९ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और भी दृष्टांत तुमको मनुष्य जन्मपर सुनातेहैं:--

एक राजाकी तीनसौ साठ रानीथीं और प्रत्येक रानीके पास राजा एक रात्रिको जाते थे, अर्थात् बरसकी तीनसौ साठ रात्रिहोती हैं । सो हिसाबसे तीन सौ साठ रानीपर बटी हुई थीं । जिस रानीके घरमें राजाके आनेकी जिस दिन पारी होती थी वह रानी उस दिन अपने घरमें बडी तैयारी करतीथी, क्योंकि फिर सालभर पीछे तिसकी पारी पडतीथी । जिस दिन सबसे छोटी रानीकी पारी पडी तिसने अपने घरमें बहुतसी तैयारी करी, जब कि, चार पाँच घडी रात्रिव्यतीत होगई और राजाको आनेमें देर होगई । क्योंकि राजाको उस दिन कोई काम पेश आगया राजा उस काममें रुक गये और इधर रानीको नींदने सताया तब रानीने अपनी लौंडीसे कहा मैं तो सो जातीहूं, क्योंकि, मेरेको नींदने बहुत सताया है और तूं जागती रहो, जब राजा साहिब आवें तब हमको जगादेना । लौंडीसे ऐसे कहकर रानी तो सोगई । अर्द्ध रात्रिके बीतजानेपर राजा वहाँपर आये और रानीको सोया देखकर बडे क्रुद्ध हुए । लौंडी राजाके सामने कुछ कह न सकी किंतु रानीको न जगासकी । राजाभी थके थे वहभी जाकर सोगये । प्रातः राजा उठकर अपने कामपर चले गये । पीछे जबकि रानीकी नींद खुली तब उसने लौंडीसे पूंछा राजा साहिब आयेथे लौंडीने कहा हां आये थे तब रानीने हमको तुमने क्यों नहीं जगाया ? लौंडीने कहा राजाके क्रोधके आगे मेरे होश बिगड गयेथे. कैसे जगाती । तब रानी रोने लगी और रानीने कहा अब फिर तीनसौ साठ रात्री बीतेंगी । जो राजा फिर मिलेंगे । ऐसे कहकर पश्चात्ताप करके रोने लगी । हेचित्तवृत्ते ! यह तो दृष्टांतहै अब इसको दार्ष्टांत सुनो । चौरासी लाख योनिमेंसे फिरता २ यह जीव मनुष्य योनिमें आताहै

इस मनुष्य योनिमेंभी यदि इसको अपने स्वरूपका बोध न हुवा तब फिर एकत्र चौरासी लाख योनि व्यतीत होंगी, जो इसको फिर मनुष्य जन्म मिलैगा। इस प्रकारका इसकोभी अंतमें पश्चात्तापही करनापडेगा ॥ ४६ ॥

हे चित्तवृत्ते ! इसी विषयमें हम तुमको एक और दृष्टांत सुनाते हैं:—

एक राजाने किसी दूसरे राजापर चढाईकी और उस राजाके देशको इस राजाने जीत लिया कुछ कालतक राजा उसीदेशमें रहा, जब राजाने अपने देशमें आनेकी तैयारीकी तब अपने घरमें सब रानियोंके प्रति राजाने लिखा जिस २ वस्तुकी जिसको जरूरत हो वह लिखे उसके लिये मैं वही वस्तुको खरीद करके लेता आऊंगा। सब रानियोंने उस देशके भूषण वस्त्रोंके लानेके लिये राजाको लिखा, जो कि, सबसे छोटी रानीथी उसने एक सादे कागज पर एकका अंक लिखकर लिफाफामें बंद करके राजाकी तरफ खतको भेज दिया। राजाने सबके खतोंको बाँचकर जो २ वस्तु जिसने लिखीथी उसके लिये मँगाकर संदूकोंमें बंद करके रखवादी। जब कि, तिस छोटी रानीके खतको बाँचा तब उसमें कुछभी नहीं लिखाथा केवल एकका एक अंकही लिखाथा। राजाने वजीरसे कहा यह रानी कैसी मूर्ख है? इसने खाली अंक लिखकर भेज दियाहै अब इसका क्या मतलब है आप समझाइये। वजीरने कहा सब रानियोंमें येही रानी चतुरहै, इस एक अंक लिखनेका यह मतलबहै हमको एक तुम्हारीहीं चाहना है और किसी वस्तुकी चाहना नहीं है, राजाने कहा ठीकहै। जब राजा अपने नगरमें आये तब जो २ वस्तु जिसके लिये लाये थे सो सो वस्तु उसके घरमें भिजवादी और आप राजासाहिब उस छोटी रानीके घरमें चले गये। राजाके वहाँपर जानेसे बाकीकी सब विभूति राजाके साथही तिस रानीके घरमें चली गई। हे चित्तवृत्ते! यह तो दृष्टांत है, अब इसको दार्ष्टांतमें घटावो। संसारमें जितनेक सकामी पुरुष ईश्वरकी भक्ति उपासनाको जिस २ फलके लिये करते हैं उसी २ फलको पाते हैं, उससे अधिकको नहीं पाते हैं। जो कामनासे रहित होकर केवल तिसी एक ब्रह्मकी प्राप्तिके लिये उपासनाको करताहै, वही तिस निर्गुण ब्रह्मको प्राप्त होता, है वही जन्म मरणरूपी संसारचक्रसे छूट जाता है। दूसरा किसी प्रकारसे भी तिस चक्रसे नहीं छूट सक्ता है। इस

लिये मुक्तिकी इच्छावालेको उचित है कि, निष्काम होकर तिस एकहीकी उपासना करै ॥ ४७ ॥

विवेकाश्रम कहते हैं हे चित्तवृत्ते ! एक और दृष्टांतको तुम सुनोः-

किसी नगरमें दो पुरुष परस्पर मित्र थे और इकट्ठे भी रहते थे दोनोंको यह बीमारी थी जो जहाँपर एक आदमी खडा हो वहांपर दो दीखते अर्थात् एक २ के दो २ उनको दिखाते थे। एक दिन दोनोंने परस्पर विचार किया चलकर किसी वैद्यके पास इस बीमारीका इलाज करना चाहिये । दोनों एक वैद्यके पास गये और वैद्यसे अपना हाल कहा हमको एकके दो २ दीखते हैं, हम इसकी दवाई करेंगे । वैद्यने उनसे कहा हमको तो एकके तीन दीखते है। इन्होंने कहा कैसा भी हो हम तुम्हारीही दवा करेंगे । दोनोंमेंसे एकने विचार किया हमसे तो वैद्यको अधिक बीमारी है यह हमारी क्या दवा करैगा। वह तो ऐसा विचार करके अपने घरको चला गया । दूसरा अनजान था वह तिस वैद्यके पास बैठ गया और तिसकी दवाईको करने लगा थोडे दिनमें तिसकोभी एक २ के तीन २ दिखाने लग गये । यह तो दृष्टांत अब दार्ष्टांतमें इसको सुनो । इस जीवको ईश्वर जीवका भेदरूप द्वैत तो पहलेही दीखाताथा, तिस द्वैतके दूर करनेके लिये यह गुरूके पास गया आगे गुरू ऐसा मिला जो उसने त्रैत लगा दिया। एक हम हैं दूसरा ईश्वरहै तीसरी प्रकृति याने माया है और तीनों नित्यहैं, अथवा तीन जो ब्रह्मा विष्णु महेश देवता सो तीनों ईश्वरहैं, इन तीनोंकी उपसनासे मुक्ति होतीहै । इस तरहका त्रैत लगा दिया। इसतरहके जो गुरूहैं उनके उपदेशसे मोक्ष कदापि नहीं होसक्तीहै, मोक्ष उसी गुरूके उपदेशसे होसक्तीहै जो एकात्मवादी है ॥ ४८ ॥

हे चित्तवृत्ते ! जिस कालमें यह जीव माताके गर्भमें आताहै और पिताके वीर्यसे और माताकी रक्तसे जिस कालमें इसका शरीर बनकर तैयार होजाताहै उस कालमें जीवको अपने पूर्वले अनेक जन्म याद आतेहैं, अनेक जन्मोंमें जो दुःख सुख भोगेहैं वहभी सब इसको याद आतेहैं, तब ईश्वरसे प्रार्थना करताहै, अबकी बार जो मैं जन्मको लेऊँगा तब अवश्यही आपकी उपासना करूँगा ऐसा बार २ कहताहै, जब कि जन्म लेताहै तब माया मोहमें पडकर तिस करारको भूल जाताहै इसीसे फिर जन्म मरणको प्राप्त होता

और वह पुरुषभी नहीं होसक्ताहै । पुरुष वही कहाताहै जो अपने वचनकी पालना करताहै । हे चित्तवृत्ते ! इसीमें हम तुमको एक दृष्टांत सुनातेहैं:—

किसी नगरके वाहर जंगलमें एक महात्मा रहते थे और नित्यही वह दोपहरके समय नगरमें भिक्षा मांगनेको जाते थे रास्तेमें एक वेश्याका मकान था जब कि वह महात्मा उस मकानके समीप जातेथे तब वह वेश्या उनसे नित्यही पूँछतीथी आप स्त्रीहैं या पुरुषहैं ? तब महात्मा कहतेथे इसका जवाब हम फिर देंगे । इसी तरह नित्यही उनकी आपसमें बातें होतीथी । कईवरस इसी तरह कहते सुनते बीत गये । एक दिन उन महात्माका देहांत होगया जब नगरमें उनके मरनेकी खबर फैली तब बहुतसे लोक गये । उस वेश्याने जब सुना वहभी गई, आगे वहांपर लोकोंकी बडी भीड लगीथी, उस वेश्याने कहा हटो हमकोभी दर्शन कर लेने देवो, लोक जब थोडासा हटगये तब वेश्याने उनका नाम लेकर पुकारा और कहा तुम स्त्रीहो या पुरुष हो ? जब कि तीन वार वेश्याने कहा महात्मा सत्य वादी होते हैं आपने कहाथा हम तुम्हारे प्रश्नका उत्तर फिर देंगे सो विना उत्तर दिये आप क्यों मर गये ? यदि हमारे प्रश्नका उत्तर न देकर मरजावोगे तब असत्यवादी ठहरोगे । जब कि, वेश्याने ऐसे कहा तब महात्मा उठकर कहने लगे हम पुरुष हैं हमपुरुष हैं, वेश्याने कहा आप तो पहलेसे ही जानते थे हम पुरुष है फिर तब आपने क्यों न कह दिया । महात्माने कहा वाहरके चिन्होंसे आदमी पुरुष नहीं होसक्ताहै किंतु जो अपने वचनकी पालना करताहै वह पुरुष कहा जाताहै, हम तुमसे तभी कह देते जो हम पुरुषहैं और वीचमें किसी तरहका विघ्न पडजाता तब हम कैसे पुरुष होसक्ते ? अब तो हमारी आयु समाप्त होचुकीहै और किसी तरहका अब विघ्नभी नहीं पडसक्ताहै । इस लिये अब हम कह सक्तेहैं जो हम पुरुष हैं । वेश्याने कहा ठीकहै । हे चित्तवृत्ते ! जो आदमी तिस गर्भवाले कराको परमार्थदृष्टिसेही पूरा करताहै वही पुरुष है, ऊपरके चिह्नोंसे पारमार्थिक पुरुष नहीं होसक्ताहै ॥ ४९ ॥

हे चित्तवृत्ते ! एक और लौकिक दृष्टांतको तुम सुनो:—

दक्षिण देशमें वंजरा और गरुडगंगा नदीका जहाँपर संगम होताहै, वहांपर देवशर्मा नाम करके एक ब्राह्मण रहताथा । और तिसकी स्त्रीका नाम सुवर्णा था, तिस ब्राह्मणके घरमें लडका कोई नहीं था । पुत्रकी उत्पत्तिके लिये वह

ब्राह्मण वंजरा और गरुडगंगाकी उपासना करता रहा। जब उपासना करते तिसकी उमर साठ वरससे ऊपरकी होगई, तब तिसके घरमें एक अंधा लडका पैदा हुवा, उस अंधे लडकेके भी पैदा होनेसे तिसको वडा हर्ष हुवा और तिसकी वडे लाड प्यारसे वह पालन करने लगा। जब कि, वह लडका वरसका हुवा तब तिसका यज्ञोपवीत उसने वडी धूम धामसे कराया और तिसको विद्या पढाने लगा, थोडेही वरसोंमें वह अंधा पढकर पंडित होगया। एक दिन वह अंधा अपने आसनपर बैठा था और वाहरसे तिसका आकर जब तिसके पास बैठा तब अंधेने बापसे पूँछा हे पिता! पुरुष पाप करके अंधा होजाता है, पिताने कहा हे पुत्र! जो पुरुष पूर्व जन्ममें चोरी करता है वह उत्तर जन्ममें अंधा होता है। अंधेने कहा हे पिता यह वार्ता नहीं है, क्योंकि, शास्त्रकारोंने ऐसा नियम करदिया है "कारणगुणा हि कार्य्यगुणानारभन्ते" कारणके जो गुण होतेहैं कार्य्यके गुणोंको भी आरंभ करते हैं अर्थात् कारणके गुणही कार्य मेंभी आजाते हैं। हे पिता! मैं जानताहूं जिस हेतुसे तुम अंधे इसी हेतुसे मैंभी तुम्हारे घरमें अंधा पैदा हुवाहूं। पुत्रकी वार्ताको सुन कर पिताने क्रोधसे कहा मैं कैसे अंधाहूं, पुत्रने कहा हे पिता! जो मुक्तिको देनेवाला जो वंजरा और गरुडगंगाका संगमहै उसकी उपासना तुम पुत्रकी कामना करके कीहै, इसीसे मैं जानताहूं जो तुमही अंधेहो मैं नहींहूं। हेपिता! ब्रह्मास्त्रको धारण करकेभी तुमने एक मच्छरकोही मारा तुमहीं अंधे हो। हे पिता! वेद शास्त्रको पढकर एक मूत्रके कीटकी जो करताहै, वही पुरुष अंधा कहा जाताहै। जैसे और मूत्रसे अनेक कृमि होतेहैं तैसे पुत्रभी एक मूत्रका कृमिहै। हे पिता! जिस पुत्रकी उत्पत्तिके तुमने जन्मभर तप कियाहै वह पुत्र तो विनाही तपके सूकर कूकरादिकोंके उत्पन्न होतेहैं। हे पिता! पुत्रकरके किसीकीभी गति न हुई है न होवेगी। पुरुषार्थसेही गति होतीहै। जो पुरुष संसार बंधनसे छूटना चाहताहै वह कामी त्याग करदेताहै। यदि पुत्रसे गति होती तब वह पुत्रोंका त्याग क्यों कर देता और बहुतसे राजोंनेभी आत्मसुख लाभकेलिये तप कियाहै। इसीसे सिद्ध होताहै कि, पुत्रसे गति नही होतीहै, जो पुत्रसेही गति मानता है वही अंधा है।

**य आत्मज्योतिरुत्सृज्य उदयास्तमयवर्जितम्।**
**उदयास्तमयं ज्योतिः सेवते सोऽन्ध ईर्यते ॥ १ ॥**

जो पुरुष अन्तरहृदयमें ज्योतिमय नित्य आत्माका त्याग करके उत्पत्ति नाशवाली सूर्य चंद्रमा आदि ज्योतियोंकी उपासना करताहै वही अंधाहै। नेत्रहीन पुरुष अंधा नहींहै ॥ १ ॥

हे पिता! जैसे ब्रह्म नित्य शुद्ध बुद्धहै तैसे जीवभी नित्य शुद्ध है और यह जितना जगत् दीखताहै सो सब भ्रममात्रहै, जैसे मरुभूमिमें जो जल दीखताहै वह जल मरुभूमि रूपहीहै। तैसे यह जगत्भी भ्रमकरके अधिष्ठान चेतनमें दीखताहै, सो अधिष्ठानरूपहीहै हे पिता! यह जो पुरुष कहता है यह मेरी स्त्रीहै, यह मेरा पुत्रहै, यह मेरा धनहै, गृहहै, ये सब वासनाकरकेही दीखताहै, वासनाकरकेही यह जीव बंधको प्राप्तहोताहै, वासनाका त्याग करनेसे परमानंद प्राप्त हो जाताहै और वासना करकेही यह अज्ञानी बनाहै, वासनाके त्याग करदेनेसे ज्ञानवान् बनजाताहै।

हे पिता! सच्चिदानंदरूप ब्रह्मको ज्ञानवान् पुरुष ज्ञानरूपी चक्षु करके देखतेहैं, अज्ञानी जीव तिसको ज्ञानरूपी चक्षु करके नहीं देखसक्ते हैं। वही अज्ञानी पुरुष ही अंधे कहे जाते हैं। जैसे अंधा पुरुष सूर्यको नहीं देखसक्ता है, तैसे भेदवादी पुरुष भी सर्वत्र आत्माको नहीं देख सक्ता है। हे पिता! तुम भेद बुद्धिको दूर करके सर्वत्र एकही आत्माको देखो। पुत्रके उपदेश करके देवशर्माभी आत्मज्ञानको प्राप्त हुवा ॥ ९० ॥

हे चित्तवृत्ते! एक और निर्मोही राजाका इतिहास तुमको सुनाते हैं:-

किसी नगरमें एक धर्मात्मा निर्मोही नाम करके राजा रहताथा तिस राजाका पुत्र एकदिन वनमें शिकार खेलनेको गया, वहाँपर तिसको बडी प्यास थी, तब वह वनमें एक ऋषिके आश्रमपर गया ऋषिने तिसको जल पिलाकर पूँछा तुम किसके लडकेहो? उसने कहा मैं निर्मोही राजाका लडकाहूं, ऋषि तिसकी बातोंको सुनकर कहने लगा निर्मोही और राजा ये दो बातें एकमें कैसे होसक्ती है? जो निर्मोही होगा वह राजा नहीं होगा जो राजा होगा वह निर्मोही नहीं होगा। राजाके लडकेने ऋषिसे कहा यदि आपका विश्वास नहो तो जाकर मालूम करलीजिये, याने परीक्षा करलीजिये। ऋषिने राजपुत्रसे कहा हमारे आनेतक

तुम इसी हमारे आश्रमपर बैठो मैं जाकर परीक्षा करके आताहूं । ऋषि ज राजभवनमें गये तब द्वारपर राजाकी लौंडी खडीथी उससे ऋषिने जाकर कहा।

## सवाल ऋषिका दोहा ।

तू सुन चेरी स्यामकी, बात सुनावों तोहिं ।
कुँवर विनास्यो सिंहने, आसन परयो मोहिं ॥ १ ॥

## जबाब लौंडीका दोहा ।

न मैं चेरी स्यामकी, नहिं कोइ मेरा स्याम ।
प्रारब्ध वश मेल यह, सुनो ऋषी अभिराम ॥ २ ॥

ऋषि लडकेकी स्त्रीसे कहते हैं:—

## दोहा ।

तू सुन चातुर सुन्दरी, अबला यौवनवान् ।
देवी वाहन दलमल्यो, तुम्हरो श्रीभगवान् ॥ ३ ॥

लडकेकी स्त्री कहतीहै:—

## दोहा ।

तपिया पूरब जन्मकी, क्या जानतहैं लोक ।
मिले कर्मवश आन हम, अब विधि कीन सँयोग ॥ ४ ॥

फिर ऋषिने कुँवरकी मातासे कहा:—

## दोहा

रानी तुमको विपति अति, सुत खायो मृगराज ।
हमने भोजन न कियो, तिस मृतकके काज ॥ ५ ॥

ऋषिसे रानी कहतीहै:—

## दोहा ।

एक वृक्ष डाले घने, पंछी बैठे आय ।
यह पाटी पीरी भई, उड उड चहुँ दिशि जाय ॥ ६ ॥

ऋषिने राजासे कहा:—

## दोहा।

राजा मुखते राम कहो, पल पल जात घडी।
सुतखायो मृग राजने, मेरे पास खडी ॥ ७ ॥

ऋषिसे राजा कहतेहैं:—

## दोहा।

तापया तप क्यों छांडियो, इहाँ पलक नहिं सोग।
वासा जगत सरायका, सभी मुसाफिर लोग ॥ ८ ॥

जब कि ऋषिने सबके उत्तरोंको सुना तब ऋषिको विश्वास होगया जो ठीक राजा निर्मोहीहै, बल्कि राजाका घरभर निर्मोहीहै। ऋषिने आकर अपने आश्रमपर राजपुत्रसे कहा कि, आपने सत्य कहाथा। हमने परीक्षा करली, ठीक राजा निर्मोहीहै। विवेकाश्रम कहते हैं हे चित्तवृत्ते! जो इस प्रकार निर्मोही है वही ज्ञानी है और वही जीवन्मुक्त है ॥ ९१ ॥

चित्तवृत्ती कहतीहै हे विवेकाश्रम! आपने कहाहै कि, संपूर्ण जगत्में एक-ही चेतन आत्मा व्यापकहै और वही आत्मा संपूर्ण शरीरोंमेंभी व्यापकहै। जब कि, एकही आत्मा ऊंच नीच सर्व शरीरमें व्यापकहै तब फिर एक जीवको सुख होनेसे सर्व जीवोंको सुख होना चाहिये, एकको दुःख होनेसे सर्व जीवोंको दुःख होना चाहिये, एकके मृत्यु होजानेसे सर्वकी मृत्यु हो जानी चाहिये, एकका जन्म होनेसे सबका जन्म होना चाहिये। विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्त-वृत्ते! जैसे एकही आकाश अनेक घटादिकोंमें व्यापक होकर स्थितहै, एक घटके फूट जानेसे सब घट नहीं फूट जातेहैं, एक घटके उत्पन्न होनेसे सब घट उत्पन्न नहीं होजाते। क्योंकि घटादिरूप उपाधियें सब भिन्न २ और फिर घटादिकोंकी उत्पत्ति नाशसे आकाशकी उत्पत्ति तथा नाश नहीं होता है। क्योंकि आकाश व्यापकहै, उपाधियें परिच्छिन्नहैं। तैसे एक शरीरकी उत्पत्ति नाशसे भी आत्माकी उत्पत्ति नाश नहीं होता है। क्योंकि आत्मा व्यापकहै निरवयव है, उपाधियें सर्व सावयवहैं और परिच्छिन्नहैं। जैसे किसी एक घटमें धूम या धूली आदिकोंके भरजानेसे सर्व घटोंमें धूमादिक नहीं भर जातेहैं तैसे एक शरीरमें सुख या दुःख होनेसे सर्व शरीरोंमें नहीं होते हैं ॥ ९२ ॥

और दृष्टांतको कहतेहैं:—

एक शरीरके संपूर्ण हस्त पादादिकोंमें एकही आत्मा नख शिखतक व्यापकहै परंतु पादमें दुःख होनेसे हाथमें दुःख नहीं होताहै । हाथमें सुख होनेसे पादमें सुख नहीं होताहै । एकही कालमें पादमें शीतलता और शिरमें उष्णता होने सर्व शरीरमें उष्णता शीतलता नहीं होतीहै । आत्मा तो संपूर्ण शरीरके अवयवों एकहीहै, फिर सुख दुःखादिक क्यों नहीं बराबरही एक कालमें होते हैं, जैसे ही एक शरीर संपूर्ण अवयवोंमें एक आत्माके होने परभी सुख दुःखादि बराबर अवयवोंमें नहीं होते हैं । तैसे ही ब्रह्मांड भरके शरीरोंमें एक आत्माके होनेसे सर्व शरीरोंमें सुख दुःख बराबर नहीं होतेहैं, क्योंकि संपूर्ण शरीर एकही विराट अवयव हैं, विराटके शरीरमें आत्मा एकही है । हे चित्तवृत्ते ! एक आत्माके होने कोई भी संदेह नहीं है और नाना आत्माके माननेमें श्रुतियुक्तिकाभी विरोध है । प्रथम श्रुतियोंके विरोधको दिखाते हैं ।

कैवल्योपनिषद:—

**अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं शिवं प्रशान्त-**
**ममृतं ब्रह्मयोनिम् ॥ तमादिमध्यान्तविहीन-**
**मेकं विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम् ॥ १ ॥**

वह ब्रह्म अचिंत्यहै, अनन्तरूपहै, कल्याणरूपहै, शान्तस्वरूपहै अमृत मायाकाभी कारणहै और आदि मध्य अन्तसे भी हीनहै, विभुहै, एकहै, आनन्द रूपहै, अद्भुतहै ॥ १ ॥

**यत्परं ब्रह्म सर्वात्मा विश्वस्यायतनं महत् ।**
**सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं स त्वमेव त्वमेव तत् ॥ २ ॥**

जो ब्रह्म सर्व प्राणियोंका आत्माहै संपूर्ण विश्वका आधारहै, सूक्ष्मसेभी सूक्ष्म नित्यहै, सो तूहीहै और तू वही है ॥ २ ॥

श्वेताश्वतरोपनिषद:—

**एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरा-**
**त्मा । कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता कें-**
**वलो निर्गुणश्च ॥ १ ॥**

एकही चेतनदेव संपूर्ण भूतोंमें छिपाहुवाहै, सर्वमें व्यापकहै, संपूर्ण भूतोंका अन्तरात्माहै, कर्मोंकाभी अध्यक्ष याने ज्ञाताहै, संपूर्ण भूतोंके निवासका स्थानभीहै, साक्षी है, चेतनहै, द्वैतसे रहितहै, निर्गुणहै ॥ १ ॥

**नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः ।**
**यद्यच्छरीरमादत्ते तेनतेन स युज्यते ॥ २ ॥**

न यह आत्मा स्त्रीहै न पुरुषहै, न नपुंसकहै, किंतु जिस शरीरको धारण करताहै तिसी २ के साथ जुडजाताहै ॥ २ ॥

**सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।**
**सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत् ॥ ३ ॥**

संपूर्ण इन्द्रियोंके गुणोंका प्रकाशकहै और आप संपूर्ण इन्द्रियोंसे रहितहै सर्वका स्वामीहै, सर्वका प्रेरकहै और सर्वका आश्रयभीहै ॥ ३ ॥

**अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः । स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम् ॥ ४ ॥**

तिस चेतनके न हाथ है न पादहै, फिरभी बडेवेगसे चलताहै और ग्रहण करताहै, विनाही नेत्रोंके देखताहै, विनाही कानोंके सुनताहै, और जानने योग्य पदार्थोंको जानताहै, तिसको जाननेवाला दूसरा कोईभी नहीं है, तिसीको आदि पुरुष और सबसे महान् कहतेहैं ॥ ४ ॥

इत्यादि अनेक श्रुति वाक्य जीव ब्रह्मके अभेदको और चेतनकी एकताको कथन करते हैं और युक्तियोंसेभी एकही चेतन साबित होताहै ॥

चित्तवृत्ती कहती है हेविवेकाश्रम! जीव ईश्वरके स्वरूपको भिन्न २ करके तूं मेरे प्रति कहो, फिर उनकी ऐक्यताको कहो । विवेकाश्रम कहतेहैं हे चित्तवृत्ते! जीव ईश्वरके स्वरूपको मैं आपसे मतभेदसे दिखाताहूं । प्रकटार्थकारका यह मतहै कि, अनादि अनिर्वचनीय जो मायाहै, तिस मायामें जो चेतनका प्रतिबिंबहै, तिस प्रतिबिंबका नाम तो ईश्वरहै और तिस मायाका आवरण विक्षेप शक्तिवाला जो अविद्यानामवाला भागहै तिस अविद्याके जो अन्तःकरणरूपी अनेक प्रदेशहैं, उनमें जो चेतनका प्रतिबिंबहै, उसका नाम जीवहै ।

प्रश्न—वह माया चेतनसे भिन्नहै या अभिन्नहै ? ॥

उत्तर—वह माया चेतनसे भिन्न नहीं है, क्योंकि भिन्नमाननेमें "नेह नानास्ति किञ्चन" इत्यादि श्रुतियोंसे विरोध होगा और अभिन्न भी नहीं कहसक्ते हैं । क्योंकि जड चेतनका अभेद कदापि नहीं होसक्ताहै और माया चेतनका भेदाऽभेदभी नहीं कह सक्ताहै अर्थात् चेतनसे माया भिन्नभी है और अभिन्नभी है, इसमें कोई दृष्टांत नहीं मिलताहै और जडचेतनका भेदाऽभेद किसी प्रकारसेभी नहीं होसक्ता है । क्योंकि उभय विरोधी धर्म एकमें नहीं रह सक्तेहैं, इस लिये भेदाऽभेदभी नहीं बनताहै । फिर यदि मायाको सत्य माना जाय तब अद्वैत श्रुतिसे विरोध आताहै । यदि असत्य माना जाय तब मायाको जडजगत्की कारणता नहीं बनती है । क्योंकि असत्से जगत्की उत्पत्ति नहीं होसकती है । असत् नाम अभावकाहै, यदि अभावसे उत्पत्ति मानीजायगी तब घटरूपी कार्यके लिये मृत्तिकाकी कुछभी जरूरत नहीं होगी, सर्वत्रही सब वस्तुओंका अभाव विद्यमानहै, सर्वत्र सब पदार्थोंकी उत्पत्ति होनी चाहिये, ऐसा तौ नहीं देखते हैं, इस लिये अभावसे भाव पदार्थकी उत्पत्ति नहीं होती है इसलिये माया असत्य रूपभी नहीं है और सत् असत् उभयरूपभी माया नहीं है । क्योंकि विरोधी धर्म दो एकमें रह सक्तेहैं और माया सावयव या निरवयवभी नहीं है, यदि मायाको सावयव माना जायगा तब तिसका कोई दूसरा कारण मानना पडेगा क्योंकि जो सावयव पदार्थ होताहै वह जरूर किसी कारणसे उत्पन्न होताहै । इसलिये तिसको सावयवभी नहीं मान सक्ते हैं कारण अनवस्था आदिक दोष आवेंगे और मायाको निरवयवभी नहीं मान सक्ते हैं, क्योंकि निरवयव मायासे सावयव जगत्की उत्पत्तिभी नहीं होसक्ती है और सावयव निरवयव दोनोंरूप एकमें रह नहीं सक्ते हैं जो सावयव होगा, वह कदापि निरवयव नहीं होसक्ता है। जो निरवयव होगा वह कदापि सावयव नहीं होसक्ता है एक तो दोनों परस्पर विरोधी हैं, दूसरा इसमें कोई दृष्टांतभी नहीं मिलताहै, इस वास्ते मायाका स्वरूप अनिर्वचनीय है । अनिर्वचनीयका अर्थक्याहै ? जिसका कुछभी निर्वचन न होसक्ता प्रथमतो मायाके कार्यकाही कोईभी निर्वचन नहीं करसक्ताहै । देखो अतिछोटेसे वटके वीजमें इतना बडा वटका वृक्ष रहताहै और भावरूप करकेही रहताहै, अभावरूप करके नहीं रहता । क्योंकि अभा-

की उत्पत्ति नहीं होती है फिर हम पूँछते हैं अनेक शाखा और पत्तोंके सहित इसे छोटेसे बीजमें इतना वडा वृक्ष किसतरहसे रह सक्ताहै । इसको आप किसी तरहसेभी नहीं वतला सक्तेहैं फिर हरएक बीजमें कारणरूप करके कार्य विद्यमानहै, कार्योंमें अनेक प्रकारकी रचना हमको दिखाई पडतीहै कारणमें वह नहीं दिखातीहै और सूक्ष्मरूप तिसमें तिसकी सब रचना विद्यमानहै तिस छोटे बीजमें इतनी वडी रचना क्योंकर रह सक्तीहै ? इसका निर्वचनभी तुमसे कुछ नहीं बनेगा, तब अर्थसेही कार्य्यभी अनिर्वचनीय सिद्ध होगा । जिसका कार्य अनिर्वचनीयहै, तिसका कारण तो अर्थसेही अनिर्वचनीय सिद्धहुवा और साइन्स वालोंने पैंसठ तत्त्वमानेहैं, जल और अग्निको इन्होंने स्वतंत्र तत्व नहीं मानाहै, किंतु और तत्वोंके संयोगसे इनकी उत्पत्ति उन्होंने मानी है । दोप्रकारकी भिन्न २ वायुके मिलनेसे जलकी उत्पत्ति इन्होंने मानीहै । हम पूछते हैं उन दो प्रकारकी वायुमें प्रथम जलथा या नहीं था । यदि कहो था तब पृथक् तत्व जल साबित होगया । यदि कहो उन दो प्रकारकी वायुमें जल नहीं था तब उनके संयोगसेभी जल उत्पन्न नहीं होसक्ताहै । क्योंकि अभावसे भावकी उत्पत्ति कदापि नहीं होसक्तीहै और जलका निर्वचनभी कुछ न हुवा इसी प्रकार एक २ वृक्षके पत्तेका निर्वचन करोगे तब सैकडों बरसों तकभी नहीं होगा और न पूर्व हुवाहै जिस मायाके अनंत कार्य्योंमेंसे एक कार्य्यकाभी निर्वचन नहीं होसक्ता है, उस कारणरूप मायाका कौन निर्वचन करसक्ताहै । फिर जब पुरुष सो जाताहै, तब इसको अपने भीतर वडे २ देश पर्वत, नदियें, हाथी, घोडे आदिक दिखाते हैं और जिस नाडीमें मनके जानेसे स्वप्न आताहै वह नाडी बालसे भी महीनहै, उसमें सूईके नोककी भी जगह नहीं है और हाथी घोडे आदिकोंका कोई कारणभी चीनादिक वहांपर नहीं है और जाग्रत् होनेपर सब हाथी घोडे. आदिक लयभी होजातेहैं । अब इसका निर्वचन कौन करसक्ताहै, जो कहाँसे वह सब पैदा होतेहैं और कहाँपर लय होजातेहैं । जैसे स्वप्नके पदार्थोंका और उनके कारणका कुछ निर्वचन नहीं होसक्ताहै । तैसे माया और मायाके कार्यकाभी कुछ निर्वचन नहीं होसक्ताहै । तब दोनोंही अनिर्वचनीय साबित हुए उस अनिर्वचनी मायामें जोकि चेतनका प्रतिबिंबहै, उसका नाम तो ईश्वरहै मायामें आवरण विक्षेप

शक्तिवाले जो कि परिच्छिन्न अनंत प्रदेशहैं उन्हींका नाम अविद्याहै । उन प्रदेशोंमें जोकि चेतनका प्रतिबिंबहै उसका नाम जीवहै, प्रदेशोंके अनंत होनेसे जीवभी अनंतहैं । इस मतमें एकही अनिर्वचनीय प्रकृतिमें प्रदेश प्रदेशीरूपकी कल्पना करके जीव और ईश्वरको प्रतिबिंबरूप करके माना है ॥ १ ॥

अब तत्त्वविवेककारके मतको दिखलाते हैं:—

त्रिगुणात्मिका एक मूल प्रकृति है, तीनों गुणोंकी साम्यावस्थाका नामहीं मूलप्रकृतिहै । वह मूलप्रकृति आपही माया और अविद्या रूपोंवाली होजाती है। और एकही चेतनको जीव ईश्वर दो रूपोंवालाभी कर देती है शुद्ध सत्वगुण प्रधान वही प्रकृति माया कहलाती है । और मलिन सत्व प्रधान वही प्रकृति अविद्या कहलाती है तिस मायामें जोकि चेतनका प्रतिबिंब पडताहै तिसका नाम ईश्वरहै और अविद्यामें जो प्रतिबिंबहै तिसका नाम जीवहै "जीवेशावाभासेन करोति माया च अविद्या च स्वयमेव भवति" । वह मूलप्रकृति जीव ईश्वरको अपनेमें आभास करके कर देतीहै और आपही माया और अविद्यारूपभी हो जातीहै यही श्रुति जीवेश्वरकी सिद्धिमें प्रमाणहै और एकही प्रकृतिमें सत्व गुणकी शुद्धि अशुद्धिसे माया अविद्याका भेदभी कल्पना किया है ॥ २ ॥

अब अपरमतसे कहते हैं:—

एकही मूलप्रकृति विक्षेप प्रधानतासे माया और आवरण शक्ति प्रधानतासे अविद्या कही जातीहै । माया ईश्वरकी उपाधि है और अविद्या जीवकी उपाधिहै और बिंबरूप साधारण चेतनके वह आश्रितभीहै, तथापि अज्ञोहं ऐसा जीवकोही अनुभव होताहै, ईश्वरको नहीं होता । क्योंकि जीवकी उपाधिमेंही आवरण-विक्षेप शक्तिहै, ईश्वरकी उपाधिमें वह नहीं है इसलिये ईश्वरको अज्ञोहं ऐसा नहीं होताहै । इस मतमें आवरण विक्षेप शक्तिका भेद कल्पना करके जीव ईश्वरका भेद माना है ॥ ३ ॥

अब संक्षेपसे शारीरककारके मतको दिखातेहैं:--

वह कहताहै "कार्य्योपाधिरयं जीवः कारणोपाधिरीश्वरः" कार्योपाधिवाला जीवहै, कारणोपाधिवाला ईश्वरहै । इस श्रुतिके अनुसार अविद्यामें प्रतिबिंबका नाम ईश्वरहै और अविद्याका कार्य्य जो अन्तःकरण तिसमें प्रतिबिंबका नाम जीवहै और जहाँपर बिंब एक हो, वहांपर उपाधिके भेदसे विना प्रतिबिंबका

हाँ बनताहे। इसलिये ईश्वरकी उपाधि अविद्या भिन्नहै और जीवकी अंतःकरण भिन्नहै। दोनों उपाधियोंके भेद होनेसे जीव ईश्वरका भेदहै, एकहै, इसलिये ईश्वरभी एकहै, अन्तःकरण अनन्तहैं, जीवभी अनन्तहैं, का सम्बन्ध ईश्वरके साथहै, अन्तःकरणका सम्बन्ध जीवके साथहै। जैसे आकाशका अवच्छेद मानतेहैं, तैसे यदि अन्तःकरण करके चेतनका माना जावैगा तब दोष आवैगा सो दिखातेहैं। इस लोकमें ब्राह्मणादि गत जो अंतःकरण, तदवच्छिन्न जो चेतन प्रदेशहै, सो तो कर्मोका होगा और परलोकमें देवादि शरीरमें जो अन्तःकरण तदवच्छिन्न चेतन भोक्ता होगा जोकि इस लोकमें अन्तःकरणावच्छिन्न चेतन प्रदेश कर्मोका , वह तो भोक्ता नही होगा, क्योंकि वह परलोकमें देवादि शरीरमें है और जो देवादि शरीरमें अन्तःकरणावच्छिन्न चेतनप्रदेश है, वह इस नहींहै, वह कर्ता नहुवा तब अन्य करके किये हुवे कर्मोका फल भोगेगा। यही अवच्छेद वादमें दोष आताहै, इसी हेतुसे अन्तःक- चेतन जीव नहीं होसक्ताहै, किंतु अन्तकरणमें जो कि चेतनका वह जीव होसक्ताहै। घटरूप उपाधिके गमनाऽगमन होनेपरभी जैसे घटरूप उपाधिमें एकही सूर्यका प्रतिबिंब सर्वत्र उसी घटमें पडताहै, का भेद नहीं होता है। तैसे अन्तःकरणरूपी उपाधिके गमनाऽगमन परभी एकही चेतनका प्रतिबिंब तिसमें पडताहै, तब जो कर्ताहोगा वही भी होगा, कोईभी दोषनही आवैगा ॥ ४ ॥

अब अवच्छेद वादिके मतको दिखातेहैं:—

अन्तःकरणावच्छिन्न चेतनका नाम जीवहै, अन्तःकरणानवच्छिन्न चेतनका ईश्वरहै, इस मतमें कोईभी दोष नहीं आताहै, किंतु प्रतिबिंबवादमेंहीं दोष है सो दिखातेहैं। जैसे जलसे बाहर आकाशमें स्थित जो सूर्यहै, तिसीका बिंब जलमें पडताहैं तैसे उपाधियोंसे बाहर स्थित चेतनकाभी प्रतिबिंब उपाधियोंमें मानना पडेगा। तब ब्रह्मांडसे बाहर कहीं स्थित चेतन सिद्धहोगा। ब्रह्मांडके अन्तर्गत नहीं सिद्ध होगा। तब फिर चेतनभी परिच्छिन्न होजायगा परिच्छिन्न होनेसे व्यापक नहीं सिद्धहोगा, किंतु नाशी सिद्धहोगा? एक तो प्रतिबिंबवादमें यह दोष आवेगा, दूसरा व्यापक चेतन निरावयव निराकारका

प्रतिबिंब कहनाभी नहीं बनताहै, क्योंकि ऐसा देखनेमें आताहै। कि, जलसे वहिर्गत मेघाकाशका जलमें प्रतिबिंब पडताहै, जलगत आकाशका जलमें प्रतिबिंब नहीं पडताहै । तैसेही ब्रह्मांडके वहिर्गत चेतनकाही प्रतिबिंबभी मानना होगा । ब्रह्मांडके अन्तर्गत चेतनका तो नहीं मनना होगा, तब फिर "विज्ञाने तिष्ठन्" जो विज्ञानके अन्तरस्थित होकर प्रेरणा कर्ताहै इत्यादि श्रुतियोंसे विरोधभी जरूर आवैगा और ईश्वरभी ब्रह्मांडसे बाहिर सिद्ध होगा। इसी हेतुसे प्रतिबिंबवाद असंगतहै । यदि उपाधिके अन्तर्गतकाभी प्रतिबिंब मानाजावैगा तब जैसे जलसे वहिर्गत मुखका जलमें प्रतिबिंब पडताहै, तैसे जलके अन्तर्गत मुखकाभी जलमें प्रतिबिंब पडना चाहिये सो तो देखनेमें नहीं आताहै। और जैसे जलसे वहिर्गत मुखका प्रतिबिंब पडताहै तस अन्तःकरणसे वहिर्गत चेतनकाभी प्रतिबिंब अन्तःकरणमें कहना होगा । तबभी पूर्वोक्त श्रुतिसे विरोध बनाही रहेगा । और जो वादीने अवच्छेदवादमें कर्ताभिन्न भोक्ताभिन्न होजानेका दोष दियाहै वह दोष प्रतिबिंबवादमेंभी तुल्यही लगताहै। तथाहि यदि संपूर्ण अन्तःकरणोंमें ब्रह्मांडसे बहिर्गत अर्थात् व्यवहित चेतनका प्रतिबिंब माना जावै तब तो इस लोक परलोकमें प्रतिबिंबका भेद सिद्ध नहीं होगा । तथापि एक तो ब्रह्मांडके बाहिर्गत समग्र चेतनका अन्तःकरणमें प्रतिबिंब किसी प्रकारसेभी नहीं पडसक्ताहै और न तिसके एकही देशका प्रतिबिंब पडसक्ताहै । क्योंकि ब्रह्मांडसे वहिर्गत समग्र चेतनके साथ या तिसके एक देशके साथ अन्तःकरणकी सान्निधि नहीं है और विना सान्निधिके प्रतिबिंब पड नहीं सक्ताहै । जैसे ब्रह्मांडसे वहिर्गत आकाशका जलमें प्रतिबिंब नहीं पडसक्ता है, तैसे ब्रह्मांडसे वहिर्गत चेतनकाभी प्रतिबिंब नहीं पडसक्ताहै । यदि ब्रह्मांडके अन्तर्गत अन्तःकरण सान्निहित चेतनका प्रतिबिंब अन्तःकरणमें मानोगे तबभी ब्रह्मांडभरके अन्तर्गत चेतनका प्रतिबिंब अन्तःकरणमें नहीं मान सकोगे । क्योंकि ब्रह्मांडभरके चेतनकी अन्तःकरणके साथ सान्निधि नहीं है, किंतु ब्रह्मांडके अन्तर्गत जो चेतन तिसीके किसी प्रदेशके साथ अन्तःकरणकी सन्निधि होगी उसी चेतनके प्रदेशका प्रतिबिंबभी तुमको मानना पडेगा । तब फिर पूर्ववाला दोष लगाही रहेगा । अन्तःकरणके गमनाऽगमन करनेसे बिंबके भेदसे प्रतिबिंबका भेदभी अवश्यही होगा, तब फिर

ने अकृतकी प्राप्तिरूप दोष होगा । यदि प्रतिबिंब रूप जीवकी अन्तः-
र रूप उपाधिका त्याग करके अविद्याको जीवकी उपाधि मानैगा तब
का गमन बनैगा नहीं । तब इस लोक परलोकमें प्रतिबिंबका भेदभी
नहीं होगा और प्रतिबिंबके भेदके न सिद्ध होनेसे पूर्वोक्त दोषभी नहीं
है ? सो अवच्छेदवादमें हमभी अविद्या अवच्छिन्न चेतनकोही जीव मान
हैं । हमारे मतमेंभी अविद्याके गमनाऽगमनके अभाव होनेसे चेतनका भेद
होगा, चेतनके भेदका अभाव होनेसे पूर्वोक्त दोषभी नहीं आवेगा । इन्हीं
से प्रतिबिंबका निषेध करके अवच्छेदवादीने अन्तःकरणावच्छिन्न चेतनकोही
मानाहै और अन्तःकरण अनवच्छिन्न चेतनको तिसने ईश्वर मानाहै ॥ ९ ॥

अब औरके मतको दिखातेहैं:—

अन्य कोई कहताहै प्रतिबिंबवाद और अवच्छेदवादमें श्रुतिका विरोध दूर
नहीं होताहै श्रुति कहती है जो जीवात्माके अन्तःस्थित होकर जीवात्माको प्रेरणा
करे सोई ईश्वरहै, सो जीवात्माके अन्तःस्थित होनाही प्रथम ईश्वरको
नहीं बनताहै सो दिखातेहैं । अवच्छेदवादमें अन्तःकरणके भीतर जो चेतन
मानाहै, उसीको जीव मानाहै और अन्तःकरणके बाहर जो चेतनहै उसको
ईश्वर मानाहै अब इस मतमें अन्तःकरणके अंतर ईश्वर है नहीं, तब जीवको
प्रेरणा कैसे करेगा और तिसके कर्मोंको कैसे जानेगा ! यदि कहो वह ईश्वर
सर्वव्यापकहै, तिसके भीतरभी रहेगा बाहर भी रहेगा सो नहीं बनता । निरा-
कार निराकार दो पदार्थ एक स्थानमें नहीं रह सक्तेहैं जो रहेगा तब वह उपाधि
परिच्छिन्न होजायगा परिच्छिन्न होनेसे वह जीवही होगा सो परिच्छेदवाला
तो तुमने पहलेही मान लियाहै दो जीव एक अन्तःकरणमें तुमनेभी माने
है और न जीव ईश्वर दोकी उपाधि अन्तःकरण होसक्ताहै, इसी युक्तीसे
विरोध बनाही रहेगा फिर येही दोष प्रतिबिंबवादमेंभी होगा । पूर्वोक्त मतमें
प्रतिबिंबको ईश्वर मानाहै और अन्तःकरणमें प्रतिबिंबको जीव माना है
अविद्यामें जो प्रतिबिंबहै, जब अन्तःकरणमें नहीं है और प्रतिबिंबका प्रतिबिंब
नहीं । तब प्रतिबिंबवादमेंभी जीवके अन्तर्गत ईश्वर न रहा तिस मतमें भी
बराबरही लगारहा । और प्रकटार्थ करके मतमेंभी यही दोष लगाही रहेगा ।
, उसने भी मायामें प्रतिबिंबको ईश्वर मानाहै और मायाके प्रदेशोंमें चेतनके

प्रतिबिंबको जीव मानाहै । अब इस मतमेंभी मायामें जो प्रतिबिंबहै, वह मायाके प्रदेशोंमें नहींहै और जो आवरण विक्षेप शक्तिवाले प्रदेशोंमें प्रतिबिंबहै मायामें वह नहींहै । तबभी जीवके अन्तर्गत ईश्वर साबित न हुवा और दो प्रतिबिंब एक उपाधिमें नहीं रह सक्तेहैं । यदि कहो जलमें सूर्य्य और आकाश तथा इतर वृक्षादिकोंका प्रतिबिंब एकही जलरूप उपाधिमें देखतेहैं सो दृष्टांत यहांपर नहीं घटताहै क्योंकि सूर्य्य और वृक्षादि सब भिन्न २ सावयव पदार्थहैं उनका प्रतिबिंब जलरूप उपाधिमें पडभी सक्ताहै । परन्तु एकही आकाशके दो प्रतिबिंब एक घटमें जैसे नहीं पडसक्तेहैं । तैसे एकही चेतनके एकही उपाधिमें दो प्रतिबिंब नहीं पडसक्तेहैं । तब जीवके अन्तर्गत ईश्वरभी सिद्ध न हुवा और पूर्वोक्त दोष लगाही रहा । और जिसमेंके मत एकही प्रकृतिके माया अविद्या दो भेद मानकर जीव ईश्वरका भेद सिद्ध किया उस मतमेंभी मायामें जो प्रतिबिंबहै वह अविद्यामें नहींहै अविद्यामें भिन्नहै, मायामें भिन्नहै, इस मतमेंभी जीवके अन्तर्गत ईश्वर सिद्ध नहीं होताहै श्रुति विरोध इस मतमेंभी हट नहीं सक्ताहै । सांख्यमतवालोंने ईश्वरको नहीं मानाहै किन्तु जीवकोही चेतन रूप करके व्यापक माना अर्थात् इनके मतमें ब्रह्माण्ड भरके जीव व्यापकहैं और चेतनरूपहैं, असंग निराकार निरावयवहैं, जीव कर्त्ता नहीं, भोक्ताहैं । कर्तृ प्रकृतिहै, इनके मतमें एक तो यह दोष पडताहै जो जड प्रकृतिको कर्तृत्वपना नहीं बनताहै, यदि जडको कर्त्ता माना जावैगा तब मृत्तिका आपही घटको बनालेगी घटके बनानेके लिये कुलालकी आवश्यकता नहीं होगी । दूसरा निरवयव निराकार अनेक विभु एक देशमें रह नहीं सक्तेहैं । इन दोनोंमें कोईभी दृष्टांत नहीं मिलताहै । और नैयायिक जीव और ईश्वर दोनोंको विभु और जड मानताहै चेतनता उनका गुण मानताहै । इसके मतमेंभी एक तो वही दोष आवैगा जो बहुतसे विभु एक देशमें नहीं रह सक्तेहैं । यदि मानेंगे तब कर्मोंका संकर होजायगा और जीवके कर्म ईश्वरमेंभी जारहेंगे । क्योंकि दोनों निराकार व्यापकहैं भेदक तो कोई ईश्वर जीवके अन्तरमें नहींहै दोनोंको निराकार होनेसे दोनों एकही होजायेंगे तब जीव ईश्वरकी कल्पनाभी इनकी मिथ्या होजायगी । फिर जड निराकार होभी नहीं सक्ताहै । यदि मानेंगे तब शून्यवादही सिद्ध होगा और जडका धर्म चेतनताभी नहीं होसक्तीहै । इसमेंभी कोई दृष्टांत नहीं मिलताहै इसलिये इनका

मत श्रुतियुक्तिसे विरुद्ध होनेसे असंगतहै वैष्णव और आचारी लोक जीवात्माको निरवयव और अणु परिमाणवाला मानतेहैं और चेतनभी मानतेहैं, चेतन निरवयव विना उपाधिके अणु परिमाणवाला नहींहो सक्ताहै और फिर केवल चेतनमें चेतन पहभी नहीं सक्ताहै। इस मतमेंभी ईश्वरको प्रेरणा करनी जीवको नहीं बनतीहै। इसी तरह औरभी मतोंवालोंने अपने ईश्वर भिन्न २ मानेहैं और फिर भिन्न उनके लोक मानेहैं उन सबके मततो सर्वथा श्रुति युक्ति विरुद्ध हो त्यागने योग्यहैं। पूर्व जो मत दिखायेहैं उनको यदि सूक्ष्मदृष्टिसे देखाजाय तब उन सब मतोंमें जीव ईश्वरका भेद सिद्ध नहीं होताहै। इसीसे यह वार्ताभी साबित होती है जो भेद कल्पितहै, वास्तवसे अभेदहीहै। अब अपने मतको दिखातेहैं। न तो प्रतिबिंबरूप जीवहै और न अवच्छेदरूपही जीवहै, किंतु जैसे कर्णको सूतपुत्र भ्रम हुवाथा जो मैं सूतपुत्रहूं और अपनेको सूतपुत्र करकेही मानताथा और वास्तवसे वह सूतपुत्र नहींथा, तैसे अवच्छेद और प्रतिबिंब भावसे रहित ब्रह्मको अनादि अविद्याके सम्बन्धसे अपनेमें जीवत्वका भ्रम हुवाहै और अपनी अविद्या करके जीव भावको प्राप्त जो ब्रह्महै, उसीने सर्व प्रपंचकी कल्पना कीहै अर्थात् वही ब्रह्मही सर्व प्रपंचका कल्पना करनेवालाहै। जैसे और संपूर्ण जगत्की तिसने कल्पनाकीहै तैसे सर्वज्ञत्वादि धर्मोंवाले ईश्वरकी कल्पनाभी तिसी जीवने ही कीहै। अर्थात् ईश्वरभी जीव करकेही कल्पितहै। जैसे स्वप्नमें जीव सर्वज्ञत्वादिक गुणों करके वसिष्ठ ईश्वरकी कल्पना करके तिसकी उपासनाको कर्ताहै और कल्पित उपासनाके कल्पित फलकोभी प्राप्त होताहै, तैसे जाग्रत्‌मेंभी जीव ईश्वरकी कल्पना करके तिसकी उपासना करके कल्पित फलको प्राप्त होताहै। वास्तवसे जीवत्व ईश्वरत्व दोनों धर्म चेतनमें कल्पितहैं। एक चेतन धर्मही सत्य है॥ ६॥

अब एक जीव वाद और अनेक जीव वादको दिखातेहैं:—

एक जीव वादी कहताहै एकही शरीर सजीवहै, बाकीके सब शरीर स्वप्नके शरीरोंकी तरह निर्जीवहैं. इसलिये जीव एकहीहै नाना जीव नहींहैं।

प्रश्न—जैसे एक शरीरमें हिताऽहित प्राप्ति परिहारार्थ चेष्टा प्रतीत होतीहै तैसे संपूर्ण शरीरोंमेंभी हिताऽहित प्राप्ति परिहारार्थ चेष्टा प्रतीत होतीहै इसवास्ते ऐसा कथन नहीं बनताहै जो एकही शरीर सजीवहै और बाकीके शरीर सब निर्जीवहैं।

उत्तर--जैसे स्वप्नकालमें स्वप्नके द्रष्टाकी दृष्टिसे स्वप्नके कल्पेहुए जीव स्व चेष्टावाले प्रतीत होतेहैं, परंतु वास्तवसे वह सब निर्जीवहैं तैसे जाग्रतके द्रष्टा करके कल्पे हुए जीवभी सब चेष्टावाले प्रतीत होते हैं, परन्तु वास्तवसे वह सब निर्जीव हैं जैसे स्वप्नका कल्पित निद्राहै तैसे जाग्रतका कल्पक अज्ञानहै जैसे जबतक निद्रा नाश नहीं होतीहै तबतक स्वप्नका सर्व व्यवहार होताहै तैसे जबतक आत्मज्ञान करके अज्ञानका नाश नहीं होताहै, तबतक जाग्रतकाभी सर्व व्यव होताहै जैसे स्वप्नसे जगाहुआ पुरुष स्वप्नरूप भ्रान्ति सिद्ध अपर पुरुषकी मुक्ति दूसरेके प्रति कथन करताहै, तैसे जीवकी भ्रान्ति सिद्ध शुकादिकोंकी मुक्ति तिसके प्रति शास्त्रबोधन करताहै जैसे स्वप्नमें स्वप्नका द्रष्टा गुरु और ईश्वर कल्पना करके उनकी उपासनाको करताहै और उनसे विद्या आदिक प्राप्त होताहै तैसे जाग्रतका द्रष्टाभी जाग्रतमें गुरु ईश्वरकी कल्पनाको करके उ आत्मविद्याको प्राप्त होकर मोक्षको प्राप्त होताहै ॥ १ ॥

अब एक जीववादमें दूसरेके मतको दिखातेहैं:--

पूर्व जो एक जीववादिने कहाहै, एक शरीर सजीवहै अपर शरीर सब निर्जीव ऐसा तिसका कथन ठीक नहींहै क्योंकि वह एक जीव एकही शरीरमें है और शरीरोंमें नहीं रहताहै। इस अर्थको सिद्ध करनेवाली कोईभी प्रबल श्रुति नहीं मिलती है और श्रुतियोंमें जीवसे भिन्न ईश्वरको सिद्ध किया है और ईश्वरकोही जगत्का कर्ताभी कहाहै जीवको जगत्का कर्ता नहीं कहाहै। ब्रह्मका प्रतिबिंब रूप हिरण्यगर्भही मुख एक जीवहै और बिंबरूप ब्रह्मको ईश्वर कहा है, सो जीवसे भिन्न करके मानाहै, वही हिरण्यगर्भ भौतिक प्रपंचका कर्ता और उसीको कारणोपाधिभी कहाहै । तिसी हिरण्यगर्भ मुख एक जीवके अपर सब प्रतिबिंब रूपभीहैं और जैसे पटपर लिखेहुए चित्रमें मनुष्योंके जो शरीरहैं, तिन पर दियेहुए जो पटाभासहैं उनके समान यह सब जीवभी जीवाभास रूपहैं और यह सब जीवाभास रूपही संसारी जीवहैं। जैसे हिरण्यगर्भका शरीर मुख्य जीव होनेसे सजीवहै, तैसे अपर शरीरभी जीवाभास होनेसे सजीवहैं ॥ २ ॥

तीसरे एक जीववादिके मतको दिखातेहैं:--

पूर्व मतमें कहाहै कि, बिंबरूप ईश्वरहै, तिसका प्रतिबिंबरूप हिरण्यगर्भ एक जीवहै, अपर जीव सब तिसका प्रतिबिंब रूप हैं प्रथम तो प्रतिबिंब

प्रतिबिंब नहीं होसक्ताहै, दूसरा हिरण्य गर्भका कल्पमें २ भेदहै, इससे यह वार्ता नहीं सिद्ध होतीहै जो किस हिरण्यगर्भका शरीर सजीवहै और वही मुख जीवहै और इसमें कोई निश्चित प्रमाणभी नहीं मिलताहै । जो हिरण्यगर्भका शरीर मुख जीवसे सजीवहै और अपर शरीर जीवाभासरूप जीवाभासोंसे सब सजीवहैं ये क्लिष्ट कल्पनाहै, किन्तु अविद्यामें जो कि चेतनब्रह्मका प्रतिबिंब है सोई जीवहै अविद्याके एक होनेसे वह जीवभी एकही है वह एकही जीव भोगके लिये संपूर्ण शरीरोंको आश्रयण करताहै, तिसी एक जीवके प्रतिबिंब-रूपही अपर सब जीवहैं । उन्हीं प्रतिबिंबाभासरूप जीवोंसे अपर शरीर सब जीवाभासरूपहैं और एक जीवात्माको मुख अमुखरूप करके जीवपनेकी कल्पना करनी असंगतहै और जैसे देवदत्तको अपने एकही शरीरके अवयव रूपी शिरमें सुख भान होताहै और पादमें दुःख भान होताहै, तैसे एकही जीवको सर्व शरीरोंमें अंगीकार करनेसे देवदत्तके शरीरमें हमको सुखहै, यज्ञदत्तके शरीरमें हमको दुःखहै । इस प्रकार सर्व शरीरोंमें तिस एकही जीवको सुख दुःखका अनुभव होना चाहिये और होता नहीं है । तथापि शरीरका भेद सुख दुःखके अनुसंधानका साधकहै, जैसे प्रथम शरीरमें और उत्तर शरीरमें जीव एकहै, तबभी प्रथम शरीरका याने पूर्व जन्मवाले शरीरके सुख दुःखका अनुसंधान होता नहीं, तिसके अनुसंधानका साधक शरीरका भेदहै तैसेही सब शरीरोंमें जो सुख दुःखका अनुसंधानहै, तिसका साधकभी शरीरका भेदहै ॥

इस मतमें अनेक शरीरोंमें एकही जीव अंगीकार किया है:—

एक जीववादमें तीन मतोंको दिखादियाहै, अब अनेक जीववादमें मतभेदको दिखातेहैं:—

अनेक जीव वादके प्रथम मतको दिखातेहैं:—

## तद्यो यो देवानां प्रत्यबुध्यत स एव तदभवत् ॥ १ ॥

देवतोंमेंसे जिस २ ने ब्रह्मको जाना सो २ ब्रह्मरूपही होगया । इत्यादि श्रुतियोंमें जीवके भेदसे बद्ध और मुक्तकी व्यवस्था कहीहै । सो इस रीतिसे एक जीववादमें बद्ध मुक्तकी व्यवस्था बनती नहींहै, क्योंकि श्रुति कहती है देवतोंमेंसे जिसने ब्रह्मको साक्षात्कार कियाहै वही ब्रह्मरूप हुवाहै वा जिसने नहीं किया

यह ब्रह्मरूप नहीं हुवा । इस श्रुतिने ज्ञानीको मोक्ष और अज्ञानीको बंध कहाहै । यदि एकही जीव मानाजावेगा तब यह बंधमोक्षकी व्यवस्था नहीं बनैगी । इस लिये अनेक जीववाद मानना चाहिये, जिस हेतुसे अन्तःकरण अनेक हैं इसी हेतुसे अन्तःकरण उपाधिवाले जीवभी अनेकहैं और अन्तःकरणोंका उपादान कारण जो मूल अज्ञान है वह एक है । वह अज्ञान शुद्ध ब्रह्मकेही आश्रि है और तिसीको विषय करता है । तिस अज्ञानकी निवृत्तिका नामही मोक्ष है और वह मूल अज्ञान सांश है, अर्थात् अंशोंवाला है निरंश नहीं है । औ फिर वह अज्ञान अनिर्वचनीय है, तिसके अंशभी अनिर्वचनीय हैं । अन्तःक णरूपी तिस अज्ञानके अंश हैं जिस अन्तःकरणरूपी अज्ञानके अंशमें ज्ञा उत्पन्न होता है उसी अंशकी निवृत्ति होती है, इतरअंशोंकी नहीं होती है॥१॥

अनेक जीववादमें अब दूसरे मतको दिखाते हैं:—

जीव चेतनका जो कि, अज्ञानसे सम्बन्ध है सोई बंध है और अज्ञान सम्बन्धके नाशका नामही मुक्ति है, अज्ञानकी निवृत्तिका नाम मुक्ति नहीं है केवल अज्ञानके सम्बन्धाऽभाव मात्रसेही बंधकी निवृत्ति होसक्ती है । यदि ऐ नहीं मानोगे तब मूल अज्ञानका विरोधी जो ज्ञान तिसके उदय होनेसे अग्निके सम्बन्धसे तूलका पिंड समग्र जलजाता है तैसे ज्ञानके सम्बन्धसे समग्र अज्ञानभी भस्म होजावैगा तब फिर बंध मोक्षकी व्यवस्थाभी नहीं बनैगी इन पूर्वोक्त युक्तियोंसे जीव नही सिद्ध होते हैं, जीव एक नहीं है ॥ २ ॥

अनेक जीववादमें अब तीसरे मतको दिखातेहैं:—

और कोई कहताहै "अहमज्ञः ब्रह्म न जानामि" मैं अज्ञहूं ब्रह्मको मैं नहीं जानताहूं । इस अनुभवसे यह सिद्ध होताहै कि, जीवहीं अज्ञानका आश्रय है विषय नहीं है । और शुद्ध ब्रह्म अज्ञानका विषयहै, आश्रय नहीं है, और अज्ञानके अंशरूप अन्तःकरण अनंत हैं, इसलिये तिनमें प्रतिबिंबरूप जीवभी अनेक हैं । जैसे एकही जाती अनेक व्यक्तियोंमें रहती है, तैसे एकही अज्ञान अनेक जीवोंमें रहता है, जिस अन्तःकरणमें ज्ञानकी उत्पत्ति होती है, ज्ञानकरके तिसी अन्तःकरणकी निवृत्ति होती है । अन्तकरणका निवृत्ति होनेपर प्रतिबिंबकीभी निवृत्ति होजाती है, अर्थात् अपने बिंबमें प्रतिबिंब लय होजाता है, । प्रतिबिंबके निवृत्त होनेके समकालमेंही अज्ञान भी तिस उपाधिको त्याग देता है वही मोक्ष है ।

"जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः" यह श्रुतिभी इसमें प्रमाण है, इस पक्षमें-अज्ञानका सम्बन्धही बन्ध है, तिसकी निवृत्ति मोक्ष है ॥ ३ ॥

अनेक जीववादमें अब चतुर्थ मतको दिखाते हैं:—

अविद्या अनेक तदुपाधिक जीवभी अनेक हैं, जिस जीवकी आत्मविद्याकरके अविद्या निवृत्ति होजाती है, वहीं मोक्ष होजाता है । जिसकी अविद्या निवृत्त नहीं होती है तिसको बन्ध बनाही रहता है और अविद्याको नाश होनेपर तिसके नाशके संस्कार बाकी बने रहते हैं । इसलिये जीवन्मुक्तिभी बनजाती है । विदेह मुक्तिमें वह संस्कार भी नाश होजाते हैं । इस मतमें अज्ञानकी निवृत्तिका नामही मोक्ष है । अज्ञानके असंबन्धका नाम मोक्ष नहीं है, और अज्ञानके अनेक होनेमें प्रत्यक्षही प्रमाण है । क्योंकि प्रत्येक जीवको 'अज्ञोऽहं' ऐसा होता है और सबमें अज्ञानके अनेक अंश हैं । अज्ञान एक है, इसमें प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं देखते हैं, इस लिये अज्ञान एकही है ॥ ४ ॥

प्रश्न—अनेक जीववादमें हम पूँछते हैं, एक जीवकी अविद्यासे यह प्रपंच रचा गया है। या संपूर्ण जीवोंकी अविद्यासे यह प्रपंच रचा गया है ?

उत्तर—कोई तो ऐसा कहते हैं, जैसे अनेक तंतुओंसे एक पट रचित है, तैसे सब जीवोंकी संपूर्ण अविद्याका परिणाम प्रपंच है। अथवा संपूर्ण अविद्याका विषय जो ब्रह्म है, तिसका विवर्त प्रपंच है । जैसे एक तंतुके नाश होजानेसे पटका नाश नहीं होता है, तैसे एकके मुक्त होजानेसे तिसकी अविद्याके नाश होनेपरभी तत्साधारण प्रपंचका भी नाश नहीं होता है । एक तंतुके नाश कालमें विद्यमान अपर तंतुओंसे अपर पटकीतरह अपर सर्व जीवोंकी सर्व अविद्यासे साधारण प्रपंच बना रहता है । इस मतमें संपूर्ण जीवोंकी सर्व अविद्याका प्रपंच एक माना है ॥ १ ॥

अब इसी विषयमें दूसरे मतको दिखाते हैं:—

संपूर्ण अविद्याओंका कार्य्य जो प्रपंच है, सो अविद्याके भेदसे प्रत्येक जीवके प्रति प्रपंच भिन्न २ है और स्व स्व अविद्याकृत गगनादि प्रपंचभी जीव २ का भिन्न २ है । यद्यपि जहाँपर एक कालमें बहुतसे पुरुषोंको शुक्तिमें रजतका भ्रम हुआ वहांपर सर्व पुरुषोंके सर्व अज्ञानोंसे एक २ जनकी उत्पत्ति बनती है । इससे तो यह साबित हुवा कि जीव २ के अज्ञानके भेदसे अज्ञानकृत रजतका भेदभी

कहना वनता है । तथापि तहांपर दैवयोगसे एक पुरुषको शुक्तिके ज्ञान सहित अज्ञान उपादान रजतका नाश होनेपरभी अपर पुरुषको रजत भ्रम वनाही रहता है । इस हेतुसे वहाँपर रजतका भेद अवश्यही मानना पडेगा। जैसे शुक्तिके अज्ञानसे शुक्ति रजतका भेद है अर्थात् अपनी २ रजत भिन्न २ शुक्तिके अज्ञानसे जैसे रची हुई है तैसे जीव २ का प्रपंचभी अपना २ भिन्न २ हां रचाहुवा है, किन्तु एक नहीं है । और एक पुरुषसे दूसरा पुरुष वहाँपर कहता है कि, शुति रजतमें जो रजत तुमने देखा है वही रजत हमनेभी देखा है यह प्रतीतिभी भ्रम मात्र है । तैसे जो घट तुमने देखा है सोई घट हमनेभी देखा है यह प्रतीतिभी भ्रम मात्रहै । इस मतमें संपूर्ण अविद्योंका कार्य्य प्रपंचको मानकरके भी भिन्न २ ही प्रपंचको माना है ॥ २ ॥

अब इसी विषयमें तीसरे मतको दिखाते हैं—

गगनादि प्रपंच जीवकी अविद्याका परिणाम नहीं है,किंतु जीवाश्रित जो अविद्या तिस अविद्याके समूहसे भिन्न जो माया सो सर्व जीवोंके साधारण प्रपंचका परिणामी उपादानहै,सो माया ईश्वरके आश्रितहै और तिस मायाका कार्य्य प्रपंचभी एकही है इसीसे एकत्व प्रतीति सबकी भ्रमरूप एकही है "माया च अविद्या च मायिनं महेश्वरम्" इस श्रुतिसे अविद्यासे भिन्न ईश्वर आश्रित माया प्रतीत होती है और जीवोंकी अविद्याका आवरण मात्रमें और शुक्ति रजतादिक प्रातिभासिक विक्षेपमें उपयोग है इस मतमें गगनादि प्रपंचको ईश्वराश्रित मायाका कार्य्य मानकर सर्व जीवोंका साधारण प्रपंच माना है ॥ ३ ॥

अब जीवनमुक्तिका विचार ।

अविद्यामें आवरण विक्षेप दो शक्तियें हैं ब्रह्मज्ञान करके आवरण शक्तिका नाश होता है, विक्षेप शक्तिवान् मूल अज्ञानका नाश नहीं होताहै प्रारब्ध कर्मरूप प्रतिबंधकके नाश होनेसे आवरण रहित चेतनसे विक्षेपशक्तिवान् अविद्याका नाश होताहै । इस मतमें विक्षेपशक्तिवान् अविद्याकोही अविद्याका लेश मानाहै। तिस लेशकी निवृत्ति वृत्तिके संस्कारोंके सहित चेतनसे मानीहै ॥ १ ॥

और कोई कहताहै कि, जैसे लशुनके वासनके धोनेसे भी तिसमें लशुनकी वास रहजाती हैं तैसे तत्वबोधसे अंतःकरणका उपादानकारण जो अविद्या तिसकी निवृत्ति होनेपरभी अविद्याजन्य देहादिकोंकी स्थितिका कारणं कोई वासना

विशेष रहजाती है उसीका नाम लेश अविद्या है—तिसी लेश अविद्या करके देहादिकोंकी प्रतीति जीवन्मुक्तकी बनी रहती है ॥ २ ॥

और कोई कहता है, जैसे दग्धपटमें स्वकार्य्य करणकी सामर्थ्य नहीं रहती है तैसे तत्त्वज्ञान करके बाधित दृढ़कार्य्य करनेमें असमर्थ जो मूल अविद्या सोई लेश अविद्या कहलाती है ॥ ३ ॥

और कोई कहता है कि, विरोधी साक्षात्कारके उदय होनेसे लेश अविद्याभी नहीं रहतीहै ब्रह्म साक्षात्कारके उदय मात्रसे कार्य्यसहित वासनासहित अविद्याकी निवृत्ति होजाती है। जीवन्मुक्तिका बोधक जो शास्त्र सो श्रवण विधिका अर्थवाद मात्र है। जीवन्मुक्तिमें तिसका तात्पर्य्य नहीं है किंतु श्रवणकी प्रवृत्तिमें तिसका तात्पर्य्य है ॥ ४ ॥

प्रश्न—ज्ञानके उदय कालमें और उपाधिके लयकालमें जीवत्वभावसे रहित जो आत्मा है तिसका ईश्वरसे अभेद होता है, अथवा शुद्ध ब्रह्मसे अभेद होताहै ॥

एकजीववादिका तो इसमें यह मत है कि, एकही जीव है और मूल अज्ञानभी एकही है तिस जीवको जिस किसी अन्तःकरणमें ज्ञानको उदय होनेसे कार्य्यसहित अज्ञानका तिसी क्षणमें बाध होता है, अज्ञानके बाध होनेपर निर्विशेष चैतन्यरूपसे अवस्थानका नामही मुक्ति है। इस मतमें शुद्ध ब्रह्मकी प्राप्तिका नामही मुक्ति है ॥ १ ॥

और जो प्रतिबिंबकोही जीव ईश्वररूप करके मानता है, तिसका यह मत है। अनेक उपाधियोंमें एकका प्रतिबिंब होनेपर जिस उपाधिका नाश होता है तिसका प्रतिबिंब अपने बिंबरूपसे स्थित होजाता है। दूसरे प्रतिबिंबसे तिसका अभेद होता नहीं किंतु अपने बिंबसेही तिसका अभेद होता है। इस मतमेंभी मुक्तपुरुषका शुद्ध ब्रह्मसेही अभेद होता है ॥ २ ॥

अब जीव प्रतिबिंब ईश्वर बिंबवादीके मतसे कहते हैं:—

जैसे अनेक दर्पणोंमें एक मुखका प्रतिबिंब होनेपरभी जब कि एक दर्पण नष्ट होजाता है तब तिसका प्रतिबिंब बिंबरूपसे स्थिर होजाता है। मुखमात्र रूपसे स्थित नहीं होता है, किंतु तिसकालमें अपर दर्पणोंकी समीपतासे मुखके प्रतिबिंबत्वका अभाव होता नहीं है। तैसे एक ब्रह्म चेतनका अनेक उपाधियोंमें प्रतिबिंब होनेपरभी एक उपाधिमें आत्मज्ञानके उदयकालमें तिस

उपाधिका बाध होनेसे तिसके प्रतिबिंबका सर्वज्ञ सर्वकर्ता, सर्वेश्वर सत्यकामादि गुणों वाले बिंबरूपसे तिसका अभेद होजाता है । यद्यपि अविद्याके अभाव होनेसे सत्य कामादि गुण विशिष्टकी प्राप्ति संभव भी नहीं है और ईश्वरका ईश्वरत्व और सत्य कामादि गुण विशिष्टत्व स्वअविद्याकृत नहीं है किन्तु बद्ध पुरुषकी अविद्याकृत हैं इसलिये सत्य कामादि गुणोंका कथनभी बन जाता है ॥ ३ ॥

चित्तवृत्ती कहती है—हे विवेकाश्रम ! एक वेदांतमें आपने बहुतसे मत कहे और हरएक मत वालोंने जीव ईश्वरका स्वरूप भिन्न २ तरहकाही माना है और मुक्तिमेंभी कुछ फरक माना है. तब किसका मत ठीकहै और किसका ठीक नहीं है और किसके मतमें विश्वास करनेसे कल्याण होता है ? तब विवेकाश्रम कहता है हे चित्तवृत्ते ! सबकेही मत ठीक हैं, क्योंकि, सबका तात्पर्य आत्म बोधमें है अपनेको ब्रह्मरूप निश्चय करनेसे पुरुषका कल्याण होता है । सो सबका तात्पर्य जीवकोही ब्रह्मरूप कथन करनेमें है, किसी मतसे तुम अपनेको ब्रह्मरूप निश्चय करलेवो सो कहाभी है:—

**यया यया भवेत्पुंसां व्युत्पत्तिः प्रत्यगात्मनि ।**
**सा सैव प्रक्रिया साध्वी ज्ञेयः सर्वात्मना बुधैः ॥ १ ॥**

जिस रीतिसे पुरुषोंको प्रत्यगात्माका बोध हो वही साध्वी प्रक्रिया तिसके लिये बुद्धिमानोंको जानने योग्य है ॥ १ ॥

हे चित्तवृत्ते ! पूर्वोक्त सर्वमतोंका तात्पर्य अद्वैत आत्माके बोधमें है, वह बोध किसी रीतिसे हो वही रीति उत्तम है । बिना अद्वैत बोधके कदापि मुक्ति नहीं होती है । और जितने भेदवादी मत हैं, यह सब बंधनमें फँसाने वाले हैं छुडाने वाले नहीं हैं । इस लिये भेद वादियोंका संगभी मोक्षका विरोधी है

**मोक्षस्य नहि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरमेव वा ।**
**अज्ञानहृदयग्रन्थिनाशो मोक्ष इति स्मृतः ॥ १ ॥**

किसी देशमें मोक्षका वास नहीं है, न किसी ग्रामके भीतर मोक्षका वास है किन्तु हृदयमें जो अज्ञानकी ग्रन्थि है तिसके नाशका नामही मोक्ष है ॥ १ ॥

**अनात्मभूते देहादावात्मबुद्धिस्तु देहिनाम् ।**
**साऽविद्या तत्कृतो बंधस्तन्नाशो मोक्ष उच्यते ॥ २ ॥**

अनात्मारूप जो देहादिक हैं, उनमें जो जीवोंकी आत्मबुद्धि है उसीका नाम अविद्या है तिस अविद्याकृतही बन्ध है, तिसके नाशका नाम मोक्ष है ॥२॥

**कामानां हृदये वासः संसार इति कीर्तितः।**
**तेषां सर्वात्मना नाशो मोक्ष उक्तो मनीषिभिः॥**

कामनाका जो हृदयमें निवास है तिसीका नाम संसार है। उन कामनाओंका जो सर्वरूपसे नाश होजाना है, तिसीका नाम मोक्ष है ॥ ३ ॥

हे चित्तवृत्ते! और सब मतोंवालोंकी मुक्ति अनित्य है, क्योंकि, वह सब मोक्षावस्थामें भी भेदमानते हैं और लोकांतरकी प्राप्तिको वह मोक्ष मानते हैं। इसीसे उनकी मुक्ति वेदविरुद्ध भी है और अनित्य भी है और वेदमें कहीं भी मुक्तका पुनरागमन नहीं लिखा है सो दिखाते हैं। व्याससूत्रम्:-

**अनावृत्तिःशब्दादनावृत्तिःशब्दात् ॥ १ ॥**

श्रुतिमें मुक्तकी अनावृत्ति कही है "नच पुनरावर्त्तते नंच पुनरावर्तते"॥ मुक्तहुवा पुरुष फिर हठकरके संसारमें नहीं आता है, फिर हठकर संसारमें नहीं आता है ॥ १ ॥ गीतायामपि-

**यद्गत्वा न निवर्तंते तद्धाम परमं मम।**

जिस पदको प्राप्त होकर फिर लौटकर नहीं आता है, वही मेरा परमस्वरूपहै।

सांख्यसूत्रम्:-

**न मुक्तस्य पुनर्बंधयोगोपि अनावृत्तिश्रुतेः।**

मुक्त पुरुषको फिर बंधका सम्बन्ध नहीं होताहै, क्योंकि श्रुतियोंमें अनावृत्ति शब्द श्रवण किया है ॥

**यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः।**
**अथ मर्त्योऽमृतो भवत्येतावदनुशासनम् ॥ १ ॥**

जिसकालमें विद्वान्के हृदयकी ग्रन्थियें सब भेदन होजाती हैं, इससे अनंतर वह अमृत अर्थात् मोक्ष होजाता है, यही वेदका अनुशासन है ॥ १ ॥

**ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः**
**क्षीणैः क्लेशैर्जन्ममृत्युप्रहाणिः ॥ १ ॥**

परब्रह्मको जानकर संपूर्ण पाशोंसे छूट जाता है, अविद्या आदिक क्लेशोंके नाश होनेसे जन्म मरणसे भी छूट जाता है ॥ १ ॥

हे चित्तवृत्ते! मुक्त पुरुषका पुनरागमन किसीप्रकारसे भी नहीं होता है, क्योंकि अनेक श्रुतियें इसमें प्रमाण हैं। उनमेंसे कुछ पीछे दिखाई भी हैं, अब युक्ति भी दिखाते हैं। मुक्त होजानेपर कोई कर्मोंका संस्कार बाकी रहता है या नहीं रहता है यदि कहो रहता है, तब मुक्त न हुवा, क्योंकि मुक्त नाम कर्म बन्धनसे छूटजानेका है, जिसके ज्ञानरूपी अग्नि करके संपूर्ण कर्मोंका नाश होजाय वहीं मुक्त कहाता है। जिसका कोई एक कर्म शेष रहजाय वह मुक्त नहीं कहाता है, क्योंकि जन्मका हेतु तो कर्म है, वह तो तिसका शेष बैठा है, तब मुक्त कैसे होसकता है, किन्तु कदापि नहीं होसक्ता है, यदि कहो मुक्त पुरुषका कोई भी कर्म शेष नहीं रहता है, अर्थात् कोई भी कर्मोंका संस्कार नहीं रहता है, तब फिर तिसका पुनरागमन नहीं बनताहै। क्योंकि जन्मका हेतु जो कर्मोंके संस्कार वह तो तिसके बैठे हैं, फिर मुक्त कैसे होसक्ता है किंतु कदापि नहीं होसक्ता है।

चित्तवृत्ति कहती है हे विवेकाश्रम! आपने पीछे आत्माको प्रकाशस्वरूप कहाहै और अज्ञानको तमरूप करके कहा है। जैसे प्रकाशरूप सूर्यमें तमरूप अंधकार किसी प्रकारसेभी नहीं रहसक्ता है, तैसे प्रकाश स्वरूप चेतनमेंभी अज्ञान नहीं रहसक्ता है। तब फिर चेतनके आश्रित होकर कैसे अज्ञान रहता है मेरे इस संशयको तुम दूरकरो। वैराग्याश्रम कहते हैं हे चित्तवृत्ते! यह शंका भेदवादियोंकी है, जो भेदवादी ऐसी शंकाको करते हैं। उनसे हम पूंछते हैं, ईश्वरको तो वहभी प्रकाश स्वरूप मानते हैं और जगत्को तमरूप करके मानते हैं। प्रकाशस्वरूप ईश्वरमें तमरूप जगत् कैसे रह सक्ता है? फिर प्रकृतिको वह जड मानते हैं, जो जड होता है वही तमरूपभी होता है, वह प्रकृति तिस व्यापक चेतनमें कैसे उनके मतमें रहती है? फिर शुद्ध ईश्वरमें वह इच्छादिक गुणोंको मानते हैं, शुद्धमें वह इच्छा आदिक गुण कैसे रहते हैं यदि रहेंगे तब तिसकी शुद्धता न रहेगी और जीवके साथ गुणों करके तुल्यताभी होजायगी। क्योंकि जीवभी इच्छा आदिक गुणोंवाला है, फिर व्यापक प्रकाशस्वरूप चेतनमें अंधकाररूपी रात्रि कैसे रहती है? यदि कहो तिस ईश्वरमें प्रकृति और जगत् तथा रात्रि नहीं रहती है, तब ईश्वर व्यापक सिद्ध नहीं होगा फिर उन भेदवादियोंका आत्माभी चेतनहै, शुद्धहै क्योंकि जो चेतन

होताहैं, वह शुद्धभी होताहै तब फिर जिसकालमें तिसमें एक वस्तुका ज्ञान रहता है तिसकालमें इतर वस्तुओंका अज्ञानभी रहता है और ब्रह्मांडके अन्तर्वर्ति करोडों पदार्थोंका अज्ञान सदैवकालमें तिसमें वना रहता है और यह तो आप कहही नहीं सक्तेहैं जो उसमें संपूर्ण पदार्थोंका ज्ञानही बना रहता है यदि ऐसे कहोगे तब तुमको सर्वज्ञ होना चाहिये, सो तो नहीं है इसीसे सिद्ध होता है कि तुम्हारे आत्मामे अनंत पदार्थोंका अज्ञान बैठा है, वह फिर कैसे रहता है? और यदि कहो वह अज्ञान इस बाहरके तमकी तरह नहीं है तब हमारा अज्ञान भी बाहरके तमकी तरह नहीं है। इससे विलक्षण है। जैसे तुम्हारा अज्ञान तुम्हारे चेतनमें रहता है, तैसे हमारा अज्ञानभी चेतनकेही आश्रित रहता है। यदि कहो हमारा आत्मा शुद्ध नहीं। तब हम पूंछते हैं कि, तुम्हारे आत्माको अशुद्ध किसने किया है? एक पदार्थ जो शुद्ध होता है सो दूसरे पदार्थके सम्बन्धसे अशुद्ध होजाता है। जैसे शुद्ध जल मलके सम्बन्धसे या किसी और दुर्गंधीवाले पदार्थके सम्बन्धसे अशुद्ध होसक्ता है। क्योंकि वह दोनों सावयव पदार्थ हैं, आत्मा निरवयव निराकार तिसके साथ दूसरे मलिन पदार्थका सम्बन्धही किसी प्रकारसे नहीं बनता है। तब वह अशुद्ध कैसे होगया? सावयवका निरवयवके साथ संयोग या समवाय कोईभी सम्बन्ध नहीं बनता है, क्योंकि सयोग सम्बन्ध सावयव पदार्थोंकाही होता है। सावयव निरवयवका संयोग सम्बन्ध किसी प्रकारसेभी नहीं होता है। फिर कार्यकारणका समवाय सम्बन्ध होता है, सो चेतन किसीभी जडकार्य्यका उपादानकारण नहीं है और जड चेतनका कोई सम्बन्ध भी माना नहीं है, तब कैसे तुम्हारा आत्मा अशुद्ध होगया। यदि कहो कर्मोंके संस्कार तिसमें रहते हैं इसीसे वह अशुद्ध होगया है, सोभी नही। क्योंकि विना शरीरके केवल आत्मा कर्म कर्ताही नहीं है और लोकमेंभी शरीरकोही कर्म करते सब कोई देखताहै, आत्माको किसीने नहीं देखा और शरीरके किये हुए कर्म आत्माको लगभी नहीं सक्ते हैं। क्योंकि ऐसा नियम है। यज्ञदत्तका कर्म देवदत्तको नहीं लगसक्ता है। यदि कहो शरीरके साथ आत्माका सम्बन्ध होनेसे शरीरकरके करे हुए कर्म आत्मामें चलेजाते हैं, सोभी, नहीं क्योंकि शरीरके साथ संयोगादि सम्बन्ध निरवयव चेत-

नके बनतही नहीं हैं। यदि कहो कल्पित सम्बन्ध मानेंगे, तब तुम्हारा मतही जाता रहेगा और फिर जैसे कल्पित सम्बन्ध शरीरका आत्माके साथ मानते हो ऐसेही तुमको कल्पित सम्बन्ध अज्ञानकाभी मानना पडैगा। यदि कहो आत्मा अशुद्ध नहीं है, भ्रान्ति करके अपनेको अशुद्ध मानता है, तब उसी भ्रान्तिको हम अज्ञान कहते हैं, फिर शुद्धको भ्रान्ति कैसे होगई। और तिस भ्रान्तिका स्वरूप क्या है? यदि कहो वह भ्रान्ति अनादि है और कुछ कहीं नहीं जाती है, तब फिर उसीको अनादि अनिर्वचनीय अज्ञान क्यों नहीं तुम मान लेतेहो? यदि प्रकाशस्वरूप आत्मा अज्ञानका विरोधी होता तब तुम्हारे आत्मामें अनेक पदार्थोंका अज्ञान और भ्रान्ति कैसे रहती? और रहती है इसीसे सिद्ध होता है। आत्मा अज्ञानका विरोधी नहीं है, जैसे जीवात्मा अज्ञानका विरोधी नहीं है, तैसे ईश्वरात्माभी अज्ञानका विरोधी नहीं है। क्योंकि समसत्ताक पदार्थ परस्पर विरोधी होते हैं, विषम सत्ताक पदार्थ परस्पर विरोधी नहीं होते हैं। जैसे एक अधिकरणमें समसत्तावाले अर्थात् व्यावहारिक सत्तावाले घटपट दो पदार्थ नहीं रह सक्ते हैं, जिस जगहपर घट रक्खा रहेगा, उसी जगहमें पट नहीं रक्खा जाता है, किन्तु उस जगहसे दूसरी जगहमें पट रक्खा जावैगा। परंतु विषम सत्तावाले दो पदार्थ एकही जगहमें रह जाते हैं। जैसे व्यावहारिक शुक्तिमें प्रातिभासिक रजत रहती है शुक्तिकी व्यावहारिक सत्ता है, रजतकी प्रातिभासिक सत्ता है, फिर जैसे व्यावहारिक अन्तःकरणमें प्रातिभासिक स्वप्नके पदार्थ रहते हैं, तैसेही पारमार्थिक सत्ता चेतनकी है, प्रातिभासिक सत्ता अज्ञानकी है, वह भी चेतनमें रहसक्ता है। क्योंकि चेतन अज्ञानका साधक है, बाधक नहीं है। जैसे सामान्य अग्नि सब काष्ठोंमें रहती है, परंतु काष्ठका विरोधी नहीं है, अर्थात् काष्ठको जलाती नहीं है, किन्तु विशेष अग्नि जोकि प्रज्वलित हो रहीहै वही काष्ठोंकी विरोधी है, तथा काष्ठोंको जला देती है! तैसे सामान्य चेतनभी किसीका विरोधी नहीं है, किंतु वृत्ति प्रतिबिंबित जो विशेष चेतन है, वही अज्ञानका विरोधी है अर्थात् अज्ञानका नाशक है। हे चित्तवृत्ते! इसरीतिसे चेतनमें अज्ञान रहता है वह अज्ञानभी कल्पितही है, केवल चेतनही नित्य है। और सदैवकाल एक रस अपनी महिमामें ज्योंका त्यों स्थित रहता है। चित्तवृत्ति कहती है हे भ्रातः! तुम्हारी कृपादृष्टिसे और तुम्हारे अमृतरूपी वचनोंको सुनकर मैं कृतार्थ होगईहूं। अब मेरेको

कुछभी संदेह नहीं रहा है मैंने आपकी दयादृष्टिसे अपने आत्माको जान लिया है ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

## दोहा।

संमत एक अरु नव पुनि, पंचहि नव जुनि आन।
सिंह मास तिथि एकादशी, ग्रन्थ यह पूरण जान ॥ १ ॥

इति श्रीस्वामिहंसदासशिष्येण स्वामिपरमानन्दसमाख्यावरेण विरचिते ज्ञानवैराग्यप्रकाशकनामकग्रन्थे ज्ञाननिरूपणं नाम द्वितीयः किरणः ॥ २ ॥

॥ समाप्तोऽयंग्रन्थः ॥

---

1959

पुस्तक मिलनेका पता–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बम्बई.

# विक्रय्यपुस्तकें ( वेदान्तग्रन्थ–भाषा )

| नाम. | की॰ रु॰आ॰ |
|---|---|
| आत्मपुराण–भाषामें दशोपनिषद्के भावार्थ चिद्घनानंद स्वामिकृत | १२–० |
| योगवासिष्ट–वडा भाषा छः प्रकरणोंमें श्रीगुरुवसिष्टजी और श्रीरामचंद्रजीका संवादोक्त अपूर्व ग्रंथहै खुलापत्रा .... .... | ९–० |
| ,, वडा संपूर्ण ६ प्रकरण ४ जिल्दोंमें .... .... | ९–० |
| स्वरूपानुसंधान–वेदान्तियोंको अवश्य लेनेयोग्य है .... .... | २–० |
| योगवासिष्ट–भाषामें वैराग्य और मुमुक्षुप्रकरण वडाक्षर ग्लेजकागज | ०–१२ |
| ,, तथा रफ् कागज .... .... .... | ०–१० |
| ,, तथा छोटागुटका पाकिटवुक .... .... | ०–४ |
| योगवासिष्टसार–भाषा .... .... .... .... | २–० |
| पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश–( कामलीवालेवावाजीकृत ) इसमें चारवेद, षट्शास्त्रका सार और अठारह पुराणोंकी कथा आदिका अध्यात्मविद्यापर अर्थ लिखागया है आत्मज्ञानियोंको अत्यंत दुर्लभ है .... .... .... .... .... | २–८ |
| अभिलाखसागर–भाषामें स्वामी अभिलाखदासउदासीकृत–इसमें वंदनविचार, ग्रंथविचार, मार्गविचार, भजनविचार, जडब्रह्मविचार, चैतन्यब्रह्मविचार, निराकारब्रह्मविचार, मिथ्याब्रह्मविचार, अहंब्रह्म विचार, ब्रह्मविचार, वर्तमानब्रह्मविचारादि विषय अच्छीरीतिसे वर्णित किये हैं .... .... .... | १–८ |
| अध्यात्मप्रकाश–श्रीशुकदेवजी प्रणीत कवित्त दोहे सोरठे छंद चौपाई इत्यादिमें वेदान्तका अपूर्व ग्रंथ है .... .... .... | ०–३ |
| जीवब्रह्मसागर–भाषा .... .... .... .... | ०–३ |
| प्रवोधचंद्रोदय नाटक–भाषा–गुलावसिंहकृत ( वेदान्त ) .... | १–० |
| चन्द्रावली ज्ञानोपमहासिन्धु–इस ग्रंथमें वेद वेदान्तका सार मुमुक्षुओंके ज्ञानार्थ–राग रागिनियोंमें वर्णित है .... .... | ०–६ |

| नाम. | रु०आ० |
|---|---|
| मृतधारा—वेदान्त भाषाछंदोमें भगवानदास निरंजनीकृत वेदान्तकी प्रक्रिया छंदोंमें लिखी गई है .... .... .... | ०—१० |
| ...प्रभाव—साधुमाणिकदासजीकृत सत्संगादि विषयमें अद्वितीय है | ०—६ |
| ...षसुरतरु—साधुमाणिकदासजीकृत इस ग्रंथके पढनेसे डाकिनीरूप तृष्णाका अवश्य नाश होता है .... .... .... | ०—६ |
| आनन्दामृतवर्षिणी—आनन्दगिरिस्वामिकृत गीताके कठिन शब्दके प्रतिपादन वेदान्तका मूल है.... .... .... .... | ०—१२ |
| ...क्षगीता—सवालक्ष श्रीरामनाम लिखागया है भजनानुरागियोंको अवश्य संग्रह करना चाहिये ... .... .... | ०—१४ |
| ...त्तिप्रभाकर—स्वामीनिश्चलदासजीकृत षट्शास्त्रके मतसे भलीप्रकार वेदान्तमत प्रतिपादन किया है .... .... .... | २—८ |
| विचारसागर—सटीक स्वामी निश्चलदासकृत .... .... | १—८ |
| विचारसागर—सटीक पीताम्बरदास कृत भा. टी. सहित .... | ४—० |
| विचारमाला—सटीक स्वामी गोविंददासकृत भाषाटीका सहित .... | ०—१२ |
| विचारचन्द्रोदय—सटिप्पण पं० पीताम्बरदासकृत बालबोधिनीटीका सहित | १—८ |
| दशोपनिषद्—भाषामें स्वामी अच्युतानन्दगिरिकृत दशोपनिषद्का सरल भाषामें मूल २ का उल्था किया गयाहै मुमुक्षुओंको पढनेसे शीघ्र अध्यात्मबोध होता है. .... .... .... | २—० |
| तत्त्वानुसंधान—भाषामें स्वामी चिद्घनानंदकृत अर्थात् "अद्वैतचिन्तकौस्तुभ" कहते हैं यह ग्रंथ आदिसे अंततक देखनेसे भली प्रकारसे वेदान्तके छोटे बडे ग्रंथ आपही आप विचार सक्ते हैं.... | २—० |
| वैराग्यशतक—साधुहरदयालकृत भाषाछंदोबद्ध इसमें महाराज भरथरीजीने भली प्रकारसे वैराग्य दर्शायाहै .... .... .... | ०—८ |
| विज्ञानगीता—कविकेशवदासकृत अपूर्व वेदान्त है .... .... | ०—१० |
| सुन्दरविलास—( ज्ञानसमुद्र ज्ञानविलास सुन्दराष्टकादिसहित ) सटिप्पण आदि अंतपढनेसे अवश्य ब्रह्मविचार होगा ग्लेज .... .... | १—० |
| " तथा रफ .... .... .... | ०—१४ |

# जाहिरात ।

| नाम. | की० रु०आ० |
|---|---|
| प्रत्येकानुभवशतक भाषा—यह छोटासा ग्रंथ पढनेसे वेदान्तमें अच्छा अनुभव सिद्ध होताहै .... .... .... .... | ०—४ |
| सारुक्तावली—भाषा हरदयालकृत .... .... | ०—२ |
| सूक्तावलीसहिता—सारुक्तावली .... .... .... | ०—४ |
| ब्रह्मनिरूपण—ज्ञानांकुश अथवा रामअयन रामायण भक्तोंका सुगम मोक्षोपाय.... .... .... .... .... | १—८ |
| ब्रह्मज्ञानदर्पण—( ज्ञानकी आरसी ) .... .... .... | ०—२ |
| एकादशस्कंध—भाषामें चतुरदासजीकृत भागवतके एकादशस्कंधकी वेदान्तरसमय कथा .... .... .... ... | ०—१२ |
| गुप्तनाद भाषा .... .... .... ... | ०—१॥ |
| गर्भगीता—भाषा श्रीकृष्णार्जुन संवाद ... .... .... | ०—१ |
| अष्टावक्रगीता—भाषाटीकासमेत. श्रीअष्टावक्रमुनिप्रणीत गुरुशिष्यसंवादमें ब्रह्मविद्याजाननेका अतिसरल सुगमोपाय .... .... | १—० |
| पंचदशगीता—भाषाटीकासमेत जिसमें श्रीमहाभारतान्तर्गत काश्यपगीता शौनकगीता अष्टावक्रगीता अध्याय४ नहुषगीता अध्याय२ सरस्वतीगीता बकगीता युधिष्ठिरगीत अध्याय ४ धर्मव्याधगीता श्रीकृष्णगीतादिकका एकत्र सम्रहहैं । .... .... .... | ०—१२ |
| देवीगीता—भाषाटीका सहित ( श्रीदेवीभागवतान्तर्गत ) शाक्तलोगोंको पाठकरने योग्य । .... .... .... .... | ०—८ |
| गणेशगीता—पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहित ( गणेशपुराणोक्त ) .... .... .... .... | ०—६ |
| कपिलगीता—भाषाटीकासहित श्रीमद्भागवतान्तर्गत श्रीभगवान् कपिलदेवजीने अपनी माता देवहूतिको संपूर्ण ज्ञानोपदेश किया है । | ०—६ |
| सिद्धान्तचन्द्रिका ( वेदान्त ) । .... .... .... | ०—९ |
| पंचदशी—सटीक-पं० रामकृष्णाख्य विद्वान्‌की तत्वविवेक व्याख्या टीका सहित .... .... .... .... | २—४ |

नाम. की० रु०आ०

और शांडिल्यकृत भक्तिसूत्र स्वप्नेश्वराचार्यकृत भाष्य समेत छपता है । .... .... .... ....

ब्रह्मसूत्र–( शारीरक ) "वेदान्त दर्शन" प्रभुदयालकृत वेदान्ततत्व-प्रकाश भाषाभाष्यसमेत मुमुक्षुओंको अतिसुगमतासे सुबोध ज्ञानोपयोगी बहुत सरल भाषामें .... .... .... ४–०

ब्रह्मसूत्र–( वेदान्तदर्शन ) सरल भाषाटीकामें भाष्यानुसार १–४

वेदान्तपरिभाषा–शिखामणिटीका और मणिप्रभाटीका सहित .... २–८

वेदान्तपरिभाषा–अर्थदीपिका टीका समेत .... .... १–०

वेदान्तपरिभाषा–साधु गोविन्दसिंहकृत अत्युत्तम भाषाटीकासमेत १–२

वेदान्तसार–संस्कृत मूल और संस्कृतटीका व भाषाटीकासमेत इसमें संपूर्ण वेदान्तका तत्वरूप सार वर्णितहै .... .... ०–१२

वेदान्तसंज्ञा–भाषाटीकासमेत इस छोटेसे ग्रंथके अभ्याससे वेदान्तकी संज्ञादि प्रक्रिया जाननेसे पंचदशी आदि बडे ग्रंथोंको सुगमतासे समझ सकेंगे .... .... .... .... ०–६

वेदस्तुति–श्रीयुत बाबू सीतारामजीकृत भाषाटीकासमेत श्रीमद्भागवतान्तर्गत दशमस्कंधोत्तरार्धके ८७ अध्यायमें श्रीकृष्ण भगवान्ने श्रुतदेव ब्राह्मण और राजा बहुलाश्वको सन्मार्गनाम वेदमार्गका उपदेश कियाहै अर्थात् इस श्रुतिमें समस्तवेद ब्रह्मप्रतिपादन किया है ०–८

वेदान्त ग्रन्थपंचकम्–( वाक्यप्रदीपः वाक्यसुधारसः हस्तामलकः निर्वाणपंचकम् मनीषापंचकम् ) यह पांचों ग्रंथ अवश्य विचारने योग्य हैं ... .... .... .... .... ०–८

वैराग्यभास्कर–श्रीस्वामी गोपालदास विरचित स्वकृत संस्कृत कारिका और भाषाटीकासमेत इसमें वैराग्यभेदादि संन्यासधर्म निषिद्धान्नत्यागात्मकधर्म और संकीर्ण धर्मादि वर्णित हैं .... .... ०–८

## योग–वैशेषिक–सांख्यग्रंथाः ।

सर्वदर्शनसंग्रह–श्रीउदयनारायणसिंहकृत भाषाटीका सहित–इसग्रंथमें क्रमसे १ चार्वाक दर्शन २ बौद्ध दर्शन ३ आर्हत दर्शन ४

| नाम. | की० रु०आ० |
|---|---|
| रामानुज दर्शन ५ पूर्णप्रज्ञ दर्शन वा वेदान्त दर्शन ६ नकुलीश पाशुपत दर्शन ७ शैव दर्शन ८ प्रत्यभिज्ञादर्शन ९ रसेश्वर दर्शन १० औलूक्य दर्शन ११ अक्षपाद दर्शन १२ जैमिनी दर्शन १३ पाणिनि दर्शन १४ सांख्य दर्शन १५ पातंजल दर्शन—मत या सम्प्रदाय सिद्धान्तोंका पूर्णतया वर्णन है .... | २—० |
| पातंजल्योगदर्शन—अत्युत्तम भाषानुवादसहित अष्टांगयोगनिरूपण | ०—१२ |
| हठयोगप्रदीपिका--भाषाटीकासहित इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, मुद्राप्रकरण प्रत्याहारादि समाधि क्रमादि वर्णन है .... | १—४ |
| तथा संस्कृतटीका और भाषाटीका सहित .... .... | १—८ |
| गोरखपद्धति—भाषाटीकासहित इसग्रंथमें योगाभ्यासका फल वर्णित है | ०—१२ |
| शिवसंहिता—भाषाटीकासहित इसमें शिवजीसे कहाहुआ योगोपदेश ब्रह्मज्ञान हठयोग क्रिया राजयोगादिका वर्णनहै .... .... | १—० |
| शिवस्वरोदय—भाषाटीका सहित इसमें स्वरोंका और इडा, पिंगला, सुषुम्णा नाडियोंसे प्रश्नादि और राजयोग, हठयोग, प्राणायामादि पंचतत्वोंके जाननेकी विधि भलीप्रकार है .... .... | ०—८ |
| योगतत्त्वप्रकाश—भाषामें अत्युत्तम योगमार्ग वर्णित है योगाभ्यासकी प्रणाली परमोपयोगी है .... .... .... | ०—२ |
| ज्ञानस्वरोदय—चरणदासकृत.... .... .... .... | ०—२ |
| सहजप्रकाश—चरणदासकी बहिन सहजबाई कृत .... .... | ०—४ |
| स्वरोदयसार—चरणदासकृत .... .... .... | ०—२ |
| स्वरदर्पण सटीक—भाषामें स्वरपर प्रश्न वर्णित हैं .... .... | ०—४ |
| योगमार्गप्रकाशिका—अर्थात् योगरहस्य—भाषाटीका सहित योगाभ्यासियोंके परमोपयोगी है .... ... ... | ०—८ |
| सांख्यदर्शन—भाषाटीकासमेत ( भगवान् कपिलदेवजी प्रणीत ) .... | १—४ |
| वैशेषिकदर्शन--भाषाटीकासहित ( कणादमुनि प्रणीत ) द्रव्यादिपदार्थ निरूपण .... .... .... | ०—१२ |

| नाम. | की० रु०आ० |
|---|---|
| घेरंडसंहिता--भाषाटीका सह अष्टांगयोग वर्णन .... .... | ०-१० |
| कपिलगीता--भा० टी० .... .... .... | ०-६ |
| योगवित्--भा० टीका .... .... .... .... | ०-४ |
| योगकल्पद्रुम--भाषाटीकासम्वलित .... .... .... | १-० |
| षट्चक्रनिरूपणम्--संस्कृत .... .... .... | ०-८ |
| भक्तिसागरादि ( १७ ) ग्रन्थ--श्रीस्वामीचरणदासजीकृत--जिनमें ब्रजचरित्र, अमरलोक, धर्मजहाज, श्रीअष्टांगयोग, षट्कर्महठयोग, योगसन्देहसागर, ज्ञानस्वरोदय, पंचउपनिषद्, द्वितीयसर्वोपनिषद्, तृतीयतत्त्वयोगोपनिषद्, चतुर्थयोगशिखोपनिषद्, पंचमतेजोबिंदूपनिषद्, भक्तिपदार्थ, मनविरक्तकरण, श्रीब्रह्मज्ञानसागर, शब्दवर्णन और भक्तिसागर .... .... | १-१२ |

## नीतिग्रंथाः

| | |
|---|---|
| शुक्रनीति--भाषाटीकासहित जिसमें राजा राजपत्नी और राजकुमारोंके मुख्य धर्मकी रीति और प्रजापालनादि सेनारचना तथा राजप्रबन्ध उत्तम प्रकारसे है ग्लेज १॥। रु. रफ .... | १-८ |
| चाणक्यनीति--भाषाटीका दोहासहित इसके देखनेसे मनुष्य नीतिकी उत्तम २ बातें जान सकते हैं .... .... .... | ०-८ |
| विदुरनीति--श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यक्षप्रश्नोंके सहित .... .... .... .... .... | ०-४ |
| विदुरप्रजागर--राजनीति मारवाडी भाषामें .... .... | ०-८ |
| विदुरप्रजागर--भाषा--( छंदबद्ध ) कविता देखनेही योग्य है .... | ०-४ |
| राजनीति पंचोपाख्यान--भाषामें विष्णुशर्माके पंचतंत्रका भाषान्तर | ०-७ |
| नीतिसंग्रह--( सामयिक श्लोक पद्यटीका समेत ) .... .... | ०-४ |
| बेकनविचार रत्नावली--( नीति और शिक्षा ) .... .... | ०-८ |
| नीतिमनोरमा सटीक--नीतिके श्लोकोंकी टीका कवित्तोमें वर्णित है.... | ०-५ |
| ठहरो अर्थात्--उपदेशदर्पण इसमें २०० शिक्षित चुटकुले हैं .... | ०-४ |

| नाम. | की० रु०आ० |
|---|---|
| ताजीरात हिन्द–हिन्दुस्थानका दंडसंग्रह–पं.बल्देवप्रसाद मिश्रद्वारा अनुवादित फौजदारी मुकद्दमामें किस तरहसे अपराधीको शिक्षा-देना इत्यादि .... .... .... .... | १–१२ |
| न्यायालयकार्यपत्रसंग्रह–इस पुस्तकमें अदालती कार्रवाई अर्जी दावा इत्यादि लिखनेके कायदे हैं .... .... .... | ०–१० |
| अफजलुल कानून--( राजपूतानेके फौजदारीका कानून ) .... | १--१२ |
| कुंडलिया गिरधरदासकृत--( सामयिक नीति वेदान्तसंयुक्त ) अबकी-वार दूनी होगई है .... .... .... .... | ०--४ |
| दंपतिवाक्यविलास--जिसमें सवदेशांतरकी यात्रा और धंधेका सुख पुरुषने मंडन किया है और स्त्रीने खंडन किया है दोहा चौपाइमें सुभाषित .... .... .... .... | ०--१२ |
| कलाविलास--संपूर्ण चौंसठकला जाननेके लिये और ठगोंसे बचनेके लिये अपूर्व वर्णित है .... .... .... .... | १--० |
| मूर्खशतक--निंदकनामा ... .... .... .... | ०--३ |
| उद्योगप्रारब्धविचार--भाग्यके भरोसेसे रहना या उद्यमकर कीर्ति प्राप्त करना इस विषयमें अनेक श्रुति स्मृति पुराण न्याय नीतिके दृष्टान्तों सहित सिद्धान्त दर्शाया है एकवेर यह ग्रन्थ आदिसे अंततक अवश्य पढना चाहिये .... .... .... | १–० |
| अक्षयनीतिसुधाकर–( श्रीमहाराज कुमार श्री १०८ अक्षयसिंहजी बनेडा मेवाडप्रणीत ) राजप्रबन्ध अर्थात् किसरीतिसे राजाओंको वर्तमान समयमें नीतिसे बरताव करना चाहिये इत्यादि राजनीतिका अपूर्व ग्रंथहै इस समयमें राजकुमारोंको अवश्य पढने योग्य है .... .... .... .... .... | २–० ३। [illegible] |
| कामंदकीय नीतिसार ( महाभारतान्तर्गत )–पं. ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीका अच्छे अच्छे नीतिके उपदेश दिखाये हैं .... .... | ०–१२ |
| नीतिरत्नमाला–रत्नदीय–पं० सुदर्शनाचार्येण संगृहीता–हिन्दी भाषाटीका सहिता .... .... .... .... | ०–६ |

Bau

It belongs to
Bacchi Bhai c/o
Babu G. Bhai Sikaria
92 Howrahroad
Salkia bandel
Howrah.

[illegible] सर्वोपयोगी,
[illegible] शुद्ध और [illegible] पुस्तकें।

[illegible] हुआ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] पुस्तकें [illegible]
[illegible] ज्योतिष, [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible], वैद्य, [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible] बहुत [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] आपको [illegible]
[illegible] चाहिये।
[illegible] पुस्तकें [illegible] मिलना [illegible]
[illegible]

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना खेतवाड़ी–मुम्बई.